

AJAIBUL QUR-AAN MA-A GHARAIBUL QUR-AAN

तखरीज शुल

कुरआनी वाकिआत व अजाइबात का बेहतरीन गुलदस्ता



# अजाइबुल कुरआन मअ ग़राइबुल कुरआन



मुअल्लिफ़

शैखुल इदीय हज़रते अल्लामा मौलाना अब्दुल मुस्तफ़ा आ 'ज़यी

दुन्या की सब से कीमती गाए

उलट पलट हो जाने वाला शहर

सब से पहला कातिल व मकतूल

चार काबिले इब्रत औरतें

हज़रते सुलैमान عليه السلام और एक च्यूटी

हज़रते ईसा عليه السلام के चार मो जिज़ात

दौड़ने वाला पथथर

सामरी का बछड़ा



® مکتبة الدینہ

( वा 'यते इस्लामी )

SC 1286

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

## किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार कादिरि र-जवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ

दीनी किताब या इस्लामी सबक पढ़ने से पहले जैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तर्जमा : ऐ **ALLAH** عَزَّ وَجَلَّ ! हम पर इल्मो हिक्मत के दरवाजे खोल दे और हम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अज़मत और बुजुर्गी वाले।

(المُسْتَقْرَفُ ج ١ ص ٣٠ دار الفكر بيروت)

नोट : अव्वल आखिर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

तालिबे गुमे मदीना  
बकीअ  
व मगफ़िरत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

## क़ियामत के रोज़ हसरत

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : सब से ज़ियादा हसरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस शख्स को होगी जिस ने इल्म हासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अमल न किया)

(تاريخ دمشق لابن عساکر، ج ٥١ ص ١٣٨ دار الفكر بيروت)

## किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां ख़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रूजूअ फ़रमाइये।

पेशकश : मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी)

## मजलिसे तराजिम (हिन्दी-गुजराती) दा'वते इस्लामी

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِي تब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते इस्लामी की मजलिस "अल मदीनतुल इल्मिया" ने येह किताब "अजाइबुल कुरआन मअ़ ग़राइबुल कुरआन" उर्दू ज़बान में पेश की है।

मजलिसे तराजिम, बरोडा (हिन्दी-गुजराती) ने इस किताब को हिन्द (INDIA) की राष्ट्रिय भाषा "हिन्दी" में रस्मुल ख़त (लीपियांतर) करने की सआदत हासिल की है [भाषांतर नहीं बल्कि सिर्फ़ लीपियांतर या'नी ज़बान (बोली) तो उर्दू ही है जब कि लीपि (लिखाई) हिन्दी रखी है] और मक्तबतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है।

इस किताब का हिन्दी रस्मुल ख़त करते हुवे दर्जे ज़ैल मुआमलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :-

❶ कमो बेश दस<sup>(10)</sup> मराहिल सर अन्जाम दिये गए हैं, जो येह हैं :-

(1) कम्पोजिंग (2) सेटिंग (3) कम्प्यूटर तकाबुल (4) तकाबुल बिल किताब (5) सिंगल रीडिंग (6) कम्प्यूटर करेक्शन (7) करेक्शन चेकिंग (8) फ़ाइनल रीडिंग (9) फ़ाइनल करेक्शन (10) फ़ाइनल करेक्शन चेकिंग।

❷ करीबुस्सौत (या'नी मिलती झुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इमतियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाजेह करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़सूस हुरूफ़ के नीचे डोट (.) लगाने का खुसूसी एहतियाम किया गया है जिस की तफ़सीली मा'लूमात के लिये तराजिम चार्ट का बग़ौर मुतालआ फ़रमाइयें।

❸ हिन्दी पढ़ने वालों को सहीह उर्दू तलफ़फ़ुज़ भी हिन्दी पढ़ने ही में हासिल हो जाएं इस लिये आसान मगर अस्ल उर्दू लुग़त के तलफ़फ़ुज़ के ऐन मुताबिक़ ही हिन्दी-जोड़णी रखी गई है और बतौर ज़रूरत ब्रेकेट में उर्दू लफ़ज़ हिज्जे के साथ ऐ'राब लगा कर रखा गया है। नीज़ उर्दू के मफ़तूह (ज़बर वाले) हर्फ़ को वाजेह करने के लिये हिन्दी के अक्षर (हर्फ़) के पहले डेश (-) और साकिन (जज़्म वाले) हर्फ़ को वाजेह करने के लिये हिन्दी के अक्षर (हर्फ़) के नीचे खोड़ा (؁) इस्ति'माल किया गया है। मषलन उ-लमा (عَلَمَاء) में "ल" मफ़तूह और रहम (رَحْمَة) में "ह" साकिन है।

﴿4﴾ उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां कहीं ऐन साकिन (ع) आता है उस की जगह पर हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है।  
जैसे : दा'वत (دَعْوَت)

﴿5﴾ अरबी-फ़ारसी मतन के साथ साथ अरबी किताबों के हवालाजात भी अरबी ही रखे गए हैं जब कि "عَزَّوَجَلَّ", "صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ" और "رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ" वगैरा को भी अरबी ही में रखा गया है।

इस किताब में अगर किसी जगह कमी-बेशी या ग़-लती पाएं तो मजलिसे तशजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब, e-mail या sms) मुत्तलअ फ़रमा कर षवाब कमाइये।

### उर्दू से हिन्दी (रश्मुल ख़त) का तशजिम चार्ट

त = ت	फ = ف	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
झ = جھ	ज = ج	ष = ٹ	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ
ढ = ڈھ	ध = دھ	ड = ڈ	द = د	ख = خ	ह = ح
ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڈھ	ड़ = ڈ	र = ر	ज़ = ذ
अ = ع	ज़ = ظ	त = ط	ज़ = ض	स = ص	श = ش
ग = گ	ख = کھ	क = ک	क = ق	फ = ف	ग = غ
य = ی	ह = ه	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
و = و	و = و	ف = ف	- = -	ی = ی	و = و

-: राबिता :-

मजलिसे तशजिम, मक्तबतुल मदीना (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, कासिम हाला मस्जिद, सेकन्ड फ़्लोर,  
नागर वाड़ा मेन रोड, बरोडा, गुजरात, अल हिन्द

Mo. +91 9327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

पे़शक़श : मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी)

कुरआनी वाकिआत व अजाइबात क बेहतरीन शुलदस्ता

# अजाइबुल कुरआन

मअ

# ग़राइबुल कुरआन

-: मोअल्लिफ़ :-

शैखुल हदीष हज़रते

अल्लामा अब्दुल मुस्तफ़ा आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ

-: पेशकश :-

मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिया (दा'वते इस्लामी)

(शो'बए तखरीज)

-: नाशिर :-

मक्तबतुल मदीना

421, उर्दू मार्केट, मटया महल, जामेअ मस्जिद,

देहली-110006 फ़ोन : 011-23284560

पेशकश : मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी)



وَعَلَىٰ إِلِكْ وَأَصْحِبِكَ يَا حَبِيبَ اللَّهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُولَ اللَّهِ

नाम किताब : अजाइबुल कुरआन मअ गराइबुल कुरआन  
 मोअल्लिफ : शैखुल हदीष हज़रते अल्लामा अब्दुल मुस्तफ़ा आ ज़मी <sup>عليه رَحْمَةُ اللَّهِ الْعَظِيمِ</sup>  
 पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या (शो 'बए तख़रीज)  
 सिने तबाअत : शा 'बानुल मुअज़्ज़म, सि. 1435 हि.  
 नाशिर : मक्तबतुल मदीना, देहली - 6

**-: मक्तबतुल मदीना की मुख्तलिफ़ शाख़ें :-**

- ✽...अहमदाबाद : फैज़ाने मदीना, तीकोनी बागीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदाबाद, गुजरात -1, फ़ोन : 9327168200
- ✽... मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई, फ़ोन : 022-23454429
- ✽... नागपूर : सैफ़ी नगर रोड, ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, मोमिन पूरा, नागपूर फ़ोन : 09373110621
- ✽.... अजमेर : 19 / 216 फ़लाहे दारैन मस्जिद के करीब, नल्ला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, फ़ोन : (0145) 2629385
- ✽....हुबली : A.J मुधल कोम्पलेक्स, A.J मुधल रोड, ओल्ड हुबली, कर्नाटक, फ़ोन : 08363244860
- ✽... हैदराबाद : मुग़ल पूरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, आन्ध्र प्रदेश, फ़ोन : (040) 2 45 72 786
- ✽... कानपूर : मस्जिद मख़दूमे सिमनानी, डिपटी का पडाव, गुर्बत पार्क, कानपूर, फ़ोन : 09335272252
- ✽... बनारस : अल्लू की मस्जिद के पास, अम्बा शाह की तकया, मदन पूरा, बनारस, फ़ोन : 09369023101

**E.mail : ilmiapak@dawateislami.net**

**www.dawateislami.net**

**मदनी इलतिजा : किसी और को येह (तख़रीज शुदा) किताब छापने की इजाज़त नहीं**

**पेशकश : मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी)**

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ  
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

## अल मदीनतुल इलिमय्या

अजः शैखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा  
मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरि रज़वी ज़ियाई **دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ**

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَبِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक  
“दा'वते इस्लामी” नेकी की दा'वत, इह्याए सुन्नत और इशाअते इल्मे  
शरीअत को दुन्या भर में आम करने का अजमे मुसम्मम रखती है, इन  
तमाम उमूर को ब हुस्ने खूबी सर अन्जाम देने के लिये मुतअद्दिद मजालिस  
का क़ियाम अमल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस  
“अल मदीनतुल इलिमय्या” भी है जो दा'वते इस्लामी के  
उ-लमा व मुफ़्तयाने किराम **كَثَرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى** पर मुश्तमिल है, जिस ने  
ख़ालिस इल्मी, तहकीकी और इशाअती काम का बीड़ा उठाया है। इस के  
मुन्दरिजए जैल छे शो'बे हैं :

- ﴿1﴾ शो'बए कुतुबे आ'ला हज़रत    ﴿2﴾ शो'बए दर्सी कुतुब
- ﴿3﴾ शो'बए इस्लाही कुतुब        ﴿4﴾ शो'बए तराजिमे कुतुब
- ﴿5﴾ शो'बए तफ़्तीशे कुतुब        ﴿6﴾ शो'बए तख़रीज

“अल मदीनतुल इलिमय्या” की अव्वलीन तरजीह सरकारे आ’ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अज़ीमुल बरकत, अज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, हामिये सुन्नत, माहिये बिदअत, आलिमे शरीअत, पीरे तरीक़त, बाइषे खैरो बरकत, हज़रते अल्लामा मौलाना अलहाज अल हाफ़िज़ अल क़ारी अशशाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़सरे हाज़िर के तकाज़ों के मुताबिक़ हत्तल वुस्अ सहल उस्लूब में पेश करना है।

तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इल्मी, तहक़ीकी और इशाअती मदनी काम में हर मुमकिन तआवुन फ़रमाएं और मजलिस की तरफ़ से शाएअ होने वाली कुतुब का खुद भी मुतालआ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरगीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ “दा’वते इस्लामी” की तमाम मजालिस ब शुमूल “अल मदीनतुल इलिमय्या” को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक्की अता फ़रमाए और हमारे हर अमले खैर को ज़ेवरे इख़लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए।

امین بجاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ



रमजानुल मुबारक, 1425



नम्बर शुमार	अज़ाइबुल क़ुरआन की फ़ेहरिस्त	सफ़्हा नम्बर
1	पेशे लफ़्ज़	18
2	क्यूं लिखा ? और क्या लिखा ?	19
3	जन्मती लाठी	21
4	अ़सा अज़दहा बन गया	23
5	अ़सा मारने से चश्मे जारी हो गए	24
6	अ़सा की मार से दरया फट गया	25
7	दौड़ने वाला पथ्थर	27
8	पहला मो'जिज़ा	27
9	दूसरा मो'जिज़ा	29
10	एक शुबे का इज़ाला	30
11	मैदाने तीह	31
12	रोशन हाथ	32
13	मन्न व सलवा	33
14	बारह हज़ार यहूदी बन्दर हो गए	34
15	दुन्या की सब से कीमती गाए	37
16	सत्तर हज़ार मुर्दे ज़िन्दा हो गए	41
17	हज़रते हज़क़ील عَلَيْهِ السَّلَام कौन थे ?	41
18	मुर्दे के ज़िन्दा होने का वाक़िआ	42

19	लतीफ़ा	45
20	सो बरस तक मुर्दा रहे फिर ज़िन्दा हो गए	46
21	बख़्त नसर कौन था ?	47
22	ताबूते सकीना	52
23	ताबूते सकीना में क्या था ?	54
24	ज़ब्दु हो कर ज़िन्दा हो जाने वाले परन्दे	57
25	मुर्दों को पुकारना	58
26	तसव्वुफ़ का एक नुक्ता	59
27	तालूत की बादशाही	59
28	हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام किस तरह बादशाह बने ?	62
29	हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام का ज़रीअ़ मुआश	63
30	मेहराबे मरयम	65
31	हज़रते मरयम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا बा करामत वलिय्या हैं	67
32	इबादत गाह मक़ामे मक़बूलिय्यत है	67
33	क़ब्रों के पास दुआ	68
34	मक़ामे इब्राहीम	68
35	हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के चार मो'जिज़ात	70
36	मिट्टी के परन्द बना कर उड़ा देना	71
37	मादरज़ाद अन्धों को शिफ़ा देना	72

38	मुर्दों को ज़िन्दा करना	72
39	बुढ़िया का बेटा	72
40	आशिर की बेटी	72
41	हज़रते साम बिन नूह <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small>	72
42	जो खाया और छुपाया उस को बता देना	73
43	हज़रते ईसा <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> आस्मान पर	74
44	ईसाइयों का मुबाहिले से फ़िरार	76
45	हज़रते ख़जनदी <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small> और बसाती शाइर	80
46	अबुल हसन हम्दानी की मुर्गी	81
47	बलख़ का हर आदमी झूटा हो गया	81
48	पांच हज़ार फ़िरिश्ते मैदाने जंग में	82
49	सब से पहला कातिल व मक्तूल	85
50	मुर्दा दफ़्न करना कव्वे ने सिखाया	90
51	आस्मानी दस्तर ख़्वान	91
52	हज़रते इब्राहीम <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> का ए'लाने तौहीद	94
53	फ़िरऔनियों पर लगातार पांच अज़ाब	97
54	तूफ़ान	97
55	टिड्डियां	98
56	घुन	99

57	मेंडक	99
58	खून	100
59	हज़रते सालेह <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> की ऊंटनी	103
60	क़दार बिन सालिफ़	104
61	ज़लज़ले का अज़ाब	104
62	एक लाख चालीस हज़ार यज़ीदी मक्तूल	106
63	अज़ाब की ज़मीन मन्हूस	106
64	क़ौमे आद की आंधी	107
65	उलट पलट हो जाने वाला शहर	110
66	शहरे सुदूम	110
67	सामरी का बछड़ा	114
68	सामरी	114
69	सरों के ऊपर पहाड़	117
70	ज़बान लटक कर सीने पर आ गई	118
71	बल्अम बिन बाऊरा क्यों ज़लील हुवा ?	121
72	हज़रते यूनुस <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> मछली के पेट में	123
73	नैनवा	123
74	अज़ाब टलने की दुआ	124
75	चार महीने के बच्चे की गवाही	127

76	हज़रते यूसुफ़ <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> का कुर्ता	129
77	हिकायत	131
78	सूरए यूसुफ़ का खुलासा	134
79	हज़रते या'कूब <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> की वफ़ात	144
80	हज़रते यूसुफ़ <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> की कब्र	145
81	मक्कए मुकर्रमा क्यूं कर आबाद हुवा ?	145
82	दुआए इब्राहीमी का अषर	148
83	अबू लहब की बीवी को रसूलुल्लाह <small>ﷺ</small> नज़र न आए	150
84	अस्हाबे कहफ़ (ग़ार वाले)	151
85	अस्हाबे कहफ़ कौन थे ?	151
86	अस्हाबे कहफ़ की ता'दाद	154
87	अस्हाबे कहफ़ के नाम	156
88	अस्हाबे कहफ़ के नामों के ख़वास	156
89	अस्हाबे कहफ़ कितने दिनों तक सोते रहे	156
90	सफ़रे मजमउल बहरैन की झलकियां	157
91	हज़रते ख़िज़र <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> का तआरूफ़	162
92	हज़रते ख़िज़र <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> जिन्दा वली हैं	163
93	हज़रते जुल करनैन और याजूज व माजूद	163
94	सिकन्दर जुल करनैन क्यूं कहलाए ?	164

95	हज़रते जुल करनैन के तीन सफ़र	164
96	पहला सफ़र	165
97	दूसरा सफ़र	165
98	तीसरा सफ़र	166
99	याजूज व माजूज	166
100	सद्दे सिकन्दरी	166
101	सद्दे सिकन्दरी कब टूटेगी ?	167
102	शजरे मरयम और नहरे जिब्रील <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small>	168
103	हज़रते ईसा <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> की पहली तक्रीर	170
104	हज़रते इदरीस <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small>	171
105	दरया की मौजों से मां की गोद में	174
106	हज़रते मूसा <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> की वालिदा का नाम	176
107	हज़रते इब्राहीम <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> की बुत शिकनी	176
108	हज़रते इब्राहीम <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> का तवक्कुल	179
109	कौन सी दुआ पढ़ कर आप आग में गए	180
110	आप कितनी देर तक आग में रहे	180
111	हज़रते अय्यूब <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> का इम्तिहान	181
112	हज़रते सुलैमान <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> और एक च्यूटी	184
113	लतीफ़ा	186



114	हज़रते सुलैमान <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> का हुद हुद	187
115	तख़्ते बिल्कीस किस तरह आया ?	189
116	हज़रते सुलैमान <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> की बे मिष्ल वफ़ात	192
117	कारून का अन्जाम	194
118	कारून का ख़ज़ाना	196
119	हज़रते मूसा <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> की नसीहत	197
120	कारून ज़मीन में धंस गया	197
121	रूमी मग़लूब हो कर फिर ग़ालिब होंगे	199
122	ग़ज़वए अहज़ाब की आंधी	200
123	कौमे सबा का सैलाब	204
124	सैलाब किस तरह आया ?	205
125	हज़रते ईसा <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> के तीन मुबल्लिगीन	206
126	फूला बाग़ मिनटों में ताराज	210
127	दरबारे दावूद <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> में एक अजीब मुक़द्दमा	211
128	إِنْ شَاءَ اللَّهُ छोड़ने का नुक्सान	213
129	अस्हाबिल उख़्दूद के मज़ालिम	215
130	चार काबिले इब्रत औरतें	218
131	वाहिला	218
132	वाइला	219

133	हज़रते आसिय्या رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا	219
134	हज़रते मरयम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا	220
135	हज़रते फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا के तीन रोज़े	221
136	शद्दाद की जन्नत	222
137	अस्हाबे फ़ील व लश्करे अबामील	224
138	फ़त्हे मक्का की पेश गोई	227
139	बैतुल्लाह में दाख़िला	229
140	शहनशाहे दो आलम صَلَّی اللهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का दरबारे आ़म	230
141	फ़त्हे मक्का की तारीख़	231
142	जादू का इलाज	234
143	हज़रते ख़िज़र عَلَيْهِ السَّلَام की बताई हुई दुआ	236
144	तिलावत की अहम्मियत व आदाब	237
145	तिलावत के चन्द आदाब	238



नम्बर शुमार	अज़ाबुल क़ुरआन की फ़ेहरिस्त	सफ़्हा नम्बर
1	अर्जे मुसन्नफ़	242
2	तख़लीके आदम عَلَيْهِ السَّلَام	243
3	ख़िलाफ़ते आदम عَلَيْهِ السَّلَام	248
4	इलूमे आदम عَلَيْهِ السَّلَام की एक फ़ेहरिस्त	255

5	इब्लीस क्या था और क्या हो गया	256
6	बनी इस्राईल पर ताऊन का अज़ाब	260
7	सफ़ा व मरवा	262
8	सत्तर आदमी मर कर ज़िन्दा हो गए	265
9	एक तारीख़ी मुनाज़रा	267
10	नमरूद कौन था ?	267
11	इन्सानों में हमेशा दुश्मनी रहेगी	271
12	हज़रते आदम <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> की तौबा कैसे क़बूल हुई ?	273
13	हज़रते ईसा <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> के हवारी	276
14	मुर्तदीन से जिहाद करने वाले	281
15	ज़मानए रिसालत के तीन मुर्तदीन	281
16	ख़िलाफ़ते सिद्दीके अक़बर के सात मुर्तदीन क़बाइल	282
17	दौरे फ़ारूकी का मुर्तदीन क़बीला	283
18	काफ़िरों की मायूसी	284
19	इस्लाम और साधू की ज़िन्दगी	287
20	दो बड़े एक छोटा दुश्मन	290
21	अम्बिया <small>عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام</small> के कातिल	291
22	हज़रते यहुया <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> की शहादत	292
23	हज़रते ज़करिय्या <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> का मक़तल	292

24	मुनाफ़िकों की एक साज़िश	294
25	हज़रते इल्यास <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small>	296
26	हज़रते इल्यास <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> और कुरआन	299
27	जंगे बद्र की बारिश	300
28	जंगे हुनैन	304
29	गारे घौर	307
30	मस्जिदे ज़ार जला दी गई	309
31	फ़िराँन का ईमान मक्बूल नहीं हुवा	313
32	नूह <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> की कशती	316
33	तूफ़ान बरपा करने वाला तन्नूर	319
34	जूदी पहाड़	320
35	नूह <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> का बेटा गर्क हो गया	321
36	तूफ़ान क्यूंकर ख़त्म हुवा	323
37	एक गुस्ताख़ पर बिजली गिर पड़ी	326
38	पांच दुश्मनाने रसूल	328
39	तमाम सुवारियों का ज़िक्र कुरआन में	330
40	ऊंट	331
41	घोड़ा	332
42	ख़च्चर	335

43	गधा	333
44	शहद की मखबी	334
45	खूसट उम्र वाला	337
46	बे वुकूफ बुदिया	340
47	हसूर गाउं की बरबादी	341
48	हज़रते जुल किफ़ल عَلَيْهِ السَّلَام	342
49	नहूरें उठा ली जाएंगी	344
50	तख़लीके इन्साना के मराहिल	345
51	मुबारक दरख़्त	346
52	अस्हाबुरस कौन हैं ?	348
53	कौले अब्वल	349
54	कौले दुवुम	349
55	कौले सिवुम	349
56	कौले चहारुम	349
57	कौले पन्जुम	350
58	कौले शशुम	350
59	कौले हफ़तुम	351
60	कौले हशतुम	351
61	अस्हाबे ईका की हलाकत	351

62	एक ज़रूरी तौज़ीह	353
63	हज़रते मूसा <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> की हिजरत	354
64	मकड़ी का घर	356
65	मकड़ी	357
66	हज़रते लुक्मान हकीम <small>رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ</small>	357
67	हिकमत क्या है ?	359
68	अमानत क्या है ?	361
69	जिन्न और जानवर फ़रमां बरदार	363
70	हवा पर हुक्मत	366
71	तांबे के चश्मे	368
72	हज़रते सुलैमान <small>عَلَيْهِ السَّلَام</small> के घोड़े	369
73	पहाड़ों और परन्दों की तस्बीह	370
74	फ़िरिश्तों के बाल व पर	372
75	अबू जहल की गर्दन का तौक	374
76	हामिलाने अर्श की दुआ	376
77	साहिबे अवलाद और बांझ	378
78	फ़ासिक की ख़बर पर ए'तिमाद मत करो	381
79	मलाइका मेहमान बन कर आए	383
80	चांद दो टुकड़े हो गया	386



81	किसी क़ौम का मज़ाक़ न उड़ाओ	388
82	लोहा आस्मान से उतरा है	390
83	सहाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان की सखावत	392
84	यहूदियों की जिलावतनी	395
85	एक अजीब वज़ीफ़ा	398
86	हिकायते अजीबा	399
87	पांच मशहूर और पुराने बुत	402
88	अबू जहल और खुदा के सिपाही	405
89	शबे क़द्र	407
90	मोमिनों को मलाइका की सलामी	408
91	ज़मीन बात चीत करेगी	410
92	मुजाहिदीन के घोड़ों की अज़मत	411
93	कुरैश के दो सफ़र	413
94	कुफ़्र व इस्लाम में मुफ़ाहमत ग़ैर मुमकिन	415
95	अल्लाह तआला की चन्द सिफ़तें	416
96	उलूम व मअरुफ़ का न ख़त्म होने वाला ख़ज़ाना	417
97	माख़ज़ो मराजेअ	421
98	इल्मिय्या कुतुब फ़ेहरिस्त	423
99	याद दाश्त सफ़हा	429

## पेशे लफ्ज़

الرَّحْمَنُ الرَّحِيمُ हमारी येह कोशिश है कि अपने अकाबिरीन की कुतुब को अहसन उस्लूब में पेश करें। इस सिलसिले में इमामे अहले सुन्नत मौलाना इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن के कई रसाइल (तख़रीज व तस्हील शुदा) तब्ब़ हो कर अ़वाम व ख़वास से ख़िराजे तहसीन पा चुके हैं। जब कि “बहारे शरीअत” (तीन जिल्दों में मुकम्मल) भी शाएअ हो चुकी है। अब “अजाइबुल कुरआन मअ ग़राइबुल कुरआन” पेशे ख़िदमत है जो शैख़ुल हदीष हज़रते अल्लामा अब्दुल मुस्तफ़ा आ'ज़मी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ की तालीफ़ है। इस में कुरआनी वाकिआत को इन्तिहाई दिलचस्प अन्दाज़ में बयान किया गया है।

तबाअते जदीद के लिये इस किताब के मुसव्वदे की ततबीक़ मुस्तनद नुस्खा जात से की गई है। हवाला जात की तख़रीज कर दी गई है और आयात का तर्जमा इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰन के तर्जमए कुरआन “कन्ज़ुल ईमान” से दर्ज किया गया है।

अल्लाह तअ़ाला से दुआ है कि हमें “अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह की कोशिश” करने के लिये मदनी इन्आमात पर अमल और मदनी काफ़िलों का मुसाफ़िर बनते रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और दा'वते इस्लामी की तमाम मजालिस ब शुमूल मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक्की अता फ़रमाए।

اٰمِيْنَ بِجَاہِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

शो 'बए तख़रीज

( मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या )

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

حَامِدًا وَمُصَلِّيًا وَمُسْلِمًا

## क्यूं लिखा ? और क्या लिखा ?

रबीउल अव्वल सि. 1400 हि. में चन्द मुक्तदिर उ-लमाए अहले सुन्नत ने अपनी ख्वाहिश ब सूरते फ़रमाइश ज़ाहिर फ़रमाई कि मैं कुरआने मजीद का एक तर्जमा सलीस और आम फ़हम ज़बान में लिख दूँ, उस वक़्त पहली बार मुझ पर फ़ालिज का हम्ला हो चुका था। मैं ने जवाब में उन हज़रात से अपनी ज़ईफ़ी और बीमारी का उज़्र कर के इस काम से मुआफ़ी त़लब कर ली। और अर्ज कर दिया कि अगर चन्द साल क़ब्ल आप लोगों ने इस तरफ़ तवज्जोह दिलाई होती तो मैं ज़रूर येह काम शुरूअ कर देता मगर अब जब कि ज़ईफ़ी के साथ मरजे फ़ालिज ने मेरी तुवानाइयों को बिल्कुल मुजमहिल कर दिया है, इतना बड़ा काम मेरे बस की बात नहीं। फिर बा'ज अज़ीजों ने कहा कि अगर पूरे कुरआने मजीद का तर्जमा आप नहीं लिखते तो “नवादिरुल हदीष” की तरह कुरआने मजीद की चन्द आयतों ही का तर्जमा और तफ़सीर लिख कर आयतों की मुनासिब तशरीह कर देते तो बहुत अच्छा और बेहद मुफ़ीद इल्मी काम हो जाता।

येह काम मेरे नज़दीक बहुत सहल था। चुनान्वे, मैं ने **توكلًا على الله** इस काम को शुरूअ कर दिया। मगर अभी तकरीबन एक सो सफ़हात का मुसव्वदा लिखने पाया था कि नागहां 13 दिसम्बर सि. 1981 ई, को रात में सोते हुवे फ़ालिज का दूसरी मरतबा हम्ला हुवा। और बायां हाथ और बायां पाउं इस तरह मफ़लूज हो गए कि इन में हिस्स व हरकत ही बाक़ी न रही। फ़ौरन ही ब ज़रीअए जीप बराउन शरीफ़ से दो त़ालिबे इल्मों की मदद से अपने मकान पर घोसी आ गया और दो माह पलंग पर पड़ा रहा। मगर **الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ** कि बहुत जल्द खुदावन्दे करीम का फ़ज़ले अज़ीम हो गया कि हाथ पाउं में हिस्स व हरकत पैदा हो गई और तीन माह के बा'द मैं खड़ा होने लगा और रफ़ता रफ़ता **بِحَمْدِ اللَّهِ تَعَالَى** इस काबिल हो गया कि जुमुआ व जमाअत के लिये मस्जिद तक जाने लगा।

चुनान्चे, वोह मुसव्वदा जो ना तमाम रह गया था, अब ब हालते मरज़ इस को मुकम्मल कर के “अज़ाइबुल कुरआन” के नाम से नाज़िरीन की ख़िदमत में पेश करता हूँ।

इस मजमूए में कुरआने मजीद की मुख़्तलिफ़ सूरतों से चुन कर पैसठ उन अजीब अजीब चीज़ों और तअज्जुब खैज़ व हैरत अंगेज़ वाकिआत को जिन का कुरआने मजीद में मुख़्तसर तज़क़िरा है, नक़ल कर के उन की मुनासिब तफ़सील व तौज़ीह तहरीर कर दी है और इन वाकिआत के दामनों में जो इब्रतें और नसीहतें छुपी हुई हैं, उन को भी “दर्से हिदायत” के इन्वान से पेश कर दिया है।

दुआ है कि खुदावन्दे करीम मेरी दूसरी तस्नीफ़ात की तरह इस उन्नीसवीं किताब को भी मक्बूलिय्यते दारैन की करामतों से सरफ़राज़ फ़रमा कर नाफ़ेज़ल ख़लाइफ़ बनाए और इस ख़िदमत को मेरे और मेरे वालिदैन् नीज़ मेरे उस्ताज़ व तलामिज़ा व मुरीदीन् व अहबाब के लिये ज़ादे आख़िरत व ज़रीअए मग़फ़िरत बनाए और मेरे नवासे मौलवी फ़ैज़ुल हक़ साहिब رحمۃ اللہ علیہ को अल्लिमे बा अमल बनाए। और उन को जज़ाए खैर अता फ़रमाए कि वोह इस किताब की तदवीन् व तबईज़ और तबाअत वगैरा में मेरे दस्त व बाजू बने रहे। (आमीन्)

येह किताब इस हाल में तहरीर कर रहा हूँ कि कमज़ोरी व नकाहत से चलना फिरना दुश्वार हो रहा है। मगर الحمد لله कि दाहिना हाथ काम कर रहा है और दिलो दिमाग़ बिल्कुल दुरुस्त हैं। इलाज का सिलसिला जारी है।

कारिईन् व नाज़िरीने किराम दुआ फ़रमाएं कि मौला तअ़ाला मुझे जल्द शिफ़ायाब फ़रमाए ताकि मैं आख़िरे हयात तक दर्से हदीष व दीनी तसानीफ़ व मवाइज़ का सिलसिला जारी रख सकूँ।

وماذلک علی اللہ بعزیز وهو حسبی ونعم الوکیل والحمد للہ رب العالمین

وصلی اللہ تعالیٰ علی خیر خلقہ محمد والہ وصحبہ اجمعین۔

अब्दुल मुस्तफ़ा आ'ज़मी رحمۃ اللہ علیہ



بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

نَحْمَدُهُ وَنُصَلِّي عَلَى رَسُولِهِ الْكَرِيمِ

### ﴿1﴾ जन्नती लाठी

येह हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की वोह मुक़द्दस लाठी है जिस को “असाए मूसा” कहते हैं इस के ज़रीए आप के बहुत से उन मो’जिज़ात का जुहूर हुवा जिन को कुरआने मजीद ने मुख़्तलिफ़ उन्वानों के साथ बार बार बयान फ़रमाया है।

इस मुक़द्दस लाठी की तारीख़ बहुत क़दीम है जो अपने दामन में सेंकड़ों उन तारीख़ी वाकिआत को समेटे हुवे है जिन में इब्रतों और नसीहतों के हज़ारों निशानात सितारों की तरह जगमगा रहे हैं जिन से अहले नज़र को बसीरत की रोशनी और हिदायत का नूर मिलता है।

येह लाठी हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के क़द बराबर दस हाथ लम्बी थी। और इस के सर पर दो शाखें थीं जो रात में मशअल की तरह रोशन हो जाया करती थीं। येह जन्नत के दरख़्त पीलू की लकड़ी से बनाई गई थी और इस को हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام बहिश्त से अपने साथ लाए थे। चुनान्वे, हज़रते सय्यिद अली हिजवेरी عَلَيْهِ الرِّحْمَةُ ने फ़रमाया कि

وَأَدُمُ مَعَهُ أَنْزَلَ الْعُودَ وَالْعَصَا لِمُوسَى مِنَ الْأَسِ النَّبَاتِ الْمُكْرَمِ  
وَأَوْرَاقُ تَيْنٍ وَالْيَمِينُ بِمَكَّةَ وَخَتَمُ سُلَيْمَنَ النَّبِيِّ الْمُعْظَمِ

**तर्जमा :** हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के साथ उ़द (खुशबूदार लकड़ी), हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का असा (जो इज़्ज़त वाली पीलू की लकड़ी का था), अन्जीर की पत्तियां, हज़रे अस्वद जो मक्कए मुअज़्ज़मा में है और नबिय्ये मुअज़्ज़म हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की अंगूठी येह पांचों चीज़ें जन्नत से उतारी गई।

(تفسير الصاوى، ج ۱، ص ۲۹، البقرة: ۲۰)

हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के बा'द येह मुक़द्दस असा हज़रते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को यके बा'द दीगरे बतौरै मीराष के मिलता रहा । यहां तक कि हज़रते शोऐब عَلَيْهِ السَّلَام को मिला जो “क़ौमे मदयन” के नबी थे जब हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام मिस्र से हिजरत फ़रमा कर मदयन तशरीफ़ ले गए और हज़रते शोऐब عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी साहिबज़ादी (हज़रते बीबी सफूरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا) से आप का निकाह फ़रमा दिया । और आप दस बरस तक हज़रते शोऐब عَلَيْهِ السَّلَام की ख़िदमत में रह कर आप की बकरियां चराते रहे । उस वक़्त हज़रते शोऐब عَلَيْهِ السَّلَام ने हुक्मे खुदावन्दी (عَزَّوَجَلَّ) के मुताबिक़ आप को येह मुक़द्दस असा अता फ़रमाया ।

फिर जब आप अपनी ज़ौजए मोहतरमा को साथ ले कर मदयन से मिस्र अपने वतन के लिये रवाना हुवे और वादिये मुक़द्दस मक़ामे “तूवा” में पहुंचे तो **अल्लाह** तआला ने अपनी तजल्ली से आप को सरफ़राज़ फ़रमा कर मन्सबे रिसालत के शरफ़ से सरबुलन्द फ़रमाया । उस वक़्त हज़रते हक़ جِبْرِيل ने आप से जिस तरह कलाम फ़रमाया कुरआने मजीद ने उस को इस तरह बयान फ़रमाया कि

وَمَا تِلْكَ يَبِئَاسَ ۖ قَالَ هِيَ عَصَايَ ۖ أَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَ  
أَهْشَبَهَا عَلَى غَصْبِي ۚ وَلِي فِيهَا مَارِبٌ أُخْرَى ۚ (پ ۱۶، طه: ۱۸۰)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और येह तेरे दाहिने हाथ में क्या है ? ऐ मूसा ! अज़ की : येह मेरा असा है, मैं इस पर तक्या (टेक व सहारा) लगाता हूं और इस से अपनी बकरियों पर पत्ते झाड़ता हूं और मेरे इस में और काम हैं ।

**مَارِبٌ أُخْرَى** (दूसरे कामों) की तफ़सीर में हज़रते अल्लामा अबुल बरकात अब्दुल्लाह बिन अहमद नसफ़ी عَلَيْهِ الرِّحْمَةُ ने फ़रमाया कि मषलन : (1) उस को हाथ में ले कर उस के सहारे चलना (2) उस से बात चीत कर के दिल बहलाना (3) दिन में उस का दरख़्त बन कर आप पर साया करना (4) रात में उस की दोनों शाख़ों का रोशन हो कर आप



को रोशनी देना (5) उस से दुश्मनों, दरिन्दों और सांपों, बिच्छूओं को मारना (6) कुंवे से पानी भरने के वक्त उस का रस्सी बन जाना और उस की दोनों शाखों का डोल बन जाना (7) ब वक्ते ज़रूरत उस का दरख्त बन कर हस्वे ख़्वाहिश फल देना (8) उस को ज़मीन में गाड़ देने से पानी निकल पड़ना वगैरा ।

(مدارک التنزیل، ج ۳، ص ۲۵۱، پ ۱۶، طه: ۱۸)

हज़रते मूसा عليه السلام इस मुक़द्दस लाठी से मज़कूरा बाला काम निकालते रहे मगर जब आप फ़िरऔन के दरबार में हिदायत फ़रमाने की गरज़ से तशरीफ़ ले गए और उस ने आप को जादूगर कह कर झुटलाया तो आप के इस असा के ज़रीए बड़े बड़े मो'जिज़ात का जुहूर शुरू हो गया, जिन में से तीन मो'जिज़ात का तज़क़िरा कुरआने मजीद ने बार बार फ़रमाया जो हस्वे ज़ैल हैं ।

**असा अज़दहा बन गया :-** इस का वाक़िआ येह है कि फ़िरऔन ने एक मेला लगवाया । और अपनी पूरी सल्तनत के जादूगरों को जम्अ कर के हज़रते मूसा عليه السلام को शिकस्त देने के लिये मुक़ाबले पर लगा दिया । और उस मेले के इज़दहाम में जहां लाखों इन्सानों का मजमअ था, एक तरफ़ जादूगरों का हुजूम अपनी जादूगरी का सामान ले कर जम्अ हो गया । और उन जादूगरों की फ़ौज के मुक़ाबले में हज़रते मूसा عليه السلام तन्हा डट गए । जादूगरों ने फ़िरऔन की इज़्ज़त की क़सम खा कर अपने जादू की लाठियों और रस्सियों को फेंका तो एक दम वोह लाठियां और रस्सियां सांप बन कर पूरे मैदान में हर तरफ़ फुंकारें मार कर दौड़ने लगीं और पूरा मजमअ ख़ौफ़ व हिरास में बद हवास हो कर इधर उधर भागने लगा और फ़िरऔन और उस के तमाम जादूगर इस करतब को दिखा कर अपनी फ़तह के घमन्ड और गुरूर के नशे में बद मस्त हो गए और जोशे शादमानी से तालियां बजा बजा कर अपनी मसरत का इज़हार करने लगे कि इतने में नागहां हज़रते मूसा عليه السلام ने खुदा के हुक्म से अपनी मुक़द्दस लाठी को उन सांपों के हुजूम में डाल दिया तो येह लाठी एक

बहुत बड़ा और निहायत हैबत नाक अज़दहा बन कर जादूगरों के तमाम सांपों को निगल गया। यह मो'जिज़ा देख कर तमाम जादूगर अपनी शिकस्त का ए'तिराफ़ करते हुवे सजदे में गिर पड़े और बा आवाज़े बुलन्द येह ए'लान करना शुरू अ कर दिया कि **إِمَّا بَرِّ هُرُونُ وَمُوسَى** या'नी हम सब हज़रते हारून और हज़रते मूसा **عليهما السلام** के रब पर ईमान लाए।

चुनान्वे, कुरआने मजीद ने इस वाकिए का ज़िक्र करते हुवे इरशाद फ़रमाया कि

قَالُوا يَمُوسَى إِمَّا أَنْ تُلْقَى وَإِمَّا أَنْ تَكُونَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقَى ۖ قَالَ  
بَلْ أَلْقُوا فَإِذَا جَاءَهُمْ وَعَصِيَهُمْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ أَنَّهَا  
تَسْعَى ۚ فَأَوْجَسَ فِي نَفْسِهِ خِيفَةً مُوسَى ۚ قُلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنْتَ  
الْأَعْلَى ۚ وَأَلْقِ مَا فِي يَمِينِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوا ۖ إِنَّمَا صَنَعُوا كَيْدُ  
سُحْرٍ ۖ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ أَتَى ۚ فَأَلْقَى السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوا  
إِمَّا بَرِّ هُرُونُ وَمُوسَى ۚ (پ ۶، ط ۶۵ تا ۷۰)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** बोले ऐ मूसा या तो तुम डालो या हम पहले डालें, मूसा ने कहा बल्कि तुम्हीं डालो जभी उन की रस्सियां और लाठियां उन के जादू के ज़ोर से उन के खयाल में दौड़ती मा'लूम हुई तो अपने जी में मूसा ने खौफ़ पाया, हम ने फ़रमाया डर नहीं बेशक तू ही ग़ालिब है और डाल तो दे जो तेरे दाहिने हाथ में है वोह उन की बनावटों को निगल जाएगा वोह जो बना कर लाए हैं वोह तो जादूगर का फ़रैब है और जादूगर का भला नहीं होता कहीं आवे, तो सब जादूगर सजदे में गिरा लिये गए बोले हम उस पर ईमान लाए जो हारून और मूसा का रब है।

**असा मारने से चश्मे जारी हो गए :-** बनी इस्राईल का अस्ल वतन मुल्के शाम था लेकिन हज़रते यूसुफ़ **عليه السلام** के दौरे हुकूमत में येह लोग मिस्र में आ कर आबाद हो गए और मुल्के शाम पर क़ौमे अमालिका का तसल्लुत और कब्ज़ा हो गया। जो बदतरीन किस्म के कुफ़्फ़ार थे। जब फ़िराऊन दरयाए नील में ग़र्क हो गया और हज़रते मूसा **عليه السلام** को

फिरऔन के ख़तरात से इत्मीनान हो गया तो **अल्लाह** तआला ने हुक्म दिया कि क़ौमे अमालका से जिहाद कर के मुल्के शाम को उन के कब्जे व तसल्लुत से आज़ाद कराएं। चुनान्वे, आप छे लाख बनी इस्राईल की फ़ौज ले कर जिहाद के लिये रवाना हो गए मगर मुल्के शाम की हुदूद में पहुंच कर बनी इस्राईल पर क़ौमे अमालका का ऐसा ख़ौफ़ सुवार हो गया कि बनी इस्राईल हिम्मत हार गए और जिहाद से मुंह फेर लिया। इस नाफ़रमानी पर **अल्लाह** तआला ने बनी इस्राईल को येह सज़ा दी कि येह लोग चालीस बरस तक “मैदाने तीह” में भटकते और घूमते फिरे और इस मैदान से बाहर न निकल सके। हज़रते मूसा **عليه السلام** भी इन लोगों के साथ मैदाने तीह में तशरीफ़ फ़रमा थे। जब बनी इस्राईल इस बे आबो गयाह मैदान में भूक व प्यास की शिद्दत से बे क़रार हो गए तो **अल्लाह** तआला ने हज़रते मूसा **عليه السلام** की दुआ से इन लोगों के खाने के लिये “मन्न व सलवा” आस्मान से उतारा। मन्न शहद की तरह एक किस्म का हल्वा था, और सलवा भुनी हुई बटेरें थीं। खाने के बा’द जब येह लोग प्यास से बेताब होने लगे और पानी मांगने लगे तो हज़रते मूसा **عليه السلام** ने पथ्थर पर अपना असा मार दिया तो उस पथ्थर में बारह चश्मे फूट कर बहने लगे और बनी इस्राईल के बारह ख़ानदान अपने अपने एक चश्मे से पानी ले कर खुद भी पीने लगे और अपने जानवरों को भी पिलाने लगे और पूरे चालीस बरस तक येह सिलसिला जारी रहा। येह हज़रते मूसा **عليه السلام** का मो’जिज़ा था जो असा और पथ्थर के ज़रीए जुहूर में आया। कुरआने मजीद ने इस वाकिए और मो’जिजे का बयान करते हुवे इरशाद फ़रमाया कि

وَإِذْ اسْتَسْقَىٰ مُوسَىٰ لِقَوْمِهِ فَقُلْنَا اضْرِبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ فَانْفَجَرَتْ  
مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرِبَهُمْ <sup>(پ ۱، البقرة: ۶۰)</sup>

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिये पानी मांगा तो हम ने फ़रमाया उस पथ्थर पर अपना असा मारो फ़ौरन उस में से बारह चश्मे बह निकले। हर गुरौह ने अपना घाट पहचान लिया।

असा की मार से दरया फट गया :- हज़रते मूसा عليه السلام एक मुद्दे दराज़ तक फिरऔन को हिदायत फ़रमाते रहे और आयात व मो'जिज़ात दिखाते रहे मगर उस ने हक़ को क़बूल नहीं किया बल्कि और ज़ियादा उस की शरारत व सरकशी बढ़ती रही । और बनी इस्राईल ने चूँकि उस की खुदाई को तस्लीम नहीं किया इस लिये उस ने इन मोअमिनीन को बहुत ज़ियादा जुल्मो सितम का निशाना बनाया । इस दौरान में एक दम हज़रते मूसा عليه السلام पर वह्य़ उतरी कि आप अपनी क़ौम बनी इस्राईल को अपने साथ ले कर रात में मिस्र से हिज़रत कर जाएं । चुनान्वे, हज़रते मूसा عليه السلام बनी इस्राईल को हमराह ले कर रात में मिस्र से रवाना हो गए ।

जब फिरऔन को पता चला तो वोह भी अपने लश्करों को साथ ले कर बनी इस्राईल की गिरिफ़्तारी के लिये चल पड़ा । जब दोनों लश्कर एक दूसरे के करीब हो गए तो बनी इस्राईल फिरऔन के ख़ौफ़ से चीख़ पड़े कि अब तो हम फिरऔन के हाथों गिरिफ़्तार हो जाएंगे और बनी इस्राईल की पोज़ीशन बहुत नाज़ुक हो गई क्यूँकि इन के पीछे फिरऔन का खूँख़वार लश्कर था और आगे मौज़ें मारता हुवा दरया था । इस परेशानी के आलम में हज़रते मूसा عليه السلام मुतमइन थे और बनी इस्राईल को तसल्ली दे रहे थे । जब दरया के पास पहुंच गए तो **अल्लाह** तआला ने हज़रते मूसा عليه السلام को हुक्म फ़रमाया कि तुम अपनी लाठी दरया पर मार दो । चुनान्वे, जूँही आप ने दरया पर लाठी मारी तो फ़ौरन ही दरया में बारह सड़कें बन गईं और बनी इस्राईल उन सड़कों पर चल कर सलामती के साथ दरया से पार निकल गए । फिरऔन जब दरया के करीब पहुंचा और उस ने दरया की सड़कों को देखा तो वोह भी अपने लश्करों के साथ उन सड़कों पर चल पड़ा । मगर जब फिरऔन और उस का लश्कर दरया के बीच में पहुंचा तो अचानक दरया मौज़ें मारने लगा और सब सड़कें ख़त्म हो गईं और फिरऔन अपने लश्करों समेत दरया में गर्क हो गया । इस वाक़िए को कुरआने मजीद ने इस तरह बयान फ़रमाया कि

فَلَمَّا تَرَ آءِ الْجَبْعَيْنِ قَالَ اصْحَبْ مُوسَى إِنَّا لَمُدُّرُكُونَ ۖ قَالَ كَلَّا ۚ  
 إِنَّ مَعِيَ رَبِّي سَيَهْدِينِ ۖ فَأَوْحَيْنَا إِلَى مُوسَى أَنْ اصْحَبْ بِعَصَاكَ  
 الْبَحْرَ ۖ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيمِ ۖ وَأَرْفَأْنَاهُمْ  
 الْآخَرِينَ ۖ وَأَنْجَيْنَا مُوسَى وَمَنْ مَّعَهُ أَجْمَعِينَ ۖ ثُمَّ أَغْرَقْنَا  
 الْآخَرِينَ ۖ إِنَّ فِي ذَلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۖ

(प १९, الشعراء: १८१-१८८)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** फिर जब आमना सामना हुवा दोनों गुरौहों का, मूसा वालों ने कहा हम को उन्होंने ने आ लिया। मूसा ने फ़रमाया : यूँ नहीं बेशक मेरा रब मेरे साथ है वोह मुझे अब राह देता है। तो हम ने मूसा को वह्य़ फरमाई कि दरया पर अपना अ़सा मार तो ज़भी दरया फट गया तो हर हिस्सा हो गया जैसे बड़ा पहाड़। और वहां क़रीब लाए हम दूसरों को और हम ने बचा लिया मूसा और उस के सब साथ वालों को फिर दूसरों को डबो दिया बेशक इस में ज़रूर निशानी है और उन में अक़षर मुसलमान न थे।

येह हैं हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की मुक़द्दस लाठी के ज़रीए ज़ाहिर होने वाले वोह तीनों अज़ीमुश्शान मो'जिज़ात जिन को कुरआने करीम ने मुख़लिफ़ अल्फ़ाज़ और मुतअद्दिद उन्वानों के साथ बार बार बयान फ़रमा कर लोगों के लिये इब्रत और हिदायत का सामान बना दिया है। (وَاللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَمُ)

## ﴿2﴾ दौड़ने वाला पथ्थर

येह एक हाथ लम्बा एक हाथ चौड़ा चोकूर पथ्थर था, जो हमेशा हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के झोले में रहता था। इस मुबारक पथ्थर के ज़रीए हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के दो मो'जिज़ात का जुहूर हुवा। जिन का तज़क़िरा कुरआने मजीद में भी हुवा है।

**पहला मो'जिज़ा :-** इस पथ्थर का पहला अज़ीब कारनामा जो दर हकीकत हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का मो'जिज़ा था वोह इस पथ्थर की दानिशमन्दाना लम्बी दौड़ है और येही मो'जिज़ा इस पथ्थर के मिलने की तारीख़ है।

इस का मुफ़स्सल वाकिआ येह है कि बनी इस्राईल का येह आ़म दस्तूर था कि वोह बिल्कुल नंगे बदन हो कर मजमए आ़म में गुस्ल किया करते थे। मगर हज़रते मूसा عليه السلام गो कि इसी क़ौम के एक फ़र्द थे और इसी माहोल में पले बढे थे, लेकिन खुदावन्दे कुद्दूस ने उन को नबुव्वत व रिसालत की अज़मतों से सरफ़राज़ फ़रमाया था। इस लिये आप की इसमते नबुव्वत भला इस हया सोज़ बे ग़ैरती को कब गवारा कर सकती थी ? आप बनी इस्राईल की इस बेहयाई से सख़्त नालां और इन्तिहाई बेज़ार थे इस लिये आप हमेशा या तो तन्हाई में या तहबन्द पहन कर गुस्ल फ़रमाया करते थे। बनी इस्राईल ने जब येह देखा कि आप कभी भी नंगे हो कर गुस्ल नहीं फ़रमाते तो ज़ालिमों ने आप पर बोहतान लगा दिया कि आप के बदन के अन्दरूनी हिस्से में या तो बरस का सफ़ेद दाग़ या कोई ऐसा ऐब ज़रूर है कि जिस को छुपाने के लिये येह कभी बरहना नहीं होते और ज़ालिमों ने इस तोहमत का इस क़दर ए'लान और चर्चा किया कि हर कूचे व बाज़ार में इस का प्रोपेगन्डा फैल गया। इस मकरूह तोहमत की शोरिश का हज़रते मूसा عليه السلام के क़ल्बे नाज़ुक पर बड़ा सदमा व रंज गुज़रा और आप बड़ी कोफ़्त और अज़िय्यत में पड़ गए। तो खुदावन्दे कुद्दूस अपने मुक़द्दस कलीम के रंजो ग़म को भला कब गवारा फ़रमाता। और अपने एक बरगुज़ीदा रसूल पर एक ऐब की तोहमत भला ख़ालिके आ़लम को कब और क्यूंकर और किस तरह पसन्द हो सकती थी। अरहमर्राहिमीन ने आप की बराअत और बे ऐबी ज़ाहिर कर देने का एक ऐसा ज़रीआ़ पैदा फ़रमा दिया कि दम ज़दन में बनी इस्राईल के प्रोपेगन्डों और उन के शुक्क व शुब्हात के बादल छट गए और आप की बराअत और बे ऐबी का सूरज आप़ताबे आ़लम ताब से ज़ियादा रोशन व आशकार हो गया।

और वोह यूं हुवा कि एक दिन आप पहाड़ों के दामनों में छुपे हुवे एक चश्मे पर गुस्ल के लिये तशरीफ़ ले गए और येह देख कर कि यहां दूर दूर तक किसी इन्सान का नामो निशान नहीं है, आप अपने तमाम कपड़ों को एक पथ्थर पर रख कर और बिल्कुल बरहना बदन हो कर गुस्ल



फरमाने लगे, गुस्ल के बा'द जब आप लिबास पहनने के लिये पथ्थर के पास पहुंचे तो क्या देखा कि वोह पथ्थर आप के कपड़ों को लिये हुवे सरपट भागा चला जा रहा है। येह देख कर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام भी उस पथ्थर के पीछे पीछे दौड़ने लगे कि ثَوْبِي حَجَرٌ، ثَوْبِي حَجَرٌ या'नी ऐ पथ्थर ! मेरा कपड़ा। ऐ पथ्थर मेरा कपड़ा। मगर येह पथ्थर बराबर भागता रहा। यहां तक कि शहर की बड़ी बड़ी सड़कों से गुज़रता हुवा गली कूचों में पहुंच गया। और आप भी बरहना बदन होने की हालत में बराबर पथ्थर को दौड़ाते चले गए। इस तरह बनी इस्राईल के हर छोटे बड़े ने अपनी आंखों से देख लिया कि सर से पाउं तक आप के मुकद्दस बदन में कहीं भी कोई ऐब नहीं है बल्कि आप के जिस्मे अक्दस का हर हिस्सा हुस्नो जमाल में इस क़दर नुक़तए कमाल को पहुंचा हुवा है कि आ़म इन्सानों में इस की मिषाल तक़रीबन मुहाल है। चुनान्वे, बनी इस्राईल के हर हर फ़र्द की ज़बान पर येही जुम्ला था कि وَاللّٰهُ مَا يُمُوْسٰى مِنْ بَاسٍ या'नी खुदा की कसम मूसा बिल्कुल ही बे ऐब हैं।

जब येह पथ्थर पूरी तरह हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की बराअत का ए'लान कर चुका तो खुद ब खुद ठहर गया। आप ने जल्दी से अपना लिबास पहन लिया और उस पथ्थर को उठा कर अपने झोले में रख लिया।

(بخاری شریف، کتاب الانبیاء، باب ۳۰، ج ۲، ص ۲۲۲، رقم ۳۲۰۴، وتفسیر الصّوّی، ج ۵، ص ۲۵۹، پ ۲۲، الاحزاب: ۲۹)

**अल्लाह** तआला ने इस वाकिए का ज़िक्र कुरआने मजीद में इस तरह बयान फ़रमाया कि

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَكُونُوا كَالَّذِينَ إِذْ دُأْمُوسَىٰ فَبَرَآءَ اللَّهُ مِنْهَا

قَالُوا ۖ وَكَانَ عِندَ اللَّهِ وَجِبَتًا ﴿٢٩﴾ (پ ۲۲، الاحزاب: ۲۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- ऐ ईमान वालो उन जैसे न होना जिन्हों ने मूसा को सताया तो **अल्लाह** ने उसे बरी फ़रमा दिया इस बात से जो उन्होंने ने कही। और मूसा **अल्लाह** के यहां आबरू वाला है।

दूसरा मो'जिज़ा :- “मैदाने तीह” में इसी पथ्थर पर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपना अ़सा मार दिया था तो इस में से बारह चश्मे जारी

हो गए थे जिस के पानी को चालीस बरस तक बनी इस्राईल मैदाने तीह में इस्ति'माल करते रहे। जिस का पूरा वाकिआ पहले गुज़र चुका है। कुरआने मजीद की आयत

فَقُلْنَا أَصْرُبْ بِعَصَاكَ الْحَجَرَ ﴿١٠﴾ (پ ۱، البقرة: ۱۰)

में “पथ्थर” से येही पथ्थर मुराद है।

**एक शुबे का इज़ाला :-** मो'जिज़ात के मुन्किरीन जो हर चीज़ को अपनी नाकिस अक्ल की ऐनक ही से देखा करते हैं। इस पथ्थर से पानी के चश्मों का जारी होना मुहाल करार दे कर इस मो'जिज़े का इन्कार करते हैं और कहते हैं कि हमारी अक्ल इस को कबूल नहीं कर सकती कि इतने छोटे से पथ्थर से बारह चश्मे जारी हो गए। हालांकि येह मुन्किरीन अपनी आंखों से देख रहे हैं कि बा'ज पथ्थरों में खुदावन्दे तआला ने येह ताषीर पैदा फ़रमा दी है कि वोह बाल मूंड देते हैं, बा'ज पथ्थरों का येह अषर है कि वोह सिके को तेज़ और तुर्श बना देते हैं, बा'ज पथ्थरों की येह ख़ासिय्यत है कि वोह लोहे को दूर से खींच लेते हैं, बा'ज पथ्थरों से मुज़ी जानवर भाग जाते हैं, बा'ज पथ्थरों से जानवरों का ज़हर उतर जाता है, बा'ज पथ्थर दिल की धड़कन के लिये तिर्याक़ है, बा'ज पथ्थरों को न आग जला सकती है न गर्म कर सकती है, बा'ज पथ्थरों से आग निकल पड़ती है, बा'ज पथ्थरों से आतशे फ़शां फट पड़ता है तो जब खुदावन्दे कुद्स ने पथ्थरों में किस्म किस्म के अषरात पैदा फ़रमा दिये हैं तो फिर इस में कौन सी ख़िलाफ़े अक्ल और मुहाल बात है कि हज़रते मूसा عليه السلام के इस पथ्थर में **अल्लाह** तआला ने येह अषर बख़्श दिया और इस में येह ख़ासिय्यत अता फ़रमा दी कि वोह ज़मीन के अन्दर से पानी ज़ब्ब कर के चश्मों की शक़ल में बाहर निकालता रहे या इस पथ्थर में येह ताषीर हो कि जो हवा इस पथ्थर से टकराती हो वोह पानी बन कर मुसलसल बहती रहे येह खुदावन्दे कादिर व क़दीर की कुदरत से हरगिज़ हरगिज़ न कोई बर्दद है न मुहाल न ख़िलाफ़े अक्ल। लिहाज़ा इस मो'जिज़े पर ईमान लाना ज़रूरिय्याते दीन में से है और इस का इन्कार कुफ़्र है कुरआने मजीद में है :

وَأَنَّ مِنَ الْجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهَارُ وَأَنَّ مِنْهَا لَمَاءٌ شَقِيقٌ  
فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَاءُ وَأَنَّ مِنْهَا لَمَاءٌ يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللَّهِ ۚ (پ ۱، البقرة: ۷۴)

**तर्जमए कज्जुल ईमान :-** और पथ्थरों में तो कुछ वोह हैं जिन से नदियां बह निकलती हैं और कुछ वोह हैं जो फट जाते हैं तो उन से पानी निकलता है और कुछ वोह हैं कि **अल्लाह** के डर से गिर पड़ते हैं ।

बहर हाल पथ्थरों से पानी निकलना येह रोज़ाना का चश्मदीद मुशाहदा है तो फिर भला हज़रते मूसा **عليه السلام** के पथ्थर से पानी के चश्मों का जारी हो जाना क्यूंकर ख़िलाफ़े अक्ल और मुहाल करार दिया जा सकता है ।

### ﴿3﴾ मैदाने तीह

जब फिरऔन दरयाए नील में गर्क हो गया और तमाम बनी इस्राईल मुसलमान हो गए और जब हज़रते मूसा **عليه السلام** को इत्मीनान नसीब हो गया तो **अल्लाह** तआला का हुक्म हुवा कि आप बनी इस्राईल का लश्कर ले कर अर्जे मुक़द्दस (बैतुल मुक़द्दस) में दाख़िल हो जाएं । उस वक़्त बैतुल मुक़द्दस पर अमालका की क़ौम का क़ब्ज़ा था जो बदतरीन कुफ़्फ़ार थे और बहुत ताक़तवर जंगजू और निहायत ही ज़ालिम लोग थे चुनान्चे,

हज़रते मूसा **عليه السلام** छे लाख बनी इस्राईल को हमराह ले कर क़ौमे अमालका से जिहाद के लिये रवाना हुवे मगर जब बनी इस्राईल बैतुल मुक़द्दस के करीब पहुंचे तो एक दम बुज़दिल हो गए और कहने लगे कि इस शहर में “जब्बारीन” (अमालका) हैं जो बहुत ही ज़ोर आवर और ज़बरदस्त हैं । लिहाज़ा जब तक येह लोग शहर में रहेंगे हम हरगिज़ हरगिज़ शहर में दाख़िल नहीं होंगे बल्कि बनी इस्राईल ने हज़रते मूसा **عليه السلام** से यहां तक कह दिया कि ऐ मूसा आप और आप का खुदा जा कर इस ज़बरदस्त क़ौम से जंग करें । हम तो यहीं बैठे रहेंगे । बनी इस्राईल की ज़बान से येह सुन कर हज़रते मूसा **عليه السلام** को बड़ा रंज व सदमा हुवा और आप ने बारी तआला के दरबार में येह अर्ज़ किया कि

رَبِّ إِنِّي لَا أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي وَأَعْيَا فَا فَرَّقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٢٥﴾ (پ ۶، المائدة: ۲۵)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** ऐ रब मेरे मुझे इख़्तियार नहीं मगर अपना और अपने भाई का तो तू हम को इन बे हुक्मों से जुदा रख ।

इस दुआ पर **अल्लाह** तआला ने अपने ग़ज़ब व जलाल का इज़हार करते हुवे फ़रमाया कि

فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ سَنَةً يَتِيَهُونَ فِي الْأَرْضِ ۖ فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفَاسِقِينَ ﴿٢٦﴾ (المائدة: २६)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** तो वोह ज़मीन उन पर हराम है चालीस बरस तक भटकते फिरें ज़मीन में तो तुम उन बे हुक्मों का अप्सोस न खाओ ।

इस का नतीजा येह हुवा कि येह छे लाख बनी इस्राईल एक मैदान में चालीस बरस तक भटकते रहे मगर इस मैदान से बाहर न निकल सके । इसी मैदान का नाम “मैदाने तीह” है । इस मैदान में बनी इस्राईल के खाने के लिये “मन्न व सलवा” नाज़िल हुवा । और पथ्थर पर हज़रते मूसा **عليه السلام** ने अपना असा मार दिया तो पथ्थर में से बारह चश्मे जारी हो गए । इस वाक़िए को कुरआने मजीद ने बार बार मुख़्तलिफ़ उन्वानों के साथ बयान फ़रमाया है । जिस में से सूरए माइदह में येह वाक़िआ क़दरे तफ़सील के साथ मज़कूर हुवा है जो बिलाशुबा एक अज़ीमुश्शान वाक़िआ है जो बनी इस्राईल की नाफ़रमानियों और शरारतों की तअज़्जुब ख़ैज़ और हैरत अंगेज़ दास्तान है मगर इस के बा वुजूद भी हज़रते मूसा **عليه السلام** की महब्वत व शफ़क़त बनी इस्राईल पर हमेशा रही कि जब येह लोग मैदाने तीह में भूके प्यासे हुवे तो हज़रते मूसा **عليه السلام** ने दुआ मांग कर इन लोगों के खाने के लिये मन्न व सलवा नाज़िल कराया । और पथ्थर पर असा मार कर बारह चश्मे जारी करा दिये इस से हज़रते मूसा **عليه السلام** के सब्र और आप के हिल्म और तहम्मुल का अन्दाज़ा किया जा सकता है ।

#### ﴿4﴾ रोशन हाथ

हज़रते मूसा **عليه السلام** को जब **अल्लाह** तआला ने फ़िरऔन की हिदायत के लिये उस के दरबार में भेजा तो दो मो'जिज़ात आप को अता

फ़रमा कर भेजा। एक “असा” दूसरा “यदे बैजा” (रोशन हाथ) हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام अपने गिरेबान में हाथ डाल कर बाहर निकालते थे तो एक दम आप का हाथ रोशन हो कर चमकने लगता था, फिर जब आप अपना हाथ गिरेबान में डाल देते तो वोह अपनी अस्ली हालत पर हो जाया करता था। इस मो’जिज़े को कुरआने अज़ीम ने मुख़्तलिफ़ सूरतों में बार बार ज़िक्र फ़रमाया है। चुनान्वे, सूराए ताहा में इरशाद फ़रमाया कि

وَاضْمُ يَدَكَ إِلَى جَنَاحِكَ تَخْرُجُ بَيْضًا مِّنْ غَيْرِ سَوْءٍ آيَةً أُخْرَىٰ ﴿٦٦﴾  
لِّرِّيكَ مِنْ آيَاتِنَا الْكُبْرَىٰ ﴿٦٧﴾ (प ११, १२, २३, २४)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और अपना हाथ अपने बाजू से मिला ख़ूब सपेद निकलेगा बे किसी मरज़ के एक और निशानी कि हम तुझे अपनी बड़ी बड़ी निशानियां दिखाएं।

इसी मो’जिज़े का नाम “यदे बैजा” है जो एक अज़ीब और अज़ीम मो’जिज़ा है। हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के दस्ते मुबारक से रात और दिन में आप़ताब की तरह नूर निकलता था। (तफ़सीर ख़ज़ाइन العرفान, व ५१३, प ११, १२, २४)

### ﴿5﴾ मन्न व सलवा

जब हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام छे लाख बनी इस्राईल के अफ़ाद के साथ मैदाने तीह में मुक़ीम थे तो **अल्लाह** तआला ने उन लोगों के खाने के लिये आस्मान से दो खाने उतारे। एक का नाम “मन्न” और दूसरे का नाम “सलवा” था। मन्न बिलकुल सफ़ेद शहद की तरह एक हल्वा था। या सफ़ेद रंग की शहद ही थी जो रोज़ाना आस्मान से बारिश की तरह बरस्ती थी और सलवा पकी हुई बटेरें थीं जो दख्खनी हवा के साथ आस्मान से नाज़िल हुवा करती थीं। **अल्लाह** तआला ने बनी इस्राईल पर अपनी ने’मतों का शुमार कराते हुवे कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया कि

وَأَنزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّاءَ وَالسَّلْوَىٰ ﴿٥٤﴾ (البقرة: ५४)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और तुम पर मन्न और सलवा उतारा।

इस मन्न व सलवा के बारे में हज़रते मूसा عليه السلام का येह हुक्म था कि रोज़ाना तुम लोग इस को खा लिया करो और कल के लिये हरगिज़ हरगिज़ इस का ज़ख़ीरा मत करना। मगर बा'ज ज़ईफ़ुल ए'तिकाद लोगों को येह डर लगने लगा कि अगर किसी दिन मन्न व सलवा न उतरा तो हम लोग इस बे आबो गयाह, चटयल मैदान में भूके मर जाएंगे। चुनान्वे, उन लोगों ने कुछ छुपा कर कल के लिये रख लिया तो नबी की नाफ़रमानी से ऐसी नुहसत फैल गई कि जो कुछ लोगों ने कल के लिये जम्अ किया था वोह सब सड़ गया और आइन्दा के लिये इस का उतरना बन्द हो गया इसी लिये हुज़ुरे अक्दस صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने इरशाद फ़रमाया कि बनी इस्राईल न होते तो न खाना कभी ख़राब होता और न गोश्त सड़ता, खाने का ख़राब होना और गोश्त का सड़ना उसी तारीख़ से शुरूअ हुवा। वरना इस से पहले न खाना बिगड़ता था न गोश्त सड़ता था। (تفسير روح البيان، ج 1، البقرة 56)

### ﴿6﴾ बारह हज़ार यहूदी बन्द हो गए

रिवायत है कि हज़रते दावूद عليه السلام की कौम के सत्तर हज़ार आदमी “उक्बा” के पास समन्दर के किनारे “ईला” नामी गाउँ में रहते थे और येह लोग बड़ी फ़राखी और खुशहाली की ज़िन्दगी बसर करते थे। **अल्लाह** तआला ने उन लोगों का इस तरह इम्तिहान लिया कि सनीचर के दिन मछली का शिकार उन लोगों पर हराम फ़रमा दिया और हफ़्ते के बाक़ी दिनों में शिकार हलाल फ़रमा दिया मगर इस तरह उन लोगों को आज़माइश में मुब्तला फ़रमा दिया कि सनीचर के दिन बे शुमार मछलियां आती थीं और दूसरे दिनों में नहीं आती थीं तो शैतान ने उन लोगों को येह हीला बता दिया कि समन्दर से कुछ नालियां निकाल कर खुशकी में चन्द हौज़ बना लो और जब सनीचर के दिन उन नालियों के ज़रीए मछलियां हौज़ में आ जाएं तो नालियों का मुंह बन्द कर दो। और उस दिन शिकार न करो बल्कि दूसरे दिन आसानी के साथ उन मछलियों को पकड़ लो। उन लोगों को येह शैतानी हीला बाज़ी पसन्द आ गई और उन लोगों ने येह नहीं सोचा कि जब मछलियां नालियों और हौज़ों में मुक़य्यद हो गईं तो येही

उन का शिकार हो गया। तो सनीचर ही के दिन शिकार करना पाया गया जो उन के लिये हराम था। इस मौक़अ पर इन यहूदियों के तीन गुरौह हो गए।

❶ कुछ लोग ऐसे थे जो शिकार के इस शैतानी हिले से मन्अ करते रहे और नाराज़ व बेज़ार हो कर शिकार से बाज़ रहे।

❷ और कुछ लोग इस काम को दिल से बुरा जान कर ख़ामोश रहे दूसरों को मन्अ न करते थे बल्कि मन्अ करने वालों से ये कहते थे कि तुम लोग ऐसी क़ौम को क्यूं नसीहत करते हो जिन्हें **अल्लाह** तआला हलाक करने वाला या सख़्त सज़ा देने वाला है।

❸ और कुछ वोह सरकश व नाफ़रमान लोग थे जिन्होंने ने हुक्मे खुदावन्दी की ए'लानिय्या मुख़ालफ़त की और शैतान की हिला बाज़ी को मान कर सनीचर के दिन शिकार कर लिया और उन मछलियों को खाया और बेचा भी।

जब नाफ़रमानों ने मन्अ करने के बा वुजूद शिकार कर लिया तो मन्अ करने वाली जमाअत ने कहा कि अब हम इन मा'सिय्यत कारों से कोई मेल मिलाप न रखेंगे चुनान्चे, उन लोगों ने गाउं को तक्सीम कर के दरमियान में एक दीवार बना ली और आमदो रफ़्त का एक अलग दरवाज़ा भी बना लिया। हज़रते दावूद **عَلَيْهِ السَّلَام** ने ग़ज़ब नाक हो कर शिकार करने वालों पर ला'नत फ़रमा दी। इस का अषर येह हुवा कि एक दिन ख़ताकारों में से कोई बाहर नहीं निकला। तो उन्हें देखने के लिये कुछ लोग दीवार पर चढ़ गए तो क्या देखा कि वोह सब बन्दरों की सूरत में मस्ख़ हो गए हैं। अब लोग उन मुजरिमों का दरवाज़ा खोल कर अन्दर दाख़िल हुवे तो वोह बन्दर अपने रिश्तेदारों को पहचानते थे और उन के पास आ कर उन के कपड़ों को सूँघते थे और ज़ारो ज़ार रोते थे, मगर लोग उन बन्दर बन जाने वालों को नहीं पहचानते थे। उन बन्दर बन जाने वालों की ता'दाद बारह हज़ार थी। येह सब तीन दिन तक ज़िन्दा रहे और इस दरमियान में कुछ भी खा पी न सके बल्कि यूं ही भूके प्यासे सब के सब हलाक हो गए। शिकार से मन्अ करने वाला गुरौह हलाकत से सलामत रहा। और सहीह



कौल यह है कि दिल से बुरा जान कर ख़ामोश रहने वालों को भी **अल्लाह** तआला ने हलाकत से बचा लिया । (تفسير الصاوى، ج ۱، ص ۴۲، پ ۱، البقرة: ۶۵)

इस वाकिए का इज्माली बयान तो सूरए बक़रह की इस आयत में है :  
وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِينَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُونُوا قِرَدَةً خَاسِئِينَ ﴿۶۵﴾ (پ ۱، البقرة: ۶۵)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और बेशक ज़रूर तुम्हें मा'लूम है तुम में के वोह जिन्होंने ने हफ़्ते में सरकशी की तो हम ने उन से फ़रमाया कि हो जाओ बन्दर धुतकारे हुवे ।

और मुफ़स्सल वाकिआ सुरए आ'राफ़ में है जिस का **तर्जमा** यह है :  
**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और उन से हाल पूछो उस बस्ती का कि दरया कनारे थी । जब वोह हफ़्ते के बारे में हृद से बढ़ते । जब हफ़्ते के दिन उन की मछलियां पानी पर तैरती उन के सामने आतीं और जो दिन हफ़्ते का न होता न आतीं इस तरह हम उन्हें आजमाते थे उन की बे हुक्मी के सबब और जब उन में से एक गुरौह ने कहा क्यूं नसीहत करते हो उन लोगों को जिन्हें **अल्लाह** हलाक करने वाला है या उन्हें सख़्त अज़ाब देने वाला । बोले तुम्हारे रब के हुज़ूर मा'ज़िरत को और शायद उन्हें डर हो फिर जब वोह भुला बैठे जो नसीहत उन्हें हुई थी हम ने बचा लिये वोह जो बुराई से मन्अ करते थे । और ज़ालिमों को बुरे अज़ाब में पकड़ा बदला उन की नाफ़रमानी का । फिर जब उन्होंने ने मुमानअत के हुक्म से सरकशी की हम ने उन से फ़रमाया हो जाओ बन्दर धुतकारे हुवे । (پ ۹، الاعراف: ۶۳ تا ۶۶)

**दर्से हिदायत :-** मा'लूम हुवा कि शैतानी हीला बाज़ियों में पड़ कर **अल्लाह** तआला के अहकाम की नाफ़रमानियों का अन्जाम कितना बुरा और किस क़दर ख़तरनाक होता है । और खुदा के नबी जिन बद नसीबों पर ला'नत फ़रमा दें वोह कैसे हौलनाक अज़ाबे इलाही में गिरिफ़्तार हो कर दुन्या से नैसतो नाबूद हो कर अज़ाबे नार में गिरिफ़्तार हो जाते हैं और दोनों जहां में ज़लीलो ख़्वार हो जाते हैं । (نَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنْهُ)



अस्हाबे ईला के इस दिल हिला देने वाले वाकिए में हर मुसलमान के लिये बहुत बड़ी इब्रतों और नसीहतों का सामान है। काश ! इस वाकिए से मुसलमानों के कुलूब में खौंफे खुदावन्दी की लहर पैदा हो जाए और वोह **अल्लाह** व रसूल (ﷺ) की नाफरमानियों की पगडण्डियों में भटकने से मुंह मोड़ कर सिराते मुस्तकीम की शाहराह पर चल पड़ें और दोनों जहानों की सर बुलन्दियों से सरफराज हो कर ए'जाज व इकराम की सलत्नत के ताजदार बन जाएं।

### 7) दुनिया की सब से कीमती गाए

येह बहुत ही अहम और निहायत ही शानदार कुरआनी वाक़िआ है। और इसी वाक़िआ की वजह से कुरआने मजीद की इस सूरह का नाम “सूरए बकरह” (गाए वाली सूरह) रखा गया है।

इस का वाक़िआ येह है कि बनी इस्राईल में एक बहुत ही नेक और सालेह बुजुर्ग थे और उन का एक ही बच्चा था जो नाबालिग़ था। और उन के पास फ़क़त एक गाए की बछिया थी। उन बुजुर्ग ने अपनी वफ़ात के करीब उस बछिया को जंगल में ले जा कर एक झाड़ी के पास येह कह कर छोड़ दिया कि या **अल्लाह** (ﷻ) मैं इस बछिया को उस वक़्त तक तेरी अमानत में देता हूँ कि मेरा बच्चा बालिग़ हो जाए। इस के बा'द उन बुजुर्ग की वफ़ात हो गई और बछिया चन्द दिनों में बड़ी हो कर दरमियानी उम्र की हो गई और बच्चा जवान हो कर अपनी मां का बहुत ही फ़रमां बरदार और इन्तिहाई नेकूकार हुवा। उस ने अपनी रात को तीन हिस्सों में तक्सीम कर रखा था। एक हिस्से में सोता था, एक हिस्से में इबादत करता था, और एक हिस्से में अपनी मां की ख़िदमत करता था। और वोह रोज़ाना सुब्ह को जंगल से लकड़ियां काट कर लाता और उन को फ़रोख़्त कर के एक तिहाई रक़म सदका कर देता और एक तिहाई अपनी ज़ात पर खर्च करता और एक तिहाई रक़म अपनी वालिदा को दे देता।

एक दिन लड़के की मां ने कहा कि मेरे प्यारे बेटे ! तुम्हारे बाप ने मीराष में एक बछिया छोड़ी थी जिस को उन्होंने ने फुलां झाड़ी के पास

जंगल में खुदा (عَزَّوَجَلَّ) की अमानत में सोंप दिया था। अब तुम उस झाड़ी के पास जा कर यूँ दुआ मांगों कि ऐ हज़रते इब्राहीम व हज़रते इस्माईल व हज़रते इस्हाक (عَلَيْهِمُ السَّلَام) के खुदा ! तू मेरे बाप की सोंपी हुई अमानत मुझे वापस दे दे और उस बछिया की निशानी यह है कि वोह पीले रंग की है। और उस की खाल इस तरह चमक रही होगी कि गोया सूरज की किरनें उस में से निकल रही हैं। येह सुन कर लड़का जंगल में उस झाड़ी के पास गया और दुआ मांगी तो फौरन ही वोह गाए दौड़ती हुई आ कर उस के पास खड़ी हो गई और येह उस को पकड़ कर घर लाया तो उस की मां ने कहा। बेटा तुम इस गाए को ले जा कर बाज़ार में तीन दीनार में फ़रोख़्त कर डालो। लेकिन किसी गाहक को बिगैर मेरे मश्वरे के मत देना। उन दिनों बाज़ार में गाए की कीमत तीन दीनार ही थी। बाज़ार में एक गाहक आया जो दर हकीकत फ़िरिश्ता था। उस ने कहा कि मैं गाए की कीमत तीन दीनार से ज़ियादा दूंगा मगर तुम मां से मश्वरा किये बिगैर गाए मेरे हाथ फ़रोख़्त कर डालो। लड़के ने कहा कि तुम ख़्वाह कितनी भी ज़ियादा कीमत दो मगर मैं अपनी मां से मश्वरा किये बिगैर हरगिज़ हरगिज़ इस गाए को नहीं बेचूंगा। लड़के ने मां से सारा माजरा बयान किया तो मां ने कहा कि येह गाहक शायद कोई फ़िरिश्ता हो। तो ऐ बेटे ! तुम उस से मश्वरा करो कि हम इस गाए को अभी फ़रोख़्त करें या न करें। चुनान्चे, उस लड़के ने बाज़ार में जब उस गाहक से मश्वरा किया तो उस ने कहा कि अभी तुम इस गाए को फ़रोख़्त न करो। आइन्दा इस गाए को हज़रते मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) के लोग ख़रीदेंगे तो तुम इस गाए के चमड़े में सोना भर कर इस की कीमत तलब करना तो वोह लोग इतनी ही कीमत दे कर ख़रीदेंगे।

चुनान्चे, चन्द ही दिनों के बा'द बनी इस्राईल के एक बहुत मालदार आदमी को जिस का नाम अमील था। उस के चचा के दोनों लड़कों ने उस को क़त्ल कर दिया। और उस की लाश को एक वीराने में डाल दिया। सुब्ह को क़ातिल की तलाश शुरू हुई मगर जब कोई सुराग़ न मिला तो कुछ लोग हज़रते मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) की ख़िदमत में हाज़िर हुवे और क़ातिल का पता पूछा तो आप ने फ़रमाया कि तुम लोग एक गाए

जब्द करो और उस की ज़बान या दुम की हड्डी से लाश को मारो तो वोह जिन्दा हो कर खुद ही अपने कातिल का नाम बता देगा। यह सुन कर बनी इस्राईल ने गाए के रंग, उस की उम्र वगैरा के बारे में बहूष व कुरैद शुरू कर दी। और बिल आखिर जब वोह अच्छी तरह समझ गए कि फुलां किस्म की गाए चाहिये तो ऐसी गाए की तलाश शुरू कर दी यहां तक कि जब येह लोग उस लड़के की गाए के पास पहुंचे तो हू बहू येह ऐसी ही गाए थी जिस की इन लोगों को जरूरत थी। चुनान्चे, इन लोगों ने गाए को उस के चमड़े में भर कर सोना उस की कीमत दे कर खरीदा और जब्द कर के उस की ज़बान या दुम की हड्डी से मक्तूल की लाश को मारा तो वोह जिन्दा हो कर बोल उठा कि मेरे कातिल मेरे चचा के दोनों लड़के हैं जिन्होंने मेरे माल के लालच में मुझ को क़त्ल कर दिया है येह बता कर फिर वोह मर गया। चुनान्चे, उन दोनों कातिलों को किसानों में क़त्ल कर दिया गया और मर्दे सालेह का लड़का जो अपनी मां का फ़रमां बरदार था कधीर दौलत से माला माल हो गया। (تفسير الصاوى، ج ۱، ص ۷۵، پ ۱، البقرة: ۷۱)

इस पूरे मज़मून को कुरआने मजीद की मुक़द्दस आयतों में इस तरह बयान फ़रमाया गया है :

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और जब मूसा ने अपनी कौम से फ़रमाया : खुदा तुम्हें हुक्म देता है कि एक गाए जब्द करो, बोले कि आप हमें मस्ख़रा बनाते हैं। फ़रमाया : खुदा की पनाह कि मैं जाहिलों से होऊं। बोले : अपने रब से दुआ कीजिये कि वोह हमें बता दे गाए कैसी। कहा : वोह फ़रमाता है कि वोह एक गाए है न बुढ़ी और न औसर बल्कि इन दोनों के बीच में, तो करो जिस का तुम्हें हुक्म होता है। बोले अपने रब से दुआ कीजिये हमें बता दे उस का रंग क्या है ? कहा : वोह फ़रमाता है, वोह एक पीली गाए है। जिस की रंगत डहडहाती देखने वालों को खुशी देती। बोले : अपने रब से दुआ कीजिये कि हमारे लिये साफ़ बयान करे वोह गाए कैसी है बेशक गाइयों में हम को शुबा पड़ गया और **अब्बाह** चाहे तो हम राह पा जाएंगे। कहा : वोह फ़रमाता है कि वोह एक गाए है जिस से ख़िदमत नहीं ली जाती कि ज़मीन जोते और न खेती को पानी दे,

बे ऐब है जिस में कोई दाग नहीं। बोले : अब आप ठीक बात लाए। तो उसे ज़ब्द किया और ज़ब्द करते मा'लूम न होते थे। और जब तुम ने एक खून किया तो एक दूसरे पर इस की तोहमत डालने लगे। और **अल्लाह** को ज़ाहिर करना जो तुम छुपाते थे। तो हम ने फ़रमाया उस मक्तूल को इस गाए का एक टुकड़ा मारो। **अल्लाह** यूँही मुर्दे जिलाएगा और तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है कि कहीं तुम्हें अक्ल हो। (پ، البقرة: ٨٣ تا ٨٤)

**दर्से हिदायत :-** इस वाकिए से बहुत सी इब्रत अंगेज और नसीहत खैज़ बातें और अहकाम मा'लूम हुवे इन में से चन्द येह हैं जो याद रखने के काबिल हैं :

❶ खुदा के नेक बन्दों के छोड़े हुवे माल में बड़ी खैरो बरकत होती है। देख लो कि उस मर्दे सालेह ने सिर्फ़ एक बछिया छोड़ कर वफ़ात पाई थी मगर **अल्लाह** तआला ने इस में इतनी बरकत अता फ़रमाई कि इन के वारिषों को इस एक बछिया के ज़रीए बेशुमार दौलत मिल गई।

❷ उस मर्दे सालेह ने अवलाद पर शफ़क़त करते हुवे बछिया को **अल्लाह** की अमानत में सौंपा था तो इस से मा'लूम हुवा कि अवलाद पर शफ़क़त रखना और अवलाद के लिये कुछ माल छोड़ जाना येह **अल्लाह** वालों का तरीका है।

❸ मां बाप की फ़रमां बरदारी और खिदमत गुज़ारी करने वालों को खुदावन्दे करीम ग़ैब से बे शुमार रिज़क़ का सामान अता फ़रमा देता है। देख लो कि उस यतीम लड़के को मां की खिदमत और फ़रमां बरदारी की बदौलत **अल्लाह** तआला ने किस क़दर साहिबे माल और खुश हाल बना दिया।

❹ खुदावन्दे कुहूस के अहकाम में बहूष और कुरैद करना मुसीबतों का सबब हुवा करता है। देख लो बनी इस्राईल को एक गाए ज़ब्द करने का हुक्म हुवा था। वोह कोई सी भी एक गाए ज़ब्द कर देते तो फ़र्ज अदा हो जाता मगर उन लोगों ने जब बहूष और कुरैद शुरू कर दी कि कैसी गाए हो ? कैसा रंग हो ? कितनी उम्र हो ? तो मुसीबत में पड़ गए कि उन्हें एक ऐसी गाए ज़ब्द करनी पड़ी जो बिल्कुल नायाब थी। इसी लिये उस

की कीमत इतनी ज़ियादा अदा करनी पड़ी कि दुनिया में किसी गाए की इतनी कीमत न हुई, न आइन्दा होने की उम्मीद है।

﴿5﴾ जो अपना माल **अल्लाह** तआला की अमानत में सोंप दे **अल्लाह** तआला उस की हिफ़ाज़त फ़रमाता है और उस में बे हिसाब ख़ैरो बरकत अता फ़रमा देता है।

﴿6﴾ जो अपने अहलो इयाल को **अल्लाह** तआला के सिपुर्द फ़रमा दे **अल्लाह** तआला उस के अहलो इयाल की ऐसी परवरिश फ़रमाता है कि जिस को कोई सोच भी नहीं सकता।

﴿7﴾ अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अली क़ैम अल्लहू त़ैआल व ज़हेदुल क़रिम् ने फ़रमाया कि जो पीले रंग का जूता पहनेगा वोह हमेशा खुश रहेगा। और उस को ग़म बहुत कम होगा। क्यूंकि **अल्लाह** तआला ने पीली गाए के लिये येह फ़रमाया कि “**تَسْرُّ الظَّرِيبَ**” कि वोह देखने वालों को खुश कर देती है।

(تفسير روح البيان، ج ١، ص ١٢٠، پ ١، البقرة: ٢٩،)

﴿8﴾ इस से मा'लूम हुवा कि कुरबानी का जानवर जिस क़दर भी ज़ियादा बे ऐब और ख़ूब सूरत और कीमती हो उसी क़दर ज़ियादा बेहतर है। (والله تعالى أعلم)

### ﴿8﴾ सत्तर हजार मुर्दे जिन्दा हो गए !

येह हज़रते हज़क़ील عليه السلام की कौम का एक बड़ा ही इब्रत ख़ैज़ और इन्तिहाई नसीहत आमेज़ वाकिआ है जिस को खुदावन्दे कुहूस ने कुरआने मजीद की सूरए बक़रह में बयान फ़रमाया है।

**हज़रते हज़क़ील عليه السلام कौन थे ? :-** येह हज़रते मूसा عليه السلام के तीसरे ख़लीफ़ा हैं जो मन्सबे नबुव्वत पर सरफ़राज़ किये गए। हज़रते मूसा عليه السلام की वफ़ाते अक़दस के बा'द आप के ख़लीफ़ए अव्वल हज़रते यूशअ बिन नून عليه السلام हुवे जिन को **अल्लाह** तआला ने नबुव्वत अता फ़रमाई। इन के बा'द हज़रते कालिब बिन यूहना عليه السلام हज़रते मूसा عليه السلام की ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ हो कर मर्तबए नबुव्वत पर फ़ाइज़ हुवे। फिर इन के बा'द हज़रते हज़क़ील عليه السلام हज़रते मूसा عليه السلام के जानशीन और नबी हुवे।

हज़रते हज़क़ील عَلَيْهِ السَّلَام का लक़ब इब्नुल अज़ूज़ (बुढ़िया के बेटे) है। और आप जुल किफ़ल भी कहलाते हैं। “इब्नुल अज़ूज़” कहलाने की वजह यह है कि यह उस वक़्त पैदा हुवे थे जब कि इन की वालिदा माजिदा बहुत बुढ़ी हो चुकी थीं। और आप का लक़ब जुल किफ़ल इस लिये हुवा कि आप ने अपनी कफ़ालत में ले कर सत्तर अम्बियाए किराम को क़त्ल से बचा लिया था जिन के क़त्ल पर यहूदी क़ौम आमादा हो गई थी। फिर यह खुद भी खुदा के फज़लो करम से यहूदियों की तलवार से बच गए और बरसों ज़िन्दा रह कर अपनी क़ौम को हिदायत फ़रमाते रहे। (تفسير الصاوی، ج ۱، ص ۲۰۶، ۲، البقرة ۲۴۳)

**मुर्दों के ज़िन्दा होने का वाक़िआ :-** इस का वाक़िआ यह है कि बनी इस्राईल की एक जमाअत जो हज़रते हज़क़ील عَلَيْهِ السَّلَام के शहर में रहती थी, शहर में त़ाऊन की वबा फैल जाने से इन लोगों पर मौत का ख़ौफ़ सुवार हो गया। और यह लोग मौत के डर से सब के सब शहर छोड़ कर एक जंगल में भाग गए और वहीं रहने लगे तो **अल्लाह** तआला को इन लोगों की यह हरकत बहुत ज़ियादा नापसन्द हुई। चुनान्वे, **अल्लाह** तआला ने एक अज़ाब के फ़िरिश्ते को उस जंगल में भेज दिया। जिस ने एक पहाड़ की आड़ में छुप कर और चीख़ मार कर बुलन्द आवाज़ से यह कह दिया कि “**موتوا**” या’नी तुम सब मर जाओ और इस मुहीब और भयानक चीख़ को सुन कर बिग़ैर किसी बीमारी के बिल्कुल अचानक यह सब के सब मर गए जिन की ता’दाद सत्तर हज़ार थी। इन मुर्दों की ता’दाद इस क़दर ज़ियादा थी कि लोग इन के कफ़न व दफ़न का कोई इन्तिज़ाम नहीं कर सके और इन मुर्दों की लाशें खुले मैदान में बे ग़ौरो कफ़न आठ दिन तक पड़ी पड़ी सड़ने लगीं और बे इन्तिहा ता’फ़ून और बदबू से पूरे जंगल बल्कि इस के अत़राफ़ में बद बू पैदा हो गई। कुछ लोगों ने इन की लाशों पर रहम खा कर चारों तरफ़ से दीवार उठा दी ताकि यह लाशें दरिन्दों से महफूज़ रहें।

कुछ दिनों के बा'द हज़रते हज़क़ील عَلَيْهِ السَّلَام का इस जंगल में उन लाशों के पास से गुज़र हुवा तो अपनी क़ौम के सत्तर हज़ार इन्सानों की इस मौत के नागहानी और बे ग़ौरो क़फ़न लाशों की फ़िरावानी देख कर रंजो ग़म से इन का दिल भर गया। आब दीदा हो गए और बारी तअ़ाला के दरबार में दुख भरे दिल से गिड़ गिड़ा कर दुआ मांगने लगे कि या **अल्लाह** येह मेरी क़ौम के अफ़राद थे जो अपनी नादानी से येह ग़लती कर बैठे कि मौत के डर से शहर छोड़ कर जंगल में आ गए। येह सब मेरे शहर के बाशिन्दे हैं इन लोगों से मुझे उन्स था और येह लोग मेरे दुख सुख के शरीक थे। अफ़सोस कि मेरी क़ौम हलाक हो गई और मैं बिल्कुल अकेला रह गया। ऐ मेरे रब येह वोह क़ौम थी जो तेरी हम्द करती थी और तेरी तौहीद का ए'लान करती थी और तेरी किब्रियाई का खुतबा पढ़ती थी।

आप बड़े सोजे दिल के साथ दुआ में मशगूल थे कि अचानक आप पर येह वह्य उतर पड़ी कि ऐ हज़क़ील عَلَيْهِ السَّلَام आप इन की बिखरी हुई हड्डियों से फ़रमा दीजिये कि ऐ हड्डियो ! बेशक **अल्लाह** तअ़ाला तुम को हुक्म फ़रमाता है कि तुम इकठ्ठा हो जाओ। येह सुन कर बिखरी हुई हड्डियों में हरक़त पैदा हुई और हर आदमी की हड्डियां जम्अ हो कर हड्डियों के ढांचे बन गए। फिर येह वह्य आई कि ऐ हज़क़ील عَلَيْهِ السَّلَام आप फ़रमा दीजिये के ऐ हड्डियों ! तुम को **अल्लाह** का येह हुक्म है कि तुम गोश्त पहन लो। येह कलाम सुनते ही फ़ौरन हड्डियों के ढांचों पर गोश्त पोस्त चढ़ गए। फिर तीसरी बार येह वह्य नाज़िल हुई। ऐ हज़क़ील अब येह कह दो कि ऐ मुर्दों ! खुदा के हुक्म से तुम सब उठ कर खड़े हो जाओ। चुनान्वे, आप ने येह फ़रमा दिया तो आप की ज़बान से येह जुम्ला निकलते ही सत्तर हज़ार लाशें दम ज़दन में नागहां येह पढ़ते हुवे खड़ी हो गई कि سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ फिर येह सब लोग जंगल से रवाना हो कर अपने शहर में आ कर दोबारा आबाद हो गए। और अपनी उम्रों की मुद्दत भर ज़िन्दा रहे लेकिन इन लोगों पर इस मौत का इतना निशान बाक़ी रह गया कि इन की अवलाद के जिस्मों से सड़ी



हुई लाश की बद बू बराबर आती रही और येह लोग जो कपड़ा भी पहनते थे वोह कफ़न की सूरत में हो जाता था। और क़ब्र में जिस तरह कफ़न मेला हो जाता था ऐसा ही मेलापन इन के कपड़ों पर नुमूदार हो जाता था। चुनान्वे, येह अषरात आज तक इन यहूदियों में पाए जाते हैं जो इन लोगों की नस्ल से बाकी रह गए हैं। (تفسير روح البيان، ج ۱، ص ۳۷۸، ۲، البقرة: ۲۴۳)

येह अजीबो ग़रीब वाकिआ कुरआने मजीद की सूरए बक़रह में खुदावन्दे कुहूस ने इस तरह बयान फ़रमाया कि

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ خَرَجُوا مِن دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ  
فَقَالَ لَهُمُ اللَّهُ مُوتُوا ثُمَّ أَحْيَاهُمْ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ  
وَلَكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿۳۷﴾ (البقرة: ۲۴۳)

**तर्जमए कन्ज़ुल इमान :-** ऐ महबूब क्या तुम ने न देखा था उन्हें जो अपने घरों से निकले और वोह हज़ारों थे मौत के डर से तो **अल्लाह** ने उन से फ़रमाया मर जाओ फिर उन्हें जिन्दा फ़रमा दिया बेशक **अल्लाह** लोगों पर फ़ज़ल करने वाला है मगर अक़षर लोग नाशुक्रे हैं।

**दर्से हिदायत :-** बनी इस्राईल के इस महिय्यरुल उकूल वाकिए से मुन्दरिजए ज़ैल हिदायात मिलती है :

﴿1﴾ आदमी मौत के डर से भाग कर अपनी जान नहीं बचा सकता। लिहाज़ा मौत से भागना बिल्कुल ही बेकार है। **अल्लाह** तआला ने जो मौत मुक़द्दर फ़रमा दी है वोह अपने वक़्त पर ज़रूर आएगी न एक सेकन्ड अपने वक़्त से पहले आ सकती है न एक सेकन्ड बा'द आएगी लिहाज़ा बन्दों को लाज़िम है कि रिज़ाए इलाही पर राजी रह कर साबिरो शाकिर रहें और ख़्वाह कितनी ही वबा फैले या घुम्सान का रन पड़े इतमीनान व सुकून का दामन अपने हाथ से न छोड़ें और येह यकीन रखें कि जब तक मेरी मौत नहीं आती मुझे कोई नहीं मार सकता और न मैं मर सकता हूं और जब मेरी मौत आ जाएगी तो मैं कुछ भी करूं, कहीं भी चला जाऊं, भाग जाऊं या डट कर खड़ा रहूं मैं किसी हाल में बच नहीं सकता।



﴿2﴾ इस आयत में खास तौर पर मुजाहिदीन को हिदायत की गई है कि जिहाद से गुरैज करना या मैदाने जंग छोड़ कर भाग जाना हरगिज मौत को दफ़्अ नहीं कर सकता लिहाज़ा मुजाहिदीन को मैदाने जंग में दिल मज़बूत कर के डटे रहना चाहिये और येह यकीन रखना चाहिये कि मैं मौत के वक़्त से पहले नहीं मर सकता, न कोई मुझे मार सकता है। येह अक्कीदा रखने वाला इस क़दर बहादुर और शेर दिल हो जाता है कि ख़ौफ़ और बुज़दिली कभी उस के क़रीब नहीं आती और उस के पाए इस्तिक़लाल में कभी बाल बराबर भी कोई लगज़िश नहीं आ सकती। इस्लाम का बख़्शा हुवा येही वोह मुक़द्दस अक्कीदा है कि जिस की बदौलत मुजाहिदीने इस्लाम हज़ारों कुफ़ार के मुकाबले में तन्हा पहाड़ की तरह जम कर जंग करते थे। यहां तक कि फ़ट्टे मुबीन इन के क़दमों का बोसा लेती थी। और वोह हर जंग में मुज़फ़्फ़र व मन्सूर हो कर अज़्रे अज़ीम और माले ग़नीमत की दौलत से माला माल हो कर अपने घरों में इस हाल में वापस आते थे कि उन के जिस्मों पर ज़ख़्मों की कोई ख़राश भी नहीं होती थी और वोह कुफ़ार के दल बादल लश्क़रों का सफ़ाया कर देते थे। शाइरे मशरूक़ ने इस मन्ज़र की तस्वीर कशी करते हुवे किसी मुजाहिदे इस्लाम की ज़बान से येह तराना सुनाया है कि

टल न सकते थे अगर जंग में अड़ जाते थे

पाउं शेरों के भी मैदां से उखड़ जाते थे

हक़ से सरकश हुवा कोई तो बिगड़ जाते थे

तैग़ क्या चीज़ है? हम तोप से लड़ जाते थे

नक़श तौहीद का हर दिल पे बिठाया हम ने

जेरे ख़न्ज़र भी येह पैग़ाम सुनाया हम ने

(कुल्लियाते इक्बाल, बांगे दरा, स. 164)

**लतीफ़ा :-** मन्कूल है कि बनू उमय्या का बादशाह अब्दुल मलिक बिन मरवान जब मुल्के शाम में तारुन की वबा फैली तो मौत के डर से घोड़े पर सुवार हो कर अपने शहर से भाग निकला और साथ में अपने खास

गुलाम और कुछ फ़ौज भी ले ली और वोह त़ाऊन के डर से इस क़दर खाइफ़ और हरासां था कि ज़मीन पर पाउं नहीं रखता था बल्कि घोड़े की पुश्त पर सोता था। दौराने सफ़र एक रात उस को नींद नहीं आई। तो उस ने अपने गुलाम से कहा कि तुम मुझे कोई क़िस्सा सुनाओ। तो होशियार गुलाम ने बादशाह को नसीहत करने का मौक़ा पा कर येह क़िस्सा सुनाया कि एक लोमड़ी अपनी जान की हिफ़ाज़त के लिये एक शेर की ख़िदमत गुज़ारी किया करती थी तो कोई दरिन्दा शेर की हैबत की वजह से लोमड़ी की तरफ़ देख नहीं सकता था। और लोमड़ी निहायत ही बे ख़ौफ़ी और इतमीनान से शेर के साथ ज़िन्दगी बसर करती थी। अचानक एक दिन एक उक़ाब लोमड़ी पर झपटा तो लोमड़ी भाग कर शेर के पास चली गई। और शेर ने उस को अपनी पीठ पर बिठा लिया। उक़ाब दोबारा झपटा और लोमड़ी को शेर की पीठ पर से अपने चुंगल में दबा कर उड़ गया। लोमड़ी चिल्ला चिल्ला कर शेर से फ़रयाद करने लगी तो शेर ने कहा कि ऐ लोमड़ी ! मैं ज़मीन पर रहने वाले दरिन्दों से तेरी हिफ़ाज़त कर सकता हूँ लेकिन आस्मान की तरफ़ से हम्ला करने वालों से मैं तुझे नहीं बचा सकता। येह क़िस्सा सुन कर अब्दुल मलिक बादशाह को बड़ी इब्रत हासिल हुई और उस की समझ में आ गया कि मेरी फ़ौज उन दुश्मनों से तो मेरी हिफ़ाज़त कर सकती है जो ज़मीन पर रहते हैं मगर जो बलाएं और वबाएं आस्मान से मुझ पर हम्ला आवर हों, उन से मुझ को न मेरी बादशाही बचा सकती है न मेरा ख़ज़ाना और न मेरा लश्कर मेरी हिफ़ाज़त कर सकता है। आस्मानी बलाओं से बचाने वाला तो बजुज़ खुदा के और कोई नहीं हो सकता। येह सोच कर अब्दुल मलिक बादशाह के दिल से, त़ाऊन का ख़ौफ़ जाता रहा और वोह रिज़ाए इलाही पर राज़ी रह कर सुकून व इतमीनान के साथ अपने शाही महल में रहने लगा। (تفسير روح البيان، ج ۱، ص ۳۸، ۲، البقرة: ۲۴۴)

### ﴿9﴾ सो बरस तक मुर्दा रहे फिर ज़िन्दा हो गए

अक़षर मुफ़स्सरीन के नज़दीक येह वाकिआ हज़रते उज़ैर बिन शर्ख़िया عَلَيْهِ السَّلَام का है येह जो बनी इस्राईल के एक नबी हैं। वाकिआ की तफ़्सील येह है कि जब बनी इस्राईल की बद आ'मालियां बहुत ज़ियादा बढ़

गई तो इन पर खुदा की तरफ़ से येह अज़ाब आया कि बख़्त नस्र बाबिली एक काफ़िर बादशाह ने बहुत बड़ी फ़ौज के साथ बैतुल मुक़द्दस पर हम्ला कर दिया और शहर के एक लाख बाशिन्दों को क़त्ल कर दिया। और एक लाख को मुल्के शाम में इधर उधर बिखैर कर आबाद कर दिया। और एक लाख को गिरफ़्तार कर के लौंड़ी गुलाम बना लिया। हज़रते उज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام भी उन्हीं कैदियों में थे। इस के बा'द उस काफ़िर बादशाह ने पूरे शहर बैतुल मुक़द्दस को तोड़ फोड़ कर मिस्मार कर दिया और बिल्कुल वीरान बना डाला।

**बख़्त नस्र कौन था ? :-** कौमे अमालका का एक लड़का इन के बुत “नस्र” के पास लावारिष पड़ा हुवा मिला चुंकि इस के बाप का नाम किसी को नहीं मा'लूम था, इस लिये लोगों ने इस का नाम बख़्त नस्र (नस्र का बेटा) रख दिया। खुदा की शान कि येह लड़का बड़ा हो कर कहरे अस्फ़ बादशाह की तरफ़ से सल्तनते बाबिल पर गवर्नर मुक़र्रर हो गया। फिर येह खुद दुन्या का बहुत बड़ा बादशाह हो गया। (तفسير जमल، ج ۱، ص ۳۲۱، ۳۲۲، البقرة: ۲۵۹)

कुछ दिनों के बा'द हज़रते उज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام जब किसी तरह “बख़्त नस्र” की कैद से रिहा हुवे तो एक गधे पर सुवार हो कर अपने शहर बैतुल मुक़द्दस में दाख़िल हुवे। अपने शहर की वीरानी और बरबादी देख कर उन का दिल भर आया और वोह रो पड़े। चारों तरफ़ चक्कर लगाया मगर उन्हें किसी इन्सान की शक़ल नज़र नहीं आई। हां येह देखा कि वहां के दरख़्तों पर ख़ूब ज़ियादा फल आए हैं जो पक कर तय्यार हो चुके हैं मगर कोई इन फलों को तोड़ने वाला नहीं है। येह मन्ज़र देख कर निहायत ही हसरत व अफ़्सोस के साथ बे इख़्तियार आप की ज़बाने मुबारक से येह जुम्ला निकल पड़ा कि أَتَىٰ يُحْيِي هٰذِهِ ٱللَّهُ بَعْدَ مَوْتِهَا या'नी इस शहर की ऐसी बरबादी और वीरानी के बा'द भला किस तरह **अल्लाह** तआला फिर इस को आबाद करेगा ? फिर आप ने कुछ फलों को तोड़ कर तनावुल फ़रमाया, और अंगूरों को निचोड़ कर उस का शीरा नौश फ़रमाया फिर बचे हुवे फलों को अपने झोले में डाल लिया और बचे हुवे अंगूर के शीरे को अपनी मशक में भर लिया और अपने गधे को एक मज़बूत रस्सी से बांध दिया। और फिर आप एक दरख़्त के नीचे लैट कर सो गए और इसी

नींद की हालत में आप की वफ़ात हो गई और **अल्लाह** तआला ने दरिन्दों, परन्दों, चरिन्दों और जिन्न व इन्सान सब की आंखों से आप को ओझल कर दिया कि कोई आप को न देख सका। यहां तक कि सत्तर बरस का ज़माना गुज़र गया तो मुल्के फ़ारस के बादशाहों में से एक बादशाह अपने लश्कर के साथ बैतुल मुक़द्दस के इस वीराने में दाख़िल हुवा। और बहुत से लोगों को यहां ला कर बसाया और शहर को फिर दोबारा आबाद कर दिया। और बचे खुचे बनी इस्राईल को जो अत़राफ़ व जवानिब में बिखरे हुवे थे सब को बुला बुला कर इस शहर में आबाद कर दिया। और इन लोगों ने नई इमारतें बना कर और किस्म किस्म के बागात लगा कर इस शहर को पहले से भी ज़ियादा ख़ूब सूरत और बा रोनक़ बना दिया।

जब हज़रते उज़ैर **عليه السلام** को पूरे एक सो बरस वफ़ात की हालत में हो गए तो **अल्लाह** तआला ने आप को ज़िन्दा फ़रमाया तो आप ने देखा कि आप का गधा मर चुका है और उस की हड्डियां गल सड़ कर इधर उधर बिखरी पड़ी हैं। मगर थैले में रखे हुवे फल और मश्क में रखा हुवा अंगूर का शीरा बिल्कुल ख़राब नहीं हुवा, न फलों में कोई तग़य्युर न शीरे में कोई बू बास या बद मज़गी पैदा हुई है और आप ने येह भी देखा कि अब भी आप के सर और दाढ़ी के बाल काले हैं और आप की उम्र वोही चालीस बरस है। आप हैरान हो कर सोच बिचार में पड़े हुवे थे कि आप पर वह्य़ उतरी और **अल्लाह** तआला ने आप से दरयाफ़्त फ़रमाया कि ऐ उज़ैर ! आप कितने दिनों तक यहां रहे ? तो आप ने ख़याल कर के कहा कि मैं सुब्ह के वक़्त सोया था और अब अ़स्स का वक़्त हो गया है, येह जवाब दिया कि मैं दिन भर या दिन भर से कुछ कम सोता रहा तो **अल्लाह** तआला ने फ़रमाया कि नहीं ऐ उज़ैर ! तुम पूरे एक सो बरस यहां ठहरे रहे, अब तुम हमारी कुदरत का नज़ारा करने के लिये ज़रा अपने गधे को देखो कि उस की हड्डियां गल सड़ कर बिखर चुकी हैं और अपने खाने पीने की चीज़ों पर नज़र डालो कि उन में कोई ख़राबी और बिगाड़ नहीं पैदा हुवा। फिर इरशाद फ़रमाया कि ऐ उज़ैर ! अब तुम देखो कि किस तरह हम इन हड्डियों को उठा कर इन पर गोश्त पोस्त चढ़ा कर इस गधे

को ज़िन्दा करते हैं। चुनान्चे, हज़रते उज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام ने देखा कि अचानक बिखरी हुई हड्डियों में हरकत पैदा हुई और एक दम तमाम हड्डियां जम्बू हो कर अपने अपने जोड़ से मिल कर गधे का ढांचा बन गया और लम्हा भर में इस ढांचे पर गोश्त पोस्त भी चढ़ गया और गधा ज़िन्दा हो कर अपनी बोली बोलने लगा। यह देख कर हज़रते उज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام ने बुलन्द आवाज़ से यह कहा

أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٥٩﴾ (پ: البقرة: ٢٥٩)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** मैं खूब जानता हूँ कि **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है।

इस के बा'द हज़रते उज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام शहर का दौरा फ़रमाते हुवे उस जगह पहुंच गए जहां एक सो बरस पहले आप का मकान था। तो न किसी ने आप को पहचाना न आप ने किसी को पहचाना। हां अलबत्ता येह देखा कि एक बहुत ही बुढ़ी और अपाहज औरत मकान के पास बैठी है जिस ने अपने बचपन में हज़रते उज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام को देखा था। आप ने उस से पूछा कि क्या येही उज़ैर का मकान है तो उस ने जवाब दिया कि जी हां। फिर बुढ़िया ने कहा कि उज़ैर का क्या ज़िक्र है? उन को तो सो बरस हो गए कि वोह बिल्कुल ही ला पता हो चुके हैं येह कह कर बुढ़िया रौने लगी तो आप ने फ़रमाया कि ऐ बुढ़िया ! मैं ही उज़ैर हूँ तो बुढ़िया ने कहा कि **سُبْحَانَ اللَّهِ** आप कैसे उज़ैर हो सकते हैं? आप ने फ़रमाया कि ऐ बुढ़िया ! मुझ को **अल्लाह** तआला ने एक सो बरस मुर्दा रखा। फिर मुझ को ज़िन्दा फ़रमा दिया और मैं अपने घर आ गया हूँ तो बुढ़िया ने कहा कि हज़रते उज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام तो ऐसे बा कमाल थे कि उन की हर दुआ मक्बूल होती थी अगर आप वाक़ेई हज़रते उज़ैर (عَلَيْهِ السَّلَام) हैं तो मेरे लिये दुआ कर दीजिये कि मेरी आंखों में रोशनी आ जाए और मेरा फ़ालिज अच्छा हो जाए। हज़रते उज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام ने दुआ कर दी तो बुढ़िया की आंखें ठीक हो गईं और उस का फ़ालिज भी अच्छा हो गया। फिर उस ने गौर से आप को देखा तो पहचान लिया और बोल उठी कि मैं शहादत देती हूँ कि आप यकीनन हज़रते उज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام ही हैं फिर वोह बुढ़िया आप को ले कर बनी इस्राईल के महल्ले में गई। इत्तिफ़ाक़ से वोह सब लोग एक

मजलिस में जम्अ थे और इसी मजलिस में आप का लड़का भी मौजूद था जो एक सो अठारह बरस का हो चुका था। और आप के चन्द पोते भी थे जो सब बुढ़े हो चुके थे। बुढ़िया ने मजलिस में शहादत दी और ए'लान किया कि ऐ लोगो ! बिला शुबा येह हज़रते उज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام ही हैं मगर किसी ने बुढ़िया की बात को सहीह नहीं माना। इतने में इन के लड़के ने कहा कि मेरे बाप के दोनों कन्धों के दरमियान काले रंग का मसा था जो चांद की शकल का था। चुनान्चे, आप ने अपना कुर्ता उतार कर दिखाया तो वोह मसा मौजूद था। फिर लोगों ने कहा कि हज़रते उज़ैर को तो तौरात ज़बानी याद थी अगर आप उज़ैर हैं तो ज़बानी तौरात पढ़ कर सुनाइये। आप ने बिगैर किसी झिजक के फ़ौरन पूरी तौरात पढ़ कर सुना दी। बख़्त नस्र बादशाह ने बैतुल मुक़द्दस को तबाह करते वक़्त चालीस हज़ार तौरात के अलिमों को चुन चुन कर क़त्ल कर दिया था और तौरात की कोई जिल्द भी उस ने ज़मीन पर बाकी नहीं छोड़ी थी। अब येह सुवाल पैदा हुवा कि हज़रते उज़ैर ने तौरात सहीह पढ़ी है या नहीं ? तो एक आदमी ने कहा कि मैं ने अपने बाप से सुना है कि जिस दिन हम लोगों को बख़्त नस्र ने गिरिफ़्तार किया था उस दिन एक वीराने में एक अंगूर की बैल की जड़ में तौरैत की एक जिल्द दफ़न कर दी गई थी अगर तुम लोग मेरे दादा के अंगूर की जगह की निशान देही कर दो तो मैं तौरात की एक जिल्द बरआमद कर दूंगा। उस वक़्त पता चल जाएगा कि हज़रते उज़ैर ने जो तौरात पढ़ी है वोह सहीह है या नहीं ? चुनान्चे, लोगों ने तलाश कर के और ज़मीन खोद कर तौरात की जिल्द निकाल ली तो वोह हर्फ़ ब हर्फ़ हज़रते उज़ैर की ज़बानी याद की हुई तौरात के मुताबिक़ थी। येह अज़ीबो ग़रीब और हैरत अंगेज़ माजरा देख कर सब लोगों ने एक ज़बान हो कर येह कहना शुरू कर दिया कि बेशक हज़रते उज़ैर येही हैं और यकीनन येह खुदा के बेटे हैं। चुनान्चे, उसी दिन से येह ग़लत और मुशरिकांना अक़ीदा यहूदियों में फैल गया कि مَعَاذَ اللَّهِ हज़रते उज़ैर खुदा के बेटे हैं। चुनान्चे, आज तक दुनिया भर के यहूदी इस बातिल अक़ीदे पर जमे हुवे हैं कि हज़रते उज़ैर

(تفسير جمل على الجلالين، ج ۳، ص ۳۲۲، ۳، البقرة: ۲۵۹) (مَعَاذَ اللَّهِ) खुदा के बेटे हैं।

**अल्लाह** तअला ने कुरआने मजीद की सूरए बक़रह में इस वाकिए को इन लफ्ज़ों में बयान फ़रमाया है ।

أَوْ كَالَّذِي مَرَّ عَلَى قَرْيَةٍ وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَى عُرُوشِهَا قَالَ أَنَّى يُحْيِي هَذِهِ  
اللَّهُ بَعْدَ مَوْتِهَا فَأَمَاتَهُ اللَّهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ ۖ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ۖ قَالَ  
لَبِثْتُ يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۖ قَالَ بَلْ لَبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ إِلَى  
طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۖ وَانْظُرْ إِلَى حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ آيَةً  
لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ إِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنْشِرُهَا ثُمَّ نَكْسُوهَا لَحْمًا ۖ فَلَمَّا تَبَيَّنَ  
لَهُ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ﴿٢٥٩﴾ (البقرة: ٢٥٩)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** या उस की तरह जो गुज़रा एक बस्ती पर और वोह ढई (गिरी) पड़ी थी अपनी छतों पर । बोला : इसे क्यूं कर जिलाएगा **अल्लाह** इस की मौत के बा'द तो **अल्लाह** ने उसे मुर्दा रखा सो बरस फिर ज़िन्दा कर दिया, फ़रमाया : तू यहां कितना ठहरा, अर्ज़ की : दिन भर ठहरा होऊंगा या कुछ कम । फ़रमाया : नहीं बल्कि तुझे सो बरस गुज़र गए और अपने खाने और पानी को देख कि अब तक बू न लाया और अपने गधे को देख (कि जिस की हड्डियां तक सलामत न रहीं) और येह इस लिये कि तुझे हम लोगों के वासिते निशानी करें और इन हड्डियों को देख क्यूंकर हम इन्हें उठान देते फिर इन्हें गोश्त पहनाते हैं जब येह मुआमला इस पर ज़ाहिर हो गया बोला : मैं ख़ूब जानता हूं कि **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है ।  
**दर्से हिदायत :-** ﴿1﴾ इन आयतों में साफ़ साफ़ मौजूद है कि एक ही जगह पर एक ही आबो हवा में हज़रते उज़ैर عليه السلام का गधा तो मर कर गल सड़ गया और उस की हड्डियां रैजा रैजा हो कर बिखर गई मगर फलों और शीरए अंगूर और खुद हज़रते उज़ैर عليه السلام की ज़ात में किसी किस्म का कोई तग़य्युर नहीं हुवा । यहां तक कि सो बरस में इन के बाल भी सफ़ेद नहीं हुवे । इस से षाबित होता है कि एक ही क़ब्रिस्तान के अन्दर एक ही आबो हवा में अगर बा'ज़ मुर्दों की लाशें गल सड़ कर फ़ना हो



जाएं और बा'ज बुजुर्गों की लाशें सलामत रह जाएं और उन के कफ़न भी मैले न हों ऐसा हो सकता है, बल्कि बारहा ऐसा हुवा है और हज़रते उज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام का येह कुरआनी वाकिअ़ इस की बेहतरीन दलील है। (والله تعالى أعلم)

﴿2﴾ बैतुल मुक़द्दस की तबाही और वीरानी देख कर हज़रते उज़ैर عَلَيْهِ السَّلَام ग़म में डूब गए और फ़िक्क मन्द हो कर येह कह दिया कि इस शहर की बरबादी और वीरानी के बा'द क्यूंकर **अल्लाह** तआला इस शहर को दोबारा आबाद फ़रमाएगा ? इस से षाबित होता है कि अपने वतन और शहर से महबूबत करना और उल्फ़त रखना येह सालिहीन और **अल्लाह** वालों का तरीका है। (والله تعالى أعلم)

### ﴿10﴾ ताबूते सक्कीना

येह शमशाद की लकड़ी का एक सन्दूक था जो हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام पर नाज़िल हुवा था। येह आप की आखिरे ज़िन्दगी तक आप के पास ही रहा। फिर बतौरै मीराष यके बा'द दीगरे आप की अवलाद को मिलता रहा। यहां तक कि येह हज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام को मिला और आप के बा'द आप की अवलादे बनी इस्राईल के कब्जे में रहा। और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को मिल गया तो आप उस में तौरात शरीफ़ और अपना खास खास सामान रखने लगे।

येह बड़ा ही मुक़द्दस और बा बरकत सन्दूक था। बनी इस्राईल जब कुफ़्फ़ार से जिहाद करते थे और कुफ़्फ़ार के लश्क़रों की कषरत और उन की शौकत देख कर सहम जाते और उन के सीनों में दिल धड़कने लगते तो वोह इस सन्दूक को अपने आगे रख लेते थे तो इस सन्दूक से ऐसी रहमतों और बरकतों का जुहूर होता था कि मुजाहिदीन के दिलों में सुकून व इतमीनान का सामान पैदा हो जाता था और मुजाहिदीन के सीनों में लरज़ते हुवे दिल पथ्थर की चट्टानों से ज़ियादा मज़बूत हो जाते थे। और जिस क़दर सन्दूक आगे बढ़ता था आस्मान से **نُصْرًا مِنَ اللَّهِ وَفَتْحًا قَرِيبًا** की बिशारते उज़्मा नाज़िल हुवा करती और फ़त्हे मुबीन हासिल हो जाया करती थी।



बनी इस्राईल में जब कोई इख़्तिलाफ़ पैदा होता था तो लोग इसी सन्दूक से फैसला कराते थे। सन्दूक से फैसले की आवाज़ और फ़तह की बिशारत सुनी जाती थी। बनी इस्राईल इस सन्दूक को अपने आगे रख कर और इस को वसीला बना कर दुआएं मांगते थे तो इन की दुआएं मक्बूल होती थीं और बलाओं की मुसीबतें और वबाओं की आफ़तें टल जाया करती थीं। अल ग़रज़ येह सन्दूक बनी इस्राईल के लिये ताबूते सकीना, बरकत व रहमत का ख़ज़ीना और नुस्ते खुदावन्दी के नुज़ूल का निहायत मुक़द्दस और बेहतरीन ज़रीआ था मगर जब बनी इस्राईल तरह तरह के गुनाहों में मुलव्विष हो गए और इन लोगों में मअसी व तुग़यानी और सरकशी व इस््यान का दौर दौरा हो गया तो इन की बद आ'मालियों की नुहूसत से इन पर खुदा का येह ग़ज़ब नाज़िल हो गया कि कौमे अमालका के कुफ़ार ने एक लश्करे ज़रार के साथ इन लोगों पर हम्ला कर दिया, उन काफ़िरों ने बनी इस्राईल का क़त्ले आम कर के इन की बस्तियों को तारख़्त व ताराज कर डाला। इमारतों को तोड़ फोड़ कर सारे शहर को तहस नहस कर डाला, और इस मुतबर्क सन्दूक को भी उठा कर ले गए। इस मुक़द्दस तबर्क को नजासतों के कूड़े ख़ाने में फेंक दिया। लेकिन इस बे अदबी का कौमे अमालका पर येह वबाल पड़ा कि येह लोग तरह तरह की बीमारियों और बलाओं के हुजूम में झन्झोड़ दिये गए। चुनान्चे, कौमे अमालका के पांच शहर बिल्कुल बरबाद और वीरान हो गए। यहां तक कि उन काफ़िरों को यकीन हो गया कि येह सन्दूके रहमत की बे अदबी का अज़ाब हम पर पड़ गया है तो उन काफ़िरों की आंखें खुल गई। चुनान्चे, उन लोगों ने इस मुक़द्दस सन्दूक को एक बेल गाड़ी पर लाद कर बेलों को बनी इस्राईल की बस्तियों की तरफ़ हांक दिया।

फिर **अल्लाह** तअ़ाला ने चार फ़िरिशतों को मुक़र्रर फ़रमा दिया जो इस मुबारक सन्दूक को बनी इस्राईल के नबी हज़रते शमवील **عَلَيْهِ السَّلَام** की ख़िदमत में लाए। इस तरह फिर बनी इस्राईल की खोई हुई ने'मत

दोबारा इन को मिल गई। और येह सन्दूक ठीक उस वक़्त हज़रते शमवील عَلَيْهِ السَّلَام के पास पहुंचा, जब कि हज़रते शमवील عَلَيْهِ السَّلَام ने तालूत को बादशाह बना दिया था। और बनी इस्राईल तालूत की बादशाही तस्लीम करने पर तय्यार नहीं थे और येही शर्त ठहरी थी कि मुक़द्दस सन्दूक आ जाए तो हम तालूत की बादशाही तस्लीम कर लेंगे। चुनान्चे, सन्दूक आ गया और बनी इस्राईल तालूत की बादशाही पर रिज़ा मन्द हो गए।

(تفسير الصاوى، ج ۱، ص ۲۰۹ - تفسير روح البيان، ج ۱، ص ۳۸۵ - ۲، البقرة: ۲۴)

**ताबूते सकीना में क्या था ? :-** इस मुक़द्दस सन्दूक में हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का अंसा और उन की मुक़द्दस जूतियां और हज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام का इमामा, हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की अंगूठी, तौरात की तख़्तियों के चन्द टुकड़े, कुछ मन्न व सलवा, इस के इलावा हज़रते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की सूरतों के हुल्ये वगैरा सब सामान थे।

(تفسير روح البيان، ج ۱، ص ۳۸۶ - ۲، البقرة: ۲۴)

कुरआने मजीद में खुदावन्दे कुद्दूस ने सूरए बक़रह में इस मुक़द्दस सन्दूक का तज़क़िरा फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया कि

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ آيَةَ مُلْكِهِ أَنْ يَأْتِيَكُمُ التَّابُوتُ فِيهِ سَكِينَةٌ  
مِّنْ رَبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ آلُ مُوسَىٰ وَآلُ هَارُونَ تَحْمِلُهُ الْمَلَائِكَةُ  
إِن فِي ذَلِكَ لَآيَةٌ لِّكُم إِن كُنتُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿٢٤﴾ (البقرة: ۲۴)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और उन से उन के नबी ने फ़रमाया : उस की बादशाही की निशानी येह है कि आए तुम्हारे पास ताबूत जिस में तुम्हारे रब की तरफ़ से दिलों का चैन है और कुछ बची हुई चीज़ें हैं मुअज़्ज़ज़ मूसा और मुअज़्ज़ज़ हारून के तर्के की, उठाते लाएंगे उसे फ़िरिश्ते बेशक उस में बड़ी निशानी है तुम्हारे लिये अगर ईमान रखते हो।

**दर्से हिदायत :-** बनी इस्राईल के सन्दूक के इस वाक़िए से चन्द मसाइल व फ़वाइद पर रोशनी पड़ती है जो याद रखने के क़ाबिल हैं :

﴿1﴾ मा'लूम हुआ कि बुजुर्गों के तबर्क़ात की खुदावन्दे कुद्दूस के दरबार में बड़ी इज़्ज़त व अज़मत है और इन के ज़रीए मख़्लूके खुदा को बड़े बड़े फ़ुयूज़ो बरक़ात हासिल होते हैं। देख लो ! इस सन्दूक में हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की जूतियां, आप का अ़सा और हज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام की पगड़ी थी, तो **अल्लाह** तआला की बारगाह में येह सन्दूक इस क़दर मक्बूल और मुकर्रम व मुअज़्ज़म हो गया कि फ़िरिश्तों ने इस को अपने नूरानी क़धों पर उठा कर हज़रते शमवील عَلَيْهِ السَّلَام के दरबारे नबुव्वत में पहुंचाया और खुदावन्दे कुद्दूस ने कुरआने मजीद में इस बात की शहादत दी कि **فِيْهِ سَكِيْنَةٌ وَّ مِنْ رَّبِّكُمْ** या'नी इस सन्दूक में तुम्हारे रब की तरफ़ से सकीना या'नी मोमिनो के कुलूब का इतमीनान और इन की रूहों की तस्कीन का सामान था। मतलब येह कि इस पर रहमते इलाही के अन्वारो बरक़ात का नुज़ूल और इस पर रहमतों की बारिश हुवा करती थी तो मा'लूम हुआ कि बुजुर्गों के तबर्क़ात जहां और जिस जगह भी होंगे ज़रूर उन पर रहमते खुदावन्दी का नुज़ूल होगा। और इस पर नाज़िल होने वाली रहमतों और बरक़तों से मोअमिनीन को सुकूने क़ल्ब और इतमीनाने रूह के फ़ुयूज़ो बरक़ात मिलते रहेंगे।

﴿2﴾ जिस सन्दूक में **अल्लाह** वालों के लिबास व अ़सा और जूतियां हों जब उस सन्दूक पर इतमीनान का सकीना और अन्वारो बरक़ात का ख़ज़ीना खुदा की तरफ़ से उतरना, कुरआन से षाबित है तो भला जिस क़ब्र में इन बुजुर्गों का पूरा जिस्म रखा होगा, क्या उन क़ब्रों पर रहमत व बरक़त और सकीना व इतमीनान नहीं उतरेगा ? हर अ़क़िल इन्सान जिस को खुदावन्दे आलम ने बसारात के साथ साथ ईमानी बसीरत भी अ़ता फ़रमाई है, वोह ज़रूर इस बात पर ईमान लाएगा कि जब बुजुर्गों के लिबास और इन की जूतियों पर सकीनाए रहमत का नुज़ूल होता है तो इन बुजुर्गों की क़ब्रों पर भी रहमते खुदावन्दी का ख़ज़ीना ज़रूर नाज़िल होगा। और जब बुजुर्गों की क़ब्रों पर रहमतों की बारिश होती है तो जो मुसलमान इन मुक़द्दस क़ब्रों के पास हाज़िर होगा ज़रूर उस पर भी बारिशे अन्वारे रहमत के चन्द क़तरात बरस ही जाएंगे क्यूं कि जो मुस्लाधार बारिश में

खड़ा होगा ज़रूर उस का कपड़ा और बदन भीगेगा, जो दरया में ग़ौता लगाएगा ज़रूर उस का बदन पानी से तर होगा, जो इत्र की दुकान पर बैठेगा, ज़रूर उस को खुशबू नसीब होगी। तो षाबित हो गया कि जो बुजुर्गों की क़ब्रों पर हाज़िरी देंगे ज़रूर वोह फ़यूजो बरकात की दौलतों से मालामाल होंगे और ज़रूर उन पर खुदा की रहमतों का नुजुल होगा जिस से उन के मसाइबो आलाम दूर होंगे और दीनो दुन्या के फ़वाइद व मनाफ़ेअ हासिल होंगे।

﴿3﴾ येह भी मा'लूम हुवा कि जो लोग बुजुर्गों के तबरूकात या इन की क़ब्रों की इहानत व बे अदबी करेंगे वोह ज़रूर क़हरे क़हहार और ग़ज़बे जब्बार में गिरिफ़्तार होंगे क्यूंकि क़ौमे अमालका जिन्हों ने इस सन्दूक की बे अदबी की थी उन पर ऐसा क़हरे इलाही का पहाड़ टूटा कि वोह बलाओं के हुजूम से बिलबिला उठे और काफ़िर होते हुवे उन्हों ने इस बात को मान लिया कि हम पर बलाओं और वबाओं का हम्ला इसी सन्दूक की बे अदबी की वजह से हुवा है। चुनान्वे, इसी लिये इन लोगों ने इस मुक़द्दस सन्दूक को बेल गाड़ी पर लाद कर बनी इस्राईल की बस्ती में भेज दिया ताकि वोह लोग ग़ज़बे इलाही की बलाओं के पन्जए क़हर से नजात पा लें।

﴿4﴾ जब इस सन्दूक की बरकत से बनी इस्राईल को जिहाद में फ़त्हे मुबीन मिलती थी तो ज़रूर बुजुर्गों की क़ब्रों से भी मोअमिनीन की मुश्किलात दफ़अ होंगी और मुरादे पूरी होंगी क्यूंकि ज़ाहिर है कि बुजुर्गों के लिबास से कहीं ज़ियादा अघरे रहमत बुजुर्गों के बदन में होगा।

﴿5﴾ इस वाक़िए से येह भी मा'लूम हुवा कि जो क़ौम सरकशी और इस्यान के तूफ़ान में पड़ कर **अब्बाह** व रसूल (عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की नाफ़रमान हो जाती है उस क़ौम की ने'मते छीन ली जाती हैं। चुनान्वे, आप ने पढ़ लिया कि जब बनी इस्राईल सरकश हो कर खुदा के नाफ़रमान हो गए और किस्म किस्म की बदकारियों में पड़ कर गुनाहों का भूत इन के सरों पर अफ़रियत बन कर सुवार हो गया तो इन के जुर्मों की नुहूसतों ने इन्हें येह बुरा दिन दिखाया कि सन्दूके सकीना इन के पास से क़ौमे अमालका के कुफ़ार उठा ले गए और बनी इस्राईल कई बरसों तक इस ने'मते उज़मा से महरूम हो गए। (والله تعالى اعلم)

### ﴿11﴾ ज़ब्ह हो कर ज़िन्दा हो जाने वाले परन्दे

हज़रते इब्राहीम खलीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने एक मरतबा खुदावन्दे कुद्दूस के दरबार में येह अर्ज किया कि या **अल्लाह** तू मुझे दिखा दे कि तू मुर्दों को किस तरह ज़िन्दा फ़रमाएगा ? तो **अल्लाह** तआला ने फ़रमाया कि ऐ इब्राहीम ! क्या इस पर तुम्हारा ईमान नहीं है ? तो आप ने अर्ज किया कि क्यों नहीं ? मैं इस पर ईमान तो रखता हूँ लेकिन मेरी तमन्ना येह है कि इस मन्ज़र को अपनी आंखों से देख लूँ ताकि मेरे दिल को क़रार आ जाए तो **अल्लाह** तआला ने फ़रमाया कि तुम चार परन्दों को पालो और उन को ख़ूब खिला पिला कर अच्छी तरह हिला मिला लो फिर तुम उन्हें ज़ब्ह कर के और उन का क़ीमा बना कर अपने दो नवाह के चन्द पहाड़ों पर थोड़ा थोड़ा गोश्त रख दो । फिर उन परन्दों को पुकारो तो वोह परन्दे ज़िन्दा हो कर दौड़ते हुवे तुम्हारे पास आ जाएंगे और तुम मुर्दों के ज़िन्दा होने का मन्ज़र अपनी आंखों से देख लोगे । चुनान्चे, इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने एक मुर्ग़, एक कबूतर, एक गिध, एक मोर । इन चार परन्दों को पाला । और एक मुद्दत तक इन चार परन्दों को खिला पिला कर ख़ूब हिला मिला लिया । फिर इन चार परन्दों को ज़ब्ह कर के इन के सरों को अपने पास रख लिया और इन चारों का क़ीमा बना कर थोड़ा थोड़ा गोश्त अत्राफ़ व ज़वानिब के पहाड़ों पर रख दिया और दूर से खड़े हो कर इन परन्दों का नाम ले कर पुकारा कि **يَا أَيُّهَا الْمُدْيَكُ** (ऐ मुर्ग़) **يَا أَيُّهَا الطَّائُفُ** (ऐ मोर) **يَا أَيُّهَا النَّسْرُ** (ऐ गिध) **يَا أَيُّهَا الْحَمَامَةُ** (ऐ कबूतर) आप की पुकार पर एक दम पहाड़ों से गोश्त का क़ीमा उड़ना शुरू हो गया और हर परन्द का गोश्त, पोस्त, हड्डी, पर, अलग हो कर चार परन्द तय्यार हो गए और वोह चारों परन्द बिला सरों के दौड़ते हुवे हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के पास आ गए और अपने सरों से जुड़ कर दाना चुगने लगे और अपनी अपनी बोलियां बोलने लगे और हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने अपनी आंखों से मुर्दों के ज़िन्दा होने का मन्ज़र देख लिया और इन के दिल को इतमीनान व क़रार मिल गया ।

इस वाक़िए का ज़िक्र खुदावन्दे करीम ने कुरआने मजीद की सूरए बक़रह में इन लफ़्ज़ों के साथ बयान फ़रमाया है कि

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَىٰ ۖ قَالَ أَوْ لَمْ تُؤْمِنُ ۖ  
 قَالَ بَلَىٰ وَلَٰكِن لِّيَبْطِئَنَّ قَلْبِي ۖ قَالَ فَخُذْ أَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ  
 فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلَىٰ كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ  
 يَأْتِيَنَّكَ سَعْيًا ۚ وَاعْلَمَنَّ أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٦﴾ (پ ۳، البقرة: ۲۶)

**तर्जमए कञ्जुल ईमान :-** और जब अर्ज की इब्राहीम ने ऐ रब मेरे मुझे दिखा दे तू क्यूंकर मुर्दे जिलाएगा ? फ़रमाया : क्या तुझे यकीन नहीं ? अर्ज की : यकीं क्यूं नहीं मगर यह चाहता हूं कि मेरे दिल को क़रार आ जाए । फ़रमाया : तो अच्छा, चार परन्दे ले कर अपने साथ हिला ले फिर उन का एक एक टुकड़ा हर पहाड़ पर रख दे फिर उन्हें बुला वोह तेरे पास चले आएंगे पाउं से दौड़ते और जान रख कि **अल्लाह** ग़ालिब ह़िक्मत वाला है ।

**दर्से हिदायत :-** मज़कूरा बाला कुरआनी वाकिए से मुन्दरिजए ज़ैल मसाइल पर ख़ास तौर से रोशनी पड़ती है । इन को बग़ौर पढ़िये और हिदायत का नूर हासिल कीजिये और दूसरों को भी रोशनी दिखाइये ।

**मुर्दों को पुकारना :-** चारों परन्दों का कीमा बना कर हज़रते इब्राहीम **عليه السلام** ने पहाड़ियों पर रख दिया था । फिर **अल्लाह** तआला का हुक्म हुवा कि **ثُمَّ ادْعُهُنَّ** या 'नी इन मुर्दे परन्दों को पुकारो । चुनान्ते, आप ने चारों को नाम ले कर पुकारा तो इस से येह मस्अला षाबित हो गया कि मुर्दों को पुकारना शिर्क नहीं है क्यूंकि जब मुर्दा परन्दों को **अल्लाह** तआला ने पुकारने का हुक्म फ़रमाया और एक जलीलुल क़द्र पैग़म्बर ने इन मुर्दों को पुकारा तो हरगिज़ हरगिज़ येह शिर्क नहीं हो सकता । क्यूंकि खुदावन्दे करीम कभी भी किसी को शिर्क का हुक्म नहीं देगा न कोई नबी हरगिज़ हरगिज़ कभी शिर्क का काम कर सकता है । तो जब मरे हुवे परन्दों को पुकारना शिर्क नहीं तो वफ़ात पाए हुवे खुदा के वलियों और शहीदों को पुकारना क्यूंकर शिर्क हो सकता है ? जो लोग वलियों और शहीदों के पुकारने को शिर्क कहते हैं और या ग़ौष का ना'रा लगाने वालों को मुशरिक कहते हैं, उन्हें थोड़ी देर सर झुका कर सोचना चाहिये कि इस कुरआनी वाकिए

की रोशनी में उन्हें हिदायत का नूर नज़र आ जाए और वोह अहले सुन्नत के तरीके पर सिराते मुस्तकीम की शाहराह पर चल पड़ें। (والله الموفق)

**तसव्वुफ़ का एक नुक्ता :-** हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने जिन चार परन्दों को ज़ब्द किया इन में से हर परन्द एक बुरी ख़स्लत में मशहूर है मषलन मोर को अपनी शक्लो सूरत की ख़ूब सूरती पर घमण्ड रहता है और मुर्ग़ में कषरते शहवत की बुरी ख़स्लत है और गिध में हिंस और लालच की बुरी आदत है और कबूतर को अपनी बुलन्द परवाज़ी और ऊंची उड़ान पर नख़वत व गुरूर होता है। तो इन चारों परन्दों के ज़ब्द करने से इन चारों ख़स्लतों को ज़ब्द करने की तरफ़ इशारा है कि चारों परन्द ज़ब्द किये गए तो हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को मुर्दों के ज़िन्दा होने का मन्ज़र नज़र आया और इन के दिल में नूरे इतमीनान की तजल्ली हुई। जिस की बदौलत इन्हें नफ़से मुतमइन्ना की दौलत मिल गई तो जो शख्स येह चाहता है कि उस का दिल ज़िन्दा हो जाए और उस को नफ़से मुतमइन्ना की दौलत नसीब हो जाए उस को चाहिये कि मुर्ग़ ज़ब्द करे या'नी अपनी शहवत पर छुरी फेर दे और मोर को ज़ब्द करे या'नी अपनी शक्लो सूरत और लिबास के घमण्ड को ज़ब्द कर डाले और गिध को ज़ब्द करे या'नी हिंस और लालच का गला काट डाले और कबूतर को ज़ब्द करे या'नी अपनी बुलन्द परवाज़ी और ऊंचे मर्तबों के गुरूर नख़वत पर छुरी चला दे। अगर कोई इन चारों बुरी ख़स्लतों को ज़ब्द कर डालेगा तो إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى वोह अपने दिल के ज़िन्दा होने का मन्ज़र अपनी आंखों से देख लेगा और उस को नफ़से मुतमइन्ना की सरफ़राज़ी का शरफ़ हासिल हो जाएगा। (والله تعالى أعلم)

(تفسير جمل، ج ۱، ص ۳۲۸، پ ۳، البقرة: ۲۶)

## ﴿12﴾ तालूत की बादशाही

बनी इस्राईल का निज़ाम यूं चलता था कि हमेशा इन लोगों में एक बादशाह होता था। जो मुल्की निज़ाम चलाता था और एक नबी होता था जो निज़ामे शरीअत और दीनी उमूर की हिदायत व रहनुमाई



किया करता था। और यू दस्तूर चला आता था कि बादशाही यहूद इब्ने या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام के ख़ानदान में रहती थी और नबुव्वत लावी बिन या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام के ख़ानदान का तुर्रए इम्तियाज़ था। हज़रते शमवील عَلَيْهِ السَّلَام जब नबुव्वत से सरफ़राज़ किये गए तो इन के ज़माने में कोई बादशाह नहीं था तो बनी इस्राईल ने आप से दरख़्वास्त की, कि आप किसी को हमारा बादशाह बना दीजिये तो आप ने हुक्मे खुदावन्दी के मुताबिक़ "तालूत" को बादशाह बना दिया जो बनी इस्राईल में सब से ज़ियादा ताक़तवर और सब से बड़ा अलमि़म था। लेकिन बहुत ही ग़रीब व मुफ़्लिस था। चमड़ा पका कर या बकरियों की चरवाही कर के ज़िन्दगी बसर करता था। इस पर बनी इस्राईल को ए'तिराज़ हुवा कि तालूत शाही ख़ानदान से नहीं है लिहाज़ा येह क्यूंकर और कैसे हमारा बादशाह हो सकता है ? इस से ज़ियादा तो बादशाहत के हक़दार हम लोग हैं क्यूंकि हम लोग शाही ख़ानदान से हैं। फिर तालूत के पास कुछ ज़ियादा माल भी नहीं है। एक ग़रीब व मुफ़्लिस इन्सान भला तख़्ते शाही के लाइक़ क्यूंकर हो सकता है। बनी इस्राईल के इन ए'तिराज़ का जवाब देते हुवे हज़रते शमवील عَلَيْهِ السَّلَام ने येह तक़रीर फ़रमाई कि

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** फ़रमाया : इसे **अल्लाह** ने तुम पर चुन लिया और इसे इल्म और जिस्म में कुशादगी ज़ियादा दी और **अल्लाह** अपना मुल्क जिसे चाहे दे। और **अल्लाह** वुस्अत वाला इल्म वाला है। और उन से उन के नबी ने फ़रमाया इस की बादशाही की निशानी येह है कि आए तुम्हारे पास ताबूत जिस में तुम्हारे रब की तरफ़ से दिलों का चैन है।

(प २, البقرة: २४८, २४९)

चुनान्चे, थोड़ी ही देर के बा'द चार फ़िरिश्ते सन्दूक ले कर आ गए और सन्दूक को हज़रते शमवील عَلَيْهِ السَّلَام के पास रख दिया। येह देख कर तमाम बनी इस्राईल ने तालूत की बादशाही को तस्लीम कर लिया और आप ने बादशाह बन कर न सिर्फ़ इन्तिज़ामे मुल्की संभाला बल्कि बनी इस्राईल की फ़ौज भरती कर के क़ौमे अमालक़ा के कुफ़्फ़ार से जिहाद भी फ़रमाया।



**अल्लाह** तआला ने इस वाक़िअ का ज़िक्र कुरआने मजीद में फ़रमाते हुवे इस तरह इरशाद फ़रमाया जिस का तर्जमा येह है कि तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और उन से उन के नबी ने फ़रमाया कि बेशक **अल्लाह** ने तालूत को तुम्हारा बादशाह बना कर भेजा है। बोले : इसे हम पर बादशाही क्यूंकर होगी ? और हम इस से ज़ियादा सल्तनत के मुस्तहिक् हैं और इसे माल में भी वुस्अत नहीं दी गई, फ़रमाया इसे **अल्लाह** ने तुम पर चुन लिया और इसे इल्म और जिस्म में कुशादगी ज़ियादा दी और **अल्लाह** अपना मुल्क जिसे चाहे दे और **अल्लाह** वुस्अत वाला इल्म वाला है और उन से उन के नबी ने फ़रमाया : इस की बादशाही की निशानी येह है कि आए तुम्हारे पास ताबूत जिस में तुम्हारे रब की तरफ़ से दिलों का चैन है और कुछ बची हुई चीज़ें हैं मुअज़्ज़ज मूसा और मुअज़्ज़ज हारून के तर्के की उठाते लाएंगे इसे फ़िरिश्ते। बेशक इस में बड़ी निशानी है तुम्हारे लिये, अगर ईमान रखते हो। (२४८, २४९ البقرة)

**दर्से हिदायत :-** ﴿1﴾ इस वाक़िअ से जहां बहुत से मसाइल पर रोशनी पड़ती है एक बहुत ही वाज़ेह दर्स येह मिलता है कि **अल्लाह** तआला के फ़ज़ल और उस की नवाज़िश की कोई हद नहीं है। वोह चाहे तो छोटे से छोटे आदमी को मिनटों बल्कि सेकन्डों में बड़े से बड़ा आदमी बना दे। देख लो हज़रते तालूत एक बहुत ही कम दरजे के आदमी थे और इतने मुफ़िलस थे कि या तो दबगर थे जो चमड़े को दबाग़त दे कर अपनी रोज़ी हासिल करते थे या बकरियां चरा कर इस की उजरत से गुज़र बसर करते थे मगर लम्हे भर में **अल्लाह** तआला ने उन्हें साहिबे तख़्तो ताज बना कर बादशाह बना दिया।

﴿2﴾ इस वाक़िअ से और कुरआने मजीद की इबारत से मा'लूम हुवा कि जिस्मानी तुवानाई और इल्म की वुस्अत बादशाही के लिये मालदारी से ज़ियादा ज़रूरी है क्यूंकि बिगैर जिस्मानी ताक़त और इल्म के निज़ामे मुल्की को चलाना और सल्तनत का इन्तिज़ाम करना तक्रीबन मुहाल और नामुमकिन है। इस से ज़ाहिर हुवा कि इल्म का दरजा माल से बहुत बुलन्द तर है। (والله تعالى اعلم)

### ﴿13﴾ हज़रते दावूद عليه السلام किस तरह बादशाह बने ?

जब तालूत बनी इस्राईल के बादशाह बन गए तो आप ने बनी इस्राईल को जिहाद के लिये तय्यार किया और एक काफ़िर बादशाह “जालूत” से जंग करने के लिये अपनी फ़ौज को ले कर मैदाने जंग में निकले । जालूत बहुत ही क़द आवर और निहायत ही ताक़तवर बादशाह था । वोह अपने सर पर लोहे की जो टोपी पहनता था उस का वज़न तीन सो रतल था । जब दोनों फ़ौजें मैदाने जंग में लड़ाई के लिये सफ़ आराई कर चुकीं तो हज़रते तालूत ने अपने लश्कर में येह ए’लान फ़रमा दिया कि जो शख़्स जालूत को क़त्ल करेगा, मैं अपनी शहजादी का निकाह उस के साथ कर दूंगा । और अपनी आधी सल्तनत भी उस को अ़ता कर दूंगा । येह फ़रमाने शाही सुन कर हज़रते दावूद عليه السلام आगे बढ़े जो अभी बहुत ही कमसिन थे और बीमारी से चेहरा ज़र्द हो रहा था । और गुर्बत व मुफ़्लिसी का येह आलम था कि बकरियां चरा कर इस की उजरत से गुज़र बसर करते थे । रिवायत है कि जब हज़रते दावूद عليه السلام घर से जिहाद के लिये रवाना हुवे थे तो रास्ते में एक पथ्थर येह बोला कि ऐ हज़रते दावूद ! मुझे उठा लीजिये क्यूंकि मैं हज़रते मूसा عليه السلام का पथ्थर हूं । फिर दूसरे पथ्थर ने आप को पुकारा कि ऐ हज़रते दावूद ! मुझे उठा लीजिये क्यूंकि मैं हज़रते हारून عليه السلام का पथ्थर हूं । फिर एक तीसरे पथ्थर ने आप को पुकार कर अ़र्ज़ किया कि ऐ हज़रते दावूद عليه السلام मुझे उठा लीजिये क्यूंकि मैं जालूत का क़ातिल हूं । आप عليه السلام ने उन तीनों पथ्थरों को उठा कर अपने झोले में रख लिया । जब जंग शुरूअ़ हुई तो हज़रते दावूद عليه السلام अपनी गोफ़न ले कर सफ़ों से आगे बढ़े और जब जालूत पर आप की नज़र पड़ी तो आप ने इन तीनों पथ्थरों को अपनी गोफ़न में रख कर और बिस्मिल्लाह पढ़ कर गोफ़न से तीनों पथ्थरों को जालूत के ऊपर फेंका और येह तीनों पथ्थर जा कर जालूत की नाक और खोपड़ी पर लगे और उस के भेजे को पाश पाश कर के सर के पीछे से निकल कर तीस जालूतियों को लगे और सब के सब मक्तूल हो कर गिर पड़े । फिर हज़रते दावूद عليه السلام ने जालूत की लाश को घसीटते

हुवे ला कर अपने बादशाह तालूत के कदमों में डाल दिया इस पर हज़रते तालूत और बनी इस्राईल बे हृद खुश हुवे ।

जालूत के क़त्ल हो जाने से उस का लश्कर भाग निकला और हज़रते तालूत को फ़त्हे मुबीन हो गई और अपने ए'लान के मुताबिक़ हज़रते तालूत ने हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के साथ अपनी लड़की का निकाह कर दिया और अपनी आधी सल्तनत का इन को सुल्तान बना दिया । फिर पूरे चालीस बरस के बा'द जब हज़रते तालूत बादशाह का इन्तिकाल हो गया तो हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام पूरी सल्तनत के बादशाह बन गए और जब हज़रते शमवील عَلَيْهِ السَّلَام की वफ़ात हो गई तो **अल्लाह** तआला ने हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام को सल्तनत के साथ नबुव्वत से भी सरफ़राज़ फ़रमाया दिया । आप से पहले सल्तनत और नबुव्वत दोनों ए'ज़ाज़ एक साथ किसी को भी नहीं मिला था । आप पहले शख्स हैं कि इन दोनों ओहदों पर फ़इज़ हो कर सत्तर बरस तक सल्तनत और नबुव्वत दोनों मन्सबों के फ़राइज़ पूरे करते रहे और फिर आप के बा'द आप के फ़रज़न्द हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام को भी **अल्लाह** तआला ने सल्तनत और नबुव्वत दोनों मर्तबों से सरफ़राज़ फ़रमाया । (تفسير جمل على الجالين، ج ۳، ص ۳۰۸، ۲، البقرة: ۲۵)

इस वाक़िए का इजमाली बयान कुरआने मजीद की सूरए बक़रह में इस तरह है कि

وَقَتَلَ دَاوُدُ جَالُوتَ وَاتَّهَى اللَّهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَيْهِ مِمَّا يَبْسُطُ (پ ۲، البقرة: ۲۵)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और क़त्ल किया दावूद ने जालूत को और **अल्लाह** ने उसे सल्तनत और हिक्मत अता फ़रमाई और उसे जो चाहा सिखाया ।

**हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام का ज़रीअए मअ़ाश :-** हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام ने बा वुजूद येह कि अज़ीम सल्तनत के बादशाह थे मगर सारी उम्र वोह अपने हाथ की दस्तकारी की कमाई से अपने खुर्दो नोश का सामान करते रहे । **अल्लाह** तआला ने आप को येह मो'जिज़ा अता फ़रमाया था कि आप लोहे को हाथ में लेते तो वोह मोम की तरह नर्म हो जाया करता था

और आप उस से जिहें बनाया करते थे और इन को फ़रोज़ कर के इस रक़म को अपना ज़रीअ़ मआश बनाए हुवे थे और **अल्लाह** तआला ने आप को परन्दों की बोली सिखा दी थी । (روح البیان، ج ۱، ص ۳۹۱، پ ۲، البقرة: ۲۵۱)

**दर्से हिदायत :-** ﴿1﴾ हज़रते तालूत की सरगुज़शत की तरह हज़रते दावूद

**عَلَيْهِ السَّلَام** की मुक़द्दस जिन्दगी से येही सबक़ मिलता है कि **अल्लाह**

तआला जब अपना फ़ज़लो करम फ़रमाता है तो एक लम्हे में राई पहाड़ और ज़र्रे को आफ़ताब बना देता है । ग़ौर करो कि हज़रते दावूद **عَلَيْهِ السَّلَام** एक

कमसिन लड़के थे और खुद निहायत ही मुफ़िलस और एक ग़रीब बाप के बेटे थे । मगर अचानक **अल्लाह** तआला ने इन को कितने अज़ीम और

बड़े बड़े मरातिब व दरजात के ए'ज़ाज़ से सरफ़राज़ फ़रमा दिया कि इन के सर पर ताजे शाही रख कर इन्हें बादशाह बना दिया । और एक बादशाह

की शहज़ादी इन के निकाह में आई और फिर नबुव्वत का बुलन्द मर्तबा इन्हें अता फ़रमा दिया कि इस से बढ़ कर इन्सान के लिये कोई बुलन्द मर्तबा हो

सकता ही नहीं । फिर **अल्लाह** तआला की कुदरते काहिरा का जल्वा देखो कि जालूत जैसे जाबिर और ताक़तवर बादशाह का कातिल हज़रते दावूद

**عَلَيْهِ السَّلَام** को बना दिया जो एक कमसिन लड़के और बीमार थे और वोह भी इन के तीन पथ्थरों से क़त्ल हुवा । हालांकि जालूत के सामने इन छोटे छोटे

तीन पथ्थरों की क्या हकीक़त थी ? जब कि वोह तीन सो रतल वज़न की फ़ौलादी टोपी पहने हुवे था । मगर हकीक़त तो येह है कि **अल्लाह** तआला

अगर चाहे तो एक च्यूटी को हाथी पर ग़ालिब कर दे और **अल्लाह** तआला अगर चाहे तो हाथी एक च्यूटी का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता ।

﴿2﴾ वाकिअ़ मज़क़ूरा बाला में आप ने पढ़ लिया कि तालूत दबगरी या'नी चमड़ा पकाने का पेशा करते थे या बकरियां चराते थे और हज़रते

दावूद **عَلَيْهِ السَّلَام** भी पहले बकरियां चराया करते थे और फिर जब **अल्लाह** तआला ने इन को बादशाह बना दिया और नबुव्वत के शरफ़ से भी

सरफ़राज़ फ़रमा दिया तो इन्हों ने अपना ज़रीअ़ मआश जिहें बनाने के पेशे को बना लिया । इस से मा'लूम हुवा कि रिज़्के हलाल तलब करने के

लिये कोई पेशा इख़्तियार करना ख़्वाह वोह दबगरी हो या चरवाही हो या

लोहारी हो या कपड़ा बुनना हो, अल ग़रज़ कोई पेशा हरगिज़ हरगिज़ न ज़लील है न इन पेशों के ज़रीए रोज़ी हासिल करने वालों के लिये कोई ज़िल्लत है। जो लोग बंकरों और दूसरे पेशावरों को महूज़ इन के पेशे की बिना पर ज़लील व हकीर समझते हैं वोह इन्तिहाई जहालत व गुमराही के गढ़े में गिरे हुवे हैं। रिज़्के हलाल तलब करने के लिये कोई जाइज़ पेशा इख़्तियार करना येह अम्बिया व मुरसलीन और सालिहीन का मुक़द्दस तरीक़ा है। लिहाज़ा हरगिज़ हरगिज़ पेशावर मुसलमान को हकीर ज़लील शुमार नहीं करना चाहिये बल्कि हकीकत तो येह है कि पेशावर मुसलमान उन लोगों से हज़ारों दरजे बेहतर है जो सरकारी नोक़रियों और रिश्वतों और धोका देही के ज़रीए रक़में हासिल कर के अपना पेट पालते हैं और अपने शरीफ़ होने का दा'वा करते हैं हालांकि शरअन उस से ज़ियादा ज़लील कौन होगा जिस की कमाई हलाल न हो या मुश्तबा हो। (والله تعالى اعلم)

#### ﴿14﴾ मेहराबे मरयम

हज़रते ईसा عليه السلام की वालिदए माजिदा हज़रते मरयम رضي الله تعالى عنها के वालिद का नाम “इमरान” और मां का नाम “हन्ना” था। जब बीबी मरयम अपनी मां के शिकम में थीं उस वक़्त इन की मां ने येह मन्नत मान ली थी कि जो बच्चा पैदा होगा मैं उस को बैतुल मुक़द्दस की ख़िदमत के लिये आज़ाद कर दूंगी। चुनान्वे, जब हज़रते मरयम पैदा हुई तो इन की वालिदा इन को बैतुल मुक़द्दस में ले कर गई। उस वक़्त बैतुल मुक़द्दस के तमाम अलियों और आबिदों के इमाम हज़रते ज़करिय्या عليه السلام थे जो हज़रते मरयम के ख़ालू थे। हज़रते ज़करिय्या عليه السلام ने हज़रते मरयम رضي الله تعالى عنها को अपनी कफ़लत और परवरिश में ले लिया और बैतुल मुक़द्दस की बालाई मन्ज़िल में तमाम मन्ज़िलों से अलग एक मेहराब बना कर हज़रते मरयम رضي الله تعالى عنها को इस मेहराब में ठहराया। चुनान्वे, हज़रते मरयम رضي الله تعالى عنها इस मेहराब में अकेली खुदा की इबादत में मसरूफ़ रहने लगीं और हज़रते ज़करिय्या عليه السلام सुब्हो शाम मेहराब में इन की ख़बर गीरी और खुर्दो नोश का इन्तिज़ाम करने के लिये आते जाते रहे।

चन्द ही दिनों में हज़रते मरयम رضي الله تعالى عنها की मेहराब के अन्दर येह करामत नुमूदार हुई कि जब हज़रते ज़करिय्या عليه السلام मेहराब

में जाते तो वहां जाड़ों के फल गरमी में और गरमी के फल जाड़ों में पाते । हज़रते ज़करिया عَلَيْهِ السَّلَام हैरान हो कर पूछते कि ऐ मरयम ! यह फल कहा से तुम्हारे पास आते हैं ? तो हज़रते मरयम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا यह जवाब देतीं कि यह फल **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ की तरफ़ से आते हैं और **अल्लाह** जिस को चाहता है बिला हिसाब रोज़ी अता फ़रमाता है ।

हज़रते ज़करिया عَلَيْهِ السَّلَام को खुदावन्दे कुहूस ने नबुव्वत के शरफ़ से नवाज़ा था मगर उन के कोई अवलाद नहीं थी और वोह बिल्कुल ज़ईफ़ हो चुके थे । बरसों से उन के दिल में फ़रज़न्द की तमन्ना मौजज़न थी और बारहा उन्होंने ने गिड़ गिड़ा कर खुदा से अवलादे नरीना के लिये दुआ भी मांगी थी मगर खुदा की शाने बे नियाज़ी कि बावुजूद इस के अब तक उन को कोई फ़रज़न्द नहीं मिला । जब उन्होंने ने हज़रते मरयम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की मेहराब में यह करामत देखी कि उस जगह बे मौसिम का फल आता है तो उस वक़्त उन के दिल में यह ख़याल आया कि मेरी उम्र अब इतनी ज़ईफ़ी की हो चुकी है कि अवलाद के फल का मौसिम ख़त्म हो चुका है । मगर वोह **अल्लाह** जो हज़रते मरयम की मेहराब में बे मौसिम के फल अता फ़रमाता है वोह क़ादिर है कि मुझे भी बे मौसिम की अवलाद (का फल) अता फ़रमा दे । चुनान्चे, आप ने मेहराबे मरयम में दुआ मांगी और आप की दुआ मक्बूल हो गई । और **अल्लाह** तआला ने बुढ़ापे में आप को एक फ़रज़न्द अता फ़रमाया जिन का नाम खुद खुदावन्दे आलम ने “यहया” रखा और **अल्लाह** तआला ने उन को नबुव्वत का शरफ़ भी अता फ़रमाया । कुरआने मजीद में खुदावन्दे कुहूस ने इस वाक़िए को इस तरह बयान फ़रमाया :

كَلَّمَآدَخَلَ عَلَيْهِآزَكْرِيَّاٱلْبَحْرَابُ وَجَدَ عِنْدَ هَارِزْقَآ قَالَ يٰزَيْرِيْمُ  
 اٰنِ لَكَ هٰذَا ۚ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ  
 حِسَابٍ ۝۲۰ هُنَالِكَ دَعَا زَكْرِيَّا رَبَّهُ ۖ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِنْ لَدُنْكَ  
 ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيعُ الدُّعَآءِ ۝۲۱ فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ يُصَلِّيُ  
 فِى الْبَحْرَابِ ۚ اَنَّ اللّٰهَ يُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ مُّصَدِّقًا لِّكَلِمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ  
 وَسَيِّدًا وَحَصَوْرًا وَنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝۲۲ (پ ۳، آل عمران: ۳۹ تا ۴۷)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** जब ज़करिय्या उस के पास उस की नमाज़ पढ़ने की जगह जाते उस के पास नया रिज़क़ पाते। कहा : ऐ मरयम ! येह तेरे पास कहां से आया बोलीं वोह **अल्लाह** के पास से है बेशक **अल्लाह** जिसे चाहे बे गिनती दे। यहां पुकारा ज़करिय्या अपने रब को। बोला : ऐ रब मेरे मुझे अपने पास से दे सुथरी अवलाद बेशक तू ही है दुआ सुनने वाला, तो फ़िरिश्तों ने उसे आवाज़ दी और वोह अपनी नमाज़ की जगह खड़ा नमाज़ पढ़ रहा था। बेशक **अल्लाह** आप को मुज़दा देता है यह्या का जो **अल्लाह** की तरफ़ के एक कलिमे की तस्दीक़ करेगा और सरदार और हमेशा के लिये औरतों से बचने वाला और नबी हमारे ख़ासों में से।

**दर्से हिदायत :-** इस वाकिफ़ से मुन्दरिजए ज़ैल इब्रतों की तजल्ली होती है जिन से हर मुसलमान को सबक़ हासिल करना बहुत ज़रूरी है।

**हज़रते मरयम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا बा करामत वलिय्या हैं :-** वाकिअए मज़कूरा से मा'लूम हुवा कि हज़रते मरयम رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا साहिबे करामत और मर्तबए विलायत पर फ़ाइज़ हैं क्यूंकि खुदा की तरफ़ से इन की मेहराब में फल आते थे और वोह भी जाड़ों के फल गरमी में और गरमी के फल जाड़ों में। येह इन की एक बहुत ही अज़ीमुश्शान और वाजेह करामत है जो इन की विलायत की शाहिदे अद्ल है।

**इबादत गाह मक़ामे मक़बूलिय्यत है :-** इस वाकिफ़ से येह भी षाबित हुवा कि **अल्लाह** वाले या **अल्लाह** वालियां जिस जगह इबादत करें वोह जगह इस क़दर मुक़द्दस हो जाती है कि वहां रहमते खुदावन्दी **عَزَّوَجَلَّ** का नुज़ूल होता है और वहां पर दुआएं मक़बूल हुवा करती हैं जैसा कि हज़रते ज़करिय्या **عَلَيْهِ السَّلَام** की दुआ मेहराबे मरयम में मक़बूल हुई। हालांकि वोह इस से पहले बैतुल मुक़द्दस में बार बार येह दुआ मांग चुके थे मगर उन की मुराद पूरी नहीं हुई थी।

**क़ब्रों के पास दुआ :-** जहां **अल्लाह** के मक़बूल बन्दे और मक़बूल बन्दियां चन्द दिन बैठ कर इबादत करें जब इन जगहों पर दुआएं मक़बूल होती हैं तो इन मक़बूलाने बारगाहे इलाही की क़ब्रों के पास जहां इन बुजुर्गों का पूरा जिस्म बरसहा बरस तक रहा है, वहां भी ज़रूर दुआएं



मक़बूल होंगी। चुनान्वे, हज़रते इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का बयान है कि जब किसी मस्अले का हल मेरे लिये मुश्किल हो जाता था तो मैं बग़दाद जा कर हज़रते इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की क़ब्रे मुबारक के पास बैठ कर अपने और खुदा के दरमियान इमामे ममदूह की मुबारक क़ब्र को वसीला बना कर दुआ मांगता था तो मेरी मुराद बर आती थी और मस्अला हल हो जाया करता था।

(الخيرات الحسان، الفصل الخامس والثلاثون في تاديب الائمة معه في مماته الخ، ص ۲۳)

(इस किस्म के वाकिआत के लिये पढ़िये हमारी किताब औलियाए रिजालुल हदीष व रूहानी हिकायात)

### ﴿15﴾ मक़ामे इब्राहीम

येह एक मुक़द्दस पथ्थर है जो का'बए मुअज़्ज़मा से चन्द गज की दूरी पर रखा हुवा है। येह वोही पथ्थर है कि जब हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का'बए मुकर्रमा की ता'मीर फ़रमा रहे थे तो जब दीवारों सर से ऊंची हो गई तो इसी पथ्थर पर खड़े हो कर आप ने का'बए मुअज़्ज़मा की दीवारों को मुकम्मल फ़रमाया। येह आप का मो'जिज़ा था कि येह पथ्थर मोम की तरह नर्म हो गया और आप के दोनों मुक़द्दस क़दमों का इस पथ्थर पर बहुत गहरा निशान पड़ गया। आप के क़दमों के मुबारक निशान की बदौलत इस मुबारक पथ्थर की फ़ज़ीलत व अज़मत में इस तरह चार चांद लग गए कि खुदावन्दे कुद्दूस ने अपनी किताब मुक़द्दस क़ुरआने मजीद में दो जगह इस की अज़मत का खुतबा इरशाद फ़रमाया। एक जगह तो येह इरशाद फ़रमाया कि

فِيهِ أَيْتٌ بَيِّنَةٌ مِّمَّا فَرَّهِيْمُ (پ، ۴، آل عمران ۹۷)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** इस में खुली निशानियां हैं, इब्राहीम के खड़े होने की जगह।

या'नी का'बए मुकर्रमा में खुदा की बहुत सी रोशन और खुली हुई निशानियां हैं और इन निशानियों में से एक बड़ी निशानी “**मक़ामे इब्राहीम**” है और दूसरी जगह इस पथ्थर की अज़मत का ए'लान करते हुवे येह फ़रमाया कि :



وَاتَّخَذُوا مِنْ مَّقَامِ إِبْرَاهِيمَ مُصَلًّى ۖ (پ ۱، البقرة ۱۲۵)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और इब्राहीम के खड़े होने की जगह को नमाज़ का मक़ाम बनाओ ।

चार हज़ार बरस के तवील ज़माने से इस बाबरकत पथ्थर पर हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के मुबारक क़दमों के निशान मौजूद हैं । इस तवील मुद्दत से येह पथ्थर खुले आस्मान के नीचे ज़मीन पर रखा हुवा है । इस पर चार हज़ार बरसातें गुज़र गईं, हज़ारों आंधियों के झोंके इस से टकराए । बारहा हरमे का'बा में पहाड़ी नालों से बरसात में सैलाब आया और येह मुक़द्दस पथ्थर सैलाब के तेज़ धारों में डूबा रहा, करोड़ों इन्सानों ने इस पर हाथ फेरा मगर इस के बावुजूद आज तक हज़रते ख़लील عَلَيْهِ السَّلَام के ज़लीलुल क़द्र क़दमों के निशान इस पथ्थर पर बाकी हैं जो बिला शुबा हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का एक बहुत ही बड़ा और निहायत ही मुअज़्ज़म मो'जिज़ा है । और यकीनन येह पथ्थर खुदावन्दे कुद्दूस की आयाते बय्यिनात और खुली हुई रोशन निशानियों में से एक बहुत बड़ा निशान है । और उस की शान का येह अज़ीमुश्शान निशान हर मुसलमान के लिये बहुत बड़ी इब्रत का सामान है कि खुदावन्दे कुद्दूस ने तमाम मुसलमानों को येह हुक्म दिया कि तुम लोग मेरे मुक़द्दस घर ख़ानए का'बा के तवाफ़ के बा'द इसी पथ्थर के पास दो रक्अत नमाज़ अदा करो । तुम लोग नमाज़ तो मेरे लिये पढ़ो और सजदा मेरा अदा करो लेकिन मुझे येह महबूब है कि सजदों के वक़्त तुम्हारी पेशानियां उस मुक़द्दस पथ्थर के पास ज़मीन पर लगें कि जिस पथ्थर पर मेरे ख़लीले ज़लील हज़रते इब्राहीम (عَلَيْهِ السَّلَام) के क़दमों का निशान बना हुवा है ।

**दर्से हिदायत :-** मुसलमानो ! मक़ामे इब्राहीम की अज़मत से येह सबक़ मिलता है कि जिस जगह **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के मुक़द्दस बन्दों का कोई निशान मौजूद हो वोह जगह **اَللّٰهُ** तअ़ाला के नज़दीक बहुत ज़ियादा इज़्ज़त व अज़मत वाली है और उस जगह खुदा की इबादत खुदा के नज़दीक बहुत ही बेहतर और महबूब तर है ।

अब गौर करो कि मक़ामे इब्राहीम जब हज़रते ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के क़दमों के निशान की वजह से इतना मुअज़्ज़म व मुकर्रम हो गया तो खुदा के महबूबे अकरम और हबीबे मुअज़्ज़म صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की क़ब्रे अन्वर की अज़मत व बुजुर्गी और इस के तक्हुस व शरफ़ का क्या अलम होगा कि जहां हबीबे खुदा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का सिर्फ़ निशान ही नहीं बल्कि खुदा के महबूबे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का पूरा जिस्मे अन्वर मौजूद है और इस ज़मीन का ज़रा ज़रा अन्वारे नबुव्वत की तजल्लियों से रश्के आफ़ताब व ग़ैरते माहताब बना हुवा है। मुसलमानो ! काश कुरआने मजीद की येह आयतें लोगों की आंखों में ईमानी बसीरत का नूर पैदा करें ताकि लोग क़ब्रे अन्वर की ता'ज़ीमो तकरीम कर के दोनों जहां में मुकर्रम व मुअज़्ज़म बन जाएं और इस की तौहीन व बेअदबी कर के शैतान के पन्जए गुमराही में गिरिफ़्तार न हों और जहन्नम के अज़ाबे मुहीन में न पड़ जाएं और काश इन चमकती हुई आयाते बय्यिनात से नजदियों और वहाबियों को इब्रत हासिल हो जो हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की क़ब्रे मुनव्वर को मिट्टी का ढेर कह कर इस की तौहीन व बेअदबी करते रहते हैं और गुम्बदे ख़ज़रा को मुन्हदिम करने और गिरा कर मिसमार कर देने और निशाने क़ब्र मिटा देने का प्लान बनाते रहते हैं। (نعوذ بالله منه)

### ﴿16﴾ हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के चार मो'जिज़ात

हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बनी इस्राईल के सामने अपनी नबुव्वत और मो'जिज़ात का ए'लान करते हुवे येह तक़रीर फ़रमाई। जो कुरआने मजीद की सूरए आले इमरान में है :

وَرَسُولًا إِلَىٰ بَنِي إِسْرَآءِيلَ ۚ إِنِّي قَدْ جِئْتُكُمْ بِآيَةٍ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ إِنِّي  
 أَخْلَقْتُ لَكُمْ مِّنَ الطَّيْرِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ فَأَنفُخُ فِيهِ فَيَكُونُ طَيْرًا بِإِذْنِ  
 اللَّهِ ۖ وَأُبْرِئُ الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ وَأُحْيِي الْمَوْتَىٰ بِإِذْنِ اللَّهِ ۖ وَأُنَبِّئُكُمْ  
 بِمَا تَكْمُلُونَ وَمَا تَدْخُرُونَ ۚ إِنِّي فِي ذَٰلِكَ لَآيَةٌ لَّكُمْ إِن  
 كُنتُمْ مُّؤْمِنِينَ ﴿٣٩﴾

(प ३, आल عمران: ३९)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और रसूल होगा बनी इस्राईल की तरफ़ यह फ़रमाता हुआ कि मैं तुम्हारे पास एक निशानी लाया हूँ तुम्हारे रब की तरफ़ से कि मैं तुम्हारे लिये मिट्टी से परन्द की सी मूरत बनाता हूँ फिर उस में फूंक मारता हूँ तो वोह फ़ौरन परन्द हो जाती है **अल्लाह** के हुक्म से, और मैं शिफ़ा देता हूँ मादर जाद अन्धे और सपेद (सफ़ेद) दाग़ वाले को, और मैं मुर्दे जिलाता (जिन्दा करता) हूँ **अल्लाह** के हुक्म से, और तुम्हें बताता हूँ जो तुम खाते और जो अपने घरों में जम्अ कर रखते हो। बेशक इन बातों में तुम्हारे लिये बड़ी निशानी है अगर तुम ईमान रखते हो।

इस तक्रीर में आप ने अपने चार मो'जिज़ात का ए'लान फ़रमाया :

- ❶ मिट्टी के परन्द बना कर इन में फूंक मार कर इन को उड़ा देना
- ❷ मादर जाद अन्धे और कोढ़ी को शिफ़ा देना
- ❸ मुर्दों को जिन्दा करना
- ❹ और जो कुछ खाया और जो कुछ घरों में छुपा कर रखा उस की ख़बर देना।

अब इन मो'जिज़ात की कुछ तफ़्सील भी पढ़ लीजिये :

**मिट्टी के परन्द बना कर उड़ा देना :-** जब बनी इस्राईल ने यह मो'जिज़ा त़लब किया कि मिट्टी का परन्द बना कर उड़ा दें तो हज़रते ईसा **عَلَيْهِ السَّلَام** ने मिट्टी के चमगादड़ बना कर इन को उड़ा दिया। हज़रते ईसा **عَلَيْهِ السَّلَام** ने परन्दों में से चमगादड़ को इस लिये मुन्तख़ब फ़रमाया कि परन्दों में सब से बढ़ कर मुकम्मल और अजीबो ग़रीब येही परन्दा है क्योंकि इस के आदमी की तरह दांत भी होते हैं और येह आदमी की तरह हंसता भी है और येह बिग़ैर पर के अपने बाज़ूओं से उड़ता है और येह परन्दा जानवरों की तरह बच्चा जनता है और इस को हैज़ भी आता है। रिवायत है कि जब तक बनी इस्राईल देखते रहते येह चमगादड़ उड़ते रहते और अगर उन की नज़रों से ओझल हो जाते तो गिर कर मर जाते थे। ऐसा इस लिये होता था ताकि खुदा के पैदा किये हुवे और बन्दए खुदा के पैदा किये परन्द में फ़र्क़ और इमतियाज़ बाक़ी रहे। (روح البیان، ج ۲، ص ۳۷، ۳۸، آل عمران: ۴۹)

**मादर ज़ाद अन्धों को शिफ़ा देना :-** रिवायत है कि एक दिन में पचास अन्धों और कोढ़ियों को आप की दुआ से इस शर्त पर शिफ़ा हासिल हुई कि वोह ईमान लाएंगे । (तفسير जمل، ج ۱، ص ۱۹، ۲۰، ۲۱، آل عمران ۴۹)।

**मुर्दों को ज़िन्दा करना :-** रिवायत है कि आप ने चार मुर्दों को ज़िन्दा फ़रमाया :

(1) अज़र अपने दोस्त को । (2) एक बुढ़िया के लड़के को । (3) एक उ़श्र वसूल करने वाले की लड़की को (4) हज़रते साम बिन नूह عليه السلام को

**अज़र :-** येह हज़रते ईसा عليه السلام के एक मुख़्लिस दोस्त थे जब इन का इन्तिक़ाल होने लगा तो इन की बहन ने आप के पास कासिद भेजा कि आप का दोस्त मर रहा है । उस वक़्त आप अपने दोस्त से तीन दिन की दूरी की मसाफ़त पर थे । अज़र के इन्तिक़ाल व दफ़न के बा'द हज़रते ईसा عليه السلام वहां पहुंचे और अज़र की क़ब्र के पास तशरीफ़ ले गए और अज़र को पुकारा तो वोह ज़िन्दा हो कर अपनी क़ब्र से बाहर निकल आए और बरसों ज़िन्दा रहे और साहिबे अवलाद भी हुवे ।

**बुढ़िया का बेटा :-** येह मर गया था और लोग इस का जनाज़ा उठा कर इस को दफ़न करने के लिये जा रहे थे । नागहां हज़रते ईसा عليه السلام का उधर से गुज़र हुवा तो वोह आप की दुआ से ज़िन्दा हो कर जनाज़े से उठ बैठा और कपड़ा पहन कर अपने जनाज़े की चारपाई उठाए हुवे अपने घर आया और मुदतों ज़िन्दा रहा और उस की अवलाद भी हुई ।

**आशिर की बेटी :-** एक चुंगी वुसूल करने वाले की लड़की मर गई थी । उस की मौत के एक दिन बा'द हज़रते ईसा عليه السلام की दुआ से ज़िन्दा हो गई और बहुत दिनों तक ज़िन्दा रही और उस के कई बच्चे भी हुवे ।

**हज़रते साम बिन नूह :-** ऊपर के तीनों मुर्दों को आप ने ज़िन्दा फ़रमाया तो बनी इस्राईल के शरीरों ने कहा कि येह तीनों दर हकीक़त मरे हुवे नहीं थे बल्कि इन तीनों पर सक्ता त़ारी था इस लिये वोह होश में आ गए

लिहाज़ा आप किसी पुराने मुर्दे को ज़िन्दा कर के हमें दिखाइये तो आप ने फ़रमाया कि हज़रते साम बिन नूह عَلَيْهِ السَّلَام को वफ़ात पाए हुवे चार हज़ार बरस का ज़माना गुज़र गया। तुम लोग मुझे उन की क़ब्र पर ले चलो मैं उन को खुदा के हुक्म से ज़िन्दा कर देता हूँ तो आप ने उन की क़ब्र के पास जा कर इस्मे आ'ज़म पढ़ा तो फ़ौरन ही हज़रते साम बिन नूह عَلَيْهِ السَّلَام क़ब्र से ज़िन्दा हो कर निकल आए और घबराए हुवे पूछा कि क़ियामत का इम हो गई ? फिर वोह हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान लाए फिर थोड़ी देर बा'द उन का इन्तिक़ाल हो गया।

**जो खाया और छुपाया उस को बता दिया :-** हदीष शरीफ़ में है कि हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام अपने मक़तब में बनी इस्राईल के बच्चों को उन के मां बाप जो कुछ खाते और जो कुछ घरों में छुपा कर रखते वोह सब बता दिया करते थे। जब वालिदैन् ने बच्चों से दरयाफ़्त किया कि तुम्हें इन बातों की कैसे ख़बर होती है ? तो बच्चों ने बता दिया कि हम को हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام मक़तब में बता देते हैं। येह सुन कर मां बाप ने बच्चों को मक़तब जाने से रोक दिया और कहा कि हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام जादूगर हैं। (مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ)

जब हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام बच्चों की तलाश में बस्ती के अन्दर दाख़िल हुवे तो बनी इस्राईल ने अपने बच्चों को एक मक़ान के अन्दर छुपा दिया कि बच्चे यहां नहीं हैं ! आप ने पूछा कि घर में कौन हैं ? तो शरीरों ने कह दिया कि घर में सुवर बन्द हैं। तो आप ने फ़रमाया कि अच्छा सुवर ही होंगे। चुनान्वे, लोगों ने इस के बा'द मक़ान का दरवाज़ा खोला तो मक़ान में से सुवर ही निकले। इस बात का बनी इस्राईल में चरचा हो गया और बनी इस्राईल ने ग़ैज़ो ग़ज़ब में भर कर आप के क़त्ल का मन्सूबा बना लिया। येह देख कर हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की वालिदा हज़रते बीबी मरयम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا आप को साथ ले कर मिस्र को हिज़रत कर गई। इस तरह आप शरीरों के शर से महफूज़ रहे।

(तफ़सीर ज़मल अली ज़लालीन, १/२३, २/३, ३/१९)

### ﴿17﴾ हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام आस्मान पर

हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने जब यहूदियों के सामने अपनी नबुव्वत का ए'लान फ़रमाया तो चूँकि यहूदी तौरात में पढ़ चुके थे कि हज़रते ईसा मसीह عَلَيْهِ السَّلَام इन के दीन को मन्सूख़ कर देंगे। इस लिये यहूदी आप के दुश्मन हो गए। यहां तक कि जब हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने येह महसूस फ़रमा लिया कि यहूदी अपने कुफ़्र पर अड़े रहेंगे और वोह मुझे क़त्ल कर देंगे तो एक दिन आप ने लोगों को मुख़ातब कर के फ़रमाया कि **مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ** या'नी कौन मेरे मददगार होते हैं **اَللّٰهُ** के दीन की तरफ़। बारह या उन्नीस हज़ारियों ने येह कहा कि **اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَاشْهَدْ بِاَنَّا مُسْلِمُونَ** या'नी हम खुदा के दीन के मददगार हैं। हम **اَللّٰهُ** पर ईमान लाए और आप गवाह हो जाएं कि हम मुसलमान हैं।

बाकी तमाम यहूदी अपने कुफ़्र पर जमे रहे यहां तक कि जोशे अ़दावत में इन यहूदियों ने आप के क़त्ल का मन्सूबा बना लिया और एक शख्स को यहूदियों ने जिस का नाम “ततयानूस” था आप के मकान में आप को क़त्ल कर देने के लिये भेजा। इतने में अचानक **اَللّٰهُ** तआला ने हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام को एक बदली के साथ भेजा और उस बदली ने आप को आस्मान की तरफ़ उठा लिया। आप की वालिदा जोशे महबूबत में आप के साथ चिमट गई तो आप ने फ़रमाया कि अम्मां जान ! अब क़ियामत के दिन हमारी और आप की मुलाक़ात होगी और बदली ने आप को आस्मान पर पहुंचा दिया। येह वाक़िआ बैतुल मुक़द्दस में शबे क़द्र की मुबारक रात में वुकूअ पज़ीर हुवा। उस वक़्त आप की उम्र शरीफ़ ब कौले अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती عَلَيْهِ الرّحْمَةُ 33 बरस की थी और ब कौले अ़ल्लामा ज़ुरक़ानी (शारेह मवाहिब) उस वक़्त आप की उम्र शरीफ़ एक सो बीस बरस की थी और हज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती عَلَيْهِ الرّحْمَةُ ने भी आख़िर में इसी कौल की तरफ़ रुजूअ फ़रमाया।

(تفسير جمل على الجلالين، ج، ص ۴۲، پ ۳، آل عمران: ۵۷)

“ततयानूस” जब बहुत देर मकान से बाहर नहीं निकला तो यहूदियों ने मकान में घुस कर देखा तो **अल्लाह** तअला ने “ततयानूस” को हज़रते ईसा عليه السلام की शक्ल का बना दिया। यहूदियों ने “ततयानूस” को हज़रते ईसा समझ कर क़त्ल कर दिया। इस के बा’द ततयानूस के घर वालों ने ग़ौर से देखा तो सिर्फ़ चेहरा हज़रते ईसा عليه السلام का था बाकी सारा बदन ततयानूस ही का था तो इस के अहले ख़ानदान ने कहा कि अगर येह मक़तूल हज़रते ईसा हैं तो हमारा आदमी ततयानूस कहां है ? और अगर येह ततयानूस है तो हज़रते ईसा कहां गए ? इस पर खुद यहूदियों में जंगो ज़िदाल की नौबत आ गई और खुद यहूदियों ने एक दूसरे को क़त्ल करना शुरू कर दिया और बहुत से यहूदी क़त्ल हो गए। खुदावन्दे कुहूस ने कुरआने मजीद में इस वाक़िए को इस तरह बयान फ़रमाया कि

وَمَكَرُوا وَمَكَرَ اللَّهُ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَكِرِينَ ۖ إِذْ قَالَ اللَّهُ لِيَعْقِبَىٰ إِيَّاكَ  
مُتَوِّبًا وَرَأَيْتَكَ إِلَىٰ وَمُطَهَّرَكَ مِنَ الْإِيمَانِ كَفَرُوا وَاجْعَلْ الْإِيمَانُ  
اتَّبِعُوكَ فَوْقَ الْإِيمَانِ كَفَرُوا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَمَةِ ثُمَّ إِلَىٰ مَرْجِعِكُمْ فَأَحْكُمُ  
بَيْنَكُمْ فِيمَا كُنْتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ۝ (پ ۳، آل عمران: ۵۴، ۵۵)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और काफ़िरों ने मक़ किया और **अल्लाह** ने उन के हलाक की खुफ़या तदबीर फ़रमाई और **अल्लाह** सब से बेहतर छुपी तदबीर वाला है याद करो जब **अल्लाह** ने फ़रमाया : ऐ ईसा ! मैं तुझे पूरी उम्र तक पहंचाऊंगा और तुझे अपनी तरफ़ उठा लूंगा और तुझे काफ़िरों से पाक कर दूंगा और तेरे पैरुओं को क़ियामत तक तेरे मुन्किरों पर ग़लबा दूंगा फिर तुम सब मेरी तरफ़ पलट कर आओगे तो मैं तुम में फैसला फ़रमा दूंगा जिस बात में झगड़ते हो।

आप के आस्मान पर चले जाने के बा’द हज़रते मरयम رضي الله تعالى عنها ने छे बरस दुनिया में रह कर वफ़ात पाई। (बुख़ारी व मुस्लिम की) रिवायत है कि कुर्बे क़ियामत के वक़्त हज़रते ईसा عليه السلام ज़मीन पर उतरेंगे और नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां صلّى الله تعالى عليه وآله وسلّم की शरीअत पर



अमल करेंगे और दज्जाल व ख़िन्ज़ीर को क़त्ल फ़रमाएंगे और सलीब को तोड़ेंगे और सात बरस तक दुनिया में अदल फ़रमा कर वफ़ात पाएंगे और मदीनए मुनव्वरा में गुम्बदे ख़ज़रा के अन्दर मदफ़ून होंगे।

(تفسير جمل على الجلالين، ج، ۴، ۲، ۳، آل عمران: ۵۷)

और कुरआने मजीद में ईसाइयों का रद्द करते हुवे येह भी नाज़िल हुवा कि  
وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا ۚ بَلْ رَفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا

حَكِيمًا (النساء: १५८)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और बेशक उन्होंने ने इस को क़त्ल न किया बल्कि **अल्लाह** ने इसे अपनी तरफ़ उठा लिया और **अल्लाह** ग़ालिब हिक्मत वाला है।

और इस से ऊपर वाली आयत में है कि

وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ وَلَٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ط (النساء: १५८)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** उन्होंने ने न इसे क़त्ल किया और न इसे सूली दी बल्कि उन के लिये इस की शबीह (शक्लो सूत) का एक बना दिया गया।

खुलासए कलाम येह है कि हज़रते ईसा **عليه السلام** यहूदियों के हाथों मक़तूल नहीं हुवे और **अल्लाह** ने आप को आस्मानों पर उठा लिया, जो येह अक़ीदा रखे कि हज़रते ईसा **عليه السلام** क़त्ल हो गए और सूली पर चढ़ाए गए जैसा कि नसारा का अक़ीदा है तो वोह शख़्स काफ़िर है क्यूंकि कुरआने मजीद में साफ़ साफ़ मज़कूर है कि हज़रते ईसा **عليه السلام** न मक़तूल हुवे न सूली पर लटकाए गए।

### ﴿18﴾ ईसाइयों का मुबाहि़ले से फ़िशार

नजरान (यमन) के नसरानियों का एक वफ़द मदीनए मुनव्वरा आया। येह चौदह आदमियों की जमाअत थी जो सब के सब नजरान के अशराफ़ थे और इस वफ़द की क़ियादत करने वाले तीन शख़्स थे

﴿1﴾ अबू हारिषा बिन अल्क़मा जो ईसाइयों का पोपे आ'ज़म था।

﴿2﴾ उहैब जो उन लोगों का सरदारे आ'ज़म था।

﴿3﴾ अब्दुल मसीह जो सरदारे आ'ज़म का नाइब था और “अक़िब” कहलाता था।



येह सब नुमाइन्दे निहायत कीमती और नफ़ीस लिबास पहन कर अस् के बा'द मस्जिदे नबवी में दाख़िल हुवे और अपने क़िस्ले की तरफ़ मुंह कर के अपनी नमाज़ अदा की। फिर अबू हारिषा और एक दूसरा शख़्स दोनों हुज़ूर नबिय्ये करीम ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुवे और आप ने निहायत करीमाना लहजे में इन दोनों से गुफ़्तगू फ़रमाई और हस्वे ज़ैल मुकालमा हुवा।

**नबी** ﷺ : तुम लोग इस्लाम क़बूल कर के **अल्लाह** तआला के फ़रमां बरदार बन जाओ।

**अबू हारिषा** : हम लोग पहले ही से **अल्लाह** तआला के फ़रमां बरदार हो चुके हैं।

**नबी** ﷺ : तुम लोगों का येह कहना सहीह नहीं क्यूंकि तुम लोग सलीब की परस्तिश करते हो और **अल्लाह** के लिये बेटा बताते हो और ख़िन्जीर खाते हो।

**अबू हारिषा** : आप लोग हमारे पैग़म्बर हज़रते ईसा **عليه السلام** को गालियां क्यूं देते हो ?

**नबी** ﷺ : हम लोग हज़रते ईसा **عليه السلام** को क्या कहते हैं ?

**अबू हारिषा** : आप लोग हज़रते ईसा **عليه السلام** को बन्दा कहते हैं हालांकि वोह खुदा के बेटे हैं !

**नबी** ﷺ : हां ! हम येह कहते हैं कि हज़रते ईसा **عليه السلام** खुदा के बन्दे और उस के रसूल हैं और वोह कलिमतुल्लाह जो कुंवारी मरयम के शिकम से बिगैर बाप के **अल्लाह** तआला के हुक्म से पैदा हुवे।

**अबू हारिषा** : क्या कोई इन्सान बिगैर बाप के पैदा हो सकता है ? जब आप लोग येह मानते हैं कि कोई इन्सान हज़रते ईसा **عليه السلام** का बाप नहीं तो फिर आप लोगों को येह मानना पड़ेगा कि उन का बाप **अल्लाह** तआला है ?

**नबी** ﷺ : अगर किसी का बाप कोई इन्सान न हो तो इस से येह लाज़िम नहीं आता कि उस का बाप खुदा ही हो। खुदावन्दे तआला अगर चाहे तो बिगैर बाप के भी आदमी पैदा हो सकता है।

देखो हज़रते आदम عليه السلام को तो बिगैर मां बाप के **अल्लाह** तआला ने मिट्टी से पैदा फ़रमा दिया अगर उस ने हज़रते ईसा عليه السلام को बिगैर बाप के पैदा कर दिया तो इस में तअज़्जुब की कौन सी बात है ?

हुज़ूर عليه الصلوة والسلام के इस पैग़म्बराना तर्जें इस्तिदलाल और हकीमाना गुफ्तगू से चाहिये तो येह था कि येह वफ़द अपनी नस्रानिय्यत को छोड़ कर दामने इस्लाम में आ जाता मगर इन लोगों ने हुज़ूर صلّى الله تعالى عليه وآله وسلم से झगड़ा शुरूअ कर दिया । यहां तक कि बहष व तकरार का सिलसिला बहुत दराज़ हो गया तो **अल्लाह** तआला ने सूरए आले इमरान की येह आयत नाज़िल फ़रमाई :

فَمَنْ حَا جَكَ فِيهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ  
أَبْنَاءَنَا وَابْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا وَنِسَاءَكُمْ وَأَنْفُسَنَا وَأَنْفُسَكُمْ قُلْ  
نَبْتَهَلُ فَمَجْعَلُ لَعْنَتِ اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ ﴿٣١﴾ (پ ۳، آل عمران: ۳۱)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** फिर ऐ महबूब ! जो तुम से ईसा के बारे में हुज्जत करें बा'द इस के कि तुम्हें इल्म आ चुका तो उन से फ़रमा दो आओ हम तुम बुलाएं अपने बेटे और तुम्हारे बेटे और अपनी औरतें और तुम्हारी औरतें और अपनी जानें और तुम्हारी जानें फिर मुबाहला करें तो झूटों पर **अल्लाह** की ला'नत डालें ।

कुरआन की इस दा'वते मुबाहिলা को अबू हारिषा ने मन्ज़ूर कर लिया । और तै पाया कि सुब्ह निकल कर मैदान में मुबाहिला करेंगे लेकिन जब अबू हारिषा नस्रानियों के पास पहुंचा तो उस ने अपने आदमियों से कहा कि ऐ मेरी कौम ! तुम लोगों ने अच्छी तरह जान लिया और पहचान लिया कि मुहम्मद (صلّى الله تعالى عليه وآله وسلم) नबिय्ये आखिरुज़्ज़मान हैं और ख़ूब याद रखो कि जो कौम किसी नबिय्ये बरहक़ के साथ मुबाहिला करती है उस कौम के छोटे बड़े सब हलाक हो जाते हैं । इस लिये बेहतर येही है कि इन से सुल्ह कर के अपने वतन को वापस चले चलो और हरगिज़ हरगिज़ इन से मुबाहिला न करो । चुनान्वे, सुब्ह को अबू हारिषा

जब हुजूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के सामने आया तो येह देखा कि आप हज़रते हुसैन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को गोद में उठाए हुवे और हज़रते हसन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ की उंगली थामे हुवे हैं हज़रते फ़ातिमा व हज़रते अली (رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) आप के पीछे चल रहे हैं और आप इन लोगों से फ़रमा रहे हैं कि मैं जब दुआ करूँ तो तुम लोग “आमीन” कहना। येह मन्ज़र देख कर अबू हारिषा ख़ौफ़ से कांप उठा और कहने लगा कि ऐ गुरौहे नसारा ! मैं ऐसे चेहरों को देख रहा हूँ कि अगर **अब्लाह** तअ़ाला चाहे तो इन चेहरों की बदौलत पहाड़ भी अपनी जगह से हट कर चल पड़ेगा ! लिहाज़ा ऐ मेरी कौम ! हरगिज़ हरगिज़ मुबाहि़ला न करो वरना हलाक हो जाओगे और रूए ज़मीन पर कहीं कोई भी नस्रानी बाक़ी न रहेगा। फिर उस ने कहा कि ऐ अबल कासिम ! हम आप से मुबाहि़ला नहीं करेंगे और हम येह चाहते हैं कि हम अपने ही दीन पर काइम रहें। हुजूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन लोगों से कहा कि तुम लोग इस्लाम क़बूल कर लो ताकि तुम लोगों को मुसलमानों के हुकूक हासिल हो जाएं, नस्रानियों ने इस्लाम क़बूल करने से साफ़ इन्कार कर दिया। तो आप ने फ़रमाया कि फिर मेरे लिये तुम्हारे साथ जंग के सिवा कोई चारह नहीं। येह सुन कर नस्रानियों ने कहा कि हम लोग अरबों से जंग करने की ताक़त नहीं रखते। लिहाज़ा हम इस शर्त पर सुल्ह करते हैं कि आप हम से जंग न करें और हम को अपने ही दीन पर काइम रहने दें और हम बतौर ज़िज़्या आप को हर साल एक हज़ार कपड़ों के जोड़े देते रहेंगे। चुनान्चे, हुजूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इस शर्त पर सुल्ह फ़रमाई और उन नस्रानियों के लिये अम्नो अमान का परवाना लिख दिया। इस के बा’द आप ने फ़रमाया कि नजरान वालों पर हलाकत व बरबादी आन पहुंची थी। मगर येह लोग बच गए अगर येह लोग मुझ से मुबाहि़ला करते तो मस्ख़ हो कर बन्दर और खिन्ज़ीर बन जाते और इन की वादी में ऐसी आग भड़क उठती कि नजरान की कुल आबादी यहां तक कि चरिन्दे और परन्दे भी जल भुन कर राख का ढेर बन जाते और रूए ज़मीन के तमाम ईसाई साल भर में फ़ना हो जाते। (روح البيان، ج ۲، ص ۴۴، پ ۳، آل عمران: ۶۱)

**दर्से हिदायत :-** इस से मा'लूम हुआ कि खुदा के रसूलों के साथ मुबाहिला करना हलाकत व बरबादी है बल्कि अम्बिया व औलिया और **अल्लाह** वालों का मुकाबला करना और इन लोगों की बद दुआ का सामना करना, बरबादी व हलाकत है बल्कि खुदा के इन महबूब बन्दों की ज़रा सी बे अदबी और दिल आज़ारी भी इन्सान को फ़ना के घाट उतार देती है और ऐसी तबाही व बरबादी लाती है जिस का कोई इलाज ही नहीं ।

**हज़रते ख़जनदी عَلَيْهِ الرّحمة और बसाती शाइर :-** चुनान्चे, मन्कूल है कि हज़रते कमालुद्दीन ख़जनदी عَلَيْهِ الرّحمة एक मरतबा शाइरों के मजमअ में तशरीफ़ ले गए तो बसाती शाइर ने आप को देख कर निहायत ही बद तमीज़ी और बेहूदगी के अन्दाज़ में येह मिस्रअ बक दिया :

از کجائی از کجائی امے لوند

**तर्जमा :-** तुम कहां से आए तुम कहां से आए ऐ बद मआश ! (**مَعَاذَ اللَّهِ**)  
आप ने येह समझ कर कि नशे में बक रहा है कुछ ज़ियादा नाराज़ नहीं हुवे बल्कि तफ़रीह न जवाब में एक मिस्रअ कह दिया कि !

از خجندم، از خجندم از خجند

**तर्जमा :-** मैं ख़जनद से आया, मैं ख़जनद से आया, मैं ख़जनद से आया  
फिर आप ने मजमअ से मुखातब हो कर फ़रमा दिया कि येह नशे में बदमस्त है जो मुंह में आता है कह देता है, इस से कुछ न कहो येह सुन कर बसाती कमीने ने आप की हिजू में एक शे'र येह कह दिया कि

امے ملحد خجندی ریش بزرگ داری

کز غایت بزرگی ده ریش می توان گفت

**तर्जमा :-** ऐ मुल्हिद ख़जनदी तू बहुत बड़ी दाढ़ी रखता है कि इस की बड़ाई को देख कर इस को दस दाढ़ियां कह सकते हैं ! (**مَعَاذَ اللَّهِ**)

मजमए आम में येह हिजू सुन कर आप को सख़्त नागवारी हुई और आप ने क़हर आलूद नज़रों से देख कर बद दुआ दी तो बिगैर किसी

बीमारी के बसाती शाइर एक दम मर कर ज़मीन पर गिर पड़ा और सब लोग देखते के देखते रह गए। (روح البیان، ج ۲، ص ۴۵، پ ۳، آل عمران: ۶۳)

**अबुल हसन हमदानी की मुरगी :-** बुजुर्गों के मिज़ाज के खिलाफ़ कोई काम करना भी बड़ी बड़ी मुसीबतों का पेश खैमा हुवा करता है। चुनान्वे, हज़रते ख़्वाजा अबुल हसन हमदानी का वाकिआ है कि येह एक मरतबा हज़रते ख़्वाजा जा'फ़र ख़ालिदी عَلَيْهِ الرّحمة की ज़ियारत को गए और घर में येह कह गए थे कि मेरे लिये तन्नूर में मुरगी भून कर तय्यार रखी जाए। हज़रते ख़्वाजा जा'फ़र ख़ालिदी عَلَيْهِ الرّحمة ने इन को हुक्म दिया कि तुम रात मेरे यहां बसर करो। मगर इन का दिल चूँकि मुरगी में लगा हुवा था इस लिये कोई ख़ूब सूरत बहाना कर के येह अपने घर रवाना हो गए। हज़रते ख़्वाजा जा'फ़र के दिल पर इस का मलाल गुज़रा। इस की नुहूसत का येह अषर हुवा कि जब ख़्वाजा अबुल हसन हमदानी दस्तरख़्वान पर मुरगी खाने के लिये बैठे और ज़रा सी ग़फ़लत हुई तो एक कुत्ता घर में आ गया और मुरगी ले कर भागा और उस को एक गन्दी नाली में डाल दिया। हज़रते ख़्वाजा अबुल हसन हमदानी जब सुबह को हज़रते ख़्वाजा जा'फ़र ख़ालिदी عَلَيْهِ الرّحمة की ख़िदमत में हाज़िर हुवे तो आप ने इन को देखते ही फ़रमाया कि जो शख्स मशाइख़े किराम की क़ल्बी ख़्वाहिश का एहतिराम नहीं करता, उस पर इसी तरह एक कुत्ता मुसल्लत कर दिया जाता है जो उस को ईज़ा देता है। येह सुन कर ख़्वाजा अबुल हसन हमदानी शर्मों नदामत से पानी पानी हो गए। (روح البیان، ج ۲، ص ۴۶، پ ۳، آل عمران: ۶۳)

**बल्ख़ का हर आदमी झूटा हो गया :-** हज़रते ख़्वाजा अबू अली दक्काक़ عَلَيْهِ الرّحمة का बयान है कि जब बल्ख़ वालों ने बिला कुसूर हज़रते ख़्वाजा मुहम्मद बिन फ़ज़ल قُدّس سرّهُ को शहर बदर कर दिया तो आप ने शहर वालों को येह बद दुआ दी कि या **अल्लाह** इन लोगों को सच्चाई की तौफ़ीक़ न दे। इस का येह अन्जाम हुवा कि बरसों तक इस शहर में कोई सच्चा आदमी बाकी न रहा और शहर का हर आदमी बला का झूटा हो गया और येह झूटों का शहर कहलाने लगा।

(روح البیان، ج ۲، ص ۴۶، پ ۳، آل عمران: ۶۳)

बहर हाल बुजुर्गों को अपनी किसी हरकत से कभी नाराज़ नहीं करना चाहिये वरना इन बुजुर्गों के क़ल्ब का अदना सा गुबार क़हरे इलाही की आंधी बन कर, तुम्हें हलाकत व बरबादी के ग़ार में गिरा कर, नैस्तो नाबूद कर देगा।

ख़ुदा का क़हर है उन की निगाह की गर्दिश

गिरा जो उन की नज़र से संभल नहीं सकता

### ﴿19﴾ पांच हज़ार फिरिश्ते मैदाने जंग में

जंगे बद्र कुफ़्र व इस्लाम का मशहूर तरीन मा'रिका है। 17 रमज़ान सि. 2 हि. में मक्का और मदीने के दरमियान मकामे “बद्र” में येह जंग हुई। इस लड़ाई में ता'दाद और अस्लहे के लिहाज़ से मुसलमान बहुत ही कमतर और पस्त हाली में थे। मुसलमानों में बुढ़े, जवान और बच्चे और अन्सार व मुहाजिरीन कुल मिल कर तीन सो तेरह मुजाहिदीने इस्लाम इल्मे नबवी के ज़ेरे साया कुफ़्फ़ार के एक अज़ीम लश्कर से नबर्द आजमा थे। सामाने जंग की क़िल्लत का येह आलम था कि पूरी इस्लामी फ़ौज में छे ज़िहें और आठ तल्वारें थीं। और कुफ़्फ़ार का लश्कर तक़रीबन एक हज़ार निहायत ही जंगजू और बहादूरों पर मुश्तमिल था और इन बहादूरों के साथ एक सो बेहतरीन घोड़े, सात सो ऊंट और क़िस्म क़िस्म के मोहलिक हथियार थे। इस जंग में मुसलमानों की घबराहट और बेचैनी एक कुदरती बात थी। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ रात भर जाग कर ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ से लौ लगाए मस्रूफ़े दुआ थे कि

“इलाही ! अगर येह चन्द नुफूस हलाक हो गए तो फिर क़ियामत तक रुए ज़मीन पर तेरी इबादत करने वाले न रहेंगे।”

(السيرة النبوية لابن هشام، مناقشة الرسول ربه النصر، ج 1، ص 552، ملخصاً)

दुआ मांगते हुवे आप की चादर मुबारक दौशे अन्वर से ज़मीन पर गिर पड़ी और आप पर रिक्कत त़ारी हो गई। यहां तक कि आंसू जारी हो गए। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ आप के यारे ग़ार थे। आप को इस तरह बे क़रार देख कर उन के दिल का सकून व क़रार जाता रहा।

उन्होंने ने चादर मुबारक उठा कर आप के मुकद्दस कन्धे पर डाल दिया और आप का दस्ते मुबारक थाम कर भर्राई हुई आवाज़ में बड़े अदब के साथ अर्ज़ किया कि हुज़ूर ! अब बस कीजिये । **अल्लाह** तआला ज़रूर अपना वा'दा पूरा फ़रमाएगा । अपने यारे ग़ार सिद्दीके जानिषार **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** की गुज़ारिश मान कर आप ने दुआ ख़त्म कर दी और निहायत इत्मीनान के साथ पैगम्बराना लहजे में येह फ़रमाया कि

سَيَنْزِمُ الْجَمْعُ وَيُولُونُ الدَّبْرُ ⑤ (پ ۲، القمر ۵۴)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** अब भगाई जाती है येह जमाअत और पीठें फेर देंगे ।

सुब्ह को हुज़ूर **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** ने आयाते जिहाद की तिलावत फ़रमा कर ऐसा वलवला अंगेज़ वा'ज फ़रमाया कि मुजाहिदीन की रगों में खून का क़तरा क़तरा जोशो ख़रोश का समन्दर बन कर तूफ़ानी मौजें मारने लगा । और आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने येह बिशारत भी दी कि अगर सब्र के साथ तुम मुजाहिदीन मैदाने जंग में डटे रहे तो **अल्लाह** तआला तुम्हारी मदद के लिये आस्मान से फ़िरिश्तों की फ़ौज भेज देगा ।

चुनान्वे, पांच हज़ार फ़िरिश्तों की फ़ौज मैदाने जंग में उतर पड़ी और दम ज़दन में मैदाने जंग का नक्शा ही बदल गया । हज़रते अली **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** मुहाजिरीन का झन्डा लहरा रहे थे और हज़रते सा'द बिन उबादा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** अन्सार के अलमबरदार थे । कुफ़फ़ार के सत्तर आदमी क़त्ल हो गए । और सत्तर गिरिफ़्तार हुवे बाक़ी अपना सारा सामान छोड़ कर फ़रार हो गए । कुफ़फ़ार के मक्तूलीन में कुरैश के बड़े बड़े नामवर सरदार जो बहादुरी और सिपहगिरी में यक्ताए रोज़गार थे । एक एक कर के सब मौत के घाट उतार दिये गए । यहां तक कि कुफ़फ़ारे कुरैश की लश्करी ताक़त ही फ़ना हो गई । मुसलमानों में कुल चौदह खुश नसीबों को शहादत का शरफ़ मिला जिन में छे मुहाजिर और आठ अन्सार थे और मुसलमानों को बे शुमार माले ग़नीमत मिला जो कुफ़फ़ार छोड़ कर फ़रार हो गए थे ।

**अल्लाह** तआला ने जंगे बद्र और फ़िरिश्तों की फ़ौज का तज़क़िरा क़ुरआने मजीद में इन लफ़्ज़ों के साथ फ़रमाया कि



وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ بِدُرَيْدٍ وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ فَاتَّقُوا اللَّهَ لَعَلَّكُمْ  
 تَشْكُرُونَ ﴿١٣٦﴾ اذْثَقُولَ لِلْمُؤْمِنِينَ أَلَنْ يَكْفِيَكُمْ أَنْ يُبَدِّلَ رَبُّكُمْ  
 بِثَلَاثَةِ آلِفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُنْزَلِينَ ﴿١٣٧﴾ بَلَىٰ ۚ إِنْ تَصْبِرُوا وَاتَّقُوا  
 وَيَأْتُوكُم مِّنْ فَوْرِهِمْ هَذَا بَدَّلْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ آلِفٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ  
 مُسَوِّمِينَ ﴿١٣٨﴾ وَمَا جَعَلَ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ لَكُمْ وَلَسَطَبِئِنَّ قُلُوبَكُمْ بِهِ ۖ وَمَا  
 الْغَصْبُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ﴿١٣٩﴾ (پ ۴، آل عمران: ۲۳ تا ۱۲۶)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** और बेशक **अल्लाह** ने बद्र में तुम्हारी मदद की जब तुम बिल्कुल बे सरो सामान थे। तो **अल्लाह** से डरो कि कहीं तुम शुक्र गुज़ार हो। जब ऐ महबूब तुम मुसलमानों से फ़रमाते थे : क्या तुम्हें येह काफ़ी नहीं कि तुम्हारा रब तुम्हारी मदद करे तीन हज़ार फ़िरिश्ते उतार कर, हां क्यूं नहीं अगर तुम सब्र व तक्वा करो और काफ़िर इसी दम तुम पर आ पड़ें तो तुम्हारा रब तुम्हारी मदद को पांच हज़ार फ़िरिश्ते निशान वाले भेजेगा और येह फ़त्ह अल्लाह ने न की मगर तुम्हारी खुशी के लिये और इसी लिये कि इस से तुम्हारे दिलों को चैन मिले, और मदद नहीं मगर **अल्लाह** ग़ालिब हिक्मत वाले के पास से।

**दर्से हिदायत :-** जंगे बद्र में मुसलमानों की ता'दाद और सामाने जंग की क़िल्लत के बा वुजूद फ़तहे मुबीन ने मुसलमानों के क़दमों का बोसा लिया। इस से येह सबक़ मिलता है कि फ़तह क़षरते ता'दाद और सामाने जंग की फ़िरावानी पर मौकूफ़ नहीं। बल्कि फ़तह का दारो मदार नुस्रते खुदावन्दी पर है कि वोह जब चाहता है तो फ़िरिश्तों की फ़ौज आस्मान से मैदाने जंग में उतार कर मुसलमानों की इमदाद व नुस्रत फ़रमा देता है और मुसलमान क़िल्लते ता'दाद और सामाने जंग न होने के बा वुजूद फ़तहमन्द हो कर कुफ़्फ़ार के लश्क़रों को तह्स नह्स कर के फ़ना के घाट उतार देता है, मगर **अल्लाह** तआला ने इस के लिये दो शर्तें रखी हैं, एक सब्र और दूसरा तक्वा। अगर मुसलमान सब्र व तक्वा के दामन को थामे हुवे खुदा की मदद पर भरोसा कर के जंग में अड़ जाएं तो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّ وَجَلَّ** हमेशा और हर महाज पर फ़तहे मुबीन मुसलमानों के क़दम चुमेगी और कुफ़्फ़ार शिकस्त



खा कर रहे फ़िरार इख़्तियार करेंगे या मुसलमानों की मार से फ़ना हो कर फ़िन्नार हो जाएंगे। बस ज़रूरत है कि मुसलमान सब्र व तक्वा के हथियारों से लैस हो कर खुदा की मदद का भरोसा कर के कुफ़ार के हमलों का मुक़ाबला करने के लिये मैदाने जंग में इस्ति़क़ामत का पहाड़ बन कर खड़े रहें और हरगिज़ हरगिज़ ता'दाद की कमी और सामाने जंग की किल्लत व कषरत की परवाह न करें क्योंकि फ़रमाने खुदावन्दी है कि

وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ कि मदद फ़रमाने वाला तो बस **अल्लाह** ही है। सच कहा है कहने वाले ने

काफ़िर हो तो तल्वार पे करता है भरोसा

मोमिन हो तो बे तैग़ भी लड़ता है सिपाही

### ﴿20﴾ सब से पहला क़ातिल व मक्तूल

रूए ज़मीन पर सब से पहला क़ातिल क़ाबील और सब से पहला मक्तूल हाबील है “क़ाबील व हाबील” येह दोनों हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** के फ़रज़न्द हैं। इन दोनों का वाक़िआ येह है कि हज़रते हव्वा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** के हर हम्ल में एक लड़का और एक लड़की पैदा होते थे। और एक हम्ल के लड़के का दूसरे हम्ल की लड़की से निकाह किया जाता था। इस दस्तूर के मुताबिक़ हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** ने क़ाबील का निकाह “लियूज़ा” से जो हाबील के साथ पैदा हुई थी करना चाहा। मगर क़ाबील इस पर राज़ी न हुवा क्यूंकि इक्लीमा ज़ियादा ख़ूब सूरत थी इस लिये वोह इस का तलबगार हुवा।

हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** ने इस को समझाया कि इक्लीमा तेरे साथ पैदा हुई है। इस लिये वोह तेरी बहन है। उस के साथ तेरा निकाह नहीं हो सकता। मगर क़ाबील अपनी ज़िद पर अड़ा रहा। बिल आख़िर हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** ने येह हुक्म दिया कि तुम दोनों अपनी अपनी कुरबानियां खुदावन्दे कुहूस **عَزَّوَجَلَّ** के दरबार में पेश करो। जिस की कुरबानी मक्बूल होगी वोही इक्लीमा का हक़दार होगा। उस ज़माने में कुरबानी की मक्बूलियत की येह निशानी थी कि आस्मान से एक आग उतर कर इस को खा लिया करती थी। चुनान्चे, क़ाबील ने गैहू की कुछ

बालीं और हाबील ने एक बकरी कुरबानी के लिये पेश की। आस्मानी आग ने हाबील की कुरबानी को खा लिया और काबील के गैहूं को छोड़ दिया। इस बात पर काबील के दिल में बुज़्र व हसद पैदा हो गया और उस ने हाबील को क़त्ल कर देने की ठान ली और हाबील से कह दिया कि मैं तुझ को क़त्ल कर दूंगा। हाबील ने कहा कि कुरबानी क़बूल करना **अल्लाह** तआला का काम है और वोह मुत्तकी बन्दों ही की कुरबानी क़बूल करता है। अगर तू मुत्तकी होता तो ज़रूर तेरी कुरबानी क़बूल होती। साथ ही हाबील ने येह भी कह दिया कि अगर तू मेरे क़त्ल के लिये हाथ बढ़ाएगा तो मैं तुझ पर अपना हाथ नहीं उठाऊंगा क्योंकि मैं **अल्लाह** से डरता हूं। मैं येह चाहता हूं कि मेरा और तेरा गुनाह दोनों तेरे ही पल्ले पड़े और तू दोज़खी हो जाए क्योंकि बे इन्साफ़ों की येही सज़ा है। आखिर काबील ने अपने भाई हाबील को क़त्ल कर दिया। ब वक्ते क़त्ल हाबील की उम्र बीस बरस की थी और क़त्ल का येह हादिषा मक्काए मुकर्रमा में जबले पौर के पास या जबले हिरा की घाटी में हुवा। और बा'ज़ का कौल है कि बसरा में जिस जगह मस्जिदे आ'ज़म बनी हुई है मंगल के दिन येह सानेहा हुवा। (والله تعالى اعلم)

रिवायत है कि जब हाबील क़त्ल हो गए तो सात दिनों तक ज़मीन में जलजला रहा। और वुहूश व तुयूर और दरिन्दों में इज़तिराब और बे चैनी फ़ैल गई और काबील जो बहुत ही गोरा और ख़ूब सूरत था भाई का खून बहाते ही उस का चेहरा बिल्कुल काला और बद सूरत हो गया। और हज़रते आदम **عليه السلام** को बे हद रंजो क़त्ल हुवा। यहां तक कि हाबील के रंजो गुम में एक सो बरस तक कभी आप **عليه السلام** को हंसी नहीं आई। और सिरयानी ज़बान में आप ने हाबील का मरीषा कहा जिस का अरबी अश्शार में तर्जमा येह है

تَغَيَّرَتِ الْبِلَادُ وَمَنْ عَلَيْهَا فَوْجُهُ الْأَرْضِ مُغْبَرٌ قَيْحٌ  
تَغَيَّرَ كُلُّ ذِي لَوْنٍ وَطَعْمٍ وَقَلَّ بَشَاشَةُ الْوَجْهِ الصَّبِيحِ

**तर्जमा :** तमाम शहरों और उन के बाशिन्दों में तगय्युर पैदा हो गया और ज़मीन का चेहरा गुबार आलूद और क़बीह हो गया। हर रंग और मजे वाली चीज़ बदल गई और गोरे चेहरे की रोनक कम हो गई।

हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने शदीद ग़ज़ब नाक हो कर काबील को फिटकार कर अपने दरबार से निकाल दिया और वोह बद नसीब इक्लीमा को साथ ले कर यमन की सर ज़मीन “अदन” में चला गया वहां इब्लीस उस के पास आ कर कहने लगा कि हाबील की कुरबानी को आग ने इस लिये खा लिया कि वोह आग की पूजा किया करता था लिहाज़ा तू भी एक आग का मन्दर बना कर आग की परस्तिश किया कर। चुनान्चे, काबील पहला वोह शख्स है जिस ने आग की इबादत की। और येह रुए ज़मीन पर पहला शख्स है जिस ने **अल्लाह** तअाला की नाफरमानी की और सब से पहले ज़मीन पर ख़ूने नाहक़ किया और येह पहला वोह मुजरिम है जो जहन्नम में सब से पहले डाला जाएगा और हदीष शरीफ़ में है कि रुए ज़मीन पर कियामत तक जो भी ख़ूने नाहक़ होगा काबील उस में हिस्सेदार होगा क्यूंकि इसी ने सब से पहले क़त्ल का दस्तूर निकाला और काबील का अन्जाम येह हुवा कि इस के एक लड़के ने जो कि अन्धा था इस को एक पथ्थर मार कर क़त्ल कर दिया और येह बद बख़्त नबी ज़ादा होने के बा वुजूद आग की परस्तिश करते हुवे कुफ़्रो शिर्क की हालत में अपने लड़के के हाथ से मारा गया। (روح البيان، ج ۲، ص ۳۷۹، پ ۶، المائدة: ۲۷ تا ۳۰)

हाबील के क़त्ल हो जाने के पांच बरस बा’द हज़रते शीष عَلَيْهِ السَّلَام पैदा हुवे जब कि हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की उम्र शरीफ़ एक सो तीस बरस की हो चुकी थी। आप ने अपने इस हौनहार फ़रज़न्द का नाम “शीष” रखा। येह सिरयानी ज़बान का लफ़्ज़ है और अरबी में इस के मा’ना “हबतुल्लाह” या’नी **अल्लाह** का अतिर्य्या है। हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने पचास सहीफ़े जो आप पर नाज़िल हुवे थे इन सब की हज़रते शीष عَلَيْهِ السَّلَام को ता’लीम दी और इन को अपना वसी व ख़लीफ़ा और सज्जादा नशीन बनाया। और इन की नस्ल में खैरो बरकत होने की दुआएं मांगीं। हमारे हुज़ूर ख़ातिमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इन ही हज़रते शीष عَلَيْهِ السَّلَام की अवलाद में से हैं। (روح البيان، ج ۲، ص ۳۷۹، پ ۶، المائدة: ۳۰)

इस वाकिए को कुरआने करीम में **अल्लाह** तआला ने इस तरह बयान फरमाया है कि

وَإِثْلَ عَلَيْهِمْ نَبَأُ ابْنِ آدَمَ بِالْحَقِّ ۖ إِذْ قَرَّبَهُ بَابُ نُوحٍ إِذْ يَقُولُ أَفْتُكِّلُ مِنْ آدَمَ هَٰذَا وَلَمْ يَنْتَقِبْ مِنَ الْآخِرِ ۖ قَالَ لَا فُكْلُكَ ۖ قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللَّهُ مِنَ الْمُتَّقِينَ ﴿٢٥﴾ لَئِنْ بَسَطْتَ إِلَىَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِي مَا أَنَا بِبَاسٍ بِكَ ۖ وَإِنِّي أَخَافُ اللَّهَ رَبَّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٦﴾ وَإِذْ أُرِيدُ أَنْ نَبْنِيءَ إِبْرَاهِيمَ ۖ وَإِثْلَ فُتُكُونَ مِنْ أَصْحَابِ النَّارِ ۖ وَذَلِكَ جَزَاءُ الظَّالِمِينَ ﴿٢٧﴾ فَطَوَّعَتْ لَهُ نَفْسُهُ قَتْلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهُ فَأَصْبَحَ مِنَ الْخَاسِرِينَ ﴿٢٨﴾

(प १, मालद ५, ता ३०)

**तर्जुमए कन्जुल ईमान :-** और इन्हें पढ़ कर सुनाओ आदम के दो बेटों की सच्ची ख़बर जब दोनों ने एक एक नियाज़ (कुरबानी) पेश की तो एक की क़बूल हुई और दूसरे की न क़बूल हुई। बोला : कसम है मैं तुझे क़त्ल कर दूंगा। कहा : **अल्लाह** उसी से क़बूल करता है जिसे डर है बेशक अगर तू अपना हाथ मुझ पर बढ़ाएगा कि मुझे क़त्ल करे तो मैं अपना हाथ तुझ पर न बढ़ाऊंगा कि तुझे क़त्ल करूं, मैं **अल्लाह** से डरता हूं जो मालिक सारे ज़हान का। मैं तो यह चाहता हूं कि मेरा और तेरा गुनाह दोनों तेरे ही पल्ले पड़े तो तू दोषी हो जाए। और बे इन्साफ़ों की येही सज़ा है तो उस के नफ़्स ने उसे भाई के क़त्ल का चाउं दिलाया (क़त्ल पर उभारा) तो उसे क़त्ल कर दिया तो रह गया नुक़सान में।

**दर्से हिदायत :-** इस वाकिए से चन्द हिदायतों के सबक मिलते हैं :

**①** दुनिया में सब से पहला जो क़त्ल और ख़ूने नाहक़ हुवा वोह एक औरत के मुआमले में हुवा। लिहाज़ा किसी औरत के फ़ितनए इश्क़ में मुब्तला होने से खुदा की पनाह मांगनी चाहिये।

**②** काबील ने जज़्बए हसद में गिरिफ़्तार हो कर अपने भाई को क़त्ल कर दिया। इस से मा'लूम हुवा कि हसद इन्सान की कितनी बुरी और ख़तरनाक क़ल्बी बीमारी है। इसी लिये कुरआने मजीद में

فَرَمَا كَر هُكْم دِيَا گِيَا كِي هَاسِد كِي هَسَد سِي خُودَا كِي پَنَاه مَآگَتِي رَهِي । وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ﴿٥٠﴾ (الفلق: ٥)

﴿3﴾ खूने नाहक कितना बड़ा जुर्म अज़ीम है कि इस जुर्म की वजह से एक नबी عَلَيْهِ السَّلَام का फ़रज़न्द अपने बाप हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के दरबार से रांदए दरगाह हो कर कुफ़्रो शिर्क में मुब्तला हो कर मर गया। और क़ियामत तक होने वाले हर खूने नाहक में हिस्सेदार बन कर अज़ाबे जहन्नम में गिरिफ़्तार रहेगा।

﴿4﴾ इस से मा'लूम हुवा कि जो शख्स कोई बुरा तरीक़ा ईजाद करे तो क़ियामत तक जितने लोग इस बुरे तरीक़े पर अमल करेंगे सब के गुनाह में वोह बराबर का शरीक और हिस्सेदार बनेगा।

﴿5﴾ इस से येह भी मा'लूम हुवा कि नेकों की अवलाद का नेक होना कोई ज़रूरी नहीं है, नेकों की अवलाद बुरी भी हो सकती है। क्योंकि हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام खुदा के मुक़द्दस नबी और सफ़िय्युल्लाह हैं मगर इन का बेटा काबील कितना ख़राब हुवा, वोह आप पढ़ चुके। हमेशा हर शख्स को चाहिये कि फ़रज़न्दे सालेह और नेक अवलाद की दुआएं खुदा से मांगता रहे। (والله تعالى اعلم)

### मस्जिद से महब्वत की फ़ज़ीलत

हज़रते अबू सईद खुदरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ रिवायत करते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने उल्फ़त निशान है : “जो मस्जिद से उल्फ़त (महब्वत) रखता है **अल्लाह** तआला उस से उल्फ़त रखता है।” (طبرانی اوسط، حديث ٩٤٣٢)

हज़रते अल्लामा अब्दुरऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي इस की शर्ह में लिखते हैं : मस्जिद से उल्फ़त इस तरह है कि रिज़ाए इलाही के लिये इस में ए'तिकाफ़, नमाज़, ज़िक्रुल्लाह, और शरई मसाइल सीखने सीखाने के लिये बैठे रहने की आदत बनाना है और **अल्लाह** तआला का उस बन्दे से महब्वत करना इस तरह है कि **अल्लाह** तआला उस को अपने सायए रहमत में जगह अता फ़रमाता और उस को अपनी हिफ़ाज़त में दाख़िल करता है।

(فیضل قدیر، ج ٢، ص ٤٠١) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 1281)

## ﴿21﴾ मुर्दा दफन करना कव्वे ने सिखाया

जब काबील ने हावील को क़त्ल कर दिया तो चूँकि इस से पहले कोई आदमी मरा ही नहीं था इस लिये काबील हैरान था कि भाई की लाश को क्या करूं। चुनान्चे, कई दिनों तक वोह लाश को अपनी पीठ पर लादे फिरा। फिर इस ने देखा कि दो कव्वे आपस में लड़े और एक ने दूसरे को मार डाला। फिर ज़िन्दा कव्वे ने अपनी चोंच और पन्नों से ज़मीन कुरैद कर एक गढ़ा खोदा और इस में मरे हुवे कव्वे को डाल कर मिट्टी से दबा दिया। येह मन्ज़र देख कर काबील को मा'लूम हुवा कि मुर्दे की लाश को ज़मीन में दफन करना चाहिये। चुनान्चे, उस ने कब्र खोद कर उस में भाई की लाश को दफन कर दिया। (مدارك التنزيل، ج ١، ص ٢٨٦، پ ٦، المائدة: ٣١)

कुरआने मजीद ने इस वाकिए को इन लफ़्ज़ों में बयान फ़रमाया है कि

فَبَعَثَ اللَّهُ غُرَابًا يَبْحِثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيَهُ كَيْفَ يُوَارِئُ سَوْءَةً  
أَخِيهِ ۖ قَالَ يُوَالِلُنِي ۖ أَعَجَزْتُ أَنْ أَكُونَ مِثْلَ هَذَا الْغُرَابِ فَأُوَارِئُ  
سَوْءَةَ أَخِي ۖ فَأَصْبَحَ مِنَ النَّادِمِينَ ﴿٣١﴾ (پ ٦، المائدة: ٣١)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- तो **अल्लाह** ने एक कव्वा भेजा ज़मीन कुरैदता कि उसे दिखाए क्यूंकर (किस तरह) अपने भाई की लाश छुपाए, बोला : हाए खराबी मैं इस कव्वे जैसा भी न हो सका कि मैं अपने भाई की लाश छुपाता तो पचताता रह गया।

दर्से हिदायत :- ﴿1﴾ इस वाकिए से सबक मिलता है कि आदमी इल्म सीखने में छोटे से छोटे उस्ताद का यहां तक कि कव्वे का भी मोहताज है।

﴿2﴾ इसी से मा'लूम हुवा कि इन्सान पर उस की दुन्यावी ज़िन्दगी की राह में जब कोई मुश्किल दरपेश हो जाती है तो **अल्लाह** तआला ऐसा रहीमो करीम है कि किसी न किसी तरीके से यहां तक कि चरिन्दों और परन्दों के ज़रीए भी मुश्किलात हल करने की राह दिखा देता है। (والله تعالى اعلم)

## ﴿22﴾ आस्मानी दस्तर ख़्वान

हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के हवारियों ने येह अर्ज किया कि ऐ ईसा बिन मरयम ! क्या आप का रब येह कर सकता है कि वोह आस्मान से हमारे पास एक दस्तर ख़्वान उतार दे ? तो हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि इस तरह की निशानियां त़लब करने से अगर तुम लोग मोमिन हो तो खुदा से डरो। येह सुन कर हवारियों ने कहा कि हम निशानी त़लब करने के लिये येह सुवाल नहीं कर रहे हैं बल्कि हमारा मक़सद येह है कि हम शिकम सैर हो कर ख़ूब खाएं और हम को अच्छी तरह आप की सदाक़त का इल्म हो जाए ताकि हमारे दिलों को क़रार आ जाए और हम इस बात के गवाह बन जाएं ताकि बनी इस्राईल को हमारी शहादत से यकीन और इतमीनाने कुल्ली हासिल हो जाए और मोअमिनीन का यकीन और बढ़ जाए और कुफ़्फ़ार ईमान लाएं।

﴿1﴾ हवारियों की इस दरख़्वास्त पर हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने बारगाहे खुदावन्दी में इस तरह दुआ मांगी :

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** ऐ रब हमारे ! हम पर आस्मान से एक ख़्वान उतार कि वोह हमारे लिये ईद हो हमारे अगले पिछलों की और तेरी त़रफ़ से निशानी और हमें रिज़क़ दे और तू सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है। (١١٢، المائدة: ١)

हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ पर **अल्लाह** तआला ने फ़रमाया कि दस्तर ख़्वान तो उतार दूंगा लेकिन इस के बा'द बनी इस्राईल में से जो कुफ़्र करेगा मैं उस को ऐसा अज़ाब दूंगा कि तमाम जहान वालों में से किसी को ऐसा अज़ाब नहीं दूंगा। चुनान्वे, **अल्लाह** तआला के हुक्म से चन्द फ़िरिशते एक दस्तर ख़्वान ले कर आस्मान से उतरे जिस में सात मछलियां और सात रोटियां थीं। (١١٢، المائدة: ١)

हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि फ़िरिशते दस्तर ख़्वान में रोटी और गोश्त ले कर आस्मान से ज़मीन पर नाज़िल हुवे और बा'ज़ रिवायतों में येह भी आया है कि तली हुई एक बहुत बड़ी



मछली थी जिस में कांटा नहीं था और उस में से रोगन टपक रहा था और इस के सर के पास नमक और दुम के पास सिका था और इस के इर्द गिर्द किस्म किस्म की सब्जियां थीं और पांच रोटियां थीं। एक रोटी के ऊपर रोगने जैतून, दूसरी पर शहद, तीसरी पर घी, चौथी पर पनीर, पांचवीं पर गोश्त की बोटियां थीं। दस्तर ख़्वान के इन सामानों को देख कर हज़रते ईसा عليه السلام के एक हवारी शमऊन ने कहा जो तमाम हरवारियों का सरदार था, कि ऐ रूहुल्लाह ! येह दस्तर ख़्वान दुन्या के खानों में से है या आखिरत के। तो आप ने फ़रमाया कि येह न तो दुन्या के खानों में से है न आखिरत के बल्कि **अल्लाह** तअ़ला ने अपनी कुदरते कामिला से तुम्हारे लिये इस खाने को अभी अभी ईजाद फ़रमा कर भेजा है।

(تفسير جمل على الجلالين، ج ٤، ص ٣٠٢، پ ٤، المائدة ١١٥)

फिर हज़रते ईसा عليه السلام ने बनी इस्राईल को हुक्म दिया कि ख़ूब शिकम सैर हो कर खाओ। और ख़बरदार इस में किसी किस्म की ख़यानत न करना। और कल के लिये ज़ख़ीरा बना कर न रखना। मगर बनी इस्राईल ने इस में ख़यानत भी कर डाली और कल के लिये ज़ख़ीरा बना कर भी रख लिया। इस नाफ़रमानी की वजह से **अल्लाह** तअ़ला का इन लोगों पर येह अज़ाब आया कि येह लोग रात को सोए तो अच्छे खासे थे मगर सुब्ह को उठे तो मस्ख़ हो कर कुछ खिन्जीर और कुछ बन्दर बन गए फिर हज़रते ईसा عليه السلام ने इन लोगों की मोत के लिये दुआ मांगी तो तीसरे दिन येह लोग मर कर दुन्या से नैस्तो नाबूद हो गए और किसी को येह भी नहीं मा'लूम हुवा कि इन की लाशों को ज़मीन निगल गई या **अल्लाह** ने इन को क्या कर दिया।

(تفسير جمل على الجلالين، ج ٤، ص ٣٠٢، پ ٤، المائدة ١١٥)

**अल्लाह** तअ़ला ने इस अजीब और अज़ीमुश्शान वाक़िए का तज़क़िरा कुरआने मजीद की सूरए माइदह में फ़रमाया है।

और इसी वाक़िए की वजह से इस सूरह का नाम “माइदह” रखा गया। “माइदह” दस्तर ख़्वान को कहते हैं



قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ رَبَّنَا أَنْزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِنَ السَّمَاءِ  
تَكُونُ لَنَا عَيْدًا إِلَّا وَلَنَا وَآخِرْنَا وَآيَةً مِنْكَ ۖ وَارْزُقْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ  
الرَّزَاقِينَ ۝ قَالَ اللَّهُ إِنِّي مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ فَمَنْ يَكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَإِنِّي  
أُعَذِّبُهُ عَذَابًا لَّا أُعَذِّبُهُ أَحَدًا مِنَ الْعَالَمِينَ ۝ (پ، المائدة: ۱۱۳-۱۱۵)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** ईसा इब्ने मरयम ने अर्ज की : ऐ **अल्लाह** ऐ रब हमारे हम पर आस्मान से एक ख़्वान उतार कि वोह हमारे लिये ईद हो हमारे अगले पिछलों की और तेरी तरफ़ से निशानी और हमें रिज़क दे और तू सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है। **अल्लाह** ने फ़रमाया कि मैं इसे तुम पर उतारता हूँ फिर अब जो तुम में कुफ़र करेगा तो बेशक मैं उसे वोह अज़ाब दूंगा कि सारे ज़हान में किसी पर न करूंगा।

**दर्से हिदायत :-** वाकिअए मज़कूरा से बहुत सी इब्रतें और नसीहतें मिलती हैं। जिन में से येह दो सबक़ तो बहुत ही वाज़ेह हैं :

﴿1﴾ हज़रते अम्बिया **عليهم السلام** की मुख़ालफ़त और नाफ़रमानी कितना ख़ौफ़नाक जुमें अज़ीम है। देख लो ! कि बनी इस्राईल ने जब अपने नबी **عليه السلام** की मुख़ालफ़त व नाफ़रमानी करते हुवे आस्मानी दस्तर ख़्वान में ख़यानत की और कल के लिये ज़ख़ीरा बना कर रख लिया तो अज़ाबे इलाही ने इन को ख़िन्ज़ीर, बन्दर बना कर दुन्या से इस तरह नैस्तो नाबूद कर दिया कि इन की क़ब्रों का निशान भी बाकी न रहा।

जो लोग **अल्लाह** व रसूल की अमानतों में ख़यानत करते हैं। उन्हें इस हौलनाक अज़ाब से इब्रत हासिल करनी चाहिये और तौबा कर लेनी चाहिये। (والله تعالى علم)

﴿2﴾ हज़रते ईसा **عليه السلام** की दुआ में येह जुम्ला कि जिस दिन दस्तर ख़्वान नाज़िल होगा वोह दिन हमारे अगलों और पिछलों के लिये ईद का दिन होगा। इस से येह सबक़ मिलता है कि जिस दिन कुदरते खुदावन्दी का कोई ख़ास निशान ज़ाहिर हो, उस दिन खुशी मनाना और मसरत व शादमानी का इज़हार कर के ईद मनाना येह हज़रते ईसा **عليه السلام** की मुक़दस सुन्नत है।

इसी तरह हुजुरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की विलादते बा सआदत की रात और उस का दिन यकीनन खुदावन्दे कुहूस के एक निशाने आ'ज़म के जुहूर की रात और दिन है लिहाज़ा मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खुशी मनाना और इस तारीख़ को ईदे मीलाद कहना यकीनन कुरआने मजीद की ता'लीम के ऐन मुताबिक़ है। खुशी मनाना, घरों और महफ़िलों की आराइश करना, अच्छे अच्छे पकवान पका कर खुद भी खाना और दूसरों को भी खिलाना येही सब ईद की निशानियां, और ईद मनाने के तरीके हैं जिन पर बारहवीं शरीफ़ को अहले सुन्नत व जमाअत अमल कर के ईदे मीलाद की खुशी मनाते हैं और जो लोग इस से चिड़ते हैं और इस तारीख़ को अपने घर अन्धेरा रखते हैं, झाड़ू भी नहीं लगाते और मैले कुचैले कपड़े पहन कर मुंह लटकाए फिरते हैं और ईदे मीलाद की खुशी मनाने वालों को बिदअती कह कर फवतियां कसते हैं, उन्हें उन के हाल पर छोड़ देना चाहिये और अहले सुन्नत को चाहिये कि खूब खूब खुशी मनाएं और कषरत से मीलाद शरीफ़ की मजलिस मुनअक्किद करें और खूब झूम झूम कर सलातो सलाम पढ़ें :

मिष्ले फ़ारस ज़लज़ले हों नज़्द में ज़िक्रे आयाते विलादत कीजिये

(हदाइके बख़्शिश, हिस्सा अव्वल स. 140)

﴿23﴾ हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का ए'लाने तौहीद

मुफ़स्सरीन का बयान है कि “नमरूद बिन किनआन” बड़ा जाबिर बादशाह था। सब से पहले इसी ने ताजे शाही अपने सर पर रखा। इस से पहले किसी बादशाह ने ताज नहीं पहना था। येह लोगों से ज़बरदस्ती अपनी परस्तिश कराता था और काहिन और नुजूमि इस के दरबार में ब कषरत इस के मुक़र्रब थे। नमरूद ने एक रात येह ख़्वाब देखा कि एक सितारा निकला और उस की रोशनी में चांद, सूरज वगैरा सारे सितारे बे नूर हो कर रह गए। काहिनों और नुजूमियों ने इस ख़्वाब की येह ता'बीर दी कि एक फ़रज़न्द ऐसा होगा जो तेरी बादशाही के ज़वाल का बाइष होगा। येह सुन कर नमरूद बेहद परेशान हो गया और

उस ने येह हुक्म दे दिया कि मेरे शहर में जो बच्चा पैदा हो वोह क़त्ल कर दिया जाए। और मर्द औरतों से जुदा रहें। चुनान्चे, हज़ारों बच्चे क़त्ल कर दिये गए। मगर तक्दीराते इलाहिय्या को कौन टाल सकता है ? इसी दौरान हज़रते इब्राहीम عليه السلام पैदा हो गए और बादशाह के ख़ौफ़ से इन की वालिदा ने शहर से दूर पहाड़ के एक ग़ार में इन को छुपा दिया इसी ग़ार में छुप कर इन की वालिदा रोज़ाना दूध पिला दिया करती थीं। बा'जू मुफ़स्सरीन का क़ौल है कि सात बरस की उम्र तक और बा'जों ने तहरीर फ़रमाया कि सतरह बरस तक आप इसी ग़ार में परवरिश पाते रहे। (والله تعالى أعلم)

(روح البیان، ج ۳، ص ۵۹، ۶۰، الانعام: ۷۵)

उस ज़माने में आम तौर पर लोग सितारों की पूजा किया करते थे। एक रात आप عليه السلام ने ज़हरा या मुश्तरी सितारे को देखा तो क़ौम को तौहीद की दा'वत देने के लिये आप ने निहायत ही नफ़ीस और दिल नशीन अन्दाज़ में लोगों के सामने इस तरह तक्रीर फ़रमाई कि ऐ लोगो ! क्या सितारा मेरा रब है ? फिर जब वोह सितारा डूब गया तो आप ने फ़रमाया कि डूब जाने वालों से मैं महबूबत नहीं रखता। फिर इस के बा'द जब चमकता चांद निकला तो आप ने फ़रमाया कि क्या येह मेरा रब है ? फिर जब वोह भी ग़ुरूब हो गया तो आप ने फ़रमाया कि अगर मेरा रब मुझे हिदायत न फ़रमाता तो मैं भी इन्हीं गुमराहों में से होता। फिर जब चमकते दमकते सूरज को देखा तो आप ने फ़रमाया कि येह तो इन सब से बड़ा है, क्या येह मेरा रब है ? फिर जब येह भी ग़ुरूब हो गया तो आप ने फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम ! मैं इन तमाम चीज़ों से बेज़ार हूँ जिन को तुम लोग खुदा का शरीक ठहराते हो। और मैं ने अपनी हस्ती को उस ज़ात की तरफ़ मुतवज्जेह कर लिया है जिस ने आस्मानों और ज़मीनों को पैदा फ़रमाया है। बस मैं सिर्फ़ उसी एक ज़ात का आबिद और पुजारी बन गया हूँ और मैं शिर्क करने वालों में से नहीं हूँ। फिर इन की क़ौम इन से झगड़ा करने लगी तो आप ने फ़रमाया कि तुम लोग मुझ से खुदा के बारे में झगड़ते हो ? उस खुदा ने तो मुझे हिदायत दी है और मैं तुम्हारे झूटे मा'बूदों से बिल्कुल

नहीं डरता। सुन लो ! बिगैर मेरे रब के हुक्म के तुम लोग और तुम्हारे देवता मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। मेरा रब हर चीज़ को जानता है। क्या तुम लोग मेरी नसीहत को नहीं मानोगे ? इस वाकिए को मुख़्तसर मगर बहुत जामेअ अल्फ़ाज़ में कुरआने मजीद ने यूं बयान फ़रमाया है :

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ اللَّيْلُ رَأَىٰ كَوْكَبًا ۖ قَالَ هَٰذَا رَبِّيَ ۖ فَلَمَّا أَفَلَ ۚ قَالَ لَا أُحِبُّ الْإِفْدِينَ ۚ ۝ فَلَمَّا رَأَىٰ الْقَمَرَ بَازِعًا قَالَ هَٰذَا رَبِّيَ ۖ فَلَمَّا أَفَلَ ۚ قَالَ لَيْنٌ لَّمْ يَهْدِنِي رَبِّيَ لَا كُذِّبْتُ مِنَ الْقَوْمِ الضَّالِّينَ ۚ ۝ فَلَمَّا رَأَىٰ الشَّمْسَ بَازِعَةً قَالَ هَٰذَا رَبِّيَ ۖ هَٰذَا أَكْبَرُ ۖ فَلَمَّا أَفَلَتْ قَالَ يَقَوْمِ إِنِّي بَرِيءٌ مِّمَّا تُشْرِكُونَ ۚ ۝ إِنِّي وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِي فَطَرَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ حَنِيفًا وَمَا أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِينَ ۚ (پ ۷، الانعام: ۷۶ تا ۷۹)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** फिर जब उन पर रात का अन्धेरा आया एक तारा देखा बोले इसे मेरा रब ठहराते हो ? फिर जब वोह डूब गया बोले मुझे खुश नहीं आते डूबने वाले फिर जब चांद चमकता देखा बोले इसे मेरा रब बताते हो ? फिर जब वोह डूब गया कहा अगर मुझे मेरा रब हिदायत न करता तो मैं भी इन्हीं गुमराहों में होता फिर जब सूरज जग मगाता देखा बोले इसे मेरा रब कहते हो ? येह तो इन सब से बड़ा है। फिर जब वोह डूब गया, कहा : ऐ कौम मैं बेज़ार हूं उन चीज़ों से जिन्हें तुम शरीक ठहराते हो। मैं ने अपना मुंह उस की तरफ़ किया जिस ने आस्मानो ज़मीन बनाए एक उसी का हो कर और मैं मुशरिकों में नहीं।  
**दर्से हिदायत :-** ग़ौर कीजिये कि कितना दिलकश तर्जें बयान और किस क़दर मुअ्षिर तरीक़ए इस्तिदलाल है कि न कोई सख़्त कलामी है, न किसी की दिल आज़ारी, न किसी के ज़ज़्बात को ठेस लगा कर उस को गुस्सा दिलाना है बस अपने मक्सद को निहायत ही हसीन पैराए और ख़ूब सूरत अन्दाज़ में मुनकिरीन के सामने दलील के साथ पेश कर देना है। हमारे सख़्त गो और तलख़ ज़बान मुक़र्रिरीन के लिये इस में हिदायत का बेहतरीन दर्स है। मौला तअ़ाला तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन।

## ﴿24﴾ फ़िरऔनियों पर लगातार पांच अज़ाब

जब हज़रते मूसा عليه السلام का असा अज़दहा बन कर जादूगरों के सांपों को निगल गया तो जादूगर सजदे में गिर कर ईमान लाए। मगर फ़िरऔन और उस के मुत्तबेईन ने अब भी ईमान क़बूल नहीं किया। बल्कि फ़िरऔन का कुफ़्र और उस की सरक़शी और ज़ियादा बढ़ गई और उस ने बनी इस्राईल के मोअमिनीन और हज़रते मूसा عليه السلام की दिल आज़ारी और ईज़ा रसानी में भरपूर कोशिश शुरू कर दी और तरह तरह से सताना शुरू कर दिया। फ़िरऔन के मज़ालिम से तंग दिल हो कर हज़रते मूसा عليه السلام ने खुदावन्दे कुहूस के दरबार में इस तरह दुआ मांगी कि “ऐ मेरे रब ! फ़िरऔन ज़मीन में बहुत ही सरक़श हो गया है और इस की क़ौम ने अहद शिकनी की है लिहाज़ा तू इन्हें ऐसे अज़ाबों में गिरिफ़्तार फ़रमा ले जो इन के लिये सज़ावार हो। और मेरी क़ौम और बा’द वालों के लिये इब्रत हो।”

(روح البيان، ج ۳، ص ۲۲۰، پ ۹، الاعراف: ۱۳۳)

हज़रते मूसा عليه السلام की दुआ के बा’द **अल्लाह** तआला ने फ़िरऔनियों पर लगातार पांच अज़ाबों को मुसल्लत फ़रमा दिया वोह पांचो अज़ाब येह हैं :

﴿1﴾ **तूफ़ान** :- नागहां एक अब्र आया और हर तरफ़ अन्धेरा छ गया फिर इन्तिहाई जोरदार बारिश होने लगी। यहां तक कि तूफ़ान आ गया और फ़िरऔनियों के घरों में पानी भर गया। और वोह इस में खड़े रह गए और पानी उन की गर्दनों तक आ गया उन में से जो बैठा वोह डूब कर हलाक हो गया। न हिल सकते थे न कोई काम कर सकते थे। उन की खेतियां और बागात तूफ़ान के धारों से बरबाद हो गए। सनीचर से सनीचर तक मुसलसल सात रोज़ तक वोह लोग इसी मुसीबत में मुब्तला रहे और बा वुजूद येह कि बनी इस्राईल के मकानात फ़िरऔनियों के घरों से मिले हुवे थे मगर बनी इस्राईल के घरों में सैलाब का पानी नहीं आया और वोह निहायत ही अम्नो चैन के साथ अपने घरों में रहते थे। जब फ़िरऔनियों को इस मुसीबत के बरदाश्त करने की ताब व ताक़त न रही

और वोह बिल्कुल ही अज़िज़ हो गए तो उन लोगों ने हज़रते मूसा عليه السلام से अर्ज़ किया कि आप हमारे लिये दुआ फ़रमाइये कि येह मुसीबत टल जाए तो हम ईमान लाएंगे और बनी इस्राईल को आप के पास भेज देंगे। चुनान्चे, आप ने दुआ मांगी तो तूफ़ान की बला टल गई और ज़मीन में ऐसी सर सब्जी और शादाबी नुमूदार हुई कि इस से पहले कभी भी देखने में न आई थी। खेतियां बहुत शानदार हुई और ग़ल्लों और फलों की पैदावार बेशुमार हुई येह देख कर फ़िरऔनी कहने लगे कि येह तूफ़ान का पानी तो हमारे लिये बहुत बड़ी ने'मत का सामान था। फिर वोह अपने अहद से फिर गए और ईमान नहीं लाए और फिर सरकशी और जुल्मो इस्यान की गर्म बाज़ारी शुरूअ कर दी।

﴿2﴾ **टिड्डियां :-** एक माह तक तो फ़िरऔनी निहायत आफ़िय्यत से रहे। लेकिन जब इन का कुफ़्र व तकब्बुर और जुल्मो सितम फिर बढ़ने लगा तो **अल्लाह** तआला ने अपने क़हरो अज़ाब को टिड्डियों की शक्ल में भेज दिया कि चारों तरफ़ से टिड्डियों के झुन्ड के झुन्ड आ गए जो इन की खेतियों और बाग़ों को बल्कि यहां तक कि इन के मकानों की लकड़ियां तक को खा गई और फ़िरऔनियों के घरों में येह टिड्डियां भर गई जिस से इन का सांस लेना मुश्किल हो गया मगर बनी इस्राईल के मोमिनीन के खेत और बाग़ और मकानात इन टिड्डियों की यलगा़र से बिल्कुल महफूज़ रहे। येह देख कर फ़िरऔनियों को बड़ी इब्रत हो गई और आख़िर इस अज़ाब से तंग आ कर फिर हज़रते मूसा عليه السلام के आगे अहद किया कि आप इस अज़ाब के दफ़ा होने के लिये दुआ फ़रमा दें तो हम लोग ज़रूर ईमान ले आएंगे और बनी इस्राईल पर कोई जुल्मो सितम न करेंगे। चुनान्चे, आप की दुआ से सातवें दिन येह अज़ाब भी टल गया और येह लोग फिर एक माह तक निहायत ही आराम व राहत में रहे। लेकिन फिर अहद शिकनी की और ईमान नहीं लाए। इन लोगों के कुफ़्र और इस्यान में फिर इज़ाफ़ा होने लगा। हज़रते मूसा عليه السلام और मोअमिनीन को इज़ाएं देने लगे और कहने लगे कि हमारी जो खेतियां और फल बच गए हैं वोह हमारे लिये काफ़ी हैं। लिहाज़ा हम अपना दीन छोड़ कर ईमान नहीं लाएंगे।

﴿3﴾ घुन :- गरज़ एक माह के बा'द इन लोगों पर “क़मल” का अज़ाब मुसल्लत हो गया। बा'ज़ मुफ़स्सरीन का बयान है कि येह घुन था जो इन फ़िरऔनियों के अनाजों और फलों में लग कर तमाम ग़ल्लों और मेवों को खा गया और बा'ज़ मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया कि येह एक छोटा सा कीड़ा था, जो खेतियों की तय्यार फ़सलों को चट कर गया और इन के कपड़ों में घुस कर इन के चमड़ों को काट काट कर इन्हें मुर्गे बिस्मिल की तरह तड़पाने लगा। यहां तक कि इन के सर के बालों, दाढ़ी, मूंछें, भंवों, पलकों को चाट चाट कर और चेहरों को काट काट कर इन्हें चैचक रू बना दिया। येह कीड़े इन के खानों, पानियों और बरतनों में घुस जाते थे। जिस से येह लोग न कुछ खा सकते थे न कुछ पी सकते थे न लम्हे भर के लिये सो सकते थे। यहां तक कि एक हफ़्ते में इस क़हरे आस्मानी व बलाए नागहानी से बिलबिला कर येह लोग चीख़ पड़े और फिर हज़रते मूसा عليه السلام के हुज़ूर हाज़िर हो कर दुआ की दरख़्वास्त करने लगे और ईमान लाने का अ़हद देने लगे चुनान्वे, आप ने इन लोगों की बेक़रारी और गिर्या व ज़ारी पर रहम खा कर दुआ कर दी। और येह अज़ाब भी रफ़अ दफ़अ हो गया। लेकिन फ़िरऔनियों ने फिर अपने अ़हद को तोड़ डाला। और पहले से भी ज़ियादा जुल्म व उदवान पर कमर बस्ता हो गए। फिर एक माह के बा'द इन लोगों पर मेंडक का अज़ाब नाज़िल हो गया।

﴿4﴾ मेंडक :- इन फ़िरऔनियों की बस्तियों और इन के घरों में अचानक बेशुमार मेंडक पैदा हो गए और इन ज़ालिमों का येह हाल हो गया कि जो आदमी जहां भी बैठता उस की मजलिस में हज़ारों मेंडक भर जाते थे। कोई आदमी बात करने या खाने के लिये मुंह खोलता तो उस के मुंह में मेंडक कूद कर घुस जाते। हांडियों में मेंडक, उन के जिस्मों पर सेंकड़ों मेंडक सुवार रहते। उठने, बैठने, लैटने किसी हालत में भी मेंडकों से नजात नहीं मिलती थी। इस अज़ाब से फ़िरऔनी रो पड़े और फिर रोते गिड़ गिड़ाते हज़रते मूसा عليه السلام की बारगाह में दुआ की भीक मांगने के लिये आए और बड़ी बड़ी क़स्में खा कर अ़हदो पैमान करने लगे कि अब हम ज़रूर ईमान लाएंगे और मोमिनीन को कभी ईज़ा नहीं देंगे। चुनान्वे, हज़रते



मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की दुआ से सातवें दिन येह अज़ाब भी उठा लिया गया मगर येह मर्दूद कौम राहत मिलते ही फिर अपना अहद तोड़ कर अपनी पहली ख़बीष हरकतों में मशगूल हो गई। मोअमिनीन को सताने लगे और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की तौहीन व बे अदबी करने लगे तो फिर अज़ाबे इलाही ने इन ज़ालिमों को अपनी गिरिफ्त में ले लिया और उन लोगों पर खून का अज़ाब क़हरे इलाही बन कर उतर पड़ा।

﴿5﴾ **खून :-** एक दम बिल्कुल अचानक उन लोगों के तमाम कुंवों, नहरों का पानी खून हो गया तो उन लोगों ने फ़िरऔन से फ़रयाद की, तो उस सरकश ने कहा कि येह हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की जादूगरी और नज़रबन्दी है। येह सुन कर फ़िरऔनियों ने कहा कि येह कैसी और कहां की नज़र बन्दी है ? कि हमारे खाने पीने के बरतन खून से भरे पड़े हैं और मोअमिनीन पर इस का ज़रा भी अषर नहीं तो फ़िरऔन ने हुक्म दिया कि फ़िरऔनी लोग मोअमिनीन के साथ एक ही बरतन से पानी निकालें। मगर खुदा की शान कि मोअमिनीन उसी बरतन से पानी निकालते तो निहायत ही साफ़ सफ़ाफ़ और शीरीं पानी निकलता और फ़िरऔनी जब उसी बरतन से पानी निकालते तो ताज़ा ख़ालिस खून निकलता। यहां तक कि फ़िरऔनी लोग प्यास से बे क़रार हो कर मोअमिनीन के पास आए और कहा कि हम दोनों एक ही बरतन से एक ही साथ मुंह लगा कर पानी पियेंगे मगर कुदरते खुदावन्दी का अज़ीब जल्वा नज़र आता। एक ही बरतन से एक साथ मुंह लगा कर दोनों पानी पीते थे मगर मोअमिनीन के मुंह में जो जाता वोह पानी होता था और फ़िरऔन वालों के मुंह में जो जाता वोह खून होता था। मजबूर हो कर फ़िरऔन और फ़िरऔनी लोग घास और दरख़्तों की जड़ें और छलें चबा चबा कर चूसते थे मगर इस की रतूबत भी उन के मुंह में जा कर खून बन जाती थी। अल ग़रज़ फ़िरऔनियों ने फिर गिड़ गिड़ा कर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से दुआ की दरख़्वास्त की। तो आप ने पैग़म्बराना रह्मो करम फ़रमा कर फिर इन लोगों के लिये दुआए ख़ैर फ़रमा दी तो सातवें दिन इस खूनी अज़ाब का साया भी उन के सरों से उठ गया। अल ग़रज़ इन सरकशों पर मुसलसल

पांच अज़ाब आते रहे और हर अज़ाब सातवें दिन टलता रहा और हर दो अज़ाबों के दरमियान एक माह का फ़ासिला होता रहा मगर फ़िरऔन और फ़िरऔनियों के दिलों पर शकावत व बद बख़्ती की ऐसी मोहर लग चुकी थी कि फिर भी वोह ईमान नहीं लाए और अपने कुफ़्र पर अड़े रहे और हर मरतबा अपना अहद तोड़ते रहे। यहां तक कि **अल्लाह** तआला के कहरो ग़ज़ब का आख़िरी अज़ाब आ गया कि फ़िरऔन और उस के मुत्तबेईन सब दरयाए नील में ग़र्क हो कर हलाक हो गए और हमेशा के लिये खुदा की दुन्या इन अहद शिकनों और मर्दूदों से पाक व साफ़ हो गई और येह लोग दुन्या से इस तरह नैस्तो नाबूद कर दिये गए कि रूए ज़मीन पर इन की क़ब्रों का निशान भी बाक़ी नहीं रह गया। (तفسير الصّाوى، ج ۲، ص ۸۰۳، پ ۹، الاعراف: ۱۳۳)।

कुरआने मजीद ने इन मज़कूरए बाला पांचों अज़ाबों की तस्वीर कशी इन अल्फ़ाज़ में फ़रमाई है :-

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالْذَّمَ  
 آيَتٍ مُّفَصَّلَاتٍ ۖ فَاسْتَكْبَرُوا وَكَانُوا قَوْمًا مُّجْرِمِينَ ﴿۱۳۳﴾ وَلَمَّا وَقَعَ  
 عَلَيْهِمُ الرِّجُّ قَالُوا لَئِنْ سِىْ أَدْعُنَا رَبَّنَا لَنَرْبِكَ بِمَا عٰهَدَ عِنْدَكَ لَئِنْ  
 كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجَّ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِي  
 إِسْرَءِيلَ ﴿۱۳۴﴾ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمْ الرِّجَّ إِلَىٰ أَجَلٍ هُمْ بِلَعْنَتِهِ إِذَا هُمْ  
 يَنْتَكِبُونَ ﴿۱۳۵﴾ فَانْتَقِمْنَا مِنْهُمْ فَأَعْرَضْنَاهُمْ فِي يَمِينِهِمْ كَذَّبُوا بِالآيَاتِنَا  
 وَكَانُوا عَنْهَا غَافِلِينَ ﴿۱۳۶﴾ (پ ۹، الاعراف: ۱۳۳ تا ۱۳۶)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- तो भेजा हम ने उन पर तूफ़ान और टिड्डी और घुन (या किलनी या जूएं) और मेंडक और खून जुदा जुदा निशानियां तो उन्होंने ने तकब्बुर किया और वोह मुजरिम कौम थी और जब उन पर अज़ाब पड़ता कहते : ऐ मूसा ! हमारे लिये अपने रब से दुआ करो उस अहद के सबब जो उस का तुम्हारे पास है बेशक अगर तुम हम पर से अज़ाब उठा दोगे तो हम ज़रूर तुम पर ईमान लाएंगे और बनी इस्राईल

को तुम्हारे साथ कर देंगे फिर जब हम उन से अज़ाब उठा लेते एक मुद्दत के लिये जिस तक उन्हें पहुंचना है जभी वोह फिर जाते तो हम ने उन से बदला लिया तो उन्हें दरया में डबो दिया इस लिये कि हमारी आयतें झुटलाते और इन से बे ख़बर थे ।

**दर्से हिदायत :-** ﴿1﴾ इन वाकिआत से येह सबक मिलता है कि अहद शिकनी और **अल्लाह** के नबियों की तकज़ीब व तौहीन कितना बड़ा और हौलनाक जुमें अज़ीम है कि इस की वजह से फ़िरऔनियों पर बार बार अज़ाबे इलाही किस्म किस्म की सूरतों में उतरा । यहां तक कि आख़िर में वोह दरया में ग़र्क कर के दुन्या से फ़ना कर दिये गए । लिहाज़ा हर मुसलमान को अहद शिकनी और सरकशी और गुनाहों से बचते रहना लाज़िम है कि कहीं बद आ'मालियों की नुहूसतों से हम पर भी क़हरे इलाही अज़ाब की सूरत में न उतर पड़े ।

﴿2﴾ हज़रते मूसा **عليه السلام** का सब्र व तहम्मुल और इन की रक़ीकुल क़ल्बी बिला शुबा इन्तिहा को पहुंची हुई थी कि बार बार अहद शिकनी करने वाले अपने दुश्मनों की आहो फ़ुगां पर रहम खा कर इन के अज़ाब को दफ़अ करने की दुआ फ़रमाते रहे इस से मा'लूम हुवा कि क़ौम के हादी और इन के पेशवा के लिये सब्र व तहम्मुल और अफ़व दरगुज़र की ख़स्लत इन्तिहाई ज़रूरी है और उ-लमाए किराम को जो हज़राते अम्बियाए किराम **عليهم السلام** के नाइबीन हैं इन के लिये बेहद लाज़िम व ज़रूरी है कि वोह अपने मुख़ालिफ़ीन और बद ख़्वाहों से इन्तिक़ाम का ज़ब्बा न रखें बल्कि सब्रो तहम्मुल कर के अपने मुजरिमों को बार बार मुआफ़ करते रहें । कि येह हज़रते मूसा **عليه السلام** की मुक़द्दस सुन्नत भी है और हमारे नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मां **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का तो येह एक बड़ा ही ख़ास और ख़ुसूसी तुर्रए इम्तियाज़ है कि आप ने कभी भी अपनी ज़ात के लिये अपने दुश्मनों से कोई भी इन्तिक़ाम नहीं लिया बल्कि हमेशा उन को मुआफ़ फ़रमा दिया करते थे । और येह आप की मुक़द्दस ता'लीम का बहुत ही ताबनाक और दरख़शा इरशाद है कि

صَلُّ مَنْ قَطَعَكَ وَاعْفُ عَمَّنْ ظَلَمَكَ وَأَحْسِنْ إِلَى مَنْ أَسَاءَ إِلَيْكَ

या'नी तुम से जो तअल्लुक काटे तुम उस से तअल्लुक जोड़ो ।  
और जो तुम पर जुल्म करे उस को मुआफ़ कर दो और जो तुम्हारे साथ  
बुरा बरताव करे तुम उस के साथ अच्छा सुलूक करो ।

हज़रते शैख़ सा'दी عَلَيْهِ الرُّحْمَةُ ने इसी हदीष की तर्जुमानी करते  
हुवे इरशाद फ़रमाया कि

بدی رابدی سهل باشد جزا اگر مردی اَحْسَنُ الی مَنْ اَسَا

या'नी बुराई का बुरा बदला देना तो बहुत आसान है लेकिन  
अगर तुम जवां मर्द हो तो बुराई करने वाले के साथ भलाई करो ।

### ﴿25﴾ हज़रते सालेह عَلَيْهِ السَّلَام की ऊंटनी

हज़रते सालेह عَلَيْهِ السَّلَام कौमे षमूद की तरफ़ नबी बना कर भेजे  
गए । आप ने जब कौमे षमूद को खुदा (عَزَّوَجَلَّ) का फ़रमान सुना कर  
ईमान की दा'वत दी तो इस सरकश कौम ने आप से येह मो'जिज़ा त़लब  
किया कि आप इस पहाड़ की चट्टान से एक गाभन ऊंटनी निकालिये जो  
ख़ूब फ़र्बा और हर किस्म के ड़्यूब व नकाइस से पाक हो । चुनान्वे, आप  
ने चट्टान की तरफ़ इशारा फ़रमाया तो वोह फ़ौरन ही फट गई और उस में  
से एक निहायत ही ख़ूब सूरत व तन्दुरुस्त और ख़ूब बुलन्द कामत ऊंटनी  
निकल पड़ी जो गाभन थी और निकल कर उस ने एक बच्चा भी जना  
और येह अपने बच्चे के साथ मैदानों में चरती फिरती रही ।

इस बस्ती में एक ही तालाब था जिस में पहाड़ों के चश्मों से  
पानी गिर कर जम्अ होता था । आप ने फ़रमाया कि ऐ लोगो ! देखो येह  
मो'जिज़े की ऊंटनी है । एक रोज़ तुम्हारे तालाब का सारा पानी येह पी  
डालेगी और एक रोज़ तुम लोग पीना । कौम ने इस को मान लिया फिर  
आप ने कौमे षमूद के सामने येह तक्रीर फ़रमाई कि

يَقُومُ عَبْدُ اللَّهِ مَا لَكُمْ مِنَ الْوَعْيَةِ قَدْ جَاءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ  
رَّبِّكُمْ هَذِهِ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ آيَةٌ قَدْ رُوحَاتُهَا كُلٌّ فِي أَرْضِ اللَّهِ وَلَا  
تَسْؤُهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابُ الْيَمِّ ﴿٢٥﴾ (پ ٨، الاعراف: ٤٣)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- ऐ मेरी कौम **अल्लाह** को पूजो उस के  
सिवा तुम्हारा कोई मा'बूद नहीं बेशक तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से

रोशन दलील आई येह **अल्लाह** का नाक़ा है तुम्हारे लिये निशानी तो उसे छोड़ दो कि **अल्लाह** की ज़मीन में खाए और उसे बुराई से हाथ न लगाओ कि तुम्हें दर्दनाक अज़ाब आएगा ।

चन्द दिन तो कौमे षमूद ने इस तकलीफ़ को बरदाश्त किया कि एक दिन उन को पानी नहीं मिलता था । क्योंकि उस दिन तालाब का सारा पानी ऊंटनी ही पी जाती थी । इस लिये उन लोगों ने तै कर लिया कि इस ऊंटनी को क़त्ल कर डालें ।

**किदार बिन सालिफ़ :-** चुनान्चे, इस कौम में क़दार बिन सालिफ़ जो सुख़ रंग का भूरी आंखों वाला और पस्त क़द आदमी था और एक जिनाकार औरत का लड़का था । सारी कौम के हुक्म से इस ऊंटनी को क़त्ल करने के लिये तय्यार हो गया । हज़रते सालेह عَلَيْهِ السَّلَام मन्अ ही करते रहे, लेकिन किदार बिन सालिफ़ ने पहले तो ऊंटनी के चारों पाउं को काट डाला । फिर इस को ज़ब्द कर दिया और इन्तिहाई सरकशी के साथ हज़रते सालेह عَلَيْهِ السَّلَام से बे अदबाना गुफ़्तगू करने लगा ।

चुनान्चे, खुदावन्दे कुहूस का इरशाद है कि

فَعَصَوْا وَالنَّاقَةَ وَعَتَوَاعَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوا يُطْلِمُ أَتَيْنَاكُمْ بَعْدًا  
إِنْ كُنْتُمْ مِنَ الْمُرْسَلِينَ ۝ (پ ۸، الاعراف ۷۷)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** पस नाक़े की कूचें (क़दम) काट दीं और अपने रब के हुक्म से सरकशी की और बोले : ऐ सालेह ! हम पर ले आओ जिस का तुम वा'दा दे रहे हो अगर तुम रसूल हो ।

**ज़लज़ले का अज़ाब :-** कौमे षमूद की इस सरकशी पर अज़ाबे खुदावन्दी का जुहूर इस तरह हुवा कि पहले एक ज़बरदस्त चिंघाड़ की ख़ौफनाक आवाज़ आई । फिर शदीद ज़लज़ला आया जिस से पूरी आबादी उथल पथल हो कर चकना चूर हो गई । तमाम इमारतें टूट फूट कर तह्स नह्स हो गई और कौमे षमूद का एक एक आदमी घुंटनों के बल औंधा गिर कर मर गया । कुरआने मजीद ने फ़रमाया कि

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِي دَارِهِمْ جُثَثٍ ۝ (پ ۸، الاعراف ۷۸)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** तो उन्हें ज़लज़ले ने आ लिया तो सुब्द को अपने घरों में औंधे रह गए तो सालेह ने उन से मुंह फेरा ।

हज़रते सालेह عَلَيْهِ السَّلَام ने जब देखा कि पूरी बस्ती ज़लज़लों के झटकों से तबाहो बरबाद हो कर ईंट पथ्थरों का ढेर बन गई और पूरी कौम हलाक हो गई तो आप को बड़ा सदमा और कलक हुआ। और आप को कौमे षमूद और इन की बस्ती के वीरानों से इस क़दर नफ़रत हो गई कि आप ने इन लोगों की तरफ़ से मुंह फेर लिया। और इस बस्ती को छोड़ कर दूसरी जगह तशरीफ़ ले गए और चलते वक़्त मुर्दा लाशों से ये फ़रमा कर रवाना हो गए कि

يَقُومُ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّي وَنَصَحْتُكُمْ وَلَكِنْ لَا تُجِبُونَ

التّٰوْحِيْدِ ٩ (پ ٨، الاعراف: ٤٩)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** ऐ मेरी कौम बेशक मैं ने तुम्हें अपने रब की रिसालत पहुंचा दी और तुम्हारा भला चाहा मगर तुम खैर ख़्वाहों के गरज़ी (पसन्द करने वाले) ही नहीं।

खुलासए कलाम येह है कि कौमे षमूद की पूरी बस्ती बरबाद व वीरान हो कर खन्डर बन गई और पूरी कौम फ़ना के घाट उतर गई कि आज उन की नस्ल का कोई इन्सान रूए ज़मीन पर बाकी नहीं रह गया।

(تفسير الصّٰوئى، ج ٢، ص ٦٨٨، پ ٨، الاعراف: ٤٣-٤٤ تا ٤٩ ملخصاً)

**दर्से हिदायत :-** इस वाकिए से येह सबक़ मिलता है कि जब एक नबी की एक ऊंटनी को क़त्ल कर देने वाली कौम अज़ाबे इलाही की तबाह कारियों से इस तरह फ़ना हो गई कि उन की नस्ल का कोई इन्सान भी रूए ज़मीन पर बाकी न रह गया तो जो कौम अपने नबी की आल व अवलाद को क़त्ल कर डालेगी भला वोह अज़ाबे इलाही के क़हर से कब और किस तरह महफूज़ रह सकती है? चुनान्चे, तारीख़ शाहिद है कि करबला में अहले बैते नबुव्वत को शहीद करने वाले यज़ीदी कूफ़ियों और शामियों का येही ह़शर हुआ कि मुख़्तार बिन उ़बैद के दौरे हुकूमत में यज़ीदियों का बच्चा बच्चा क़त्ल कर दिया गया और इन के घरों को ताख़्त व ताराज़ कर के इन पर गधों के हल चलाए गए और आज रूए ज़मीन पर इन यज़ीदियों की नस्ल का कोई एक बच्चा भी बाकी नहीं रह गया।

**एक लाख चालीस हजार यज़ीदी मक्तूल :-** हाकिम मुहदिष ने एक हदीष रिवायत की है कि **अल्लाह** तआला ने अपने हबीब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर वह्य भेजी थी कि कौमे यहूद ने हज़रते ज़करिया को क़त्ल कर दिया तो इन के एक खून के बदले सत्तर हजार यहूदी क़त्ल हुवे और आप के नवासे हज़रते इमामे हुसैन **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** के एक खून के बदले सत्तर सत्तर हजार या'नी एक लाख चालीस हजार कूफ़ी व शामी मक्तूल होंगे। चुनान्चे, **अल्लाह** तआला का वा'दा इस तरह पूरा हुवा कि मुख़्तार बिन उबैद की लड़ाई में सत्तर हजार कूफ़ी व शामी क़त्ल हुवे और फिर अब्बासी सल्तनत के बानी अब्दुल्लाह सफ़्फ़ाह के हुक्म से सत्तर हजार कूफ़ी व शामी मारे गए। यूं कुल मिल कर एक लाख चालीस हजार मक्तूल हो गए।

(المستدرک، کتاب التفسیر، باب اخبار القتل عوض الحسین..... الخ، ج ۳، ص ۷، رقم ۲۳۰۱)

बहर हाल येह याद रखिये कि **अल्लाह** तआला अपने महबूबों की हर हर चीज़ को अपना महबूब बना लेता है। लिहाज़ा खुदा (**عَزَّوَجَلَّ**) के महबूबों की आल व अज़ाब हों या अस्थाब व अहबाब या इन से निस्वत व तअल्लुक रखने वाली कोई भी चीज़ हो इन में से किसी की भी तौहीन और बे अदबी से खुदावन्दे क़त्हार का कहरो ग़ज़ब ज़रूर किसी न किसी अज़ाब की सूरत में ज़ाहिर होता है। लिहाज़ा हर वोह चीज़ जिस को **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के महबूबों से निस्वत हासिल हो जाए उस की ता'ज़ीम व तकरीम लाज़िम व ज़रूरी है और उस की तौहीन व बेअदबी अज़ाबे इलाही की हरी झन्डी और तबाही व बरबादी का सिग्नल है। (**والعیاذ باللّٰه منه**)

**अज़ाब की ज़मीन मन्हूस :-** रिवायत है कि जब जंगे तबूक के मौक़अ पर सफ़र में हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** कौमे षमूद की बस्तियों के खन्डरात के पास से गुज़रे तो आप ने फ़रमाया कि ख़बरदार कोई शख्स इस गाऊं में दाख़िल न हो और न इस गाऊं के कुंवें का कोई शख्स पानी पिये और तुम लोग इस अज़ाब की जगह से ख़ौफ़े इलाही **عَزَّوَجَلَّ** में डूब कर रोते हुवे और मुंह ढांपे हुवे जल्द से जल्द गुज़र जाओ, कहीं ऐसा न हो कि तुम पर भी अज़ाब उतर पड़े।

(روح البیان، ج ۳، ص ۹۴، ۱، ۸، الاعراف: ۷۹)



## ﴿26﴾ कौमै आद की आंधी

कौमै आद मकामे “अहकाफ़” में रहती थी जो अमान व हज़र मौत के दरमियान एक बड़ा रेगिस्तान है। इन के मौरिषे आ’ला का नाम आद बिन औस बिन इरम बिन साम बिन नूह है। पूरी कौम के लोग इन को मौरिषे आ’ला “आद” के नाम से पुकारने लगे। यह लोग बुत परस्त और बहुत बद आ’माल व बद किरदार थे। **अल्लाह** तआला ने अपने पैग़म्बर हज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام को इन लोगों की हिदायत के लिये भेजा मगर इस कौम ने अपने तकब्बुर और सरकशी की वजह से हज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام को झूटला दिया और अपने कुफ़्र पर अड़े रहे। हज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام बार बार इन सरकशों को अज़ाबे इलाही से डराते रहे, मगर इस शरीर कौम ने निहायत ही बे बाकी और गुस्ताखी के साथ अपने नबी से येह कह दिया कि

أَجْتَنَّا الْعِبَدَ اللَّهَ وَحْدَهُ وَنَدَّ مَا كَانَ يَعْبُدُ آبَاؤُنَا فَاتَّبَعْنَاهُ

تَعْدُنَا إِنْ كُنْتُمْ مِنَ الصّٰدِقِیْنَ ﴿٢٦﴾ (پ ۸، الاعراف: ۷۰)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** क्या तुम हमारे पास इस लिये आए हो कि हम एक **अल्लाह** को पूजें और जो हमारे बाप दादा पूजते थे, उन्हें छोड़ दें ? तो लाओ जिस का हमें वा’दा दे रहे हो अगर सच्चे हो।

आखिर अज़ाबे इलाही की झलकियां शुरूअ हो गई। तीन साल तक बारिश ही नहीं हुई। और हर तरफ़ क़हूत (खुशक साली) का दौरा दौरा हो गया। यहां तक कि लोग अनाज के दाने दाने को तरस गए। उस ज़माने का येह दस्तूर था कि जब कोई बला और मुसीबत आती थी तो लोग मक्कए मुअज़्ज़मा जा कर ख़ानए का’बा में दुआएं मांगते थे तो बलाएं टल जाती थीं। चुनान्वे, एक जमाअत मक्कए मुअज़्ज़मा गई। इस जमाअत में मुर्षद बिन सा’द नामी एक शख्स भी था जो मोमिन था मगर अपने ईमान को कौम से छुपाए हुवे था। जब इन लोगों ने का’बए मुअज़्ज़मा में दुआ मांगनी शुरूअ की तो मुर्षद बिन सा’द का ईमानी ज़ब्बा बेदार हो गया और उस ने तड़प कर कहा कि ऐ मेरी कौम तुम लाख दुआएं मांगो, मगर खुदा की क़सम उस वक़्त तक पानी नहीं बरसेगा जब तक तुम अपने नबी हज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान न लाओगे।

हज़रते मुर्षद बिन सा'द ने जब अपना ईमान ज़ाहिर कर दिया तो क़ौमे अ़ाद के शरीरों ने इन को मार पीट कर अलग कर दिया और दुआएं मांगने लगे। उस वक़्त **अब्बाह** तअ़ाला ने तीन बदलियां भेजीं। एक सफ़ेद, एक सुर्ख़, एक सियाह और आस्मान से एक आवाज़ आई कि ऐ क़ौमे अ़ाद ! तुम लोग अपनी क़ौम के लिये इन तीन बदलियों में से एक बदली को पसन्द कर लो। इन लोगों ने काली बदली को पसन्द कर लिया और येह लोग इस ख़याल में मगन थे कि काली बदली ख़ूब ज़ियादा बारिश देगी। चुनान्वे, वोह अब्रे सियाह क़ौमे अ़ाद की आबादियों की तरफ़ चल पड़ा। क़ौमे अ़ाद के लोग काली बदली को देख कर बहुत खुश हुवे। हज़रते हूद **عَلَيْهِ السَّلَام** ने फ़रमाया कि ऐ मेरी क़ौम ! देख लो अज़ाबे इलाही अब्र की सूरत में तुम्हारी तरफ़ बढ़ रहा है मगर क़ौम के गुस्ताख़ों ने अपने नबी को झुटला दिया और कहा कि कहां का अज़ाब और कैसा अज़ाब ? **هَذَا عَارِضٌ مُّطَرٌ** येह तो बादल है जो हमें बारिश देने के लिये आ रहा है।

(روح البیان، ج ۳، ص ۸۷ تا ۸۹، پ ۸، الاعراف: ۷۰)

येह बादल पश्चिम की तरफ़ से आबादियों की तरफ़ बराबर बढ़ता रहा और एक दम नागहां इस में से एक आंधी आई जो इतनी शदीद थी कि ऊंटों को मअ़ इन के सुवार के उड़ा कर कहीं से कहीं फेंक देती थी। फिर इतनी जोरदार हो गई कि दरख़्तों को जड़ों से उखाड़ कर उड़ा ले जाने लगी। येह देख कर क़ौमे अ़ाद के लोगों ने अपने संगीन महलों में दाख़िल हो कर दरवाज़ों को बन्द कर लिया मगर आंधी के झोंके न सिर्फ़ दरवाज़ों को उखाड़ कर ले गए बल्कि पूरी इमारतों को झंझोड़ कर इन की ईंट से ईंट बजा दी। सात रात और आठ दिन मुसलसल येह आंधी चलती रही। यहां तक कि क़ौमे अ़ाद का एक एक आदमी मर कर फ़ना हो गया। और इस क़ौम का एक बच्चा भी बाकी न रहा।

जब आंधी ख़त्म हुई तो उस क़ौम की लाशें ज़मीन पर इस तरह पड़ी हुई थीं जिस तरह ख़जूरों के दरख़्त उखड़ कर ज़मीन पर पड़े हों चुनान्वे, इरशादे रब्बानी है :

وَأَمَّا عَادُ فَأُهْلِكُوا بِرِيحٍ مَرْمَرَةٍ عَاتِيَةٍ ۖ سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَ  
ثَلَاثِينَ أَيَّامٍ ۖ حُسُومًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيهَا مَضَىٰ ۖ وَكَانَتْ هُمْ عَجَابًا  
نَّحْلٌ خَاوِيَةً ۖ فَهَلْ تَرَى لَهُم مِّنْ بَاقِيَةٍ ۝ (پ ۹، الحاقة: ۶ تا ۸)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** और रहे आद वोह हलाक किये गए निहायत सख्त गरजती आंधी से वोह उन पर कुव्वत से लगा दी सात रातें और आठ दिन लगातार तो उन लोगों को उन में देखो पछड़े (मरे) हुवे गोया वोह खजूर के डन्ड (सूखे तने) हैं गिरे हुवे तो तुम उन में से किसी को बचा हुवा देखते हो ?

फिर कुदरते खुदावन्दी से काले रंग के परन्दों का एक गौल नुमूदार हुवा । जिन्हों ने इन की लाशों को उठा कर समन्दर में फेंक दिया । और हज़रते हूद عَلَيْهِ السَّلَام ने उस बस्ती को छोड़ दिया और चन्द मोअमिनीन को जो ईमान लाए थे साथ ले कर मक्कए मुकर्रमा चले गए । और आखिर ज़िन्दगी तक बैतुल्लाह शरीफ़ में इबादत करते रहे ।

(تفسير الصاوى، ج ۲، ص ۲۸۶، پ ۸، الاعراف: ۷۰)

**दर्से हिदायत :-** कुरआने करीम के इस दर्दनाक वाकिए से येह सबक मिलता है कि “कौमे आद” जो बड़ी ताक़तवर और क़द आवार कौम थी और इन लोगों की माली खुशहाली भी निहायत मुस्तहक़म थी क्यूंकि लहलहाती खेतियां और हरे भरे बागात इन के पास थे । पहाड़ों को तराश तराश कर इन लोगों ने गर्मियों और सर्दियों के लिये अलग अलग महल्लात ता’मीर किये थे । इन लोगों को अपनी कषरत और ताक़त पर बड़ा ए’तिमाद, अपने तमव्वुल और सामाने ऐशो इशरत पर बड़ा नाज़ था । मगर कुफ़्र और बद आ’मालियों व बद कारियों की नुहूसत ने इन लोगों को क़हरे इलाही के अज़ाब में इस तरह गिरिफ़्तार कर दिया कि आंधी के जोंकों और झटकों ने इन की पूरी आबादी को झंझोड़ कर चकना चूर कर दिया । और इस पूरी कौम के वुजूद को सफ़हे हस्ती से इस तरह मिटा दिया कि इन की क़ब्रों का भी कहीं निशान बाकी न रहा । तो फिर भला

हम लोगों जैसी कमजोर कौमों का क्या ठिकाना है ? कि अज़ाबे इलाही के झटकों की ताब ला सके। इस लिये जिन लोगों को अपनी और अपनी नस्लों की खैरियत व बका मन्ज़ूर है, उन्हें लाज़िम है कि वोह **अल्लाह** व रसूल **عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** की नाफरमानियों और बद आ'मालियों से हमेशा बचते रहें। अपनी कोशिश और ताक़त भर आ'माले सालेह और नेकियां करते रहें, वरना कुरआने मजीद की आयतें हमें झंझोड़ कर येह सबक दे रही हैं कि नेकी की तापीर आबादी और बदी की तापीर बरबादी है। कुरआने मजीद में पढ़ लो कि (प १९, हाफ़ा: ९) **وَالْمُؤْتَفِكَةُ بِالْعَاطِيَةِ ۝ (प १९, हाफ़ा: ९)** या'नी बहुत सी बस्तियां अपनी बदकारियों और बद आ'मालियों की वजह से हलाक व बरबाद कर दी गई। और दूसरी आयत में येह भी पढ़ लो कि

**وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرَىٰ آمَنُوا وَاتَّقَوْا فَتَحْنَا عَلَيْهِم بَرَكَاتٍ مِّنَ السَّمَاءِ  
الْأَرْضِ وَلَٰكِن كَذَّبُوا فَأَخَذْنَاهُم بِمَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝ (प १९, हाफ़ा: ९)**

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और अगर बस्तियों वाले ईमान लाते और डरते तो ज़रूर हम उन पर आस्मान और ज़मीन से बरकतें खोल देते मगर उन्होंने ने तो झुटलाया तो हम ने उन्हें उन के किये पर गिरिफ़्तार किया।

### ﴿27﴾ उलट पलट हो जाने वाला शहर

येह हज़रते लूत **عَلَيْهِ السَّلَام** का शहर “सदूम” है। जो मुल्के शाम में सूबा “हम्स” का एक मशहूर शहर है। हज़रते लूत **عَلَيْهِ السَّلَام** बिन हारान बिन तारिख़, येह हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ السَّلَام** के भतीजे हैं। येह लोग इराक़ में शहर “बाबिल” के बाशिन्दे थे फिर हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ السَّلَام** वहां से हिजरत कर के “फ़िलिस्तीन” तशरीफ़ ले गए और हज़रते लूत **عَلَيْهِ السَّلَام** मुल्के शाम के एक शहर “उर्दन” में मुकीम हो गए और **अल्लाह** तआला ने आप को नबुव्वत अता फ़रमा कर “सदूम” वालों की हिदायत के लिये भेज दिया। (तफ़सीर الصّाوى، ج २، ص १८९، प ८, हाफ़ा: ८०)

**शहर सदूम :-** शहरे सदूम की बस्तियां बहुत आबाद और निहायत सर सब्जो शादाब थीं और वहां तरह तरह के अनाज और किस्म किस्म के फल और मेवे ब कषरत पैदा होते थे। शहर की खुशहाली की वजह से

अकषर जा बजा के लोग मेहमान बन कर इन आबादियों में आया करते थे और शहर के लोगों को इन मेहमानों की मेहमान नवाजी का बार उठाना पड़ता था। इस लिये इस शहर के लोग मेहमानों की आमद से बहुत ही कबीदा खातिर और तंग हो चुके थे। मगर मेहमानों को रोकने और भगाने की कोई सूरत नज़र नहीं आ रही थी। इस माहोल में इब्लीसे लईन एक बुढ़े की सूरत में नुमूदार हुवा। और इन लोगों से कहने लगा कि अगर तुम लोग मेहमानों की आमद से नजात चाहते हो तो इस की येह तदबीर है कि जब भी कोई मेहमान तुम्हारी बस्ती में आए तो तुम लोग ज़बरदस्ती उस के साथ बद फे'ली करो। चुनान्चे, सब से पहले इब्लीस खुद एक खूब सूरत लड़के की शकल में मेहमान बन कर इस बस्ती में दाखिल हुवा। और इन लोगों से खूब बद फे'ली कराई इस तरह येह फे'ले बद इन लोगों ने शैतान से सीखा। फिर रफ़ता रफ़ता इस बुरे काम के येह लोग इस क़दर आदी बन गए कि औरतों को छोड़ कर मर्दों से अपनी शहवत पूरी करने लगे।

(روح البیان، ج ۳، ص ۱۹۷، پ ۸، الاعراف: ۸۴)

चुनान्चे, हज़रते लूत عليه السلام ने इन लोगों को इस फे'ले बद से मन्ज़ करते हुवे इस तरह वा'ज फ़रमाया कि

اَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِنَ الْعَالَمِينَ ۖ اِنَّكُمْ  
لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِنْ دُونِ الْنِسَاءِ ۗ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ  
مُّسْرِفُونَ ﴿۸۱﴾ (پ ۸، الاعراف: ۸۰، ۸۱)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** अपनी कौम से कहा : क्या वोह बेहयाई करते हो जो तुम से पहले जहान में किसी ने न की तुम तो मर्दों के पास शहवत से जाते हो औरतें छोड़ कर बल्कि तुम लोग हृद से गुज़र गए।

हज़रते लूत عليه السلام के इस इस्लाही और मुस्लिहाना वा'ज को सुन कर इन की कौम ने निहायत बे बाकी और इन्तिहाई बे हयाई के साथ क्या कहा ? इस को कुरआन की ज़बान से सुनिये :

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ اِلَّا اَنْ قَالُوا اَخْرِجُوهُمْ مِنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ  
اَنَاسٌ يَّتَضَاهَوْنَ ﴿۸۲﴾ (پ ۸، الاعراف: ۸۲)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और उस की कौम का कुछ जवाब न था मगर येही कहना कि इन को अपनी बस्ती से निकाल दो येह लोग तो पाकीजगी चाहते हैं ।

जब कौमे लूत की सरकशी और बद फ़े'ली काबिले हिदायत न रही तो **अल्लाह** तआला का अज़ाब आ गया । चुनान्चे, हज़रते जिब्राईल عليه السلام चन्द फ़िरिशतों को हमराह ले कर आस्मान से उतर पड़े । फिर येह फ़िरिशते मेहमान बन कर हज़रते लूत عليه السلام के पास पहुंचे और येह सब फ़िरिशते बहुत ही हसीन और ख़ूब सूरत लड़कों की शक़ल में थे । इन मेहमानों के हुस्नो जमाल को देख कर और कौम की बदकारी का ख़याल कर के हज़रते लूत عليه السلام बहुत फ़िक्र मन्द हुवे । थोड़ी देर बा'द कौम के बद फ़े'लों ने हज़रते लूत عليه السلام के घर का मुहासरा कर लिया और उन मेहमानों के साथ बद फ़े'ली के इरादे से दीवार पर चढ़ने लगे । हज़रते लूत عليه السلام ने निहायत दिल सोज़ी के साथ इन लोगों को समझाना और इस बुरे काम से मन्अ करना शुरू कर दिया । मगर येह बद फ़े'ल और सरकश कौम अपने बे हूदा जवाब और बुरे इक़दाम से बाज़ न आई । तो आप अपनी तन्हाई और मेहमानों के सामने रुस्वाई से तंग दिल हो कर ग़मगीन व रन्जीदा हो गए । येह मन्ज़र देख कर हज़रते जिब्रील عليه السلام ने फ़रमाया कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी आप बिल्कुल कोई फ़िक्र न करें । हम लोग **अल्लाह** तआला के भेजे हुवे फ़िरिशते हैं जो इन बदकारों पर अज़ाब ले कर उतरे हैं । लिहाज़ा आप मोअमिनीन और अपने अहलो इयाल को साथ ले कर सुब्द होने से क़ब्ल ही इस बस्ती से दूर निकल जाएं और ख़बरदार कोई शख़्स पीछे मुड़ कर इस बस्ती की तरफ़ न देखे वरना वोह भी इस अज़ाब में गिरिफ़्तार हो जाएगा । चुनान्चे, हज़रते लूत عليه السلام अपने घर वालों और मोअमिनीन को हमराह ले कर बस्ती से बाहर निकल गए । फिर हज़रते जिब्राईल عليه السلام इस शहर की पांचों बस्तियों को अपने परों पर उठा कर आस्मान की तरफ़ बुलन्द हुवे और

कुछ ऊपर जा कर इन बस्तियों को उलट दिया और येह आबादियां ज़मीन पर गिर कर चकना चूर हो कर ज़मीन पर बिखर गईं। फिर कंकर के पथ्थरों का मींह बरसा और इस जोर से संग बारी हुई कि कौमे लूत के तमाम लोग मर गए और इन की लाशें भी टुकड़े टुकड़े हो कर बिखर गईं। ऐन उस वक्त जब की येह शहर उलट पलट हो रहा था। हज़रते लूत عَلَيْهِ السَّلَام की एक बीवी जिस का नाम “वाइला” था जो दर हकीकत मुनाफ़िका थी और कौम के बदकारों से महबूबत रखती थी उस ने पीछे मुड़ कर देख लिया और येह कहा कि “हाए रे मेरी कौम” येह कह कर खड़ी हो गई फिर अज़ाबे इलाही का एक पथ्थर उस के ऊपर भी गिर पड़ा और वोह भी हलाक हो गई। चुनान्वे, कुरआने मजीद में हक़ तआला का इरशाद है कि

فَأَنجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ ۖ كَانَتْ مِنَ الْغَابِرِينَ ﴿٨٣﴾ وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ

مَطَرًا ۖ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ﴿٨٤﴾ (پ ۸, الاعراف: ۸۳, ۸۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- तो हम ने उसे और उस के घर वालों को नजात दी मगर उस की औरत वोह रह जाने वालों में हुई और हम ने उन पर एक मींह बरसाया तो देखो कैसा अन्जाम हुवा मुजरिमों का।

जो पथ्थर इस कौम पर बरसाए गए वोह कंकरों के टुकड़े थे। और हर पथ्थर पर उस शख्स का नाम लिखा हुवा था जो उस पथ्थर से हलाक हुवा।

(تفسير الصاوي، ج ۲، ص ۲۹۱، پ ۸، الاعراف: ۸۴)

दर्से हिदायत :- इस वाकिए से मा’लूम हुवा कि लिवातत किस क़दर शदीद और हौलनाक गुनाहे कबीरा है कि इस ज़ुर्म में कौमे लूत की बस्तियां उलट पलट कर दी गईं और मुजरिमीन पथराव के अज़ाब से मर कर दुन्या से नैस्तो नाबूद हो गए।

मन्कूल है कि हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने एक मरतबा इब्लीसे लईन से पूछा कि **अल्लाह** तआला को सब से बड़ कर कौन सा गुनाह नापसन्द है ? तो इब्लीस ने कहा कि सब से ज़ियादा **अल्लाह** तआला



को येह गुनाह नापसन्द है कि मर्द, मर्द से बद फ़े'ली करे और औरत, औरत से अपनी ख़्वाहिश पूरी करे। और हृदिष में है कि औरत का अपनी फुरुज को दूसरी औरत की फुरुज से रगड़ना येह इन दोनों की ज़िनाकारी है जो गुनाहे कबीरा है। (روح البیان، ج ۳، ص ۹۸، ۸، الاعراف: ۸۴)

(लिवात की मुमानअत का तफ़्सीली बयान हमारी किताब "जहन्नम के ख़तरात" में पढ़िये)

### ﴿28﴾ सामरी का बछड़ा

फ़िरऔन की हलाकत के बा'द बनी इस्राईल इस के पन्जे से आज़ाद हो कर सब ईमान लाए और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को खुदावन्दे करीम का येह हुक्म हुवा कि वोह चालीस रातों का कोहे तूर पर ए'तिकाफ़ करें इस के बा'द उन्हें किताब (तौरात) दी जाएगी। चुनाच्चे, हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام कोहे तूर पर चले गए और बनी इस्राईल को अपने भाई हज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام के सिपुर्द कर दिया। आप चालीस दिन तक दिन भर रोज़ादार रह कर सारी रात इबादत में मशगूल रहते।

**सामरी :-** बनी इस्राईल में एक हरामी शख्स था जिस का नाम सामरी था जो तबई तौर पर निहायत गुमराह और गुमराह कुन आदमी था। इस की मां ने बिरादरी में रुस्वाई व बदनामी के डर से इस को पैदा होते ही पहाड़ के एक ग़ार में छोड़ दिया था और हज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने इस को अपनी उंगली से दूध पिला पिला कर पाला था। इस लिये येह हज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام को पहचानता था। इस का पूरा नाम "मूसा सामरी" है और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का नाम भी "मूसा" है। मूसा सामरी को हज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने पाला था और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की परवरिश फ़िरऔन के घर हुई थी। मगर खुदा की शान कि फ़िरऔन के घर परवरिश पाने वाले मूसा عَلَيْهِ السَّلَام तो खुदा के रसूल हुवे और हज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام का पाला हुवा मूसा सामरी काफ़िर हुवा और बनी इस्राईल को गुमराह कर के उस ने बछड़े की पूजा कराई। इस बारे में किसी आरिफ़ ने क्या ख़ूब कहा है :

إِذَا الْمَرْءُ لَمْ يَخْلُقْ سَعِيدًا مِّنَ الْأَزَلِّ

فَقَدْ خَابَ مِّنْ رَبِّي وَخَابَ الْمُؤْمَلُّ

فَمُوسَى الَّذِي رَبَّاهُ جَبْرِئِلُ كَافِرٌ

وَمُوسَى الَّذِي رَبَّاهُ فِرْعَوْنُ مُرْسَلٌ

या'नी जब कोई आदमी अज़ल ही से नेक बख़्त नहीं होता तो वोह भी नामुराद होता है। और उस की परवरिश करने वाले की कोशिश भी नाकाम और नामुराद होती है। देख लो मूसा सामरी जो हज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام का पाला हुआ था वोह काफ़िर हुवा और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام जो फ़िरऔन की परवरिश में रहे वोह खुदा के रसूल हुवे। इस का राज़ येही है कि मूसा सामरी अज़ली शकी और पैदाइशी बद बख़्त था तो हज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام की तर्बियत और परवरिश ने इस को कुछ भी नफ़अ न दिया, और वोह काफ़िर का काफ़िर ही रह गया और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام चूँकि अज़ली सईद और नेक बख़्त थे इस लिये फ़िरऔन जैसे काफ़िर की परवरिश से भी उन को कोई नुक़सान नहीं पहुंचा।

(تفسير الصاوى، ج ١، ص ٢٣، ب ١، البقرة: ٥١)

जिन दिनों हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام कोहे तूर पर मो'तकिफ़ थे। सामरी ने आप की ग़ैर मौजूदगी को ग़नीमत जाना और येह फ़ितना बरपा कर दिया कि उस ने बनी इस्राईल के सोने चांदी के ज़ेवरात को मांग कर पिघलाया और उस से एक बछड़ा बनाया। और हज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام के घोड़े के क़दमों की खाक जो उस के पास महफूज़ थी उस ने वोह खाक बछड़े के मुंह में डाल दी तो वोह बछड़ा बोलने लगा। फिर सामरी ने बनी इस्राईल से येह कहा कि ऐ मेरी क़ौम ! हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام कोहे तूर पर खुदा عَزَّوَجَلَّ के दीदार के लिये तशरीफ़ ले गए हैं। हालांकि तुम्हारा खुदा तो येही बछड़ा है। लिहाज़ा तुम लोग इसी की इबादत करो। सामरी की इस तक़्रीर से बनी इस्राईल गुमराह हो गए और बारह हज़ार आदमियों के सिवा सारी क़ौम ने चांदी सोने के बछड़े को बोलता देख कर उस को खुदा मान लिया और उस के आगे सर ब सुजुद हो कर उस बछड़े को पूजने लगे।

चुनान्चे, खुदावन्दे कुहूस का इरशाद है :

وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوسَىٰ مِنْ بَعْدِهِ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا آلِهَةً حُوتًا ۖ (پ १२८, الاعراف)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** और मूसा के बा'द उस की कौम अपने जेवरों से एक बछड़ा बना बैठी, बे जान का धड़, गाए की तरह आवाज करता ।

जब चालीस दिनों के बा'द हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام खुदा عَزَّوَجَلَّ से हम कलाम हो कर और तौरात शरीफ़ साथ ले कर बस्ती में तशरीफ़ लाए और कौम को बछड़ा पूजते हुवे देखा तो आप पर बेहद ग़ज़ब व जलाल तारी हो गया । आप ने जोशे ग़ज़ब में तौरात शरीफ़ को ज़मीन पर डाल दिया और अपने भाई हज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام की दाढ़ी और सर के बाल पकड़ कर घसीटना और मारना शुरू कर दिया और फ़रमाने लगे कि क्यूं तुम ने इन लोगों को इस काम से नहीं रोका । हज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام मा'जेरत करने लगे । जैसा कि कुरआने मजीद में है :

قَالَ ابْنُ أُمِّ إِيْسَىٰ إِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضَعُّونِي وَكَادُوا يَقْتُلُونِي ۖ فَلَا تُشْبِثِي

الْأَعْدَاءَ وَلَا تَجْعَلْنِي مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ۝ (پ १५०, الاعراف)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** कहा : ऐ मेरे मां ! जाए कौम ने मुझे कमज़ोर समझा और करीब था कि मुझे मार डालें तो मुझ पर दुश्मनों को न हंसा और मुझे ज़ालिमों में न मिला ।

हज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام की मा'जेरत सुन कर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का गुस्सा ठन्डा पड़ गया । इस के बा'द आप ने अपने भाई हज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام के लिये रहमत व मग़फ़िरत की दुआ मांगी । फिर आपने उस बछड़े को तोड़ फोड़ कर और जला कर और उस को रेज़ा रेज़ा कर के दरया में बहा दिया ।

**दर्से हिदायत :-** मज़कूरा बाला कुरआनी वाकिए से ख़ास तौर पर दो सबक़ मिलते हैं :

❶ इस से उ-लमाए किराम को येह सबक़ मिलता है कि उ-लमाए किराम को कभी अपने मज़हब के अ़वाम की तरफ़ से ग़ाफ़िल नहीं रहना चाहिये बल्कि हमेशा अ़वाम को मज़हबी बातें बताते रहना चाहिये । आप

ने देखा कि सामरी ने चालीस दिन हज़रते मूसा عليه السلام की ग़ैर मौजूदगी से फ़ाइदा उठा कर सारी क़ौम को बहका कर गुमराह कर दिया। इसी तरह अगर उ-लमाए अहले सुन्नत अपनी क़ौम की हिदायत व ख़बरग़ीरी से ग़ाफ़िल रहेंगे तो बद मज़हबों को मौक़अ मिल जाएगा कि इन लोगों को बहका कर गुमराह कर दें।

﴿2﴾ हज़रते जिब्रईल عليه السلام के घोड़े के पाउं की खाक में जब येह अषर था कि बछड़े के मुंह में पड़ते ही बछड़ा बोलने लगा तो इस से मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** वालों के क़दमों के नीचे की खाक में भी ख़ैरो बरक़त के अषरात हुवा करते हैं। लिहाज़ा खुदा के नेक बन्दों के गुबार आलूद क़दमों को धो कर मक़ानों में पानी छिड़कना जैसा कि बा'ज़ खुश अक़ीदा मुरीदीन का तरीक़ा है येह कोई लगव और बेकार काम नहीं बल्कि इस से फ़ुयूजो बरक़ात और फ़वाइद हासिल होने की उम्मीद है और येह शरअन जाइज़ भी है। (والله تعالى اعلم)

### ﴿29﴾ सरों के ऊपर पहाड़

हज़रते मूसा عليه السلام ने तौरात शरीफ़ के अहक़ाम पढ़ कर बनी इस्राईल को सुनाए और फ़रमाया कि तुम लोग इस पर अमल करो। जब बनी इस्राईल ने तौरात शरीफ़ के अहक़ाम को सुना तो एक दम उन्होंने ने इन अहक़ाम को क़बूल करने से ही इन्कार कर दिया। इस सरक़शी पर **अल्लाह** तआला का येह ग़ज़ब नाज़िल हुवा कि नाग़हां कोहे तूर जड़ से उखड़ कर हवा में उड़ता हुवा बनी इस्राईल के सरों के ऊपर हवा में मुअल्लक़ हो गया जो तीन मील लम्बी और तीन मील चौड़ी ज़मीन में डेरे डाले हुवे मुक़ीम थे। जब बनी इस्राईल ने येह देखा की पहाड़ इन के सरों पर लटक रहा है तो सब के सब सजदे में गिर कर अहद करने लगे कि हम ने तौरात के सब अहक़ामात को क़बूल किया। और हम इन पर अमल भी करेंगे। मगर इन लोगों ने सजदे में अपने रुख़सार और बाईं भंऊं को ज़मीन पर रखा और दाहिनी आंख से पहाड़ को देखते रहे कि कहीं हमारे ऊपर गिर तो नहीं रहा है। येही वजह है कि अब भी यहूदी इसी तरह सजदा करते हैं कि बायां रुख़सार और बायां भंऊं ज़मीन पर

रखते हैं। बहर हाल बनी इस्राईल ने जब तौबा कर ली और तौरात के अहकाम पर अमल करने का अहद कर लिया तो फिर येह पहाड़ उड़ कर अपनी जगह पर चला गया। कुरआने मजीद ने इस वाकिए को चन्द जगहों पर बयान फ़रमाया है मषलन सूरए आ'राफ़ में है कि

وَاذْنَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَأَنَّهُ ظُلَّةٌ وَظَنُّوا أَنَّهُ وَاقِعٌ بِهِمْ خُذُوا مَا آتَيْنَكُم بِقُوَّةٍ وَاذْكُرُوا مَا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ (پ ۹، الاعراف: ۱۷۱)

**तर्जमए कज़ुल ईमान :-** और जब हम ने पहाड़ उन पर उठाया गोया वोह साइबान है और समझे कि वोह उन पर गिर पड़ेगा लो जो हम ने तुम्हें दिया जोर से और याद करो जो इस में है कि कहीं तुम परहेज़गार हो।

**दर्से हिदायत :-** इस वाकिए से मा'लूम हुवा कि नावाक़िफ़ों या सरकशों को किसी नेक काम के करने या अच्छी बात को क़बूल करने पर डरा धमका कर मजबूर करना येह ऐन हिक्मत और खुदावन्दे कुदूस की मुक़दस सुन्नत है। (والله تعالى اعلم)

### ﴿30﴾ ज़बान लटक कर सीने पर आ गई

**बलअम बिन बाऊरा :-** येह शख्स अपने दौर का बहुत बड़ा अ़लिम और आबिदो ज़ाहिद था। और इस को इस्मे आ'ज़म का भी इल्म था। येह अपनी जगह बैठा हुवा अपनी रूहानिय्यत से अ़र्शे आज़म को देख लिया करता था। और बहुत ही मुस्तज़ाबुद्दा'वात था कि इस की दुआएं बहुत ज़ियादा मक़बूल हुवा करती थीं। इस के शागिर्दों की ता'दाद भी बहुत ज़ियादा थी, मशहूर येह है कि इस की दर्सगाह में तालिबे इल्मों की दवातें बारह हज़ार थीं।

जब हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام "कौमे जब्बारीन" से जिहाद करने के लिये बनी इस्राईल के लश्करों को ले कर रवाना हुवे तो बलअम बिन बाऊरा की कौम इस के पास घबराई हुई आई और कहा कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام बहुत बड़ा और निहायत ही ताक़तवर लश्कर ले कर हम्ला आवर होने वाले हैं। और वोह येह चाहते हैं कि हम लोगों को हमारी ज़मीनों से निकाल कर येह ज़मीन अपनी कौम बनी इस्राईल को दे दें। इस लिये आप हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के लिये ऐसी बद दुआ कर दीजिये कि वोह शिकस्त खा कर वापस चले जाएं। आप चूँकि मुस्तज़ाबुद्दा'वात हैं इस

लिये आप की दुआ ज़रूर मक्बूल हो जाएगी। यह सुन कर बलअम बिन बाऊरा कांप उठा। और कहने लगा कि तुम्हारा बुरा हो। खुदा की पनाह ! हज़रते मूसा عليه السلام **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रसूल हैं। और इन के लश्कर में मोमिनों और फ़िरिश्तों की जमाअत है इन पर भला मैं कैसे और किस तरह बद दुआ कर सकता हूँ ? लेकिन इस की कौम ने रो रो कर और गिड़ गिड़ा कर इस तरह इसरार किया कि इस ने यह कह दिया कि इस्तिख़ारा कर लेने के बा'द अगर मुझे इजाज़त मिल गई तो बद दुआ कर दूंगा। मगर इस्तिख़ारा के बा'द जब इस को बद दुआ की इजाज़त नहीं मिली तो इस ने साफ़ साफ़ जवाब दे दिया कि अगर मैं बद दुआ करूंगा तो मेरी दुनिया व आख़िरत दोनों बरबाद हो जाएंगी।

इस के बा'द इस की कौम ने बहुत से गिरां क़दर हदाया और तहाइफ़ इस की ख़िदमत में पेश कर के बे पनाह इस्सार किया। यहां तक कि बलअम बिन बाऊरा पर हिर्स और लालच का भूत सुवार हो गया, और वोह माल के जाल में फंस गया। और अपनी गधी पर सुवार हो कर बद दुआ के लिये चल पड़ा। रास्ते में बार बार इस की गधी ठहर जाती और मुंह मोड़ कर भाग जाना चाहती थी। मगर यह उस को मार मार कर आगे बढ़ाता रहा। यहां तक कि गधी को **अल्लाह** तआला ने गोयाई की ताक़त अता फ़रमाई। और उस ने कहा कि अफ़सोस ! ऐ बलअम बाऊरा तू कहां और किधर जा रहा है ? देख ! मेरे आगे फ़िरिश्ते हैं जो मेरा रास्ता रोकते और मेरा मुंह मोड़ कर मुझे पीछे धकेल रहे हैं। ऐ बलअम ! तेरा बुरा हो, क्या तू **अल्लाह** के नबी और मोअमिनीन की जमाअत पर बद दुआ करेगा ? गधी की तक़रीर सुन कर भी बलअम बिन बाऊरा वापस नहीं हुवा। यहां तक कि “हसबान” नामी पहाड़ पर चढ़ गया। और बुलन्दी से हज़रते मूसा عليه السلام के लश्करों को बग़ैर देखा और मालो दौलत के लालच में उस ने बद दुआ शुरूअ कर दी। लेकिन खुदा عَزَّوَجَلَّ की शान कि वोह हज़रते मूसा عليه السلام के लिये बद दुआ करता था। मगर उस की ज़बान पर उस की कौम के लिये बद दुआ जारी हो जाती थी। यह देख कर कई मरतबा उस की कौम ने टोका कि ऐ बलअम ! तुम तो

उलटी बद दुआ कर रहे हो। तो उस ने कहा कि ऐ मेरी कौम ! मैं क्या करूँ मैं बोलता कुछ और हूँ और मेरी ज़बान से कुछ और ही निकलता है। फिर अचानक उस पर येह ग़ज़बे इलाही नाज़िल हो गया कि नागहां उस की ज़बान लटक कर उस के सीने पर आ गई। उस वक़्त बलअ़ब बिन बाऊरा ने अपनी कौम से रो रो कर कहा कि अफ़सोस मेरी दुनिया व आख़िरत दोनों बरबाद व ग़ारत हो गई। मेरा ईमान जाता रहा और मैं क़हरे क़हहार व ग़ज़बे ज़ब्बार में गिरिफ़्तार हो गया। अब मेरी कोई दुआ क़बूल नहीं हो सकती। मगर मैं तुम लोगों को मक्र की एक चाल बताता हूँ तुम लोग ऐसा करो तो शायद हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के लश्क़रों को शिकस्त हो जाए। तुम लोग हज़ारों ख़ूब सूत लड़कियों को बेहतरीन पोशाक और ज़ेवरात पहना कर बनी इस्राईल के लश्क़रों में भेज दो। अगर इन का एक आदमी भी ज़िना करेगा तो पूरे लश्क़र को शिकस्त हो जाएगी। चुनान्चे, बलअ़म बिन बाऊरा की कौम ने उस के बताए हुवे मक्र का जाल बिछाया। और बहुत सी ख़ूब सूत दोशीज़ाओं को बनाव सिंघार करा कर बनी इस्राईल के लश्क़रों में भेजा। यहां तक कि बनी इस्राईल का एक रईस एक लड़की के हुस्नो जमाल पर फ़रेफ़ता हो गया और उस को अपनी गोद में उठा कर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के सामने गया। और फ़तवा पूछ कि ऐ **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के नबी ! येह औरत मेरे लिये हलाल है या नहीं ? आप ने फ़रमाया कि ख़बरदार ! येह तेरे लिये हराम है। फ़ौरन इस को अपने से अलग कर दे। और **اَللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** के अज़ाब से डर। मगर उस रईस पर ग़लबए शहवत का ऐसा ज़बरदस्त भूत सुवार हो गया था कि वोह अपने नबी عَلَيْهِ السَّلَام के फ़रमान को ठुकरा कर उस औरत को अपने ख़ैमे में ले गया। और ज़िनाकारी में मशगूल हो गया। इस गुनाह की नुहूसत का येह अषर हुवा कि बनी इस्राईल के लश्क़र में अचानक ताऊन (प्लेग) की वबा फेल गई और घन्टे भर में सत्तर हज़ार आदमी मर गए और सारा लश्क़र तित्तर बित्तर हो कर नाकाम व नामुराद वापस चला आया। जिस का हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के क़ल्बे मुबारक पर बहुत ही बड़ा सदमा गुज़रा।

(تفسير الصاوى، ج ۲، ص ۷۲، ۷۳، ۷۴، ۷۵، ۷۶، ۷۷، ۷۸، ۷۹، ۸۰، ۸۱، ۸۲، ۸۳، ۸۴، ۸۵، ۸۶، ۸۷، ۸۸، ۸۹، ۹۰، ۹۱، ۹۲، ۹۳، ۹۴، ۹۵، ۹۶، ۹۷، ۹۸، ۹۹، ۱۰۰)



बलअम बिन बाऊरा पहाड़ से उतर कर मर्दूदे बारगाहे इलाही हो गया। आखिरी दम तक उस की ज़बान इस के सीने पर लटकती रही और वोह बे ईमान हो कर मर गया। इस वाकिए को कुरआने करीम ने इन अल्फ़ाज़ में बयान फ़रमाया है।

وَأَسْأَلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ الَّذِينَ اتَّبَعُوا الْيَتِيمَ أَفَأَسْكَنَهُمْ مِنْهَا فَأَتَّبَعَهُ الشَّيْطَانُ  
فَكَانَ مِنَ الْغَوِيّينَ ﴿١٤﴾ وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنَاهُ بِهَا وَلَكِنَّهُ أَخْلَدَ إِلَى  
الْأَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوَاهُ ۖ فَسَأَلُوكُمُ الْكُتُبَ إِن تَحْمِلُ عَلَيْهِ يَأْهَتْ  
أَوْ تَتْرُكُهُ يَأْهَتْ ۚ ذَلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِينَ كَذَبُوا بِالْيَتِيمِ  
فَأَقْصَصَ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُونَ ﴿١٥﴾ (پ، ۹، الاعراف: ۱۴، ۱۵)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और ऐ महबूब इन्हें उस का अहवाल सुनाओ जिसे हम ने अपनी आयतें दीं तो वोह उन से साफ़ निकल गया तो शैतान उस के पीछे लगा तो गुमराहों में हो गया। और हम चाहते तो आयतों के सबब उसे उठा लेते मगर वोह तो ज़मीन पकड़ गया और अपनी ख़्वाहिश का ताबेअ हुवा तो उस का हाल कुत्ते की तरह है तो उस पर हम्ला करे तो ज़बान निकाले और छोड़ दे तो ज़बान निकाले येह हाल है उन का जिन्हों ने हमारी आयतें झुटलाई तो तुम नसीहत सुनाओ कि कहीं वोह ध्यान करें।

**बलअम बिन बाऊरा क्यूं ज़लील हुवा ? :-** रिवायत है कि बा'ज अम्बियाए किराम ने खुदा तआला से दरयाफ़्त किया कि तू ने बलअम बिन बाऊरा को इतनी ने'मतें अता फ़रमा कर फिर इस को क्यूं इस कअरे मुज़ल्लत में गिरा दिया ? तो **अल्लाह** तआला ने फ़रमाया कि उस ने मेरी ने'मतों का कभी भी शुक्र अदा नहीं किया। अगर वोह शुक्र गुज़ार होता तो मैं उस की करामतों को सल्ब कर के उस को दोनों ज़हों में इस तरह ज़लीलो ख़वार और गाइबो ख़ासिर न करता।

(تفسير روح البيان، ج ۳، ص ۱۳۹، پ، ۸، الاعراف: ۱۰)

**दर्से हिदायत :-** बलअम बिन बाऊरा की इस सरगुज़िशत से चन्द अस्बाके हिदायत मिलते हैं :

﴿1﴾ इस से उन आलिमों और लिडरों को सबक़ हासिल करना चाहिये जो मालदारों या हुकूमतों से रक़में ले कर ख़िलाफ़े शरीअत बातें करते हैं और जान बूझ कर अपने दीन व ईमान का सौदा करते हैं। देख लो बलअम बिन बाऊरा क्या था और क्या हो गया ? येह क्यूं हुवा ? इस लिये और सिर्फ़ इस लिये कि वोह मालो दौलत के लालच में गिरिफ़्तार हो गया और दानिस्ता (जानबुझ कर) **اَعْوَجَلُ** के नबी पर बद दुआ करने के लिये तय्यार हो गया। तो इस का उस पर येह वबाल पड़ा कि दुन्या व आख़िरत में मलऊन हो कर इस तरह मर्दूद व मतरूद हो गया कि उग्र भर कुत्ते की तरह लटकती हुई ज़बान लिये फ़िरा और आख़िरत में जहन्नम की भड़कती और शो'ला बार आग का ईंधन बन गया। लिहाज़ा हर मुसलमान खुसूसन उ-लमा व मशाइख़ को मालो दौलत के हिर्स और लालच के जाल से हमेशा परहेज़ करना चाहिये और हरगिज़ कभी भी माल की तम्अ में दीन के अन्दर मुदाहनत नहीं करनी चाहिये। वरना ख़ूब समझ लो कि क़हरे इलाही **عَزَّوَجَلَّ** की तलवार लटक रही है। (والعیاذ باللّٰه منه)

﴿2﴾ इस सानेहा से आम मुसलमान भी येह सबक़ सीखें कि हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** का लश्कर जिस में मलाइका और मोअमिनीन थे। ज़ाहिर है कि इस लश्कर के नाकाम होने का कोई सुवाल ही नहीं पैदा होता था क्यूंकि येह ऐसा रूहानी और मलकूती लश्कर था कि इन के घोड़ों की टाप से पहाड़ लर्ज़ा बर अन्दाम हो जाते, मगर सिर्फ़ एक बद नसीब के गुनाह के सबब ऐसी नुहूसत फैल गई कि मलाइका लश्कर से अलग हो गए और ताऊन के अज़ाब ने पूरे लश्कर में ऐसी अबतरी फैला दी कि पूरा लश्कर बिखर गया और येह फ़ौजे ज़फ़र मौजें नाकाम व ना मुराद हो कर पस्पा हो गई।

इस लिये मुसलमानों को लाज़िम है कि अगर वोह कुफ़्फ़ार के मुक़ाबले में मुजफ़्फ़र व मन्सूर और फ़तहयाब होना चाहते हैं तो हर वक़्त गुनाहों और बदकारियों की नुहूसतों से बचते रहें वरना फ़िरिश्तों की मदद ख़त्म हो जाएगी। और मुसलमानों का रो'ब कुफ़्फ़ार के दिलों से निकल जाएगा और मुसलमानों को न सिर्फ़ नाकामी का मुंह देखना पड़ेगा बल्कि इन की असकरी ताक़त ही फ़ना हो जाएगी और पूरी क़ौम सफ़हे हस्ती से हफ़ें ग़लत की तरह मिट जाएगी। (نَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنْهُ)

### ﴿31﴾ हज़रते यूनस عَلَيْهِ السَّلَام मछली के पेट में

हज़रते यूनस عَلَيْهِ السَّلَام को **अल्लाह** तआला ने शहर “नैनवा” के बाशिन्दों की हिदायत के लिये रसूल बना कर भेजा था।

**नैनवा :-** यह मौसुल के अलाको का एक बड़ा शहर था। यहां के लोग बुत परस्ती करते थे और कुफ़्रो शिर्क में मुब्तला थे। हज़रते यूनस عَلَيْهِ السَّلَام ने इन लोगों को ईमान लाने और बुत परस्ती छोड़ने का हुक्म दिया। मगर इन लोगों ने अपनी सरकशी और तमर्रद की वजह से **عَزَّوَجَلَّ अल्लाह** के रसूल عَلَيْهِ السَّلَام को झुटला दिया और ईमान लाने से इन्कार कर दिया। हज़रते यूनस عَلَيْهِ السَّلَام ने इन्हें ख़बर दी कि तुम लोगों पर अ़न करीब अज़ाब आने वाला है। यह सुन कर शहर के लोगों ने आपस में यह मश्वरा किया कि हज़रते यूनस عَلَيْهِ السَّلَام ने कभी कोई झूटी बात नहीं कही है। इस लिये यह देखो कि अगर वोह रात को इस शहर में रहें जब तो समझ लो कि कोई ख़तरा नहीं है और अगर उन्होंने ने इस शहर में रात न गुज़ारी तो यकीन कर लेना चाहिये कि ज़रूर अज़ाब आएगा। रात को लोगों ने यह देखा कि हज़रते यूनस عَلَيْهِ السَّلَام शहर से बाहर तशरीफ़ ले गए। और वाकेई सुब्ह होते ही अज़ाब के आषार नज़र आने लगे कि चारों तरफ़ से काली बदलियां नुमूदार हुई और हर तरफ़ से धुवां उठ कर शहर पर छा गया। यह मन्ज़र देख कर शहर के बाशिन्दों को यकीन हो गया कि अज़ाब आने वाला ही है तो लोगों को हज़रते यूनस عَلَيْهِ السَّلَام की तलाश व जुस्तजू हुई मगर वोह दूर दूर तक कहीं नज़र नहीं आए। अब शहर वालों को और ज़ियादा ख़तरा और अन्देशा हो गया। चुनान्वे, शहर के तमाम लोग ख़ौफ़े खुदावन्दी से डर कर कांप उठे और सब के सब औरतों, बच्चों बल्कि अपने मवेशियों को साथ ले कर और फटे पुराने कपड़े पहन कर रोते हुवे जंगल में निकल गए और रो रो कर सिद्क़ दिल से हज़रते यूनस عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान लाने का इक़रार व ए'लान करने लगे। शोहर बीबी से और माएं बच्चों से अलग हो कर सब के सब इस्तिग़फ़ार में मशगूल हो गए और दरबारे बारी में गिड़ गिड़ा कर गिर्या व ज़ारी शुरू कर दी। जो मज़ालिम आपस में हुवे थे एक दूसरे से मुआफ़ कराने लगे

और जितनी हज़ तलफ़ियां हुई थीं सब की आपस में मुआफ़ी तलाफ़ी करने लगे। गरज़ सच्ची तौबा कर के खुदा **عَزَّوَجَلَّ** से येह अहद कर लिया कि हज़रते यूनस **عَلَيْهِ السَّلَام** जो कुछ खुदा का पैग़ाम लाए हैं हम उस पर सिद्क दिल से ईमान लाए, **अब्लाह** तआला को शहर वालों की बे करारी और मुख़्लिसाना गिर्या व ज़ारी पर रहम आया और अज़ाब उठा लिया गया। नागहां धुवां और अज़ाब की बदलियां रफ़ा हो गई और तमाम लोग फिर शहर में आ कर अम्नो चैन के साथ रहने लगे।

इस वाक़िअ को ज़िक्र करते हुवे खुदावन्दे कुद्दूस ने कुरआने मजीद में यूं इरशाद फ़रमाया है कि

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ أَمَنَتْ مَقْعَهَا إِيَّانَهَا إِلَّا قَوْمُ يُوسُفَ لَمَّا أَمْنُوا

كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخُزْيِ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَنَجَّيْنَاهُمْ إِلَى حَيٍّ (٩٨) (پ ١، یونس: ٩٨)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** तो हुई होती न कोई बस्ती कि ईमान लाती तो उस का ईमान काम आता, हां यूनस की क़ौम जब ईमान लाए हम ने उन से रुस्वाई का अज़ाब दुन्या की ज़िन्दगी में हटा दिया और एक वक़्त तक उन्हें बरतने दिया।

मतलब येह है कि जब किसी क़ौम पर अज़ाब आ जाता है तो अज़ाब आ जाने के बा'द ईमान लाना मुफ़ीद नहीं होता मगर हज़रते यूनस **عَلَيْهِ السَّلَام** की क़ौम पर अज़ाब की बदलियां आ जाने के बा'द भी जब वोह लोग ईमान लाए तो उन से अज़ाब उठा लिया गया।

**अज़ाब टलने की दुआ :-** तबरानी शरीफ़ की रिवायत है कि शहर नैनवा पर जब अज़ाब के आधार ज़ाहिर होने लगे और हज़रते यूनस **عَلَيْهِ السَّلَام** बा वुजूदे तलाश व जुस्तजू के लोगों को नहीं मिले तो शहर वाले घबरा कर अपने एक अलमि के पास गए जो साहिबे ईमान और शैख़े वक़्त थे और इन से फ़रयाद करने लगे तो इन्हों ने हुक्म दिया कि तुम लोग येह वज़ीफ़ा पढ़ कर दुआ मांगो **يَا حَيُّ جِبْنُ لَا حَيَّ وَ يَا حَيُّ يُحْيِي الْمَوْتَى وَيَا حَيُّ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ** चुनान्वे, लोगों ने येह पढ़ कर दुआ मांगी तो अज़ाब टल गया। लेकिन

मशहूर मुहद्दिष और साहिबे करामत वली हज़रते फुजैल बिन इयाज़  
عَلَيْهِ الرِّحْمَةُ का कौल है कि शहरे नैनवा का अज़ाब जिस दुआ की बरकत  
से दफ़ा हुवा वोह दुआ येह थी कि

اَللّٰهُمَّ اِنَّ دُنُوْبَنَا قَدْ عَظُمَتْ وَجَلَّتْ وَاَنْتَ اَعْظَمُ وَاَجَلُ فَاَفْعَلْ بِنَا مَا اَنْتَ اَهْلُهُ وَلَا تَفْعَلْ بِنَا مَا نَحْنُ اَهْلُهُ  
बहर हाल अज़ाब टल जाने के बा'द जब हज़रते यूनस عَلَيْهِ السَّلَام शहर के  
क़रीब आए तो आप ने शहर में अज़ाब का कोई अषर नहीं देखा । लोगों  
ने अर्ज़ किया कि आप अपनी क़ौम में तशरीफ़ ले जाइये । तो आप ने  
फ़रमाया कि किस तरह अपनी क़ौम में जा सकता हूं ? मैं तो उन लोगों को  
अज़ाब की ख़बर दे कर शहर से निकल गया था, मगर अज़ाब नहीं आया ।  
तो अब वोह लोग मुझे झूटा समझ कर क़त्ल कर देंगे । आप येह फ़रमा  
कर और गुस्से में भर कर शहर से पलट आए और एक कश्ती में सुवार  
हो गए येह कश्ती जब बीच समन्दर में पहुंची तो खड़ी हो गई । वहां के  
लोगों का येह अक़ीदा था कि वोही कश्ती समन्दर में खड़ी हो जाया करती  
थी जिस कश्ती में कोई भागा हुवा गुलाम सुवार हो जाता है । चुनान्चे,  
कश्ती वालों ने कुरआ निकाला तो हज़रते यूनस عَلَيْهِ السَّلَام के नाम का कुरआ  
निकला । तो कश्ती वालों ने आप को समन्दर में फेंक दिया और कश्ती ले कर  
रवाना हो गए और फ़ौरन ही एक मछली आप को निगल गई और मछली के  
पेट में जहां बिल्कुल अन्धेरा था आप मुक़य्यद हो गए । मगर इसी हालत  
में आप ने आयते करीमा (ب ۱، الانبياء ۸۷) لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ ۝ (۹۸)  
का वज़ीफ़ा पढ़ना शुरू कर दिया तो इस की बरकत से **ابواب**  
तआला ने आप को इस अन्धेरी कोठड़ी से नजात दी और मछली ने  
किनारे पर आ कर आप को उगल दिया । उस वक़्त आप बहुत ही नहीफ़  
व कमज़ोर हो चुके थे । खुदा عَزَّوَجَلَّ की शान कि उस जगह कदू की एक  
बेल उग गई और आप उस के साये में आराम करते रहे फिर जब आप में  
कुछ तुवानाई आ गई तो आप अपनी क़ौम में तशरीफ़ लाए और सब लोग  
इन्तिहाई महबूबत व एहतिराम के साथ पेश आ कर आप पर ईमान लाए ।

(تفسير الصاوى، ج ۳، ص ۸۹۳، پ ۱، یونس: ۹۸)

हज़रते यूनस عَلَيْهِ السَّلَام की इस दर्दनाक सरगुज़िस्त को कुरआने करीम ने इन अल्फ़ाज़ों में बयान फ़रमाया है :

وَإِنَّ يُونُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ۖ إِذَا بَقِيَ إِلَى الْفُلِكَ الْمُسْحُونِ ۖ  
 فَمَسَّهُمْ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِينَ ۖ فَاتَّقَمَهَا الْحُوتُ وَهُوَ مُلِيمٌ ۖ فَلَوْ  
 لَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِينَ ۖ لَكِثَ فِي بَطْنِهِ إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۖ  
 فَكَبِدْنَاهُ بِأَعْرَآءٍ وَهُوَ مَوْسِقِيمٌ ۖ وَأَنْبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَقْطِينٍ ۖ  
 وَأَرْسَلْنَاهُ إِلَىٰ مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيدُونَ ۖ فَامْنُوا فَمَنْعَهُمْ إِلَىٰ  
 حِينٍ ۖ (پ ۲۳، الصافات: ۹ تا ۱۲۸)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और बेशक यूनस पैगम्बरों से है जब कि भरी कश्ती की तरफ़ निकल गया तो कुरआ डाला तो धकेले हुआ में हुवा फिर उसे मछली ने निगल लिया और वोह अपने आप को मलामत करता था तो अगर वोह तस्बीह करने वाला न होता ज़रूर उस के पेट में रहता जिस दिन तक लोग उठाए जाएंगे फिर हम ने उसे मैदान पर डाल दिया और वोह बीमार था और हम ने उस पर कद्दू का पेड़ उगाया और हम ने उसे लाख आदमियों की तरफ़ भेजा बल्कि ज़ियादा तो वोह ईमान ले आए तो हम ने उन्हें एक वक़्त तक बरतने दिया ।

**दर्से हिदायत :-** ﴿1﴾ नैनवा वालों की सरगुज़िस्त से येह सबक़ मिलता है कि जब किसी क़ौम पर कोई बला अज़ाब बन कर नाज़िल हो तो उस बला से नजात पाने का येही तरीक़ा है कि लोगों को तौबा व इस्तिग़फ़ार में मशगूल हो कर दुआएं मांगनी चाहिये तो उम्मीद है कि बन्दों की बे क़रारी और उन की गिर्या व ज़ारी पर अरहमुराहिमीन रहम फ़रमा कर बलाओं के अज़ाब को दफ़अ़ फ़रमा देगा ।

﴿2﴾ हज़रते यूनस عَلَيْهِ السَّلَام की दिल हिला देने वाली मुसीबत और मुश्किलात से येह हिदायत मिलती है कि **अल्लाह** तआला अपने ख़ास बन्दों को किस किस तरह इम्तिहान में डालता है । लेकिन जब बन्दे इम्तिहान में पड़ कर सब्रो इस्तिफ़ामत का दामन नहीं छोड़ते और ऐन बलाओं के तूफ़ान में

भी खुदा की याद से ग़ाफ़िल नहीं होते तो अरहमुराहिमीन अपने बन्दों की नजात का ग़ैब से ऐसा इन्तिज़ाम फ़रमा देता है कि कोई इस को सोच भी नहीं सकता। ग़ौर कीजिये कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को जब क़श्ती वालों ने समन्दर में फेंक दिया तो इन की ज़िन्दगी और सलामती का कौन सा ज़रीआ बाक़ी रह गया था ? फिर इन्हें मछली ने निगल लिया तो अब भला इन की हयात का कौन सा सहारा रह गया था ? मगर इस हालत में आप ने जब आयते करीमा का वज़ीफ़ा पढ़ा तो **अल्लाह** तआला ने इन्हें मछली के पेट में भी ज़िन्दा व सलामत रखा और मछली के पेट से इन्हें एक मैदान में पहुंचा दिया और फिर इन्हें तन्दुरुस्ती व सलामती के साथ इन की क़ौम और वतन में पहुंचा दिया। और इन की तब्लीग़ की बदौलत एक लाख से ज़ाइद आदमियों को हिदायत मिल गई।

### ﴿32﴾ चार महीने के बच्चे की गवाही

हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को जब इन के भाइयों ने कुंवे में डाल दिया तो एक शख्स जिस का नाम मालिक बिन जुअर था जो मदयन का बाशिन्दा था। एक क़ाफ़िले के हमराह इस कुंवे के पास पहुंचा और अपना डोल कुंवे में डाला तो हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने इस डोल को पकड़ लिया और मालिक बिन जुअर ने आप को कुंवे में से निकाल लिया तो आप के भाइयों ने उस से कहा कि येह हमारा भागा हुवा गुलाम है। अगर तुम इस को ख़रीद लो तो हम बहुत ही सस्ता तुम्हारे हाथ बेच देंगे। चुनान्ते, उन के भाइयों ने सिर्फ़ बीस दिरहम में हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को बेच डाला मगर शर्त येह लगा दी कि तुम इस को यहां से इतनी दूर ले जाओ कि इस की ख़बर भी हमारे सुनने में न आए। मालिक बिन जुअर ने इन को ख़रीद कर मिस्र के बाज़ार का रुख़ किया और बाज़ार में इन को फ़रोख़्त करने का ए'लान किया। उन दिनों मिस्र का बादशाह रय्यान बिन वलीद अमलीकी था और उस ने अपने वज़ीरे आ'ज़म क़ित़्फ़ीर मिस्री को मिस्र की हुकूमत और ख़ज़ाने सोंप दिये थे और मिस्र में लोग इस को “अज़ीजे मिस्र” के ख़िताब से पुकारते थे। जब अज़ीजे मिस्र को मा'लूम हुवा कि बाज़ारे मिस्र में एक बहुत ही ख़ूब सूरत गुलाम फ़रोख़्त के लिये लाया



गया है और लोग इस की ख़रीदारी के लिये बड़ी बड़ी रक़में ले कर बाज़ार में जम्अ हो गए हैं तो अज़ीज़े मिस्र ने हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के वज़्न बराबर सोना, और इतनी ही चांदी, और इतना ही मुश्क, और इतने ही हरीर कीमत दे कर ख़रीद लिया और घर ले जा कर अपनी बीवी “जुलेखा” से कहा कि इस गुलाम को निहायत ही ए’ज़ाज़ व इकराम के साथ रखो। उस वक़्त आप की उम्र शरीफ़ तेरह या सतरह बरस की थी। “जुलेखा” हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के हुस्नो जमाल पर फ़रेफ़ता हो गई और एक दिन ख़ूब बनाव सिंघार कर के तमाम दरवाज़ों को बन्द कर दिया और हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को तन्हाई में लुभाने लगी। आप ने مَعَاذَ اللَّهِ कह कर फ़रमाया कि मैं अपने मालिक अज़ीज़े मिस्र के एहसान को फ़रामोश कर के हरगिज़ उस के साथ कोई ख़यानत नहीं कर सकता। फिर जब खुद जुलेखा आप की तरफ़ लपकी तो आप भाग निकले। और जुलेखा ने दौड़ कर पीछे से आप का पैराहन पकड़ लिया जो फट गया और आप के पीछे जुलेखा दौड़ती हुई सद्र दरवाज़े पर पहुंच गई। इतिफ़ाक़ से ठीक उसी हालत में अज़ीज़े मिस्र मकान में दाख़िल हुवा। और दोनों को दौड़ते हुवे देख लिया तो जुलेखा ने अज़ीज़े मिस्र से कहा कि इस गुलाम की सज़ा येह है कि इस को जैल ख़ाने भेज दिया जाए या और कोई दूसरी सज़ा दी जाए क्यूंकि इस ने तुम्हारी घरवाली के साथ बुराई का इरादा किया था। مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि ऐ अज़ीज़े मिस्र ! येह बिल्कुल ही ग़लत़ बयानी कर रही है। इस ने खुद मुझे लुभाया और मैं इस से बचने के लिये भागा तो इस ने मेरा पीछा किया। अज़ीज़े मिस्र दोनों का बयान सुन कर हैरान रह गया और बोला कि ऐ यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام मैं किस तरह बावर कर लूं कि तुम सच्चे हो ? तो आप ने फ़रमाया कि घर में चार महीने का एक बच्चा पालने में लैटा हुवा है जो जुलेखा के मामू का लड़का है। उस से दरयाफ़्त कर लीजिये कि वाक़िआ क्या है ? अज़ीज़े मिस्र ने कहा कि भला चार माह का बच्चा क्या जाने और वोह कैसे बोलेगा ? तो आप ने फ़रमाया कि **अल्लाह**

तआला उस को ज़रूर मेरी बे गुनाही की शहादत देने की कुदरत अता फ़रमाएगा क्योंकि मैं बे कुसूर हूं। चुनान्चे, अजीजे मिस्र ने जब उस बच्चे से पूछा तो उस बच्चे ने बा आवाजे बुलन्द फ़सीह ज़बान में येह कहा कि

إِنْ كَانَ قَبِيضُهُ قَدْ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقْتُ وَهُوَ مِنْ أَكْذِبِينَ ﴿٣٧﴾  
وَإِنْ كَانَ قَبِيضُهُ قَدْ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبْتُ وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِينَ ﴿٣٨﴾ (प १२, यूसुफ: २६-२८)

**तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान :-** गवाही दी अगर इन का कुर्ता आगे से चिरा है तो औरत सच्ची है और इन्हों ने ग़लत कहा और अगर इन का कुर्ता पीछे से चाक हुवा तो औरत झूटी है और येह सच्चे।

बच्चे की ज़बान से अजीजे मिस्र ने येह शहादत सुन कर जो देखा तो उन का कुर्ता पीछे से फटा हुवा था। तो उस वक़्त अजीजे मिस्र ने हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की बे गुनाही का ए'लान करते हुवे येह कहा :

إِنَّهُ مِنْ كَيْدٍ كُنَّ ۖ إِنَّ كَيْدَ كُنَّ عَظِيمٌ ﴿٣٩﴾ يُوْسُفُ أَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۖ وَاسْتَغْفِرِي لِذَنبِكِ ۖ إِنَّكَ كُنْتَ مِنَ الْخٰطِئِينَ ﴿٤٠﴾ (प १२, यूसुफ: २९, ३०)

**तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान :-** बेशक येह तुम औरतों का चरित्तर (फ़रैब) है बेशक तुम्हारा चरित्तर (फ़रैब) बड़ा है ऐ यूसुफ़ तुम इस का ख़याल न करो और ऐ औरत तू अपने गुनाह की मुआफ़ी मांग बेशक तू ख़तावारों में है।

### ﴿33﴾ हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का कुर्ता

हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के भाइयों ने जब इन को कूवें में डाल कर अपने वालिद हज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام से जा कर येह कह दिया कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को भेड़िया खा गया तो हज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام को बे इन्तिहा रंज व क़लक़ और बे पनाह सदमा हुवा। और वोह अपने बेटे के ग़म में बहुत दिनों तक रोते रहे और ब कषरत रोने की वजह से बीनाई कमज़ोर हो गई थी। फिर बरसों के बा'द जब बरादराने यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام कहत के ज़माने में ग़ल्ला लेने के लिये दूसरी मरतबा मिस्र गए और भाइयों ने आप को पहचान कर इज़हारे नदामत करते हुवे मुआफ़ी त़लब की तो आप

ने उन्हें मुआफ़ करते हुवे येह फ़रमाया कि आज तुम पर कोई मलामत नहीं **अल्लाह** तआला तुम्हें मुआफ़ फ़रमा दे वोह अरहमुराहिमीन है।

जब आप ने अपने भाइयों से अपने वालिदे माजिद हज़रते या'कूब **عليه السلام** का हाल पूछा और भाइयों ने बताया कि वोह तो आप की जुदाई में रोते रोते बहुत ही निढाल हो गए हैं। और उन की बीनार्ई भी बहुत कमज़ोर हो गई है। भाइयों की ज़बानी वालिदे माजिद का हाल सुन कर हज़रते यूसुफ़ **عليه السلام** बहुत ही रन्जीदा और ग़मगीन हो गए फिर आप ने अपने भाइयों से फ़रमाया कि

اَذْهَبُوا بِقِيصِي هَذَا اَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ اَيِّ يَاتِ بِصِيْرًا وَاَتُوْنِي  
بَاَهْلِكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿٩٣﴾ (پ ۱۳، یوسف: ۹۳)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** मेरा येह कुर्ता ले जाओ इसे मेरे बाप के मुंह पर डालों उन की आंखें खुल जाएंगी और अपने सब घरभर (घरवालों) को मेरे पास ले आओ।

चुनान्चे, बरादराने यूसुफ़ **عليه السلام** इस कुर्ते को ले कर मिस्र से किनआन को रवाना हुवे। आप के भाइयों में से यहूदा ने कहा कि इस कुर्ते को मैं ले कर हज़रते या'कूब **عليه السلام** के पास जाऊंगा। क्योंकि हज़रते यूसुफ़ **عليه السلام** को कुंवें में डाल कर इन का खून आलूद कुर्ता भी मैं ही उन के पास ले कर गया था। और मैं ने ही येह कह कर उन को ग़मगीन किया था कि हज़रते यूसुफ़ **عليه السلام** को भेड़िया खा गया। तो चूँकि मैं ने उन्हें ग़मगीन किया था लिहाज़ा आज मैं ही येह कुर्ता दे कर और हज़रते यूसुफ़ **عليه السلام** की ज़िन्दगी की खुश ख़बरी सुना कर उन को खुश करना चाहता हूँ। चुनान्चे, यहूदा इस पैराहन को ले कर अस्सी कोस तक नंगे सर बरहना पा दौड़ता हुवा चला गया। रास्ते की ख़ूराक के लिये सात रोटियां उस के पास थीं मगर फ़र्ते मसरत और जल्दी पहुंचने के शौक में वोह इन रोटियों को भी न खा सका। और जल्द से जल्द सफ़र तै कर के वालिदे मोहतरम की ख़िदमत में पहुंच गया।

اِنِّیْ لَا جُدْرَیْحَ یُوسُفَ لَوْلَا اَنْ تُقَدِّدُوْنِ ﴿۹۳﴾ (پ ۱۳، یوسف: ۹۳)

فَلَمَّا أَنْ جَاءَ الْبَشِيرُ أَلْقَاهُ عَلَى وَجْهِهِ فَارْتَدَّ بَصِيرًا ۖ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَكُمْ ۖ إِنِّي آتِعُكُم مِّنَ اللَّهِ مَا لَا تَعْلَمُونَ ﴿٩٦﴾ (يوسف: ٩٦)

**पेशकश : मर्कजी मजलिसे शूरा (दा 'वते इस्लामी)**

زمصرش یوئے پیراھن شمیدی جرادر چاؤ کعانش ندیدی

आप ने मिस्र जैसे दूर दराज़ मक़ाम से हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के कुर्ते की खुशबू सूंघ ली। और जब हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام किनअ़ान ही की सर ज़मीन में एक कुंवे के अन्दर थे तो आप को इतने करीब से भी उन की खुशबू महसूस नहीं हुई इस की क्या वजह है? तो हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने येह जवाब दिया कि

گفتا حال ما برق جهان است دمے پیدا و دیگر دم نهان است

گھے برطارم اعلیٰ نشینم گھے برپشت پائے خود نه بینم

या'नी हम **अल्लाह** वालों का हाल कूंदने वाली बिजली की मानिन्द है कि दम भर में ज़ाहिर और दम भर में पोशीदा हो जाती है। कभी तो हम लोगों पर **अल्लाह** तअ़ाला की सिफ़ाते नूरानिय्या की तजल्ली होती है तो हम लोग आस्मानों पर जा बैठते हैं और सारी काइनात हमारे पेशे नज़र हो जाती है और कभी जब हम पर इस्तिग़राक़ की कैफ़ियत त़ारी होती है तो हम लोग खुदा की ज़ातो सिफ़ात में ऐसे मुस्तग़रक़ हो जाते हैं कि तमाम मासिवा **अल्लाह** से बे नियाज़ हो जाते हैं। यहां तक कि हम अपनी पुश्ते पा को भी नहीं देख पाते। येही वजह है कि मिस्र से तो पैराहने यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को हम ने सूंघ कर उस की खुशबू महसूस कर ली। क्यूंकि उस वक़्त हम पर कशफ़ी कैफ़ियत त़ारी थी मगर किनअ़ान के कुंवे में से हम को हज़रते यूसुफ़ की खुशबू इस लिये महसूस न हो सकी कि उस वक़्त हम पर इस्तिग़राक़ी कैफ़ियत का गुलबा था और हमारा येह हाल था कि

**मैं किस की लूं ख़बर, मुझे तो अपनी ख़बर नहीं!**

**दर्से हिदायत :-** इस पूरे वाक़िअ से ख़ास तौर पर दो सबक़ मिलते हैं :

﴿1﴾ येह कि अल्लाह वालों के लिबास और कपड़ों में भी बड़ी बरकत और करामत पिन्हा होती हैं। लिहाज़ा बुजुर्गों के लिबास व पोशाक को

तबर्क बना कर रखना और इन से बरकत व शिफा हासिल करना और इन को खुदावन्दे कुदूस की बारगाह में वसीला बना कर दुआ मांगना येह मक्बूलियत और हुसूले सआदत का एक बहुत बड़ा जरीआ है।

﴿2﴾ अल्लाह वालों का हाल हर वक्त और हमेशा यक्सां नहीं रहता बल्कि कभी तो उन पर **अल्लाह** तआला की तजल्लियात के अन्वार से ऐसा हाल तारी होता है कि इस वक्त वोह सारे आलम के ज़र्रे ज़र्रे को देखने लगते हैं और कभी वोह **अल्लाह** तआला की तजल्लियात में इस तरह गुम हो जाते हैं कि तजल्लियों के मुशाहदे में मुस्तगरक हो कर सारे आलम से बे तवज्जोह हो जाते हैं। इस वक्त उन पर ऐसी कैफ़ियत तारी हो जाती है कि उन को कुछ भी नज़र नहीं आता। यहां तक कि वोह अपना नाम तक भूल जाते हैं। तसव्वुफ़ की येह दो कशफ़ी व इस्तिगराकी कैफ़ियत ऐसी हैं जिन को हर शख्स नहीं समझ सकता बल्कि इन कैफ़ियात व अहवाल को वोही लोग समझ सकते हैं जो साहिबे निस्बत व अहले इद्राक हैं जिन पर खुद येह अहवाल व कैफ़ियत तारी होती रहती हैं। सच है

لذتِ مے نہ شناسی بخدا تا نہ چشی

और इस हाल व कैफ़ियत का तारी होना इस बात पर मौकूफ़ है कि ज़िक्रो फ़िक्र और मुराक़बे के साथ साथ शैख़े कामिल की बातिनी तवज्जोह से दिल की सफ़ाई और इन्जलाए कल्बी पैदा हो जाए। सुल्ताने तसव्वुफ़ हज़रते मौलाना रूमी عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ ने इसी नुक्ते की तरफ़ इशारा करते हुवे फ़रमाया :

صد کتاب و صدورق در نار کن روئے دل را جانب دلدار کن

और किसी दूसरे आरिफ़ ने येह फ़रमाया कि :

از "کنز" و "هدایه" نه توان یافت خدارا

سی پاره دل خوان که کتابی به ازیں نیست

या'नी ख़ाली "कन्ज़ुल दक़ाइक़" व "हिदाया" पढ़ लेने से खुदा नहीं मिल सकता बल्कि दिल के सिपारे को पढ़ो क्यूंकि इस से बेहतर कोई किताब नहीं है।

मगर इस दौरे नफ़सानिय्यत में जब कि तसव्वुफ़ के अलम बरदारों ने अपनी बे अमली से तसव्वुफ़ के मजबूत व मुस्तहक़म महल की ईंट से ईंट बजा दी है और महज़ झाड़ फूंक और शो'बदा बाज़ियों पर पीरी मुरीदी का ढोंग चला रहे हैं और ख़ाली रंग बिरंग के कपड़ों और नई नई तराश ख़राश की पोशाकों और तस्बीह व असा को शैख़िय्यत का मे'यार बना रखा है। भला तसव्वुफ़ की हकीकी कैफ़िय्यत व तजल्लियात को लोग कब और कैसे और कहां से समझ सकते हैं ? इस लिये इस बारे में अरबाबे तसव्वुफ़ इस के सिवा और क्या कह सकते हैं कि

**हकीकत ख़ुराफ़ात में खो गई येह उम्मत रिवायात में खो गई**

### ﴿34﴾ सूरुफ़ यूसुफ़ का खुलासा

**अल्लाह** तआला ने हज़रते यूसुफ़ عليه السلام के किस्से को “अहसनुल क़सस” या'नी तमाम किस्सों में सब से अच्छा किस्सा फ़रमाया है। इस लिये कि हज़रते यूसुफ़ عليه السلام की मुक़द्दस ज़िन्दगी के उतार चढ़ाव में और रंज व राहत और ग़म व सुरुर के मद्दे जज़्र में हर एक वाक़िआ बड़ी बड़ी इब्रतों और नसीहतों के सामान अपने दामन में लिये हुवे है इस लिये हम इस किस्सए अजीबिया का खुलासा तहरीर करते हैं। ताकि नाज़िरीन इस से इब्रत हासिल करें और खुदावन्दे कुदूस की कुदरतों का मुशाहदा करें।

हज़रते या'कूब बिन इस्हाक़ बिन इब्राहीम (عليه السلام) के बारह बेटे थे जिन के नाम येह हैं :

- (1) यहूदा (2) रोबील (3) शमऊन (4) लावी (5) ज़बूलून (6) यसजर (7) दान (8) नफ़ताई (9) जाद (10) आशर (11) यूसुफ़ (12) बन्यामैन

हज़रते बन्यामैन हज़रते यूसुफ़ के हकीकी भाई थे। बाकी दूसरी माओं से थे। हज़रते यूसुफ़ عليه السلام अपने तमाम भाइयों में सब से ज़ियादा अपने बाप के प्यारे थे और चूँकि इन की पेशानी पर नबुव्वत के निशान दरख़्शां थे इस लिये हज़रते या'कूब عليه السلام इन का बेहद इकराम



और इन से इन्तिहाई महबूबत फ़रमाते थे। सात बरस की उम्र में हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने येह ख़्वाब देखा कि ग्यारह सितारे और चांद व सूरज इन को सजदा कर रहे हैं। हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने जब अपना येह ख़्वाब अपने वालिदे माजिद हज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام को सुनाया तो आप ने इन को मन्अ फ़रमा दिया कि प्यारे बेटे ! ख़बर दार ! तुम अपना येह ख़्वाब अपने भाइयों से मत बयान कर देना वरना वोह लोग ज़ब्बए हसद में तुम्हारे ख़िलाफ़ कोई खुफ़या चाल चल देंगे। चुनान्चे, ऐसा ही हुवा कि इन के भाइयों को इन से हसद होने लगा। यहां तक कि सब भाइयों ने आपस में मश्वरा कर के येह मन्सूबा तय्यार कर लिया कि इन को किसी तरह घर से ले जा कर जंगल के कुंवें में डाल दें। इस मन्सूबे की तक्मील के लिये सब भाई जम्अ हो कर हज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام के पास गए। और बहुत इस्सार कर के शिकार और तफ़रीह का बहाना बना कर इन को जंगल में ले जाने की इजाज़त हासिल कर ली। और इन को घर से कन्धों पर बिठा कर ले चले। लेकिन जंगल में पहुंच कर दुश्मनी के जोश में इन को ज़मीन पर पटख़ दिया। और सब ने बहुत ज़ियादा मारा। फिर इन का कुर्ता उतार कर और हाथ पाउं बांध कर एक गहरे और अन्धेरे कुंवें में गिरा दिया। लेकिन फ़ौरन ही हज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने कुंवें में तशरीफ़ ला कर इन को गर्क होने से इस तरह बचा लिया कि इन को एक पथ्थर पर बिठा दिया जो इस कुंवें में था। और हाथ पाउं खोल कर तसल्ली देते हुवे इन का ख़ौफ़ो हरास दूर कर दिया। और घर से चलते वक़्त हज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام ने हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का जो कुर्ता ता'वीज़ बना कर आप के गले में डाल दिया था वोह निकाल कर इन को पहना दिया जिस से उस अन्धेरे कुंवें में रोशनी हो गई।

हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के भाई आप को कुंवें में डाल कर और आप के पैराहन को एक बकरी के खून में लत पत कर के अपने घर को रवाना हो गए और मकान के बाहर ही से चीखें मार कर रोने लगे। हज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام घबरा कर घर से बाहर निकले। और रोने का सबब पूछा कि तुम लोग क्यूं रो रहे हो ? क्या तुम्हारी बकरियों को कोई नुक़सान पहुंच

गया है ? फिर हज़रते या'कूब عليه السلام ने दरयाफ्त फ़रमाया कि मेरा यूसुफ़ कहां है ? मैं उस को नहीं देख रहा हूं। तो भाइयों ने रोते हुवे कहा कि हम लोग खेल में दौड़ते हुवे दूर निकल गए और यूसुफ़ عليه السلام को अपने सामान के पास बिठा कर चले गए तो एक भेड़िया आया और वोह उन को फाड़ कर खा गया। और येह उन का कुर्ता है। उन लोगों ने कुर्ते में खून तो लगा लिया था लेकिन कुर्ते को फाड़ना भूल गए थे। हज़रते या'कूब عليه السلام ने अशक बार हो कर अपने नूरे नज़र के कुर्ते को जब हाथ में ले कर गौर से देखा तो कुर्ता बिल्कुल सलामत है और कहीं से भी फटा नहीं है तो आप उन लोगों के मक्र और झूट को भांप गए। और फ़रमाया कि बड़ा होशियार और सियाना भेड़िया था कि मेरे यूसुफ़ को तो फाड़ कर खा गया मगर उन के कुर्ते पर एक ज़रासी ख़राश भी नहीं आई और आप ने साफ़ साफ़ फ़रमा दिया कि येह सब तुम लोगों की कारस्तानी और मक्रो फ़रैब है। फिर आप ने दुखे हुवे दिल से निहायत दर्द भरी आवाज़ में फ़रमाया :

فَصَبِّرْ جَبِيلٌ ۖ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ ﴿١٨﴾ (پ ۱۲، یوسف: ۱۸)

हज़रते यूसुफ़ عليه السلام तीन दिन उस कुंवें में तशरीफ़ फ़रमा रहे। येह कुंवां ख़ारी था। मगर आप की बरकत से इस का पानी बहुत लज़ीज़ और निहायत शीरीं हो गया। इत्तिफ़ाक़ से एक क़ाफ़िला मदन से मिस्र जा रहा था। जब क़ाफ़िले का एक आदमी जिस का नाम मालिक बिन जुअर ख़ज़ाई था, पानी भरने के लिये आया और कुंवें में डोल डाला तो हज़रते यूसुफ़ عليه السلام डोल पकड़ कर लटक गए मालिक बिन जुअर ने डोल खींचा तो आप कुंवें से बाहर निकल आए। जब उस ने आप के हुस्नो जमाल को देखा तो يُسْرَىٰ هَذَا غَمٌّ कह कर अपने साथियों को खुश ख़बरी सुना ने लगा। हज़रते यूसुफ़ عليه السلام के भाई जो इस जंगल में रोज़ाना बकरियां चराया करते थे, बराबर रोज़ाना कुंवें में झांक झांक कर देखा करते थे। जब इन लोगों ने आप को कुंवें में नहीं देखा तो तलाश करते हुवे क़ाफ़िले में पहुंचे और आप को देख कर कहने लगे कि येह तो हमारा भागा हुवा गुलाम है जो बिल्कुल ही नाकारा और नाफ़रमान है। येह किसी काम का नहीं है। अगर तुम लोग इस को ख़रीदो तो हम बहुत

ही सस्ता तुम्हारे हाथ फ़रोख़्त कर देंगे मगर शर्त यह है कि तुम लोग इस को यहां से इतनी दूर ले जा कर फ़रोख़्त करना कि यहां तक इस की ख़बर न पहुंचे। हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام भाइयों के ख़ौफ़ से ख़ामोश खड़े रहे और एक लफ़्ज़ भी न बोले। फिर इन के भाइयों ने इन को मालिक बिन जुअर के हाथ सिर्फ़ बीस दिरहमों में फ़रोख़्त कर दिया।

मालिक बिन जुअर इन को ख़रीद कर मिस्र के बाज़ार में ले गया। और वहां अज़ीज़े मिस्र ने इन को बहुत गिरां कीमत दे कर ख़रीद लिया और अपने शाही महल में ले जा कर अपनी मलिका “जुलेखा” से कहा कि तुम इस गुलाम को निहायत ए’ज़ाज़ व इकराम के साथ अपनी ख़िदमत में रखो। चुनान्चे, आप अज़ीज़े मिस्र के शाही महल में रहने लगे। और मलिका जुलेखा इन से बहुत महबूबत करने लगी बल्कि इन के हुस्नो जमाल पर फ़रेफ़ता हो कर आशिक़ हो गई और उस का जोशे इश्क़ यहां तक बढ़ा कि एक दिन “जुलेखा” इश्को महबूबत में वालिहाना तौर पर आप को फुसलाने और लुभाने लगी। और आप को हम बिस्तरी की दा’वत देने लगी। आप ने مَعَاذَ اللَّهِ कह कर इन्कार फ़रमा दिया। और साफ़ कह दिया कि मैं अपने मालिक अज़ीज़े मिस्र के साथ ख़ियानत कर के उस के एहसानों की नाशुक्रि नहीं कर सकता। और आप घर में से भाग निकले। तो मलिका जुलेखा ने दौड़ कर पीछे से आप का पैराहन पकड़ लिया। और आप का पैराहन पीछे से फट गया। ऐन इसी हालत में अज़ीज़े मिस्र मकान में आ गए और दोनों को देख लिया। तो जुलेखा ने आप पर तोहमत लगा दी। अज़ीज़े मिस्र हैरान हो गया कि इन दोनों में से कौन सच्चा है? इत्तिफ़ाक़ से मकान में एक चार माह का बच्चा पालने में लैटा हुवा था। उस ने शहादत दी कि अगर कुर्ता आगे से फटा हो तो यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام कुसूरवार हैं और अगर कुर्ता पीछे से फटा हो तो जुलेखा की ख़ता है और यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام बे कुसूर हैं। जब अज़ीज़े मिस्र ने देखा तो कुर्ता पीछे से फटा हुवा था। फ़ौरन अज़ीज़े मिस्र ने जुलेखा को ख़तावार क़ार दे कर डांटा और हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام से येह कहा कि इस का ख़याल व मलाल न कीजिये। फिर जुलेखा के मश्वरे से अज़ीज़े मिस्र ने

यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को कैद खाने में भिजवा दिया। इस तरह अचानक हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام अज़ीजे मिस्र के शाही महल से निकल कर जेल खाने की कोठरी में चले गए। और आप ने जेल में पहुंच कर यह कहां कि ऐ **اَللّٰهُمَّ** عَزَّوَجَلَّ यह कैद खाने की कोठरी मुझे को इस बला से ज़ियादा महबूब है जिस की तरफ़ जुलेखा मुझे बुला रही थी। फिर आप सात बरस या बारह बरस जेल खाने में रहे और कैदियों को तौहीद और आ'माले सालेहा की दा'वत देते और वा'ज फ़रमाते रहे।

येह अजीब इत्तिफ़ाक़ कि जिस दिन आप कैद खाने में दाख़िल हुवे उसी दिन आप के साथ बादशाहे मिस्र के दो खादिम एक शराब पिलाने वाला, दूसरा बावरची दोनों जेल खाने में दाख़िल हुवे और दोनों ने अपना एक एक ख़्वाब हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام से बयान किया और आप ने उन दोनों के ख़्वाबों की ता'बीर बयान फ़रमा दी जो सो फ़ीसदी सहीह़ षाबित हुई। इस लिये आप का नाम मुअब्बर (ता'बीर देने वाला) होना मशहूर हो गया।

इसी दौरान मिस्र के बादशाहे आ'जम रय्यान बिन वलीद ने येह ख़्वाब देखा कि सात फ़र्बा गायों को सात दुब्ली गाएं खा रही हैं और सात हरी बालियां हैं और सात सूखी बालियां हैं। बादशाहे आ'जम ने अपने दरबारियों से इस ख़्वाब की ता'बीर दरयाफ़्त की तो लोगों ने इस ख़्वाब को ख़्वाबे परेशां कह कर इस की कोई ता'बीर नहीं बताई। इतने में बादशाह का साकी जो कैद खाने से रिहा हो कर आ गया था, उस ने कहा कि मुझे इस ख़्वाब की ता'बीर मा'लूम करने के लिये जेल खाने में जाने की इजाज़त दी जाए। चुनान्वे, येह बादशाह का फ़रस्तादा हो कर कैद खाने में हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के पास गया और बादशाह का ख़्वाब बयान कर के ता'बीर दरयाफ़्त की, कि सात दुब्ली गाएं सात मोटी गायों को खा रही हैं और सात हरी बालियां हैं और सात सूखी। हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि सात बरस मुसलसल खेती करो और उन के अनाजों को बालियों में महफूज़ रखो। फिर सात बरस तक सख़्त खुश्क साली रहेगी, क़हूत के इन सात बरसों में पहले सात बरसों का महफूज़ किया हुवा अनाज लोग खाएंगे इस के बा'द फिर हरयाली का साल आएगा।

कासिद ने वापस जा कर बादशाह से उस के ख़्वाब की ता'बीर बताई तो बादशाह ने हुक्म दिया कि हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को जेल खाने से निकाल कर मेरे दरबार में लाओ। कासिद रिहाई का परवाना ले कर जेल खाने में पहुंचा तो आप ने फ़रमाया कि पहले जुलैखा और दूसरी औरतों के ज़रीए मेरी बे गुनाही और पाक दामनी का इज़हार करा लिया जाए इस के बा'द ही मैं जेल से बाहर निकलूंगा। चुनान्वे, बादशाह ने इस की तहकीक़ कराई तो तहकीकात के दौरान जुलैखा ने इक़्रार कर लिया कि मैं ने खुद ही हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को फुसलाया था। ख़ता मेरी है। हज़रते यूसुफ़ सच्चे और पाक दामन हैं। इस के बा'द बादशाह ने हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को दरबार में बुला कर कह दिया कि आप हमारे मो'तमद और हमारे दरबार के मुअज़्ज़ज़ हैं। हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा कि आप ज़मीन के ख़ज़ानों के इन्तिज़ामी उमूर और हिफ़ाज़ती निज़ाम के इन्तिज़ाम पर मेरा तक़्रूर कर दें। मैं पूरे निज़ाम को संभाल लूंगा। बादशाह ने ख़ज़ाने का इन्तिज़ामी मुआमला और मुल्क के निज़ाम व इन्सिराम का पूरा शो'बा आप के सिपुर्द कर दिया। इस तरह मुल्के मिस्स की हुक्मरानी का इक्तिदार आप को मिल गया।

इस के बा'द आप ने ख़ज़ानों का निज़ाम अपने हाथ में ले कर सात साल तक खेती का प्लान चलाया और अनाजों को बालियों में महफूज़ रखा। यहां तक कि क़हत और खुश्क साली का जोर शुरू हो गया तो पूरी सल्तनत के लोग ग़ल्ले की ख़रीदारी के लिये मिस्स आना शुरू हो गए और आप ने ग़ल्लों की फ़रोख़्त शुरू कर दी।

इसी सिलसिले में आप के भाई किनआन से मिस्स आए। हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने तो इन लोगों को देखते ही पहली नज़र में पहचान लिया मगर आप के भाइयों ने आप को बिल्कुल ही नहीं पहचाना। आप ने इन लोगों को ग़ल्ला दे दिया और फिर फ़रमाया कि तुम्हारा एक भाई (बन्यामैन) है आइन्दा उस को भी साथ ले कर आना। अगर तुम लोग आइन्दा उस को न लाए तो तुम्हें ग़ल्ला नहीं मिलेगा।

भाइयों ने जवाब दिया कि हम उस के वालिद को रिज़ामन्द करने की कोशिश करेंगे फिर हज़रते यूसुफ़ عليه السلام ने अपने गुलामों से कहा कि तुम लोग इन की नक़्दियों को इन की बोरियों में डाल दो ताकि ये लोग जब अपने घर पहुंच कर इन नक़्दियों को देखेंगे तो उम्मीद है कि ज़रूर ये लोग वापस आएंगे। चुनान्चे, जब ये लोग अपने वालिद के पास पहुंचे तो कहने लगे कि अब्बा जान ! अब क्या होगा ? अज़ीज़े मिस्र ने तो ये कह दिया है कि जब तक तुम लोग “बन्यामैन” को साथ ले कर न आओगे तुम्हें ग़ुल्ला नहीं मिलेगा। लिहाज़ा आप “बन्यामैन” को हमारे साथ भेज दें ताकि हम इन के हिस्से का भी ग़ुल्ला ले लें। और आप इतमीनान रखें कि हम लोग इन की हिफ़ाज़त करेंगे। इस के बा’द जब इन लोगों ने अपनी बोरियों को खोला तो हैरान रह गए कि इन की रक़्मों और नक़्दियां इन की बोरियों में मौजूद थीं। ये देख कर बरादराने यूसुफ़ ने फिर अपने वालिद से कहा कि अब्बा जान ! इस से बढ़ कर अच्छा सुलूक और क्या चाहिये ? देख लीजिये अज़ीज़े मिस्र ने हम को पूरा पूरा ग़ुल्ला भी दिया है और हमारी नक़्दियों को भी वापस कर दिया है लिहाज़ा आप बिला ख़ौफ़ो ख़तर हमारे भाई “बन्यामैन” को हमारे साथ भेज दें।

हज़रते या’कूब عليه السلام ने फ़रमाया कि मैं एक मरतबा “यूसुफ़” के मुआमले में तुम लोगों पर भरोसा कर चुका हूँ तो तुम लोगों ने क्या कर डाला, अब दोबारा मैं तुम लोगों पर कैसे भरोसा कर लूँ ? मैं इस तरह “बन्यामैन” को हरगिज़ तुम लोगों के साथ नहीं भेजूंगा। लेकिन हां अगर तुम लोग हलफ़ उठा कर मेरे सामने अ़हद करो तो अलबत्ता मैं इस को भेज सकता हूँ। ये सुन कर सब भाइयों ने हलफ़ ले कर अ़हद किया और आप ने इन लोगों के साथ “बन्यामैन” को भेज दिया।

जब ये लोग अज़ीज़े मिस्र के दरबार में पहुंचे तो हज़रते यूसुफ़ عليه السلام ने अपने भाई “बन्यामैन” को अपनी मस्नद पर बिठा लिया। और चुपके से इन के कान में कह दिया कि मैं तुम्हारा भाई “यूसुफ़” हूँ। लिहाज़ा तुम कोई फ़िक्क व ग़म न करो। फिर आप ने सब को अनाज दिया और सब ने अपनी अपनी बोरियों को संभाल लिया। जब सब चलने लगे

तो आप ने “बन्यामैन” को अपने पास रोक लिया। अब बरादराने यूसुफ़ सख़्त परेशान हुवे। अपने वालिद के रू बरू येह अहद कर के आए थे कि हम अपनी जान पर खेल कर बन्यामैन की हिफ़ाज़त करेंगे और यहां “बन्यामैन” इन के हाथ से छीन लिये गए। अब घर जाएं तो क्यूंकर और यहां ठहरें तो कैसे ? येह मुआमला देख कर सब से बड़ा भाई “यहूदा” कहने लगा कि ऐ मेरे भाइयो ! सोचो कि तुम लोग वालिद साहिब को क्या क्या अहदो पैमान दे कर आए हो ? और इस से पहले तुम अपने भाई यूसुफ़ के साथ कितनी बड़ी तक्सीर कर चुके हो। लिहाज़ा मैं तो जब तक वालिद साहिब हुक्म न दें इस ज़मीन से हट नहीं सकता। हां तुम लोग घर जाओ और वालिद साहिब से सारा माजरा अर्ज़ कर दो। चुनान्वे, यहूदा के सिवा दूसरे सब भाई लौट कर घर आए और अपने वालिद से सारा हाल बयान किया। तो हज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि यूसुफ़ की तरह बन्यामैन के मुआमले में भी तुम लोगों ने हीला साज़ी की है। तो खैर, मैं सब्र करता हूं और सब्र बहुत अच्छी चीज़ है। फिर आप ने मुंह फेर कर रोना शुरूअ कर दिया। और कहा कि हाए अफ़सोस ! और हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को याद कर के इतना रोए कि शिद्दते ग़म से निढाल हो गए और रोते रोते आंखें सफ़ेद हो गईं। आप की ज़बान से यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का नाम सुन कर हज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام से इन के बेटों पोतों ने कहा कि अब्बा जान ! आप हमेशा यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को याद करते रहेंगे यहां तक कि लंबे गोर हो जाएं या जान से गुज़र जाएं। अपने बेटों पोतों की बात सुन कर आप ने फ़रमाया कि मैं अपने ग़म और परेशानी की फ़रयाद **اَبْلَسُ** **عَزَّوَجَلَّ** ही से करता हूं और मैं जो कुछ जानता हूं वोह तुम लोगों को मा'लूम नहीं। ऐ मेरे बेटो ! तुम लोग जाओ। और यूसुफ़ और उस के भाई “बन्यामैन” को तलाश करो। और खुदा की रहमत से मायूस मत हो जाओ क्यूंकि खुदा की रहमत से मायूस हो जाना काफ़िरो का काम है।

चुनान्वे, बरादराने यूसुफ़ फिर मिस्र को रवाना हुवे और जा कर अज़ीजे मिस्र से कहा कि ऐ अज़ीजे मिस्र ! हमारे घर वालों को बहुत बड़ी मुसीबत पहुंच गई है और हम चन्द खोटे सिक्के ले कर आए हैं।



लिहाज़ा आप बतौर ख़ैरात के कुछ गुल्ला दे दीजिये अपने भाइयों की ज़बान से घर की दास्तान और ख़ैरात का लफ़्ज़ सुन कर हज़रते यूसुफ़ عليه السلام पर रिक्कत तारी हो गई और आप ने भाइयों से पूछा कि तुम लोगों को याद है कि तुम लोगों ने यूसुफ़ और उस के बाई बन्यामैन के साथ क्या क्या सुलूक किया है ? येह सुन कर भाइयों ने हैरान हो कर पूछा कि सच मुच आप यूसुफ़ عليه السلام ही हैं ? तो आप ने फ़रमाया कि हां । मैं ही यूसुफ़ हूं । और बन्यामैन मेरा भाई है । **अल्लाह** तआला ने हम पर बड़ा फ़ज़्लो एहसान फ़रमाया है । येह सुन कर भाइयों ने निहायत शर्मिन्दगी और लजाजत के साथ कहना शुरू किया कि बिला शुबा हम लोग वाकेई बड़े ख़ताकार हैं और **अल्लाह** तआला ने आप को हम लोगों पर बहुत फ़ज़ीलत बख़्शी है । भाइयों की शर्मिन्दगी और लजाजत से मुतअष्विर हो कर आप का दिल भर आया और आप ने फ़रमाया कि आज मैं तुम लोगों को मलामत नहीं करूंगा । जाओ मैं ने सब कुछ मुआफ़ कर दिया । **अल्लाह** तआला तुम्हें मुआफ़ फ़रमाए । अब तुम लोग मेरा येह कुर्ता ले कर घर जाओ । और अब्बा जान के चेहरे पर इस को डाल दो तो उन की आंखों में रोशनी आ जाएगी । फिर तुम लोग सब घर वालों को साथ ले कर मिस्स चले आओ ।

बड़ा भाई यहूदा कहने लगा कि येह कुर्ता मैं ले कर जाउंगा क्यूंकि हज़रते यूसुफ़ عليه السلام का कुर्ता बकरी के खून में रंग कर मैं ही उन के पास ले गया था । तो जिस तरह मैं ने उन्हें वोह कुर्ता दे कर ग़मगीन किया था । आज येह कुर्ता ले जा कर उन को खुश कर दूंगा । चुनान्चे, यहूदा येह कुर्ता ले कर घर पहुंचा और अपने वालिद के चेहरे पर डाल दिया तो उन की आंखों में बीनाई आ गई । फिर हज़रते या'कूब عليه السلام ने तहज्जुद के वक़्त के बा'द अपने सब बेटों के लिये दुआ फ़रमाई और येह दुआ मक़बूल हो गई । चुनान्चे, आप पर येह वह्य़ उतरी कि आप के साहिबज़ादों की ख़ताएं बख़्श दी गई ।

फिर मिस्स को रवानगी का सामान होने लगा । हज़रते यूसुफ़ عليه السلام ने अपने वालिद और सब अहलो इयाल को लाने के लिये भाइयों के साथ दो सो सुवारियां भेज दीं थीं । हज़रते या'कूब عليه السلام ने अपने

घर वालों को ज़म्अ किया तो कुल बहत्तर या तिहत्तर आदमी थे जिन को साथ ले कर आप मिस्र रवाना हो गए मगर **अल्लाह** तआला ने आप की नस्ल में इतनी बरकत अता फ़रमाई कि जब हज़रते मूसा **عليه السلام** के वक्त में बनी इस्राईल मिस्र से निकले तो छे लाख से ज़ियादा थे। हालांकि हज़रते मूसा **عليه السلام** का ज़माना हज़रते या'कूब **عليه السلام** के मिस्र जाने से सिर्फ़ चार सो साल बा'द का ज़माना है। जब हज़रते या'कूब **عليه السلام** अपने अहलो इयाल के साथ मिस्र के क़रीब पहुंचे तो हज़रते यूसुफ़ ने चार हज़ार लश्कर और बहुत से मिस्री सुवारों को साथ ले कर आप का इस्तिक़बाल किया और सदहा रेशमी झन्डे और क़ीमती परचम लहराते हुवे क़ितारें बांधे हुवे मिस्री बाशिन्दे जुलूस के साथ रवाना हुवे। हज़रते या'कूब **عليه السلام** अपने फ़रज़न्द “यहूदा” के हाथ पर टेक लगाए तशरीफ़ ला रहे थे। जब इन लश्करों और सुवारों पर आप की नज़र पड़ी तो आप ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि येह फ़िराँने मिस्र का लश्कर है ? तो यहूदा ने अर्ज़ किया कि जी नहीं। येह आप के फ़रज़न्द हज़रते यूसुफ़ **عليه السلام** हैं जो अपने लश्करों और सुवारों के साथ आप के इस्तिक़बाल के लिये आए हुवे हैं ! आप को मुतअज्जिब देख कर हज़रते जिब्रील **عليه السلام** ने फ़रमाया कि ऐ **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के नबी ज़रा सर उठा कर फ़ज़ाए आस्मानी में नज़र फ़रमाइये कि आप के सुरूर व शादमानी में शिर्कत के लिये मलाइका का ज़म्मे ग़फ़ीर हाज़िर है जो मुद्दतों आप के ग़म में रोते रहे हैं। मलाइका की तस्बीह और घोड़ों की हनहनाहट और तबल व बोक़ की आवाज़ों ने अज़ीब समां पैदा कर दिया था।

जब बाप बेटे दोनों क़रीब हो गए और हज़रते यूसुफ़ **عليه السلام** ने सलाम का इरादा किया तो हज़रते जिब्रील **عليه السلام** ने कहा कि आप ज़रा तवक्कुफ़ कीजिये और अपने पिदरे बुजुर्गवार को उन के रिक्कत अंगेज़ सलाम का मौक़अ दीजिये चुनान्वे, हज़रते या'कूब **عليه السلام** ने इन लफ़्ज़ों के साथ सलाम कहा कि “السَّلَامُ عَلَيْكَ يَا مُذْهَبَ الْأَحْزَانِ” या'नी ऐ तमाम ग़मों को दूर करने वाले आप पर सलाम हो। फिर बाप बेटों ने निहायत गर्मजोशी के साथ मुआनका किया और फ़र्ते मसरत में दोनों ख़ूब रोए।

फिर एक इस्तिक़बालिय्या ख़ैमे में तशरीफ़ ले गए जो ख़ूब मुज़य्यन और आरास्ता किया गया था। वहां थोड़ी देर ठहर कर जब शाही महल में रोनक अफ़रोज़ हुवे तो हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने सहारा दे कर अपने वालिदे मोहतरम को तख़्ते शाही पर बिठाया। और इन के इर्द गिर्द आप के ग्यारह भाई और आप की वालिदा सब बैठ गए और सब के सब बयक वक़्त हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के आगे सजदे में गिर पड़े। उस वक़्त हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने वालिदे बुजुर्गवार को मुखातब कर के येह कहा :

يَا بَتِ هَذَا تَوِيلُ رُءْيَايَ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّي حَقًّا وَقَدْ أَحْسَنَ بِي إِذْ أَخْرَجَنِي مِنَ السِّجْنِ وَجَاءَ بِكُمْ مِنَ الْبَدْوِ مِنْ بَعْدِ أَنْ نَزَغَ الشَّيْطَانُ بَيْنِي وَبَيْنَ إِخْوَتِي إِنَّ رَبِّي لَطِيفٌ لِمَا يَشَاءُ إِنَّهُ هُوَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ⑩ (پ ۱۳، یوسف: ۱۰۰)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** ऐ मेरे बाप येह मेरे पहले ख़्वाब की ता'बीर है बेशक इसे मेरे रब ने सच्चा किया और बेशक उस ने मुझ पर एहसान किया कि मुझे कैद से निकाला और आप सब को गाउं से ले आया बा'द इस के कि शैतान ने मुझ में और मेरे भाइयों में नाचाक़ी करा दी थी बेशक मेरा रब जिस बात को चाहे आसान कर दे बेशक वोही इल्मो हिक्मत वाला है।

या'नी मेरे ग्यारह भाई सितारे हैं और मेरे बाप सूरज और मेरी वालिदा चांद है और येह सब मुझ को सजदा कर रहे हैं। येही आप का ख़्वाब था जो बचपन में देखा था कि ग्यारह सितारे और सूरज व चांद मुझे सजदा कर रहे हैं। येह तारीख़ी वाक़िआ मुहर्रम की दस तारीख़ (आशूरा के दिन) वुकूअ पज़ीर हुवा।

**हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की वफ़ात :-** अस्हाबे तवारीख़ का बयान है कि हज़रते या'क़ूब عَلَيْهِ السَّلَام मिस्र में अपने फ़रज़न्द हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के पास चोबीस साल तक निहायत आराम व खुशहाली में रहे। जब आप की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो आप ने येह वसिय्यत फ़रमाई कि मेरा जनाज़ा मुल्के शाम में ले जा कर मुझे मेरे वालिद हज़रते इस्हाक़ عَلَيْهِ السَّلَام की

क़ब्र के पहलू में दफ़न करना। चुनान्वे, आप की वफ़ात के बा'द आप के जिस्म मुक़द्दस को लकड़ी के सन्दूक में रख कर मिस्र से शाम लाया गया। ठीक उसी वक़्त आप के भाई हज़रते "ग़ैस" की वफ़ात हुई और आप दोनों भाइयों की विलादत भी एक साथ हुई थी। और दोनों एक ही क़ब्र में दफ़न किये गए और दोनों भाइयों की उम्रें एक सो सैंतालीस बरस की हुई। हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام अपने वालिद और चचा को दफ़न फ़रमा कर फिर मिस्र तशरीफ़ लाए और अपने वालिदे माजिद के बा'द 23 साल तक मिस्र पर हुकूमत फ़रमाते रहे। इस के बा'द आप की भी वफ़ात हो गई।

**हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ब्र :-** आप की वफ़ात के बा'द आप के मक़ामे दफ़न में सख़्त इख़्तिलाफ़ पैदा हो गया। हर महल्ले वाले हुसूले बरकत के लिये अपने ही महल्ले में दफ़न पर इस्सारे करने लगे। आख़िर इस बात पर सब का इत्तिफ़ाक़ हो गया कि आप को बीच दरयाए नील में दफ़न किया जाए ताकि दरया का पानी आप की क़ब्रे मुनव्वर को छूता हुवा गुज़रे। और तमाम मिस्र वाले आप के फुयूज़ो बरकात से फ़ैज़याब होते रहें। चुनान्वे, आप को संगे मर मर के सन्दूक में रख कर दरयाए नील के बीच में दफ़न किया गया। यहां तक कि चार सो बरस के बा'द हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने आप के ताबूत शरीफ़ को दरया से निकाल कर आप के आबाओ अजदाद की क़ब्रों के पास मुल्के शाम में दफ़न फ़रमाया। ब वक़्ते वफ़ात आप की उम्र शरीफ़ एक सो बीस बरस की थी और आप के वालिदे मोहतरम हज़रते या'कूब عَلَيْهِ السَّلَام ने 147 बरस की उम्र पाई। और आप के दादा हज़रते इस्हाक़ عَلَيْهِ السَّلَام की उम्र शरीफ़ 180 साल की हुई और आप के परदादा हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام की उम्र शरीफ़ 175 साल की हुई।

### ﴿35﴾ मक्कउ मुकर्रमा क्यूं कर आबाद हुवा ?

हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के फ़रज़न्द हज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام सर ज़मीने शाम में हज़रते हाजरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के शिकमे मुबारक से पैदा हुवे। हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की बीवी हज़रते सारा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के कोई अवलाद न थी। इस लिये इन्हें रश्क पैदा हुवा और इन्हों ने हज़रते

इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام से कहा कि आप हज़रते हाजरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا और इन के बेटे इस्माईल को मेरे पास से जुदा कर के कहीं दूर कर दीजिये। खुदावन्दे कुद्दूस की हक्मत ने एक सबब पैदा फ़रमा दिया। चुनान्वे, आप पर व्हय नाज़िल हुई कि आप हज़रते हाजरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا और इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام को उस सर ज़मीन में छोड़ आएँ जहाँ बे आबो गियाह मैदान और खुश्क पहाड़ियों के सिवा कुछ भी नहीं है। चुनान्वे, हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने हज़रते हाजरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا और हज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام को साथ ले कर सफ़र फ़रमाया। और उस जगह आए जहाँ का'बए मुअज़्ज़मा है। यहाँ उस वक़्त न कोई आबादी थी न कोई चश्मा, न दूर दूर तक पानी या आदमी का कोई नामो निशान था। एक तौशादान में कुछ खजूरें और एक मश्क में पानी हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام वहाँ रख कर रवाना हो गए। हज़रते हाजरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने फ़रयाद की, कि ऐ **اَللّٰهُ** के नबी ! इस सुनसान बियाबान में जहाँ न कोई मूनिस है न ग़म ख़्वार, आप हमें बे यारो मददगार छोड़ कर कहां जा रहे हैं ? कई बार हज़रते हाजरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने आप को पुकारा मगर आप ने कोई जवाब नहीं दिया। अख़िर में हज़रते हाजरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने सुवाल किया कि आप इतना फ़रमा दीजिये कि आप ने अपनी मरज़ी से हमें यहाँ ला कर छोड़ा है या खुदावन्दे कुद्दूस के हुक्म से आप ने ऐसा किया है ? तो आप عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि ऐ हाजरा ! मैं ने जो कुछ किया है वोह **اَللّٰهُ** तअ़ाला के हुक्म से किया है। येह सुन कर हज़रते हाजरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने कहा कि अब आप जाइये, मुझे यकीने कामिल और पूरा पूरा इत्मीनान है कि खुदावन्दे करीम मुझ को और मेरे बच्चे को जाएअ नहीं फ़रमाएगा।

इस के बा'द हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने एक लम्बी दुआ मांगी और वहाँ से मुल्के शाम चले आए। चन्द दिनों में खजूरें और पानी ख़त्म हो जाने पर हज़रते हाजरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا पर भूक और प्यास का ग़लबा हुवा और इन के सीने में दूध खुश्क हो गया और बच्चा भूक व प्यास से तड़पने लगा। हज़रते हाजरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने पानी की तलाश व जुस्त्जू में सात

चक्कर सफ़ा व मरवा की दोनों पहाड़ियों के लगाए मगर पानी का कोई सुराग़ दूर दूर तक नहीं मिला। यहां तक कि हज़रते इस्माईल عليه السلام प्यास की शिद्दत से एड़ियां पटक पटक कर रो रहे थे। हज़रते जिब्रईल عليه السلام ने आप की एड़ियों के पास ज़मीन पर अपना पैर मार कर एक चश्मा जारी कर दिया। और इस पानी में दूध की ख़ासिय्यत थी कि येह ग़िज़ा और पानी दोनों का काम करता था। चुनान्चे, येही ज़म ज़म का पानी पी पी कर हज़रते हाजरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا और हज़रते इस्माईल ज़िन्दा रहे। यहां तक कि हज़रते इस्माईल عليه السلام जवान हो गए और शिकार करने लगे तो शिकार के गोश्त और ज़म ज़म के पानी पर गुज़र बसर होने लगी। फिर कबीलए जिरहम के कुछ लोग अपनी बकरियों को चराते हुवे इस मैदान में आए और पानी का चश्मा देख कर हज़रते हाजरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की इजाज़त से यहां आबाद हो गए और इस कबीले की एक लड़की से हज़रते इस्माईल عليه السلام की शादी भी हो गई। और रफ़्ता रफ़्ता यहां एक आबादी हो गई। फिर हज़रते इब्राहीम عليه السلام को खुदावन्दे कुहूस का येह हुक्म हुवा कि ख़ानए का'बा की ता'मीर करें। चुनान्चे, आप ने हज़रते इस्माईल عليه السلام की मदद से ख़ानए का'बा को ता'मीर फ़रमाया। उस वक़्त हज़रते इब्राहीम عليه السلام ने अपनी अवलाद और बाशिन्दगाने मक्कए मुकर्रमा के लिये जो एक तवील दुआ मांगी। वोह कुरआने मजीद की मुख़्तलिफ़ सूरतों में मज़कूर है। चुनान्चे, सूरए इब्राहीम में आप की इस दुआ का कुछ हिस्सा इस तरह मज़कूर है।

رَبِّاَ اِنِّى اَسْكَنْتُ مِنْ دُرِّيْتِىْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِى زَرْعٍ عِنْدَ بَيْنَتِ  
الْمُحَرَّمِ لِرَبِّنَا لِيُقِيمُوا الصَّلَاةَ فَاجْعَلْ اَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِىْ  
اِلَيْهِمْ وَاِمْرًا ذُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرَاتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ ⑮ (پ ۱۳، ابراهيم ۳۷)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** ऐ मेरे रब ! मैं ने अपनी कुछ अवलाद एक नाले में बसाई जिस में खेती नहीं होती तेरे हु्रमत वाले घर के पास, ऐ हमारे रब इस लिये कि वोह नमाज़ क़ाइम रखें तो तू लोगों के कुछ दिल उन की तरफ़ माइल कर दे और उन्हें कुछ फल खाने को दे शायद वोह एहसान मानें।

येह मक्कए मुकर्रमा की आबादी की इब्तिदाई तारीख़ है जो कुरआने मजीद से षाबित हुई है।

**दुआए इब्राहीमी का अषर :-** इस दुआ में हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने खुदावन्दे कुदूस से दो चीज़ें तलब कीं एक तो येह कि कुछ लोगों के दिल अवलादे इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की तरफ़ माइल हों और दूसरे इन लोगों को फलों की रोज़ी खाने को मिले। سُبْحَنَ اللَّهِ आप की येह दुआएं मक्बूल हुई। चुनान्वे, इस तरह लोगों के दिल अहले मक्का की तरफ़ माइल हुवे कि आज करोड़हा करोड़ इन्सान मक्कए मुकर्रमा की ज़ियारत के लिये तड़प रहे हैं और हर दौर में तरह तरह की तक्लीफ़ें उठा कर मुसलमान खुशकी और समन्दर और हवाई रास्तों से मक्कए मुकर्रमा जाते रहे। और क़ियामत तक जाते रहेंगे और अहले मक्का की रोज़ी में फलों की कषरत का येह आलम है कि बा वुजूद येह कि शहरे मक्का और इस के कुर्बो जवार में कहीं न कोई खेती है न कोई बाग़ बागीचा है। मगर मक्कए मुकर्रमा की मन्डियों और बाज़ारों में इस कषरत से किस्म किस्म के मेवे और फल मिलते हैं कि फ़र्ते तअज्जुब से देखने वालों की आंखें फटी की फटी रह जाती हैं। **अल्लाह** तआला ने “ताइफ़” की ज़मीन में हर किस्म के फलों की पैदावार की सलाहिय्यत पैदा फ़रमा दी है कि वहां से किस्म किस्म के मेवे और फल और तरह तरह की सब्ज़ियां और तरकारियां मक्कए मुअज़्ज़मा में आती रहती हैं और इस के इलावा मिस्र व इराक़ बल्कि यूरोप के मुमालिक से मेवे और फल ब कषरत मक्कए मुकर्रमा आया करते हैं। येह सब हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की दुआओं की बरकतों के अषरात व षमरात हैं जो बिलाशुबा दुन्या के अज़ाइबात में से हैं।

इस के बा’द आप ने येह दुआ मांगी जिस में आप ने अपनी अवलाद के इलावा तमाम मोअमिनीन के लिये भी दुआ मांगी।

رَبِّ اجْعَلْنِي مُقِيمَ الصَّلَاةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِي ۖ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَاءِ ﴿٢٠﴾  
رَبَّنَا اغْفِرْ لِي وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِينَ يَوْمَ يَقُومُ الْحِسَابُ ﴿٢١﴾ (پ ۱۳) ابراہیم: ۲۰



**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** ऐ मेरे रब ! मुझे नमाज़ का काइम करने वाला रख और कुछ मेरी अवलाद को ऐ हमारे रब और मेरी दुआ सुन ले ऐ हमारे रब मुझे बख़्श दे और मेरे मां बाप को और सब मुसलमानों को जिस दिन हिसाब काइम होगा ।

**दर्से हिदायत :-** इस वाकिए से दो बातें ख़ास तौर पर मा'लूम हुई :

﴿1﴾ हज़रते इब्राहीम عليه السلام अपने रब तआला के बहुत ही इताअत गुज़ार और फ़रमां बरदार थे कि वोह बच्चा जिस को बड़ी बड़ी दुआओं के बा'द बुढ़ापे में पाया था जो आप की आंखों का नूर और दिल का सुरूर था, फ़ित्री तौर पर हज़रते इब्राहीम عليه السلام इस को कभी अपने से जुदा नहीं कर सकते थे मगर जब **अल्लाह** तआला का येह हुक्म हो गया कि ऐ इब्राहीम ! तुम अपने प्यारे फ़रज़न्द और उस की मां को अपने घर से निकाल कर वादिये बतहा की उस सुनसान जगह पर ले जा कर छोड़ आओ जहां सर छुपाने को दरख़्त का पत्ता और प्यास बुझा ने को पानी का एक क़तरा भी नहीं है, न वहां कोई यारो मददगार है, न कोई मूनिसो ग़म ख़्बार है । दूसरा कोई इन्सान होता तो शायद इस के तसव्वुर ही से उस के सीने में दिल धड़कने लगता, बल्कि शिद्दे ग़म से दिल फट जाता । मगर हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عليه السلام खुदा का येह हुक्म सुन कर न फ़िक्क मन्द हुवे, न एक लम्हे के लिये सोच बिचार में पड़े, न रंजो ग़म से निढाल हुवे बल्कि फ़ैरन ही खुदा का हुक्म बजा लाने के लिये बीवी और बच्चे को ले कर मुल्के शाम से सरज़मीने मक्का में चले गए और वहां बीवी बच्चे को छोड़ कर मुल्के शाम चले आए । **अल्लाहु अक्बर !** इस ज़ब्बए इताअत शिआरी और जोशे फ़रमां बरदारी पर हमारी जां कुरबान !

﴿2﴾ हज़रते इब्राहीम عليه السلام ने अपने फ़रज़न्द हज़रते इस्माईल عليه السلام और उन की अवलाद के लिये निहायत ही महब्वत भरे अन्दाज़ में उन की मक्बूलियत और रिज़्क के लिये जो दुआएं मांगीं । इस से येह सबक़ मिलता है कि अपनी अवलाद से महब्वत करना और उन के लिये दुआएं मांगना येह हज़रते अम्बियाए किराम عليهم السلام का मुबारक तरीक़ा है जिस पर हम सब मुसलमानों को अमल करना हमारी सलाह व फ़लाहे दारैन का ज़रीआ है । (والله تعالى اعلم)

﴿36﴾ अबू लहब की बीवी को रसूलुल्लाह ﷺ नज़र न आए

जब सूरए “تَبَّتْ يَدَا” नाज़िल हुई और अबू लहब और उस की बीवी “उम्मे जमील” की इस सूरह में मज़मूत उतरी तो अबू लहब की बीवी उम्मे जमील गुस्से में आपे से बाहर हो गई। और एक बहुत बड़ा पथ्थर ले कर वोह हरमे का’बा में गई। उस वक़्त हुज़ूरे अकरम ﷺ नमाज़ में तिलावते कुरआन फ़रमा रहे थे और करीब ही हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ बैठे हुवे थे। “उम्मे जमील” बड़ बड़ाती हुई आई और हुज़ूरे अक्दस ﷺ के पास से गुज़रती हुई हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास आई और मारे गुस्से के मुंह में झाग भरते हुवे कहने लगी कि बताओ तुम्हारे रसूल कहाँ हैं? मुझे मा’लूम हुवा है कि इन्होंने मेरी और मेरे शोहर की हिजू की है। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि मेरे रसूल शाइर नहीं हैं कि किसी की हिजू करें। फिर वोह गैज़ो ग़ज़ब में भरी हुई पूरे हरमे का’बा में चक्कर लगाती फिरी और बकती झकती हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को ढूँडती फिरी। मगर जब वोह हुज़ूर ﷺ को न देख सकी तो बड़ बड़ाती हुई हरम से बाहर जाने लगी और हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से कहने लगी कि मैं तुम्हारे रसूल का सर कुचलने के लिये येह पथ्थर ले कर आई थी मगर अफ़सोस कि वोह मुझे नहीं मिले। हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हुज़ूर ﷺ से इस वाक़िए का ज़िक्र किया तो आप ने फ़रमाया कि मेरे पास से वोह कई बार गुज़री मगर मेरे और उस के दरमियान एक फ़िरिश्ता इस तरह हाइल हो गया कि आंख फाड फाड कर देखने के बा वुजूद वोह मुझे न देख सकी। इस वाक़िए के मुतअल्लिक़ येह आयत नाज़िल हुई :

وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْآنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ  
بِالْآخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُورًا ﴿٣٦﴾ (خزائن العرفان، ص १५१، प ५१، بنی اسرائیل ५१)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और ऐ महबूब ! तुम ने कुरआन पढ़ा हम ने तुम पर और उन में कि आखिरत पर ईमान नहीं लाते एक छुपा हुआ पर्दा कर दिया ।  
**दर्से हिदायत :-** उम्मे जमील अंखियारी होते हुवे और आंखें फाड़ कर देखने के बा वुजूद हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के पास ही से तलाश करती हुई बार बार गुज़री मगर वोह आप को नहीं देख सकी । बिला शुबा येह एक अजीब बात है और इस को हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मो'जिज़े के सिवा कुछ भी नहीं कहा जा सकता । इस किस्म के मो'जिज़ात हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की तरफ़ से बारहा सादिर हुवे हैं और बहुत से औलियाउल्लाह से भी ऐसी करामतें बारहा सादिर हुई हैं और औलिया की येह करामतें भी हमारे नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मो'जिज़ात ही हैं । क्यूंकि वली की करामत दर हकीकत उस के नबी का मो'जिज़ा हुवा करता है ।

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

### ﴿37﴾ अस्हाबे कहफ़ (ग़ार वाले)

हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के आस्मान पर उठा लिये जाने के बा'द ईसाइयों का हाल बेहद ख़राब और निहायत अबतर हो गया । लोग बुत परस्ती करने लगे और दूसरों को भी बुत परस्ती पर मजबूर करने लगे । खुसूसन इन का एक बादशाह “दक़यानूस” तो इस क़दर ज़ालिम था कि जो शख्स बुत बरस्ती से इन्कार करता था येह उस को क़त्ल कर डालता था ।  
**अस्हाबे कहफ़ कौन थे ? :-** अस्हाबे कहफ़ शहर “उफ़सूस” के शुरफ़ा थे जो बादशाह के मोअज़्ज़ज़ दरबारी भी थे । मगर येह लोग साहिबे ईमान और बुत परस्ती से इन्तिहाई बेज़ार थे । “दक़यानूस” के जुल्मो ज़ब्र से परेशान हो कर येह लोग अपना ईमान बचाने के लिये उस के दरबार से भाग निकले और क़रीब के पहाड़ में एक ग़ार के अन्दर पनाह गुर्जीं हुवे और सो गए, तो तीन सो बरस से ज़ियादा अर्से तक इसी हाल में सोते रह गए । दक़यानूस ने जब इन लोगों को तलाश कराया और उस को मा'लूम हुवा कि येह लोग ग़ार के अन्दर हैं तो वोह बेहद नाराज़ हुवा । और फ़र्ते ग़ैजो ग़ज़ब में येह हुक्म दे दिया कि ग़ार को एक संगीन दीवार उठा कर बन्द कर दिया जाए ताकि येह लोग उसी में रह कर मर जाएं और

वोही ग़ार इन लोगों की क़ब्र बन जाए। मगर दक़यानूस ने जिस शख्स के सिपुर्द येह काम किया था वोह बहुत ही नेक दिल और साहिबे इमान आदमी था। उस ने अस्हाबे कहफ़ के नाम इन की ता'दाद और इन का पूरा वाकिआ एक तख़्ती पर कन्दा करा कर तांबे के सन्दूक के अन्दर रख कर दीवार की बुन्याद में रख दिया। और इसी तरह की एक तख़्ती शाही ख़ज़ाने में भी महफूज़ करा दी। कुछ दिनों के बा'द दक़यानूस बादशाह मर गया और सल्तनतें बदलती रहीं। यहां तक कि एक नेक दिल और इन्साफ़ परवर बादशाह जिस का नाम “बेदरूस” था, तख़्त नशीन हुवा जिस ने अड़सठ साल तक बहुत शानो शौकत के साथ हुकूमत की। उस के दौर में मज़हबी फ़िरका बन्दी शुरू हो गई और बा'ज़ लोग मरने के बा'द उठने और क़ियामत का इन्कार करने लगे। कौम का येह हाल देख कर बादशाह रंजो ग़म में डूब गया और वोह तन्हाई में एक मकान के अन्दर बन्द हो कर खुदावन्दे कुद्ूस **عَزَّوَجَلَّ** के दरबार में निहायत बे क़रारी के साथ गिर्या व ज़ारी कर के दुआएं मांगने लगा कि या **اَللّٰهُمَّ** **عَزَّوَجَلَّ** कोई ऐसी निशानी ज़ाहिर फ़रमा दे ताकि लोगों को मरने के बा'द ज़िन्दा हो कर उठने और क़ियामत का यकीन हो जाए। बादशाह की येह दुआ मक्बूल हो गई और अचानक बकरियों के एक चरवाहे ने अपनी बकरियों को ठहराने के लिये उसी ग़ार को मुन्तख़ब किया और दीवार को गिरा दिया। दीवार गिरते ही लोगों पर ऐसी हैबत व दहशत सुवार हो गई कि दीवार गिराने वाले लर्जा बरअन्दाम हो कर वहां से भाग गए और अस्हाबे कहफ़ ब हुक्मे इलाही अपनी नींद से बेदार हो कर उठ बैठे और एक दूसरे से सलाम व कलाम में मशगूल हो गए और नमाज़ भी अदा कर ली। जब इन लोगों को भूक लगी तो इन लोगों ने अपने एक साथी यमलीखा से कहा कि तुम बाज़ार जा कर कुछ खाना लाओ और निहायत ख़ामोशी से येह भी मा'लूम करो कि “दक़यानूस” हम लोगों के बारे में क्या इरादा रखता है? “यमलीखा” ग़ार से निकल कर बाज़ार गए और येह देख कर हैरान रह गए कि शहर में हर तरफ़ इस्लाम का चर्चा है और लोग ए'लानिय्या हज़रते ईसा **عَلَيْهِ السَّلَام** का कलिमा पढ़ रहे हैं। यमलीखा येह

मन्ज़र देख कर महवे हैरत हो गए कि इलाही येह माजरा क्या है ? कि इस शहर में तो ईमान व इस्लाम का नाम लेना भी जुर्म था आज येह इन्क़िलाब कहां से और क्यों कर आ गया ?

फिर येह एक नानबाई की दुकान पर खाना लेने गए और दक़यानूसी ज़माने का रुपिया दुकानदार को दिया जिस का चलन बन्द हो चुका था बल्कि कोई इस सिक्के का देखने वाला भी बाकी नहीं रह गया था । दुकानदार को शुबा हुवा कि शायद इस शख्स को कोई पुराना ख़ज़ाना मिल गया है चुनान्चे, दुकानदार ने इन को हुक्काम के सिपुर्द कर दिया और हुक्काम ने इन से ख़ज़ाने के बारे में पूछ गछ शुरूअ कर दी और कहा कि बताओ ख़ज़ाना कहां है ? “यमलीखा” ने कहा कि कोई ख़ज़ाना नहीं है । येह हमारा ही रुपिया है । हुक्काम ने कहा कि हम किस तरह मान लें कि रुपिया तुम्हारा है ? येह सिक्का तीन सो बरस पुराना है और बरसों गुज़र गए कि इस सिक्के का चलन बन्द हो गया और तुम अभी जवान हो । लिहाज़ा साफ़ साफ़ बताओ कि येह उक़दा हल हो जाए । येह सुन कर यमलीखा ने कहा कि तुम लोग येह बताओ कि दक़यानूस बादशाह का क्या हाल है ? हुक्काम ने कहा कि आज रूए ज़मीन पर इस नाम का कोई बादशाह नहीं है । हां सेंकड़ों बरस गुज़रे कि इस नाम का एक बे ईमान बादशाह गुज़रा है जो बुत परस्त था । “यमलीखा” ने कहा कि अभी कल ही तो हम लोग उस के ख़ौफ़ से अपने ईमान और जान को बचा कर भागे हैं । मेरे साथी क़रीब ही के एक ग़ार में मौजूद हैं । तुम लोग मेरे साथ चलो मैं तुम लोगों को उन से मिला दूँ । चुनान्चे, हुक्काम और अमाइदीने शहर क़बीर ता'दाद में उस ग़ार के पास पहुंचे । अस्हाबे कहफ़ “यमलीखा” के इन्तिज़ार में थे । जब इन की वापसी में देर हुई तो उन लोगों ने येह ख़याल कर लिया कि शायद यमलीखा गिरिफ़्तार हो गए और जब ग़ार के मुंह पर बहुत से आदमियों का शोरो गौगा इन लोगों ने सुना तो समझ बैठे कि ग़ालिबन दक़यानूस की फ़ौज हमारी गिरिफ़्तारी के लिये आन पहुंची है । तो येह लोग निहायत इख़्लास के साथ ज़िन्ने इलाही और तौबा व इस्तिग़फ़ार में मशगूल हो गए ।

हुक्काम ने ग़ार पर पहुंच कर तांबे का सन्दूक बर आमद किया और उस के अन्दर से तख्ती निकाल कर पढ़ा तो उस तख्ती पर अस्हाबे कहफ़ का नाम लिखा था और येह भी तहरीर था कि येह मोमिनों की जमाअत अपने दीन की हिफ़ाज़त के लिये दक़यानूस बादशाह के ख़ौफ़ से इस ग़ार में पनाह गुज़ीं हुई हैं। तो दक़यानूस ने ख़बर पा कर एक दीवार से इन लोगों को ग़ार में बन्द कर दिया है। हम येह हाल इस लिये लिखते हैं कि जब कभी भी येह ग़ार खुले तो लोग अस्हाबे कहफ़ के हाल पर मुत्तलअ हो जाएं। हुक्काम तख्ती की इबारत पढ़ कर हैरान रह गए। और इन लोगों ने अपने बादशाह “बेदरूस” को इस वाक़िए की इत्तिलाअ दी। फ़ौरन ही बेदरूस बादशाह अपने उमरा और अज़ाइदीने शहर को साथ ले कर ग़ार के पास पहुंचा तो अस्हाबे कहफ़ ने ग़ार से निकल कर बादशाह से मुआनका किया और अपनी सरगुज़िशत बयान की। बेदरूस बादशाह सजदे में गिर कर खुदावन्दे कुदूस का शुक्र अदा करने लगा कि मेरी दुआ क़बूल हो गई और **अल्लाह** तआला ने ऐसी निशानी ज़ाहिर कर दी जिस से मौत के बा’द ज़िन्दा हो कर उठने का हर शख्स को यकीन हो गया। अस्हाबे कहफ़ बादशाह को दुआएं देने लगे कि **अल्लाह** तआला तुम्हारी बादशाही की हिफ़ाज़त फ़रमाए। अब हम तुम्हें **अल्लाह** के सिपुर्द करते हैं। फिर अस्हाबे कहफ़ ने **अल्लाह** कहा और ग़ार के अन्दर चले गए और सो गए और इसी हालत में **अल्लाह** तआला ने उन लोगों को वफ़ात दे दी। बादशाह बेदरूस ने साल की लकड़ी का सन्दूक बनवा कर अस्हाबे कहफ़ की मुक़द्दस लाशों को इस में रखवा दिया और **अल्लाह** तआला ने अस्हाबे कहफ़ का ऐसा रो’ब लोगों के दिलों में पैदा कर दिया कि किसी की येह मजाल नहीं कि ग़ार के मुंह तक जा सके। इस तरह अस्हाबे कहफ़ की लाशों की हिफ़ाज़त का **अल्लाह** तआला ने सामान कर दिया। फिर बेदरूस बादशाह ने ग़ार के मुंह पर एक मस्जिद बनवा दी और सालाना एक दिन मुक़र्रर कर दिया कि तमाम शहर वाले इस दिन ईद की तरह ज़ियारत के लिये आया करें।

(ख़ाज़न, ज ३, १९८-२००)

**अस्हाबे कहफ़ की ता’दाद :-** अस्हाबे कहफ़ की ता’दाद में जब लोगों का इख़्तिलाफ़ हुवा तो येह आयत नाज़िल हुई :

قُلْ رَبِّي أَعْلَمُ بِعَدَّتِهِمْ مَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيلٌ ۖ (پ ۱۵، الکہف: ۲۲)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** तुम फ़रमाओ मेरा रब उन की गिनती ख़ूब जानता है उन्हें नहीं जानते मगर थोड़े ।

हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि मैं उन्हीं कम लोगों में से हूँ जो अस्हाबे कहफ़ की ता'दाद को जानते हैं । फिर आप ने फ़रमाया कि अस्हाबे कहफ़ की ता'दाद सात है । और आठवां उन का कुत्ता है ।

(तफ़ीर सादी، ج ۴، ص ۱۹۱، ۱۵، الکہف: ۲۲)

कुरआने मजीद में **अल्लाह** तआला ने अस्हाबे कहफ़ का हाल बयान फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया कि

أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحَابَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيمِ ۖ كَانُوا مِنْ آيَاتِنَا عَجَبًا ۚ إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوا رَبَّنَا آتِنَا مِنْ لَدُنْكَ رَحْمَةً وَهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا ۝ فَصَرَبْنَا عَلَى إِذْنِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا ۝ ثُمَّ بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ أَيُّ الْحِزْبَيْنِ أَحْطَىٰ بِمَا لَبِئْتُ أَمَدًا ۝ نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُم بِالْحَقِّ ۚ إِنَّهُمْ فِتْيَةٌ آمَنُوا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنَاهُمْ هُدًى ۝ (پ ۱۵، الکہف: ۹-۱۳)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** क्या तुम्हें मा'लूम हुआ कि पहाड़ की खो और जंगल के किनारे वाले हमारी एक अजीब निशानी थे । जब उन जवानों ने ग़ार में पनाह ली फिर बोले ऐ हमारे रब हमें अपने पास से रहमत दे और हमारे काम में हमारे लिये राहयाबी (राह पाने) के सामान कर । तो हम ने उस ग़ार में उन के कानों पर गिनती के कई बरस थपका फिर हम ने उन्हें जगाया कि देखें दो गुरौहों में कौन उन के ठहरने की मुद्दत ज़ियादा ठीक बताता है हम उन का ठीक ठीक हाल तुम्हें सुनाएं वोह कुछ जवान थे कि अपने रब पर ईमान लाए और हम ने उन को हिदायत बढ़ाई ।

इस से अगली आयतों में **अल्लाह** तआला ने अस्हाबे कहफ़ का पूरा पूरा हाल बयान फ़रमाया है कि जिस को हम पहले ही तहरीर कर चुके हैं ।



**अस्हाबे कहफ़ के नाम :-** इन के नामों में भी बहुत इख़्तिलाफ़ है। हज़रते अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि इन के नाम ये हैं। यमलीखा, मकशलीना, मशलीना, मरनूश, दबरनूश, शाज़नूश और सातवां चरवाहा था जो इन लोगों के साथ हो गया था। हज़रते अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने उस का ज़िक्र नहीं फ़रमाया। और इन लोगों के कुत्ते का नाम “क़ितमीर” था और इन लोगों के शहर का नाम “उफ़सूस” था और ज़ालिम बादशाह का नाम “दक़यानूस” था। (مدارك التنزيل، ج ۳، ص ۲۰۶، ۱۵۵، الکھف: ۲۲)

और तफ़्सीरे सावी में लिखा है कि अस्हाबे कहफ़ के नाम ये हैं। मकसमलीना, यमलीखा, तूनस, नैनूस, सारियूनस, ज़ूनवानस, फ़लस्त तयूनस, येह आख़िरी चरवाहे थे जो रास्ते में साथ हो लिये थे और इन लोगों के कुत्ते का नाम “क़ितमीर” था। (صاوی، ج ۴، ص ۱۹۱، ۱۵۵، الکھف: ۲۲)

**अस्हाबे कहफ़ के नामों के ख़वास :-** हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि अस्हाबे कहफ़ के नामों का ता'वीज़ नव कामों के लिये फ़ाइदे मन्द है।

- (1) भागे हुवे को बुलाने के लिये और दुश्मनों से बच कर भागने के लिये।
- (2) आग बुझाने के लिये कपड़े पर लिख कर आग में डाल दें (3) बच्चों के रोने और तीसरे दिन आने वाले बुख़ार के लिये। (4) दर्दे सर के लिये दाएं बाजू पर बांधें। (5) उम्मुस्सिबयान के लिये गले में पहनाएं। (6) खुश्की और समन्दर में सफ़र महफूज़ होने के लिये। (7) माल की हिफ़ाज़त के लिये। (8) अक्ल बढ़ने के लिये। (9) गुनहगारों की नजात के लिये। (صاوی، ج ۴، ص ۱۹۱، ۱۵۵، الکھف: ۲۲)

**अस्हाबे कहफ़ कितने दिनों तक सोते रहे :-** जब कुरआन की आयत

وَلَقَدْ أَتَوْا فِي كَهْفِهِمْ ثَلَاثَ مِائَةٍ سِنِينَ وَازْدَادُوا تِسْعًا ﴿۲۵﴾ (پ ۱، الکھف: ۲۵)

(और वोह अपने ग़ार में तीन सो बरस ठहरे नव ऊपर) नाज़िल हुई। तो कुफ़्फ़र कहने लगे कि हम तीन सो बरस के मुतअल्लिक़ तो जानते हैं कि अस्हाबे कहफ़ इतनी मुद्दत तक ग़ार में रहे मगर हम नव बरस को नहीं जानते

तो हुज़ुरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया कि तुम लोग शम्सी साल जोड़ रहे हो और कुरआने मजीद ने क़मरी साल के हिसाब से मुद्दत बयान की है और शम्सी साल के हर सो बरस में तीन साल क़मरी बढ़ जाते हैं।

(صاوی، ج ۲، ص ۱۹۳، ۱، ۵، الکھف: ۲۵)

**दर्से हिदायत :-** ﴿1﴾ मरने के बा'द ज़िन्दा हो कर उठना हक़ है और अस्हाबे कहफ़ का वाकिअ़ा इस की निशानी और दलील है। जो कुरआने मजीद में मौजूद है।

﴿2﴾ जो अपने दीनो ईमान की हिफ़ाज़त के लिये अपना वतन छोड़ कर हिजरत करता है **अल्लाह** तआला ग़ैब से उस की हिफ़ाज़त का ऐसा ऐसा सामान फ़रमा देता है कि कोई इस को सोच भी नहीं सकता।

﴿3﴾ अल्लाह वालों के नामों में बरकत और नफ़अ़ बख़्श ताषीरात होती हैं।

﴿4﴾ बेदरूस एक ईमानदार और नेक दिल बादशाह ने अस्हाबे कहफ़ के ग़ार की ज़ियारत के लिये सालाना एक दिन मुक़र्रर किया। इस से मा'लूम हुवा कि बुजुर्गाने दीन के उर्स का दस्तूर बहुत क़दीम ज़माने से चला आ रहा है।

﴿5﴾ बुजुर्गों के मज़ारों के पास मस्जिदे ता'मीर करना और वहां इबादत करना भी बहुत पुराना मुबारक तरीक़ा है क्यूंकि बेदरूस बादशाह ने अस्हाबे कहफ़ के ग़ार के पास एक मस्जिद बना दी थी जिस का ज़िक़्र कुरआने मजीद की सूरए कहफ़ में है। (والله تعالی اعلم)

### ﴿38﴾ सफ़रे मजमउल बहरैन की झलकियां

एक रिवायत है कि जब फ़िरऔन मअ़ अपने लश्कर के दरयाए नील में ग़र्क़ हो गया और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को बनी इस्राईल के साथ मिस्र में क़रार नसीब हुवा तो एक दिन मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का **अल्लाह** तआला से इस तरह मुक़ालमा शुरू हुवा।

हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام : खुदावन्द ! तेरे बन्दों में सब से ज़ियादा तुझ को महबूब कौन सा बन्दा है ?

अल्लाह तआला : जो मेरा जिक्र करता है और मुझे कभी फ़रामोश न करे ।

हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام : सब से बेहतर फैसला करने वाला कौन है ?

अल्लाह तआला : जो हक़ के साथ फैसला करे और कभी भी ख़्वाहिशे इन्सान की पैरवी न करे

हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام : तेरे बन्दों में सब से ज़ियादा इल्म वाला कौन है ?

अल्लाह तआला : जो हमेशा अपने इल्म के साथ दूसरों से इल्म सीखता रहे ताकि इस तरह उसे कोई ऐसी बात मिल जाए जो उसे हिदायत की तरफ़ राहनुमाई करे या उस को हलाकत से बचा ले ।

हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام : अगर तेरे बन्दों में कोई मुझ से ज़ियादा इल्म वाला हो तो मुझे उस का पता बता दे ?

अल्लाह तआला : “ख़िज़्र” तुम से ज़ियादा इल्म वाले हैं ।

हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام : मैं उन्हें कहां तलाश करूं ?

अल्लाह तआला : साहिले समन्दर पर चट्टान के पास ।

हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام : मैं वहां कैसे और किस तरह पहुंचूं ?

अल्लाह तआला : तुम एक टोकरी में एक मछली ले कर सफ़र करो । जहां वोह मछली गुम हो जाए बस वहीं ख़िज़्र से तुम्हारी मुलाकात होगी ।

(مدارک التنزیل، ج ۳، ص ۲۱، ۱۵، الکهف: ۶۰)

इस के बा'द हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने खादिम और शागिर्द

हज़रते यूशअ बिन नून बिन अफ़राईम बिन यूसुफ़ (عَلَيْهِمُ السَّلَام) को अपना

रफ़ीके सफ़र बना कर “मजमउल बहरैन” का सफ़र फ़रमाया। हज़रते मूसा عليه السلام चलते चलते जब बहुत दूर चले गए तो एक जगह सो गए। उसी जगह मछली टोकरी में से तड़प कर समन्दर में कूद गई। और जिस जगह पानी में डूबी वहां पानी में एक सूराख़ बन गया। हज़रते मूसा عليه السلام नींद से बेदार हो कर चलने लगे। जब दोपहर के खाने का वक़्त हुवा तो आप ने अपने शागिर्द हज़रते यूशअ बिन नून عليه السلام से मछली त़लब फ़रमाई तो उन्होंने ने अर्ज़ किया कि चट्टान के पास जहां आप सो गए थे, मछली कूद कर समन्दर में चली गई और मैं आप को बताना भूल गया। आप ने फ़रमाया कि हमें तो उस जगह ही की तलाश थी। बहर हाल फिर आप अपने क़दमों के निशानात को तलाश करते हुवे उस जगह पहुंच गए जहां हज़रते ख़िज़्र عليه السلام से मुलाक़ात की जगह बताई गई थी।

वहां पहुंच कर हज़रते मूसा عليه السلام ने देखा कि एक बुजुर्ग कपड़ों में लिपटे हुवे बैठे हैं। जब हज़रते मूसा عليه السلام ने उन को सलाम किया तो उन्होंने ने तअज्जुब से फ़रमाया कि इस ज़मीन में सलाम करने वाले कहां से आ गए ? फिर उन्होंने ने पूछा कि आप कौन हैं ? तो आप ने फ़रमाया कि मैं “मूसा” हूं। तो उन्होंने ने दरयाफ़्त किया कि कौन मूसा ? क्या आप बनी इस्राईल के मूसा हैं ? तो आप ने फ़रमाया कि जी हां ! तो हज़रते ख़िज़्र عليه السلام ने कहा कि ऐ मूसा ! मुझे **अल्लाह** तआला ने एक ऐसा इल्म दिया है कि जिस को आप नहीं जानते। और आप को **अल्लाह** तआला ने ऐसा इल्म दिया कि जिस को मैं नहीं जानता। मतलब येह था कि मैं इल्मे “असरार” जानता हूं। जिस का आप को इल्म नहीं और आप “इल्मुशशराएअ” जानते हैं जिस को मैं नहीं जानता।

फिर हज़रते मूसा عليه السلام ने फ़रमाया कि ऐ ख़िज़्र ! क्या आप मुझे इस की इजाज़त देते हैं कि मैं आप के पीछे पीछे चलूं ताकि **अल्लाह** तआला ने आप को जो उ़लूम दिये हैं आप कुछ मुझे भी ता’लीम दें।

तो हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा कि आप मेरे साथ सब्र न कर सकेंगे। हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि मैं ان شاء الله تعالى सब्र करूंगा। और कभी भी कोई नाफ़रमानी नहीं करूंगा। हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा कि शर्त यह है कि आप मुझ से किसी बात के मुतअल्लिक कोई सुवाल न करें। यहां तक कि मैं खुद आप को बता दूं। गरज़ इस अहदो मुआहदे के बा'द हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने हज़रते मूसा और यूशअ बिन नून (عَلَيْهِمُ السَّلَام) को अपने साथ ले कर समन्दर के किनारे किनारे चलना शुरूअ कर दिया। यहां तक कि एक कश्ती पर नज़र पड़ी। और कश्ती वालों ने इन तीनों साहिबान को कश्ती पर सुवार कर लिया और कश्ती का किराया भी नहीं मांगा। जब यह लोग कश्ती में बैठ गए तो हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने झोले में से कुलहाड़ी निकाली और कश्ती को फाड़ कर उस का एक तख़्ता निकाल कर समन्दर में फेंक दिया। यह मन्ज़र देख कर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام बरदाश्त न कर सके और हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام से यह सुवाल कर बैठे कि

أَخْرَقْتَهُمُ أَهْلَهُمْ لَقَدْ جُئْتُ شَيْئًا مَرًّا ④ (प १५, الکھف: ८१)

**तर्जमाए कन्ज़ुल ईमान :-** क्या तुम ने इसे इस लिये चीरा कि इस के सुवारों को डुबा दो बेशक यह तुम ने बुरी बात की।

हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा कि क्या मैं ने आप से कह नहीं दिया था कि आप मेरे साथ सब्र न कर सकेंगे। हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने मा'ज़िरत करते हुवे फ़रमाया कि मैं ने भूल कर सुवाल कर दिया। लिहाज़ा आप मेरी भूल पर गिरिफ़्त न कीजिये और मेरे काम में मुश्किल न डालिये।

फिर यह हज़रात कुछ दूर आगे को चले। तो हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने एक नाबालिग़ बच्चे को देखा जो अपने मां बाप का एक लौता बेटा था। हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने गला दबा कर और ज़मीन पर पटक कर उस बच्चे को क़त्ल कर डाला ! यह होशरुबा ख़ूनी मन्ज़र देख कर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام में सब्र की ताब न रही और आप ने ज़रा सख़्त लहजे में हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام से कह दिया :

أَقْتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةً بِغَيْرِ نَفْسٍ ۖ لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا كَثِيرًا ﴿٤٧﴾ (پ ۱۵، الکہف: ۴۷)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** मूसा ने कहा क्या तुम ने एक सुथरी जान बे किसी जान के बदले क़त्ल कर दी बेशक तुम ने बहुत बुरी बात की ।

हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने फिर येही जवाब दिया कि क्या मैं ने आप से येह नहीं कह दिया था कि आप हरगिज़ मेरे साथ सब्र न कर सकेगें । हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि अच्छा अब अगर इस के बा'द मैं आप से कुछ पूछूँ तो आप मेरे साथ न रहियेगा । इस में शक नहीं कि मेरी तरफ़ से आप का उज़्र पूरा हो चुका है ।

फिर इस के बा'द इन हज़रात ने साथ साथ चलना शुरू कर दिया । यहां तक कि येह लोग एक गाऊं में पहुंचे और गाऊं वालों से खाना त़लब किया । मगर गाऊं वालों में से किसी ने भी इन सालेहीन की दा'वत नहीं की । फिर इन दोनों ने गाऊं में एक गिरती हुई दीवार पाई तो हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने इस्मे आ'ज़म पढ़ कर दीवार सीधी कर दी । हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام गाऊं वालों की बद अख़लाकी से बेज़ार थे ही, आप को गुस्सा आ गया, बरदाश्त न कर सके और येह फ़रमाया :

لَوْ شِئْتُ لَنَعَذَّبَ عَلَيْكَ أَجْرًا ﴿٤٨﴾ (پ १६، الکہف: ४८)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** तुम चाहते तो इस पर कुछ मज़दूरी ले लेते ।

येह सुन कर हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ने कह दिया कि अब मेरे और आप के दरमियान जुदाई है और जिन चीज़ों को देख कर आप सब्र न कर सके उन का राज़ अब मैं आप को बता दूंगा । सुनिये जो कशती मैं ने फाड़ डाली वोह चन्द मिस्कीनों की थी जिस की आमदनी से वोह लोग गुज़र बसर करते थे और आगे एक ज़ालिम बादशाह रहता था जो सालिम और अच्छी कशितयों को छीन लिया करता था और ऐबदार कशितयों को छोड़ दिया करता था तो मैं ने क़स्दन एक तख़्ता निकाल कर उस कशती को ऐबदार कर दिया ताकि ज़ालिम बादशाह के ग़ज़ब से महफूज़ रहे । और जिस लड़के को मैं ने क़त्ल कर दिया उस के वालिदैन् बहुत नेक और सालेह थे । और येह लड़का पैदाइशी काफ़िर था और वालिदैन् उस लड़के

से बे पनाह महबूबत करते थे और उस की हर ख्वाहिश पूरी करते थे तो हमें येह खौफ़ व ख़तरा नज़र आया कि वोह लड़का कहीं अपने वालिदैन् को भी कुफ़्र में न मुब्तला कर दे। इस लिये मैं ने उस लड़के को क़त्ल कर के उस के वालिदैन् को कुफ़्र से बचा लिया। अब उस के वालिदैन् सब्र करेंगे तो **अल्लाह** तआला उस लड़के के बदले में उस के वालिदैन् को एक बेटी अता फ़रमाएगा, जो एक नबी से बियाही जाएगी और उस के शिकम से एक नबी पैदा होगा जो एक उम्मत को हिदायत करेगा। और गिरती हुई दीवार को सीधी करने का राज़ येह था कि येह दीवार दो यतीम बच्चों की थी जिस के नीचे इन दोनों का ख़ज़ाना था और इन दोनों का बाप एक सालेह और नेक आदमी था। अगर अभी येह दीवार गिर जाती तो इन यतीमों का ख़ज़ाना गाऊं वाले ले लेते। इस लिये आप के परवर दगार ने येह चाहा कि येह दोनों यतीम बच्चे जवान हो कर अपना ख़ज़ाना खुद निकाल लें, इस लिये अभी मैं ने दीवार को गिरने नहीं दिया। येह खुदावन्दे तआला की इन बच्चों पर मेहरबानी है और ऐ मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** आप यकीन व इत्मीनान रखें कि मैं ने जो कुछ भी किया है अपनी तरफ़ से नहीं किया है बल्कि मैं ने येह सब कुछ **अल्लाह** तआला के हुक्म से किया है। इस के बा'द हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** अपने वतन वापस चले आए।

(مدارک التنزیل، ج ۳، ص ۲۱۹-۲۲۱، پ ۱۵-۱۶، الکھف ملخصاً)

**हज़रते ख़िज़्र **عَلَيْهِ السَّلَام** का तआलफ़**:- हज़रते ख़िज़्र **عَلَيْهِ السَّلَام** की कुन्यत अबुल अब्बास और नाम “बलया” और उन के वालिद का नाम “मलकान” है। “बलया” सिरयानी ज़बान का लफ़्ज़ है। अरबी ज़मान में इस का तर्जमा “अहमद” है। “ख़िज़्र” इन का लक़ब है और इस लफ़्ज़ को तीन तरह से पढ़ सकते हैं। ख़ज़िर, ख़ज़्र, ख़िज़्र, “ख़िज़्र” के मा'ना सब्ज़ चीज़ के हैं। येह जहां बैठते थे वहां आप की बरकत से हरी हरी घास उग जाती थी इस लिये लोग इन को “ख़िज़्र” कहने लगे।

येह बहुत ही अली ख़ानदान हैं। और इन के आबाओ अजदाद बादशाह थे। बा'ज अरिफ़ीन ने फ़रमाया कि जो मुसलमान इन का और



इन के वालिद का नाम और इन की कुन्यत याद रखेगा, 'ان شاء الله تعالى' उस का ख़ातिमा ईमान पर होगा। (صاوی، ج ۴، ص ۲۰۷، پ ۱۵، الکھف: ۶۵)

**हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ज़िन्दा वली हैं :-** बा'ज लोगों ने हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام को नबी बताया है लेकिन अक़षर उ-लमा का क़ौल यह है कि आप वली हैं। (جلالین، ص ۲۴۹، پ ۱۵، الکھف: ۶۵)

और जमहूर उ-लमा का येही क़ौल है कि आप अब भी ज़िन्दा हैं और क़ियामत तक ज़िन्दा रहेंगे क्यूंकि आप ने आबे हयात पी लिया है। आप के गिर्द ब क़षरत औलियाए किराम जम्अ रहते हैं और फ़ैज पाते हैं। चुनान्चे, अरिफ़ बिल्लाह हज़रते सय्यिद बिकरी ने अपने क़सीदे "दर्दुल सहर" में आप के बारे में येह तहरीर फ़रमाया है कि

حَیِّيْ وَحَقِّقْ لَمْ یَقُلْ بَوَفَاتِهِ اِلَّا الَّذِیْ لَمْ یَلْقَ نُوْرَ جَمَالِهِ  
فَعَلَيْهِ مِنْیْ کُلِّمَا هَبَّ الصَّبَا اَزْکٰی سَلَامٍ طَابَ فِیْ رِسَالِهِ

**तरे हक़ की क़सम !** कि हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام ज़िन्दा हैं उन की वफ़ात का काइल वोही होगा जो उन के नूरे जमाल से मुलाक़ात नहीं कर सका है तो मेरी तरफ़ से उन पर जब जब बादे सबा चले सुथरा सलाम हो कि पाकीज़गी के साथ बादे सबा उस को पहुंचाए।

हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام हुज़ूर ख़ातमुन्नबियीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशरफ़ हुवे हैं। इस लिये येह सहाबी भी हैं।

(صاوی، ج ۴، ص ۲۰۸، پ ۱۵، الکھف: ۶۵)

### ﴿39﴾ जुल क़रनैन और याजूज व माजूज

जुल क़रनैन का नाम "सिकन्दर" है। येह हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام के ख़ाला ज़ाद भाई हैं। हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام इन के वज़ीर और जंगलों में अलमबरदार रहे हैं। येह हज़रते साम बिन नूह عَلَيْهِ السَّلَام की अवलाद में से हैं और येह एक बुढ़िया के एक लौते फ़रज़न्द हैं। हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के दस्ते हक़ परस्त पर इस्लाम क़बूल कर के मुहत्तों

उन की सोहबत में रहे और हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने इन को कुछ वसियतें भी फ़रमाई थीं। सहीह क़ौल येही है कि येह नबी नहीं हैं बल्कि एक बन्दए सालेह हैं जो विलायत के शरफ़ से सरफ़राज़ हैं।

(صاوی، ج ۴، ص ۲۱۲، ۱۶۲، الکھف: ۸۳)

**ज़ुल करनैन क्यूं कहलाए ? :-** हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि येह जुल करनैन (दो सींगों वाले) के लक़ब से इस लिये मशहूर हो गए कि इन्हों ने दुन्या के दो सींगों या'नी दोनों किनारों का चक्कर लगाया था। और बा'ज का क़ौल है कि इन के दौर में लोगों के दो करन ख़त्म हो गए सो बरस का एक करन होता है। और बा'ज कहते हैं कि इन के दो गैसू थे इस लिये जुल करनैन कहलाते हैं। और येह भी एक क़ौल है कि इन के ताज पर दो सींग बने हुवे थे। और बा'ज इस के काइल हैं कि खुद इन के सर पर दोनों तरफ़ उभार था जो सींग जैसा नज़र आता था और बा'जों ने येह वजह बताई कि चूंकि इन के बाप और मां नजीबुत्तरफ़ैन और शरीफ़ जादे थे इस लिये लोग इन को जुल करनैन कहने लगे। (والله تعالیٰ اعلم)

(مدارک التنزیل، ج ۴، ص ۲۲۲، ۱۶۲، الکھف: ۸۳)

**अल्लाह** तअ़ाला ने उन को तमाम रूए ज़मीन की बादशाही अता फ़रमाई थी। दुन्या में कुल चार बादशाह ऐसे हुवे हैं जिन को पूरी ज़मीन की पूरी बादशाही मिली। इन में दो मोअमिनीन थे और दो काफ़िर। मोमिन तो हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام और जुल करनैन हैं और काफ़िर एक बख़्ते नस्र और दूसरा नमरूद है। और तमाम रूए ज़मीन के एक पांचवें बादशाह इस उम्मत में होने वाले हैं जिन का इस्मे गिरामी हज़रते इमाम महदी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ है।

**ज़ुल करनैन के तीन सफ़र :-** (صاوی، ج ۴، ص ۲۱۲، ۱۶۲، الکھف: ۸۳)

कुरआने मजीद में हज़रते जुल करनैन के तीन सफ़रों का हाल बयान हुवा है जो सूरए कहफ़ में है। हम कुरआने मजीद ही से इन तीनों सफ़रों का हाल तहरीर करते हैं, जिन की रूदाद बहुत ही अज़ीब और इब्रत खैज़ है।

**पहला सफ़र :-** हज़रते जुल करनैन ने पुरानी किताबों में पढ़ा था कि साम बिन नूह عليه السلام की अवलाद में से एक शख्स आबे हयात के चश्मे से पानी पी लेगा तो उस को मौत न आएगी। इस लिये हज़रते जुल करनैन ने मग़रिब का सफ़र किया। आप के साथ हज़रते ख़िज़्र عليه السلام भी थे वोह तो आबे हयात के चश्मे पर पहुंच गए और उस का पानी भी पी लिया मगर हज़रते जुल करनैन के मुक़द्दर में नहीं था, वोह महरूम रह गए। इस सफ़र में आप जानिबे मग़रिब रवाना हुवे तो जहां तक आबादी का नामो निशान है वोह सब मन्ज़िलें तै कर के आप एक ऐसे मक़ाम पर पहुंचे कि उन्हें सूरज गुरूब के वक़्त ऐसा नज़र आया कि वोह एक सियाह चश्मे में डूब रहा है। जैसा कि समन्दरी सफ़र करने वालों को आफ़ताब समन्दर के काले पानी में डूबता नज़र आता है। वहां उन को एक ऐसी क़ौम मिली जो जानवरों की खाल पहने हुवे थी। इस के सिवा कोई दूसरा लिबास उन के बदन पर नहीं था और दरयाई मुर्दा जानवरों के सिवा उन की ग़िज़ा का कोई दूसरा सामान नहीं था। येह क़ौम “**नासिक**” कहलाती थी। हज़रते जुल करनैन ने देखा कि इन के लश्कर बेशुमार हैं और येह लोग बहुत ही ताक़तवर और जंग जू हैं। तो हज़रते जुल करनैन ने इन लोगों के गिर्द अपनी फ़ौजों का घेरा डाल कर इन लोगों को बेबस कर दिया। चुनान्चे, कुछ तो मुशरफ़ ब ईमान हो गए और कुछ आप की फ़ौजों के हाथों मक्तूल हो गए।

**दूसरा सफ़र :-** फिर आप ने मशरिफ़ का सफ़र फ़रमाया यहां तक कि जब सूरज तुलूअ होने की जगह पहुंचे तो येह देखा कि वहां एक ऐसी क़ौम है जिन के पास कोई इमारत और मकानात नहीं हैं। उन लोगों का येह हाल था कि सूरज तुलूअ होने के वक़्त येह लोग ज़मीन की ग़ारों में छुप जाते थे। और सूरज ढल जाने के बा'द ग़ारों से निकल कर अपनी रोज़ी की तलाश में लग जाते थे। येह लोग क़ौमे “**मन्सक**” कहलाते थे। हज़रते जुल करनैन ने इन लोगों के मुकाबले में भी लश्कर आराई की और जो लोग ईमान लाए उन के साथ बेहतरीन सुलूक किया और जो अपने कुफ़्र पर अड़े रहे उन को तहे तैग़ कर दिया।

**तीसरा सफ़र :-** फिर आप ने शिमाल की जानिब सफ़र फ़रमाया यहां तक कि “सदीन” (दो पहाड़ों के दरमियान) में पहुंचे तो वहां कि आबादी की अजीबो ग़रीब ज़बान थी। उन लोगों के साथ इशारों से ब मुश्किल बात चीत की जा सकती थी। उन लोगों ने हज़रते जुल क़रनैन से याजूज माजूज के मज़ालिम की शिकायत की और आप की मदद के तालिब हुवे।

**याजूज व माजूज :-** येह याफ़्फ़ बिन नूह عَلَيْهِ السَّلَام की अवलाद में से एक फ़सादी गुरौह है। और इन लोगों की ता’दाद बहुत ही ज़ियादा है। येह लोग बला के जंगजूं खूँख़्वार और बिल्कुल ही वहशी और जंगली हैं जो बिल्कुल जानवरों की तरह रहते हैं। मौसिमे रबीअ में येह लोग अपने ग़ारों से निकल कर तमाम खेतियां और सब्जियां खा जाते थे। और खुश्क चीजों को लाद कर ले जाते थे। आदमियों और जंगली जानवरों यहां तक कि सांप, बिच्छू, गिरगिट और हर छोटे बड़े जानवर को खा जाते थे।

**सद्दे सिकन्दरी :-** हज़रते जुल क़रनैन से लोगों ने फ़रयाद की, कि आप हमें याजूज व माजूज के शर और उन की ईज़ा रसानियों से बचाइये और इन लोगों ने इन के इवज़ कुछ माल देने की भी पेशकश की तो हज़रते जुल क़रनैन ने फ़रमाया कि मुझे तुम्हारे माल की ज़रूरत नहीं है। **अल्लाह** तआला ने मुझे सब कुछ दिया है। बस तुम लोग जिस्मानी मेहनत से मेरी मदद करो। चुनान्चे, आप ने दोनों पहाड़ों के दरमियान बुन्याद खुदवाई। जब पानी निकल आया तो इस पर पिघलाए हुवे तांबे के गारे से पथ्थर जमाए गए और लोहे के तख्ते नीचे ऊपर चुन कर उन के दरमियान में लकड़ी और कोइला भरवा दिया। और उस में आग लगवा दी। इस तरह येह दीवार पहाड़ की बुलन्दी तक ऊंची कर दी गई और दोनों पहाड़ों के दरमियान कोई जगह न छोड़ी गई। फिर पिघलाया हुवा तांबा दीवार में पिला दिया गया जो सब मिल कर बहुत ही मज़बूत और निहायत मुस्तहक़म दीवार बन गई।

(خزائن العرفان، ص ۵۴۷-۵۴۸، ۱، الکهف: ۸۶ تا ۹۸)

कुरआने मजीद की सूरए कहफ़ में **حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ** से **حُجُورًا ۝** तक **ثُمَّ أَوْتِكُمْ سَيِّبًا ۝** पहले सफ़र का ज़िक्र है फिर **وَمِنْ أَمْرِنَا يُسْرًا ۝** दूसरे सफ़र का तज़क़िरा है और **ثُمَّ أَوْتِكُمْ سَيِّبًا ۝** से **وَكَانَ وَعْدُ رَبِّكَ حَقًّا ۝** तक तीसरे सफ़र की रूदाद है।

**सदे सिकन्दरी कब टूटेगी ? :-** हदीष शरीफ़ में है कि याजूज व माजूज रोज़ाना इस दीवार को तोड़ते हैं और दिन भर जब मेहनत करते करते इस को तोड़ने के करीब हो जाते हैं तो इन में से कोई कहता है कि अब चलो बाकी को कल तोड़ डालेंगे। दूसरे दिन जब वोह लोग आते हैं तो खुदा के हुक्म से वोह दीवार पहले से भी ज़ियादा मज़बूत हो जाती है जब इस दीवार के टूटने का वक़्त आएगा तो इन में से कोई कहेगा कि अब चलो। **ان شاء الله تعالى** कल इस दीवार को तोड़ डालेंगे। इन लोगों के **ان شاء الله تعالى** कहने की बरकत और इस कलिमे का येह घमरा होगा कि दूसरे दिन दीवार टूट जाएगी। येह कियामत करीब होने का वक़्त होगा। दीवार टूटने के बा'द याजूज व माजूज निकल पड़ेंगे और ज़मीन में हर तरफ़ फ़ितना व फ़साद और क़त्लो ग़ारत करेंगे। चश्मों और तालाबों का पानी पी डालेंगे और जानवरों और दरख़्तों को खा डालेंगे। ज़मीन पर हर जग़हों में फैल जाएंगे। मगर मक्कए मुकर्रमा व मदीनए तय्यिबा व बैतुल मुक़द्दस इन तीनों शहरों में येह दाख़िल न हो सकेंगे। फिर हज़रते ईसा **عَلَيْهِ السَّلَام** की दुआ से उन लोगों की गर्दनो में कीड़े पैदा हो जाएंगे और येह सब के सब हलाक हो जाएंगे। कुरआने मजीद में है :

**حَتَّىٰ إِذَا فُتِحَتْ يَأْجُوجُ وَمَأْجُوجُ وَهُمْ مِنْ كُلِّ حَدَبٍ يَنْسِلُونَ ۝** (پ ۱، الانبیاء: ۹۶)  
**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** यहां तक कि जब खोले जाएंगे याजूज व माजूज और वोह हर बुलन्दी से ढलकते होंगे।

﴿40﴾ **शजरें मरयम** رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا **और नहरें जिब्रील** عَلَيْهِ السَّلَام

हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام हज़रते बीबी मरयम के शिकम से बिगैर बाप के पैदा हुवे हैं। जब विलादत का वक़्त आया तो हज़रते बीबी मरयम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا आबादी से कुछ दूर एक खजूर के सूखे दरख़्त के नीचे तन्हाई में बैठ गई और उसी दरख़्त के नीचे हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की विलादत हुई। चूंकि आप बिगैर बाप के कंवारी पाक मरयम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के शिकम से पैदा हुवे। इस लिये हज़रते मरयम बड़ी फ़िक्रमन्द और बेहद उदास थीं और बदगोई व ता'नाज़नी के खौफ़ से बस्ती में नहीं आ रही थीं। और एक ऐसी सुनसान ज़मीन में खजूर के सूखे दरख़्त के नीचे बैठी हुई थीं कि जहां खाने पीने का कोई सामान नहीं था। नागहां हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام उतर पड़े और अपनी एड़ी ज़मीन पर मार कर एक नहर जारी कर दी और अचानक खजूर का सूखा दरख़्त हरा भरा हो कर पुख़्ता फल लाया। और हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام ने हज़रते मरयम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا को पुकार कर उन से यूं कलाम फरमाया :

مَادَاهَا مِنْ تَحْتِهَا أَلَّا تَحْزَنِي قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ۖ  
وَهُزِّي إِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسْقِطُ عَلَيْكَ رَطْبًا جَنِيًّا ۝ ٤٠  
اَسْرَبِي وَقَرِّي عَيْنًا ۝ (پ ۱، مریم، ۲۲-۲۶)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** तो उसे उस के तले से पुकारा कि ग़म न खा बेशक तेरे रब ने तेरे नीचे एक नहर बहा दी है और खजूर की जड़ पकड़ कर अपनी तरफ़ हिला तुझ पर ताज़ी पकी खजूरें गिरेंगी तो खा और पी और आंख ठन्डी रख।

सूखे दरख़्त में फल लग जाना और नहर का अचानक जारी होना, बिलाशुबा येह दोनों हज़रते मरयम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की करामात हैं।

दर्से हिदायत :- इस से पहले के सफ़हात में आप पढ़ चुके हैं कि हज़रते बीबी मरयम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا जब बच्ची थीं और बैतुल मुक़द्दस की मेहराब में इबादत करती थीं तो बिगैर किसी मेहनत के वहां बिला मौसिम के फल मिला करते थे। मगर हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के पैदाइश के बा'द पकी हुई खजूरें तो हज़रते मरयम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا को ज़रूर मिलीं। लेकिन खुदावन्दे तआला का हुक्म हुवा कि खजूर की जड़ें हिलाओ तब तुम को खजूरें मिलेंगी। इस से येह सबक़ मिलता है कि आदमी जब तक साहिबे अवलाद नहीं होता तो उस को बिला मेहनत के भी रोज़ी मिल जाया करती है और वोह कहीं न कहीं खा पी लिया करता है। मगर जब आदमी साहिबे अवलाद हो जाए तो उस पर लाज़िम है कि मेहनत कर के रोज़ी हासिल करे। देखो हज़रते मरयम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا जब तक साहिबे अवलाद नहीं हुई थीं तो बिला किसी मेहनत व मशक्कत के उन के मेहराबे इबादत में फलों की रोज़ी मिला करती थी। मगर जब उन के फ़रज़न्द हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام पैदा हो गए तो अब खुदा का येह हुक्म हुवा कि खजूर के दरख़्त को हिलाओ और मेहनत करो और इस के बा'द खजूरें मिलेंगी। (والله تعالى اعلم)

### भलाई की महर और गुनाह मुआफ़

हज़रते सय्यिदुना अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ फ़रमाते हैं : जो येह दुआ मजलिस से उठते वक़्त तीन मरतबा पढ़े तो उस की ख़ताएं मिटा दी जाती हैं और जो मजलिसे ख़ैर व मजलिसे ज़िक्र में पढ़े तो उस के लिये ख़ैर (या'नी भलाई) पर मोहर लगा दी जाएगी। वोह दुआ येह है :

سُبْحَنَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ.

(अबु दाउद शरीफ़ किताब अल-अदब १/११५ ज २) (फ़ैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 176)



### ﴿41﴾ हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की पहली तक्रीर

जब हज़रते मरयम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام को गोद में ले कर बनी इस्राईल की बस्ती में तशरीफ़ लाई तो कौम ने आप पर बदकारी की तोहमत लगाई। और लोगों ने कहना शुरू कर दिया कि ऐ मरयम ! तुम ने येह बहुत बुरा काम किया। हालांकि तुम्हारे वालिदैन में तो कोई खराबी नहीं थी। और तुम्हारी मां भी बदकार नहीं थी। बिगैर शोहर के तुम्हारे लड़का कैसे हो गया ? जब कौम ने बहुत ज़ियादा ता'ना ज़नी और बदगोई की तो हज़रते मरयम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا खुद तो खामोश रहीं मगर इरशाद किया कि इस बच्चे से तुम लोग सब कुछ पूछ लो। तो लोगों ने कहा कि हम इस बच्चे से क्या और क्यों कर और किस तरह गुफ्तगू करें ? येह तो अभी बच्चा है जो पालने में पड़ा हुवा है। कौम का येह कलाम सुन कर हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने तक्रीर शुरू कर दी। जिस का जिक्र **अल्लाह** तआला ने कुरआने मजीद में यूँ फ़रमाया है :

قَالَ إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ ۖ آتَنِي الْكِتَابَ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا ۖ وَجَعَلَنِي مُبْرَكًا  
 آيِنَ مَا كُنْتُ ۖ وَأَوْصِنِي بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ۖ وَبَرًّا  
 بِوَالِدَتِي ۖ وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَبَّارًا شَقِيًّا ۖ وَالسَّلَامُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُ وَ  
 يَوْمَ أَمُوتُ وَيَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا ﴿٣١﴾ (پ ۱۶، مريم: ۳۰-۳۳)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** बच्चे ने फ़रमाया मैं हूँ **अल्लाह** का बन्दा उस ने मुझे किताब दी और मुझे ग़ैब की ख़बरें बताने वाला (नबी) किया और उस ने मुझे मुबारक किया मैं कहीं होऊँ और मुझे नमाज़ व ज़कात की ताकीद फ़रमाई जब तक जियूँ। और अपनी मां से अच्छा सुलूक करने वाला और मुझे ज़बरदस्त बद बख्त न किया और वोही सलामती मुझ पर जिस दिन मैं पैदा हुवा और जिस दिन मरूँगा और जिस दिन ज़िन्दा उठाया जाऊँगा।

**दर्से हिदायत :-** ﴿1﴾ येह हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का मो'जिज़ा है कि पैदा होते ही फ़सीह ज़बान में ऐसी जामेअ तक्रीर फ़रमाई। इस तक्रीर में सब

से पहले आप ने अपने को खुदा का बन्दा कहा। ताकि कोई उन्हें खुदा या खुदा का बेटा न कह सके। क्योंकि लोग आइन्दा आप पर तोहमत लगाने वाले थे। और येह तोहमत **अल्लाह** तआला पर लगती थी। इस लिये आप के मन्सबे रिसालत का येही तकाज़ा था कि अपनी वालिदा पर लगाई जाने वाली तोहमत को रफ़अ करने से पहले उस तोहमत को दफ़अ करें जो **अल्लाह** तआला पर लगाई जाने वाली थी। **अल्लाह अवबर !** सच है खुदावन्दे कुद्दूस जिस को नबुव्वत के शरफ़ से नवाज़ता है यकीनन उस की विलादत निहायत ही पाक और तय्यिबो त़ाहिर होती है और बचपन ही से उस की नबुव्वत के आ'ला आधार ज़ाहिर होने लगते हैं।

﴿2﴾ सूरए मरयम के इस रुकूअ में **अल्लाह** तआला ने हज़रते ईसा **عليه السلام** का पूरा ज़िक्र मीलाद शरीफ़ में बयान फ़रमाया है और आख़िर में सलाम का ज़िक्र है। इस से मा'लूम हुवा कि रसूलुल्लाह **صلّى الله تعالى عليه وآله وسلم** का मीलाद पढ़ कर आख़िर में सलातो सलाम पढ़ना येह खुद **अल्लाह** तआला की मुक़द्दस सुन्नत है और येही अहले सुन्नत व जमाअत का मुबारक अमल है।

﴿3﴾ हज़रते ईसा **عليه السلام** की मज़कूरा बाला तक्रीर से मा'लूम हुवा कि नमाज़, ज़कात और मां-बाप के साथ हुस्ने सुलूक येह ऐसे फ़राइज़ हैं जो हज़रते ईसा **عليه السلام** की शरीअत में भी फ़र्ज़ थे।

### ﴿42﴾ हज़रते इदरीस **عليه السلام**

आप का नाम “अख़नूख़” है। आप हज़रते नूह **عليه السلام** के वालिद के दादा हैं। हज़रते आदम **عليه السلام** के बा'द आप ही पहले रसूल हैं। आप के वालिद हज़रते शीष बिन आदम **عليه السلام** हैं। सब से पहले जिस शख़्स ने क़लम से लिखा वोह आप ही हैं। कपड़ों के सीने और सिले हुवे कपड़े पहनने की इब्तिदा भी आप ही से हुई। इस से पहले लोग जानवरों की खालें पहनते थे। सब से पहले हथयार बनाने वाले, तराजू और पैमाने काइम करने वाले और इल्मे नुजूम व हिसाब में नज़र फ़रमाने

वाले भी आप ही हैं। ये सब काम आप ही से शुरू हुवे। **अल्लाह** तआला ने आप पर तीस सहीफे नाज़िल फ़रमाए, और आप **अल्लाह** तआला की किताबों का ब क़रत दर्स दिया करते थे। इस लिये आप का लक़ब “इदरीस” हो गया, और आप का येह लक़ब इस क़दर मशहूर हो गया कि बहुत से लोगों को आप का अस्ली नाम मा’लूम ही नहीं। और कुरआने मजीद में भी आप का नाम “इदरीस” ही ज़िक्र किया गया है।

आप को **अल्लाह** तआला ने आस्मान पर उठा लिया है। बुख़ारी व मुस्लिम की हदीष में है कि हुज़ूरे अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने शबे मे’राज हज़रते इदरीस **عَلَيْهِ السَّلَام** को चौथे आस्मान पर देखा। हज़रते का’बुल अहबार **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** वग़ैरा से मरवी है। हज़रते इदरीस **عَلَيْهِ السَّلَام** ने मलकुल मौत से फ़रमाया कि मौत का मज़ा चखना चाहता हूं, कैसा होता है? तुम मेरी रूह क़ब्ज़ कर के दिखाओ। मलकुल मौत ने इस हुक्म की ता’मील की और रूह क़ब्ज़ कर के उसी वक़्त आप की तरफ़ लौटा दी और आप ज़िन्दा हो गए। फिर आप ने फ़रमाया कि अब मुझे जहन्नम दिखाओ ताकि ख़ौफ़े इलाही ज़ियादा हो। चुनान्चे, येह भी किया गया जहन्नम को देख कर आप ने दारोगए जहन्नम से फ़रमाया कि दरवाज़ा खोलो, मैं उस दरवाज़े से गुज़रना चाहता हूं। चुनान्चे, ऐसा ही किया गया और आप इस पर से गुज़रे। फिर आप ने मलकुल मौत से फ़रमाया कि मुझे जन्नत दिखाओ, वोह आप को जन्नत में ले गए। आप दरवाज़ों को खुलवा कर जन्नत में दाख़िल हुवे। थोड़ी देर इन्तिज़ार के बा’द मलकुल मौत ने कहा कि अब आप अपने मक़ाम पर तशरीफ़ ले चलिये। आप ने फ़रमाया कि अब मैं यहां से कहीं नहीं जाऊंगा। **अल्लाह** तआला ने फ़रमाया है कि **كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ** तो मौत का मज़ा मैं चख ही चुका हूं और **अल्लाह** तआला ने येह फ़रमाया है कि **وَأَنْ مِّنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا** कि हर शख्स को जहन्नम पर गुज़रना है तो मैं गुज़र चुका। अब मैं जन्नत में पहुंच गया और जन्नत में पहुंचने वालों के लिये खुदावन्दे कुदूस ने येह फ़रमाया

है कि وَمَا هُمْ مِنْهَا بِمُخْرِجِينَ कि जन्नत में दाखिल होने वाले जन्नत से निकाले नहीं जाएंगे। अब मुझे जन्नत से चलने के लिये क्यों कहते हो ?

**अल्लाह** तआला ने मलकुल मौत को वहत्य भेजी कि हज़रते इदरीस (عليه السلام) ने जो कुछ किया मेरे इज़्ज से किया और वोह मेरे ही इज़्ज से जन्नत में दाखिल हुवे। लिहाज़ा तुम उन्हें छोड़ दो। वोह जन्नत ही में रहेंगे। चुनान्चे, हज़रते इदरीस (عليه السلام) आस्मानों के ऊपर जन्नत में हैं और जिन्दा हैं।  
(خزائن العرفان، ص ५५५-५५६، مريم: ५६-५८)

हज़रते इदरीस (عليه السلام) के आस्मानों पर उठाए जाने और इन को मिलने वाली ने'मतों का मुख़्तसर और इजमाली तज़क़िरा कुरआने मजीद की सूरे मरयम है :

وَإِذْ كُنَّا فِي الْكِتَابِ إِدْرِيسَ إِنَّهُ كَانَ صِدِّيقًا نَبِيًّا ۖ وَرَفَعْنَاهُ مَكَانًا عَلِيًّا ۝  
أُولَٰئِكَ الَّذِينَ أَنْعَمَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيِّينَ مِنْ ذُرِّيَةِ آدَمَ ۖ (پ १, مريم: ५६-५८)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और किताब में इदरीस को याद करो बेशक वोह सिद्दीक़ था ग़ैब की ख़बरें देता और हम ने उसे बुलन्द मकान पर उठा लिया येह हैं जिन पर **अल्लाह** ने एहसान किया ग़ैब की ख़बरें बताने वालों में से आदम की अवलाद से।

**दर्से हिदायत :-** हज़रते इदरीस (عليه السلام) के वाक़िए से येह हिदायत का सबक़ मिलता है कि **अल्लाह** तआला का रसूलों और नबियों पर कितना बड़ा फ़ज़लो करम और इन्आमो इकराम है। इस लिये हर मुसलमान के लिये वाजिबुल ईमान और लाज़िमुल अमल है कि खुदावन्दे कुहूस के रसूलों और नबियों की ता'ज़ीमो तकरीम और उन का अदबो एहतिराम रखे और इन के ज़िक़्रे जमील से ख़ैरो बरकत हासिल करता रहे। कुरआने मजीद की मुक़द्दस आयतों और हदीषों में बार बार खुदा के इन बर गुज़ीदा रसूलों और नबियों का ज़िक़्रे जमील इस बात की दलील है कि इन बुजुर्गों का ज़िक़्रे ख़ैर और तज़क़िरा मूजिबे रहमत व बाइषे ख़ैरो बरकत है। (والله تعالى اعلم)

### ﴿43﴾ दरया की मौजों से मां की गोद में

फ़िरऔन को नुजूमियों ने येह ख़बर दी थी कि बनी इस्राईल में एक ऐसा बच्चा पैदा होगा जो तेरी सल्तनत की बरबादी का सबब होगा। इस लिये फ़िरऔन ने अपनी फ़ौजों को येह हुक्म दे दिया था कि बनी इस्राईल में जो लड़का पैदा हो उस को क़त्ल कर दिया जाए इसी मुसीबत व आफ़त के दौर में हज़रते मूसा عليه السلام पैदा हुवे तो इन की वालिदा ने फ़िरऔन के ख़ौफ़ से इन को एक सन्दूक में रख कर सन्दूक को मज़बूती से बन्द कर के दरयाए नील में डाल दिया। दरया से निकल कर एक नहर फ़िरऔन के महल ही के नीचे बहती थी। येह सन्दूक दरयाए नील से बहते हुवे नहर में चला गया। इत्तिफ़ाक़ से फ़िरऔन और उस की बीवी “आसिया” दोनों महल में बैठे हुवे नहर का नज़ारा कर रहे थे। जब इन दोनों ने सन्दूक को देखा तो खुदाम को हुक्म दिया कि उस सन्दूक को निकाल कर महल में लाएं। जब सन्दूक खोला गया तो इस में से एक निहायत ख़ूब सूरत बच्चा निकला जिस के चेहरे पर हुस्नो जमाल के साथ साथ अन्वारे नबुव्वत की तजल्लियात चमक रही थीं। फ़िरऔन और आसिया दोनों इस बच्चे को देख कर दिलो जान से इस पर कुरबान होने लगे और आसिया ने फ़िरऔन से कहा कि

قَرَّتْ عَيْنِي وَلَكَ لَا تَقْتُلُوهُ عَسَىٰ أَنْ يَنْفَعَنَا أَوْ نَتَّخِذَهُ وَلَدًا  
وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ﴿٩﴾ (پ २०، القصص: ९)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** येह बच्चा मेरी और तेरी आंखों की ठन्डक है इसे क़त्ल न करो शायद येह हमें नफ़अ दे या हम इसे बेटा बना लें और वोह बे ख़बर थे।

इस पूरे वाक़िए को कुरआने मजीद ने सूरए ताहा में इस तरह बयान फ़रमाया है कि तर्जमा येह है :

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** जब हम ने तेरी मां को इल्हाम किया जो इल्हाम करना था कि इस बच्चे को सन्दूक में रख कर दरया में डाल दे तो दरया उसे किनारे पर डाले कि इसे वोह उठा ले जो मेरा दुश्मन और इस का दुश्मन है। मैं ने तुझ पर अपनी तरफ़ की महबूबत डाली और इस लिये कि तू मेरी निगाह के सामने तय्यार हो।

चूँकि अभी हज़रते मूसा عليه السلام शीर ख़वार बच्चे थे। इस लिये इन को दूध पिलाने वाली किसी औरत की तलाश हुई मगर आप किसी औरत का दूध पीते ही नहीं थे। इधर हज़रते मूसा عليه السلام की वालिदा बेहद परेशान थीं कि ना मा'लूम मेरा बच्चा कहां और किस हाल में होगा ? परेशान हो कर इन्होंने हज़रते मूसा عليه السلام की बहन “मरयम” को जुस्तजूए हाल के लिये फ़िरऔन के महल में भेजा। और मरयम ने जब येह हाल देखा कि बच्चा किसी औरत का दूध नहीं पीता तो इन्होंने फ़िरऔन से कहा कि मैं एक औरत को लाती हूँ शायद कि येह उस का दूध पीने लगें। चुनान्वे, “मरयम” हज़रते मूसा عليه السلام की वालिदा को फ़िरऔन के महल में ले कर गई और इन्होंने जैसे ही जोशे महबबत में सीने से चिमटा कर दूध पिलाया तो आप दूध पीने लगे। इस तरह हज़रते मूसा عليه السلام की वालिदा को इन का बिछड़ा हुवा लाल मिल गया। इस वाकिए का तज़क़िरा कुरआने मजीद की सूरए क़सस में इस तरह बयान किया गया है।

وَاصْبِرْ فَوَادِّمُ مَوْسَىٰ فِرْعَاوْنَ إِنَّ كَادَتْ لَتُبْدِي بِهِ لَوْلَا أَن رَّبَّنَا  
عَلَىٰ قُلُوبِهِمُ ابْتِئَانٌ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝ وَقَالَتْ لِأُخْتِهِ قُصِّيهِ قَبَضَتْ  
بِهِ عَنْ جُنْبٍ وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝ وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ  
فَقَالَتْ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ أَهْلِ بَيْتٍ يَكْفُلُونَهُ لَكُمْ وَهُمْ لَهُ نَاصِحُونَ ۝  
فَرَدَدْنَاهُ إِلَىٰ أُمِّهِ كَىٰ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلَنَعْلَمَ أَنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ  
وَلَكِنْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ۝ (پ ۲۰، القصص: ۱-۱۳)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और सुब्ह को मूसा की मां का दिल बे सन्न हो गया ज़रूर करीब था कि वोह उस का हाल खोल देती अगर हम न ढारस बन्धाते उस के दिल पर कि उसे हमारे वा'दे पर यकीन रहे और (इस की मां ने) इस की बहन से कहा उस के पीछे चली जा तो वोह उसे दूर से देखती रही और उन को ख़बर न थी और हम ने पहले ही सब दाइयां इस पर हराम कर दी थीं तो बोली क्या मैं तुम्हें बता दूँ ऐसे घरवाले कि

तुम्हारे इस बच्चे को पाल दें और वोह इस के ख़ैर ख़्वाह हैं तो हम ने इसे इस की मां की तरफ़ फेरा कि मां की आंख ठन्डी हो और ग़म न खाए और जान ले कि **अल्लाह** का वा'दा सच्चा है लेकिन अक़षर लोग नहीं जानते ।

**हज़रते मूसा** عَلَيْهِ السَّلَام की वालिदा का नाम :- हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की वालिदा का नाम “यूहानज़” और बाप का नाम “इमरान” है । और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की बहन का नाम “मरयम” है, मगर याद रखो कि येह वोह मरयम नहीं हैं जो हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की वालिदा हैं । हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की वालिदा “मरयम” हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की बहन से सेंकड़ों बरस बा'द को हुई हैं ।  
(صاوى، ج ۳، ص ۲۶، ۲۵)

**दर्से हिदायत :-** ﴿1﴾ इस वाकिए से येह सबक़ मिलता है कि जब **अल्लाह** तआला का फ़ज़ल होता है तो दुश्मन से वोह काम करा लेता है जो दोस्त भी नहीं कर सकते । देख लीजिये कि फ़िरऔन हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का सब से बड़ा दुश्मन था । मगर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की परवरिश फ़िरऔन ही के घर में हुई ।

﴿2﴾ येह भी मा'लूम हुवा कि जब **अल्लाह** तआला किसी की हिफ़ाज़त फ़रमाता है तो कोई भी उस को न ज़ाएअ कर सकता है न ज़र पहुंचा सकता है । ग़ौर करो कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को किस तरह ब हिफ़ाज़त, सिद्दहत व सलामती के साथ **अल्लाह** तआला ने फिर उन की मां की गोद में पहुंचा दिया । (والله تعالى أعلم)

### ﴿44﴾ हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की बुत शिक्की

हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने बुत परस्ती के मुआमले में पहले तो अपनी क़ौम से मुनाज़रा कर के हक़ को ज़ाहिर कर दिया । मगर लोगों ने हक़ को क़बूल नहीं किया बल्कि येह कहा कि कल हमारी ईद का दिन है और हमारा एक बहुत बड़ा मेला लगेगा, वहां आप चल कर देखें कि हमारे दिन में क्या लुत्फ़ और कैसी बहार है ।

इस क़ौम का येह दस्तूर था कि सालाना इन लोगों का एक मेला लगता था । लोग एक जंगल में जम्अ होते और दिन भर लहवो ला'ब में मशगूल रह कर शाम को बुत ख़ाने में जा कर बुतों की पूजा करते और



बुतों के चढ़ावे, मिठाइयों और खानों को परशад के तौर पर खाते। हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام कौम की दा'वत पर थोड़ी दूर तो मेले की तरफ़ चले लेकिन फिर अपनी बीमारी का उज़्र कर के वापस चले आए और कौम के लोग मेले में चले गए। फिर जो मेले में नहीं गए आप ने उन लोगों से साफ़ साफ़ कह दिया :

وَتَاللّٰهِ لَا كَيْدَ لَنَا اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ اَنْ تَوَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ﴿٥٩﴾ (پ ١، الانبياء: ٥٩)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और मुझे **अल्लाह** की क़सम है मैं तुम्हारे बुतों का बुरा चाहूंगा बा'द इस के कि तुम फिर जाओ पीठ दे कर।

चुनान्वे, इस के बा'द आप एक कुल्हाड़ी ले कर बुत खाने में तशरीफ़ ले गए और देखा कि उस में छोटे बड़े बहुत से बुत हैं और दरवाज़े के सामने एक बहुत बड़ा बुत है। इन झूटे मा'बूदों को देख कर तौहीदे इलाही के जज़्बे से आप जलाल में आ गए और कुल्हाड़ी मार मार कर बुतों को चिकना चूर कर डाला और सब से बड़े बुत को छोड़ दिया और कुल्हाड़ी उस के कन्धे पर रख कर आप बुत खाने से बाहर चले आए। कौम के लोग जब मेले से वापस आ कर बुत पूजने और परशад खाने के लिये बुत खाने में घुसे तो येह देख कर हैरान रह गए कि उन के देवता टूटे फूटे पड़े हुवे हैं। एक दम सब बोखला गए और शोर मचा कर चिल्लाने लगे।

مَنْ فَعَلَ هَذَا بِالِهَتِنَا اِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٥٩﴾ (پ ١، الانبياء: ٥٩)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** किस ने हमारे खुदाओं के साथ येह काम किया बेशक वोह ज़ालिम है।

तो कुछ लोगों ने कहा कि हम ने एक जवान को जिस का नाम “इब्राहीम” है उस की ज़बान से इन बुतों को बुरा भला कहते हुवे सुना है। कौम ने कहा कि उस जवान को लोगों के सामने लाओ। शायद लोग गवाही दें कि उस ने बुतों को तोड़ा है। चुनान्वे, हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام बुलाए गए। तो कौम के लोगों ने पूछा कि ऐ इब्राहीम ! क्या तुम ने हमारे

खुदाओं के साथ येह सुलूक किया है ? तो हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि तुम्हारे इस बड़े बुत ने किया होगा क्योंकि कुल्हाड़ी इस के कान्धे पर है। आख़िर तुम लोग अपने इन टूटे फूटे खुदाओं ही से क्यों नहीं पूछते कि किस ने तुम्हें तोड़ा है ? अगर येह बुत बोल सकते हों तो इन ही से पूछ लो वोह खुद बता दें कि किस ने इन्हें तोड़ा है। क़ौम ने सर झुका कर कहा कि ऐ इब्राहीम ! हम इन खुदाओं से क्या और कैसे पूछें ? आप तो जानते ही हैं कि येह बुत बोल नहीं सकते। येह सुन कर हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने जलाल में तड़प कर फ़रमाया :

قَالَ أَتَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْئًا وَلَا يَضُرُّكُمْ ۖ

أُفٍّ لَكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ أَفَلَا تَعْقِلُونَ ۝ (٤٧) (پ ٤، الانبیاء: ٢٢-٢٤)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- कहा तो क्या **अल्लाह** के सिवा ऐसे को पूजते हो जो न तुम्हें नफ़ा दे और न नुक़सान पहुंचाए। तुफ़ है तुम पर और उन बुतों पर जिन को **अल्लाह** के सिवा पूजते हो तो क्या तुम्हें अक्ल नहीं ?

आप की इस हक़ गोई का ना'रा सुन कर क़ौम ने कोई जवाब नहीं दिया बल्कि शोर मचाया और चिल्ला चिल्ला कर बुत परस्तों को बुलाया।

حَرِّقُوهُ وَانصُرُوا آلِهَتَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ فَعِلِينَ ۝ (٤٨) (پ ٤، الانبیاء: ٢٨)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- इन को जला दो और अपने खुदाओं की मदद करो अगर तुम्हें करना है।

चुनान्वे, ज़ालिमों ने इतना लम्बा चौड़ा आग का अलाव जलाया कि इस आग के शो'ले इतने बुलन्द हो रहे थे कि इस के ऊपर से कोई परन्दा भी उड़ कर नहीं जा सकता था। फिर आप को नंगे बदन कर के इन जुल्मो सितम के मुजस्समों ने एक गोफन के ज़रीए उस आग में फेंक दिया और अपने इस खयाल में मगन थे कि हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام जल कर राख हो गए होंगे, मगर अहकमुल हाकिमीन का फ़रमान इस आग के लिये येह सादिर हो गया कि

قُلْنَا إِنَّا نُؤْتِي بَرْدًا وَسَلَامًا عَلَىٰ إِبْرَاهِيمَ ﴿٦٩﴾ (پے ۱، الانبیاء: ۶۹)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** हम ने फ़रमाया ऐ आग हो जा ठन्डी और सलामती इब्राहीम पर ।

चुनान्वे, नतीजा येह हुवा जिस को कुरआन ने अपने काहिराना लहजे में इरशाद फ़रमाया कि

وَأَرْأَادُوهُ كَيْدًا فَجَعَلْنَاهُمُ الْآخِزِينَ ﴿٧٠﴾ (पे १, الانبیاء: ७०)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** और उन्होंने ने इस का बुरा चाहा तो हम ने उन्हें सब से बढ़ कर ज़ियांकार कर दिया ।

आग बुझ गई और हज़रते इब्राहीम عليه السلام ज़िन्दा और सलामत रह कर निकल आए और ज़ालिम लोग कफ़े अफ़सोस मल कर रह गए ।

**हज़रते इब्राहीम عليه السلام का तवक्कुल :-** रिवायत है कि जब नमरूद ने अपनी सारी क़ौम के रू बरू हज़रते इब्राहीम عليه السلام को आग में फेंक दिया तो ज़मीनो आस्मान की तमाम मख़्लूक़ात चीख़ मार कर बारगाहे खुदावन्दी में अर्ज करने लगीं कि खुदावन्द ! तेरे ख़लील आग में डाले जा रहे हैं और इन के सिवा ज़मीन में कोई और इन्सान तेरी तौहीद का अलमबरदार और तेरा परस्तार नहीं, लिहाज़ा तू हमें इजाज़त दे कि हम इन की इम्दाद व नुस्त करें तो **अल्लाह** तआला ने फ़रमाया कि इब्राहीम मेरे ख़लील हैं और मैं उन का मा'बूद हूँ तो अगर हज़रते इब्राहीम तुम सभों से फ़रयाद कर के मदद त़लब करें तो मेरी इजाज़त है कि सब उन की मदद करो । और अगर वोह मेरे सिवा किसी और से कोई मदद त़लब न करें तो तुम सब सुन लो कि मैं उन का दोस्त और हामी व मददगार हूँ । लिहाज़ा तुम अब उन का मुआमला मेरे ऊपर छोड़ दो । इस के बा'द आप के पास पानी का फ़िरिश्ता आया और कहा कि अगर आप फ़रमाएं तो मैं पानी बरसा कर इस आग को बुझा दूँ । फिर हवा का फ़िरिश्ता हाज़िर हुवा और उस ने कहा कि अगर आप का हुक्म हो तो मैं ज़बरदस्त आंधी चला कर

इस आग को उड़ा दूँ तो आप ने उन दोनों फ़िरिश्तों से फ़रमाया कि मुझे तुम लोगों की कोई ज़रूरत नहीं। मुझ को मेरा **अल्लाह** काफी है और वोही मेरा बेहतरीन कारसाज है वोही जब चाहेगा और जिस तरह उस की मरजी होगी मेरी मदद फ़रमाएगा। (صاوى، ج ۴، ص ۱۳۰، پ ۱، الانبياء: ۶۸)

**कौन सी दुआ पढ़ कर आप आग में गए :-** एक रिवायत में येह भी आया है कि जब काफ़िरों ने आप को आग में डाला तो आप ने उस वक़्त येह दुआ पढ़ी **لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ لَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الْمُلْكُ لَا شَرِيكَ لَكَ** और जब आप आग के शो'लों में दाख़िल हो गए तो हज़रते जिब्रील **عَلَيْهِ السَّلَام** तशरीफ़ लाए और कहा कि ऐ ख़लीलल्लाह ! क्या आप को कोई हाज़त है ? तो आप ने फ़रमाया कि तुम से कोई हाज़त नहीं है तो हज़रते जिब्रील **عَلَيْهِ السَّلَام** ने कहा कि फिर खुदा ही से अपनी हाज़त अर्ज़ कीजिये तो आप ने जवाब दिया कि वोह मेरे हाल को ख़ूब जानता है। लिहाज़ा मुझे उस से सुवाल करने की कोई ज़रूरत ही नहीं है। उस वक़्त हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ السَّلَام** की उम्र शरीफ़ सोलह या बीस बरस की थी।

**आप कितनी देर तक आग में रहे ? :-** इस बारे में कि आप कितनी मुद्दत तक आग के अन्दर रहे, तीन अक्वाल हैं।

(1) बा'ज़ मुफ़स्सरीन का क़ौल है की सात दिनों तक आप आग के शो'लों में रहे।

(2) और बा'ज़ ने येह तहरीर किया है कि चालीस दिन रहे।

(3) और बा'ज़ कहते हैं कि पचास दिन तक आप आग में रहे। (والله تعالى اعلم)

(صاوى، ج ۴، ص ۱۳۰، پ ۱، الانبياء: ۶۸)

**दर्से हिदायत :-** इस वाक़िअ से उन लोगों को तसल्ली मिलती है जो बातिल की ताग़ूती ताक़तों के बिल मुकाबिल इस्तिक्ामत का पहाड़ बन कर डट जाते हैं।

आज भी हो जो इब्राहीम का ईमां पैदा आग कर सकती है अन्दाज़े गुलिस्तां पैदा

### ﴿45﴾ हज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام का इम्तिहान

हज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام हज़रते इस्हाक़ عَلَيْهِ السَّلَام की अवलाद में से हैं और इन की वालिदा हज़रते लूत عَلَيْهِ السَّلَام के ख़ान्दान से हैं। **अल्लाह** तआला ने आप को हर तरह की ने'मतों से नवाज़ा था। हुस्ने सूरत भी और माल व अवलाद की क़षरत भी, बेशुमार मवैशी और खेत व बाग़ वगैरा के आप मालिक थे। जब **अल्लाह** तआला ने आप को आज़माइश व इम्तिहान में डाला तो आप का मकान गिर पड़ा और आप के तमाम फ़रज़न्दान इस के नीचे दब कर मर गए और तमाम जानवर जिस में सेंकड़ों ऊंट और हज़ार हा बकरियां थीं, सब मर गए। तमाम खेतियां और बागात भी बरबाद हो गए। गरज़ आप के पास कुछ भी बाकी न रहा। आप को जब इन चीज़ों के हलाक व बरबाद होने की ख़बर दी जाती थी तो आप हम्दे इलाही करते और शुक्र बजा लाते थे और फ़रमाते थे कि मेरा क्या था और क्या है जिस का था उस ने ले लिया। जब तक उस ने मुझे दे रखा था मेरे पास था, जब उस ने चाहा ले लिया। मैं हर हाल में उस की रिज़ा पर राज़ी हूँ। इस के बा'द आप बीमार हो गए और आप के जिस्म मुबारक पर बड़े बड़े आबले पड़ गए। इस हाल में सब लोगों ने आप को छोड़ दिया, बस फ़क़त आप की बीवी जिन का नाम “रहमत बिनते अफ़राईम” था। जो हज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की पोती थीं, आप की ख़िदमत करती थीं। सालहा साल तक आप का येही हाल रहा, आप आबलों और फोड़ों के ज़ख़्मों से बड़ी तकलीफ़ों में रहे।

**फ़ाइदा :-** अम तौर पर लोगों में मशहूर है कि **مَعَاذَ اللَّهِ** आप को कोढ़ की बीमारी हो गई थी। चुनान्चे, बा'ज़ ग़ैर मो'तबर किताबों में आप के कोढ़ के बारे में बहुत सी ग़ैर मो'तबर दास्तानें भी तहरीर हैं, मगर याद रखो कि येह सब बातें सरता पा बिल्कुल ग़लत हैं, और हरगिज़ हरगिज़ आप या कोई नबी भी कभी कोढ़ और जुज़ाम की बीमारी में मुब्तला नहीं हुवा। इस लिये कि येह मस्अला मुत्तफ़िक् अलैह है कि अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام का तमाम उन बीमारियों से महफूज़ रहना ज़रूरी है जो अ़वाम के नज़दीक

बाइषे नफ़रत व हक़ारत हैं। क्यूँकि अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام का येह फ़र्जे मन्सबी है कि वोह तब्लीग़ व हिदायत करते रहें तो ज़ाहिर है कि जब अ़वाम इन की बीमारियों से नफ़रत कर के इन से दूर भागेंगे तो भला तब्लीग़ का फ़रीज़ा क्यूँ कर अदा हो सकेगा ? अल गरज़ हज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام हरगिज़ कभी कोढ़ और जुज़ाम की बीमारी में मुब्तला नहीं हुवे बल्कि आप के बदन पर कुछ आबले और फोड़े फुन्सियां निकल आई थीं जिन से आप बरसों तकलीफ़ और मशक्कत झेलते रहे और बराबर साबिरो शाकिर रहे। फिर आप ने ब हुक्मे इलाही अपने रब से यूँ दुआ मांगी :

اَيُّ مَسْنَى الطُّرِّ اَنْتَ اَرْحَمُ الرَّحِيْمِيْنَ ۝ (پ ۴۷، الانبياء: ۸۳)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** मुझे तकलीफ़ पहुंची और तू सब मेहरवालों से बढ़ कर मेहरवाला है।

जब आप खुदा की आजमाइश में पूरे उतरे और इम्तिहान में कामयाब हो गए तो आप की दुआ मक़बूल हुई और अरहमुराहिमीन ने हुक्म फ़रमाया कि ऐ अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام अपना पाउं ज़मीन पर मारो। आप ने ज़मीन पर पाउं मारा तो फ़ौरन एक चश्मा फूट पड़ा। हुक्मे इलाही हुवा कि इस पानी से गुस्ल करो, चुनान्चे, आप ने गुस्ल किया तो आप के बदन की तमाम बीमारियां दूर हो गईं। फिर आप चालीस क़दम दूर चले तो दोबारा ज़मीन पर क़दम मारने का हुक्म हुवा और आप के क़दम मारते ही फिर एक दूसरा चश्मा नुमूदार हो गया जिस का पानी बेहद ठन्डा, बहुत शीरीं और निहायत लज़ीज़ था। आप ने वोह पानी पिया तो आप के बातिन में नूर ही नूर पैदा हो गया। और आप को आ'ला दरजे की सिह्हत व नूरानिय्यत हासिल हो गई और अब्बाह तअ़ला ने आप की तमाम अवलाद को दोबारा ज़िन्दा फ़रमा दिया और आप की बीवी को दोबारा जवानी बख़्शी और उन के क़बीर अवलाद हुई, फिर आप का तमाम हलाक़ शुदा माल व मवैशी और अस्बाब व सामान भी आप को मिल गया बल्कि पहले जिस क़दर मालो दौलत का ख़ज़ाना था उस से कहीं ज़ियादा मिल गया।

इस बीमारी की हालत में एक दिन आप ने अपनी बीवी साहिबा को पुकारा तो वोह बहुत देर कर के हाज़िर हुई इस पर गुस्से में आ कर

आप ने इन को सो दुर्रे मारने की क़सम खा ली थी तो **अल्लाह** तअ़ाला ने फ़रमाया कि ऐ अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام आप एक सेंकों की झाड़ू से एक मरतबा अपनी बीबी को मार दीजिये इस तरह आप की क़सम पूरी हो जाएगी। चुनान्वे, **अल्लाह** तअ़ाला ने कुरआने मजीद में इस वाक़िए को इस तरह बयान फ़रमाया है :

أُرْسِلْ بِرَجُلِكَ هَذَا مُعْتَسِلٌ بَارِدٌ وَشَرَابٌ ۖ وَوَهْبَنَالَهُ أَهْلَهُ وَشَلَهُمْ  
مَعَهُمْ رَاحَةً مِّمَّا وَذَكَّرَى الْأُولَى الْأَلْبَابِ ۖ وَخَذَ بِيَدِكَ ضِعْفًا فَأَضْرَبَ بِهَا  
وَلَا تَخْشَ ۖ إِنَّكَ وَجَدْنَاهُ صَابِرًا ۖ نِعْمَ الْعَبْدُ ۖ إِنَّكَ أَوَّابٌ ۝ (۲۳: ۲۲-۲۴)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** हम ने फ़रमाया ज़मीन पर अपना पाउं मार येह है ठन्डा चश्मा नहाने और पीने को और हम ने उसे उस के घर वाले और इन के बराबर और अता फ़रमा दिये अपनी रहमत करने और अक्लमन्दों की नसीहत को और फ़रमाया कि अपने हाथ में एक झाड़ू ले कर उस से मार दे और क़सम न तोड़ बेशक हम ने इसे साबिर पाया क्या अच्छा बन्दा बेशक वोह बहुत रुजूअ़ लाने वाला है।

अल गरज़ हज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام इस इम्तिहान में पूरे पूरे कामयाब हो गए। और **अल्लाह** तअ़ाला ने इन को अपनी नवाज़िशों और इनायतों से हर तरह सरफ़राज़ फ़रमा दिया और कुरआने मजीद में इन की मदह़ ख़्वानी फ़रमा कर “**أَوَّابٌ**” के ला ज़वाब ख़िताब से इन के सर मुबारक पर सर बुलन्दी का ताज रख दिया।

**दर्से हिदायत :-** हज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام के इस वाक़िए इम्तिहान में येह हिदायत मिलती है कि **अल्लाह** तअ़ाला के नेक बन्दों का भी खुदा की तरफ़ से इम्तिहान हुवा करता है और जब वोह इम्तिहान में कामयाब और आज़माइश में पूरे उतरते हैं तो खुदावन्दे कुद्दूस उन के मरातिब व दरजात में इतनी आ'ला सरबुलन्दी अता फ़रमा देता है कि कोई इन्सान इस को सोच भी नहीं सकता और इस वाक़िए से येह सबक़ भी मिलता है कि इम्तिहान की आज़माइश के वक़्त सब्र करना और खुदावन्दे आलम عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पर राज़ी रहना इस का फल कितना अच्छा, कितना मीठा और किस क़दर लज़ीज़ होता है। (والله تعالى اعلم)



### ﴿46﴾ हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام और एक च्यूटी

हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के फ़रज़न्द हैं। येह अपने मुक़द्दस बाप के जा नशीन हुवे और **अल्लाह** तअाला ने इन को भी नबुव्वत और सल्तनत दोनों सआदतों से सरफ़राज़ फ़रमा कर तमाम रूए ज़मीन का बादशाह बना दिया और चालीस बरस तक आप तख़्ते सल्तनत पर जल्वा गर रहे। जिन्न व इन्सान व शयातीन और चरिन्दों, परन्दों, दरिन्दों सब पर आप की हुकूमत थी सब की ज़बानों का आप को इल्म अता किया गया और तरह तरह की अजीबो ग़रीब सन्अतें आप के ज़माने में ब रूएकार आई। चुनान्चे, कुरआने मजीद में है :

وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوُدَ وَقَالَ يَا اَيُّهَا النَّاسُ عَلِمْنَا مَقٰطِقَ الطّٰيْرِ وَاَوْتَيْنَا

مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ۚ اِنَّ هٰذَا لَهٗوَ الْفَصْلِ الْبَيِّنِ ۝ (پ ۱۹، النمل ۱۶)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** और सुलैमान दावूद का जा नशीन हुवा और कहा ऐ लोगो हमें परन्दों की बोली सिखाई गई और हर चीज़ में से हम को अता हुवा बेशक येही ज़ाहिर फ़ज़ल है।

इसी तरह कुरआने मजीद में दूसरी जगह इरशाद हुवा।

وَسُلَيْمٰنَ الرِّیْمِ عُدُوْهُمَا شَهْرًا وَرَاْحًا شَهْرًا ۚ وَاسْأَلْنٰهُ عِیْنَ

الْقَطْرِ ۚ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ یَّعْمَلُ بَیْنَ یَدَیْهِ بِاِذْنِ رَبِّهِ ۚ وَمَنْ یَّزِیْرُ

مِنْهُمْ عَنْ اَمْرِ نٰنِدِقُهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِیْرِ ۝ (پ ۲۲، سبا ۱۲, ۱۳)

یَسْأَعُ مِنْ مَّحَارِیْبَ وَتَمَثِیْلَ وَجِفَانَ ۚ كَالْجَوَابِ وَقُدُوْرٍ

رَّاسِیْتَ ۚ (پ ۲۲، سبا ۱۲, ۱۳)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** और सुलैमान के बस में हवा कर दी उस की सुब्ह की मन्ज़िल एक महीने की राह और शाम की मन्ज़िल एक महीने की राह और हम ने उस के लिये पिघले हुवे तांबे का चश्मा बहाया और जिन्नों में से वोह जो उस के आगे काम करते उस के खब के हुक्म से और जो उन में हमारे हुक्म से फिरे हम उसे भड़कती आग का अज़ाब चखाएंगे। उस के लिये बनाते जो वोह चाहता ऊंचे ऊंचे महल और तस्वीरों और बड़े हौजों के बराबर लगन और लंगरदार देंगे।

रिवायत है कि एक मरतबा हज़रते सुलैमान عليه السلام जिनो इन्स वगैरा अपने तमाम लश्करो को ले कर ताड़फ़ या शाम में “वादिये नम्ल” से गुज़रे जहां च्यूंटियां ब कषरत थीं तो च्यूंटियों की मलिका जो मादा और लंगड़ी थी उस ने तमाम च्यूंटियों से कहा कि ऐ च्यूंटियो ! तुम सब अपने घरों में चली जाओ वरना हज़रते सुलैमान और उन का लश्कर तुम्हें बे ख़बरी में कुचल डालेगा । च्यूंटी की इस तक्ऱीर को हज़रते सुलैमान عليه السلام ने तीन मील की दूरी से सुन लिया और मुस्कुरा कर हंस दिये । चुनान्वे, रब तअाला ने कुरआने मजीद में फ़रमाया :

حَتَّىٰ إِذَا أَتَوْا عَلٰى وَادِئِ السَّيْلِ قَالَتْ نَسْلَةٌ يَأَيُّهَا النَّبِيُّ ادْخُلُوا  
مَسْكِنَكُمْ ۖ لَا يَحْطِطُكُمْ سُلَيْمٌ وَجُودُهُ ۚ وَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿١٨﴾ قَبَسَمَ  
صَاحِبَا مِنْ قَوْلِهَا (پ ۱۹، النمل ۱۸)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** यहां तक कि जब च्यूंटियों के नाले पर आए एक च्यूंटी बोली ऐ च्यूंटियों ! अपने घरों में चली जाओ तुम्हें कुचल न डाले सुलैमान और उन के लश्कर बे ख़बरी में तो उस की बात से मुस्कुरा कर हंसा । **दर्से हिदायत :-** इस कुरआनी वाक़िए से चन्द अस्बाके हिदायात मा'लूम हुवे ।

(1) च्यूंटी की आवाज़ को तीन मील की दूरी से सुन लेना येह हज़रते सुलैमान عليه السلام का मो'जिज़ा है और इस से मा'लूम हुवा कि हज़रते अम्बियाए किराम عليهم السلام की बसारत व समाअत को आ़म इन्सानों की बसारत व समाअत पर क़ियास नहीं कर सकते बल्कि हक़ येह है कि अम्बियाए किराम का सुनना और देखना और दूसरी ताक़तें आ़म इन्सानों की ताक़तों से बढ़ चढ़ कर हुवा करती हैं ।

(2) च्यूंटी की तक्ऱीर से मा'लूम हुवा कि च्यूंटियों का भी येह अ़कीदा है कि किसी नबी के सहाबी जान बूझ कर किसी पर जुल्म नहीं कर सकते क्यूंकि च्यूंटी ने عليه السلام कहा या'नी हज़रते सुलैमान عليه السلام **وَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ** ॥

और इन की फौज अगर च्यूंटियों को कुचल डालेंगे तो बेख़बरी के आलम में लाशुऊरी तौर पर ऐसा करेंगे। वरना जान बूझ कर एक नबी के सहाबी होते हुवे वोह किसी पर जुल्म व ज़ियादती नहीं करेंगे। अफ़सोस कि च्यूंटियां तो येह अक़ीदा रखती हैं कि नबी के सहाबी जान बूझ कर किसी पर जुल्म नहीं कर सकते। मगर राफ़िज़ियों का गुरौह इन च्यूंटियों से भी गया गुज़रा षाबित हुवा कि इन ज़ालिमों ने हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मुक़द्दस सहाबा पर तोहमत लगाई कि उन बुजुर्गों ने जान बुझ कर हज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا और अहले बैत पर जुल्म किया। (مَعَادُ اللهِ)

(3) येह भी मा'लूम हुवा कि हज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام का हंसना, तबस्सुम और मुस्कुराहट ही होता है। जैसा कि अह्दादीष में वारिद हुवा है कि येह हज़रात कभी क़हक़हा मार कर नहीं हंसते।

(خزائن العرفان، ص २८०، प १९، النمل १)

**लतीफ़ा :-** मन्कूल है कि एक मरतबा हज़रते क़तादा मुहदिष رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ जो निहायत ही बुलन्द पाया आलिम और जामेज़ल ज़लूम अल्लामा थे। बिल खुसूस इल्मे हदीष और तफ़्सीर में तो अपना मिस्ल नहीं रखते थे। कूफ़ा तशरीफ़ लाए तो इन की ज़ियारत के लिये एक अज़ीमुशशान मजमअ जम्अ हो गया। आप ने तक़रीर फ़रमाते हुवे हाज़िरीन से कई बार येह फ़रमाया कि “سَلُّوا عَمَّا شِئْتُمْ” या'नी मुझ से जो चाहो पूछ लो। हाज़िरीन पर आप की इल्मी जलालत का ऐसा सिक्का बैठा हुवा था कि सब लोग दम बख़ुद व साकित व ख़ामोश बैठे रहे मगर जब आप ने बार बार ललकारा तो हज़रते इमामे आ'ज़म अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ जो अभी बहुत कम उम्र थे खुद तो कमाले अदब से कुछ न बोले मगर आप ने लोगों से कहा कि आप लोग हज़रते क़तादा عَلَيْهِ الرِّحْمَةُ से येह पूछिये कि वादिये नम्ल में जिस च्यूंटी की तक़रीर सुन कर हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام मुस्कुरा कर हंस पड़े थे। वोह च्यूंटी नर थी या मादा ! चुनान्चे, जब लोगों

ने येह सुवाल किया तो हज़रते क़तादा عَلَيْهِ الرُّحْمَةُ ऐसे सटपटाए कि बिल्कुल ला जवाब हो कर ख़ामोश हो गए फिर लोगों ने इमाम अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ से दरयाफ़्त किया तो आप ने फ़रमाया कि “**वोह च्यूटी मादा थी**” हज़रते क़तादा عَلَيْهِ الرُّحْمَةُ ने फ़रमाया कि इस का पुबूत ? इमाम अबू हनीफ़ा عَلَيْهِ السَّلَام ने जवाब दिया कि इस का पुबूत येह है कि कुरआने मजीद में इस च्यूटी के लिये قَالَتْ نَمْلٌ मुअन्नस का सीगा ज़िक्र किया गया है। अगर येह च्यूटी नर होती तो “قَالَ نَمْلٌ” मुज़क्कर का सीगा ज़िक्र किया गया होता। हज़रते क़तादा عَلَيْهِ الرُّحْمَةُ ने इस दलील को तस्लीम कर लिया और इमाम अबू हनीफ़ा رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की दानाई और कुरआन फ़हमी पर हैरान रह गए और अपने बड़े बोल पर नादिम हुवे।

#### ﴿47﴾ हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का हुदहुद

यू तो सभी परन्दे हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के मुख़्ख़र और ताबेए फ़रमान थे लेकिन आप का हुद हुद आप की फ़रमां बरदारी और ख़िदमत गुज़ारी में बहुत मशहूर है। इसी हुद-हुद ने आप को मुल्के सबा की मलिका “बिल्कीस” के बारे में ख़बर दी थी कि वोह एक बहुत बड़े तख़्त पर बैठ कर सल्तनत करती है और बादशाहों के शायाने शान जो भी सरो सामान होता है वोह सब कुछ उस के पास है मगर वोह और उस की कौम सितारों के पुजारी हैं। इस ख़बर के बा’द हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने बिल्कीस के नाम जो ख़त़ इरसाल फ़रमाया, उस को येही हुद-हुद ले कर गया था। चुनान्चे, कुरआने करीम का इरशाद है कि हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया :

“तुम मेरा येह ख़त़ ले कर जाओ। और उन के पास येह ख़त़ डाल कर फिर उन से अलग हो कर तुम देखो कि वोह क्या जवाब देते हैं।”

(प १९, النمل, २८)

चुनान्चे, हुद-हुद ख़त़ ले कर गया और बिल्कीस की गोद में उस ख़त़ को ऊपर से गिरा दिया। उस वक़्त उस ने अपने गिर्द उमरा और अरकाने सल्तनत का मजमअ इकठ्ठा किया फिर ख़त़ को पढ़ कर लर्ज़ा बर अन्दाम हो गई और अपने अराकीन से येह कहा कि

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** ऐ सरदारो ! बेशक मेरी तरफ़ एक इज़्ज़त वाला ख़त डाला गया बेशक वोह सुलैमान की तरफ़ से है और बेशक वोह **अल्लाह** के नाम से है जो निहायत मेहरबान रहम वाला येह कि मुझ पर बुलन्दी न चाहो और गर्दन रखते मेरे हुज़ूर हाज़िर हो । (प १९, النمل, २९ تا ३१)

ख़त सुना कर बिल्कीस ने अपनी सल्तनत के अमीरों और वज़ीरों से मशवरा किया तो उन लोगों ने अपनी ताक़त और जंगी महारत का ए'लान व इज़हार कर के हज़रते सुलैमान **عليه السلام** से जंग का इरादा जाहिर किया । उस वक़्त अक्लमन्द बिल्कीस ने अपने अमीरों और वज़ीरों को समझाया कि जंग मुनासिब नहीं है क्यूंकि इस से शहर वीरान और शहर के इज़्ज़तदार बाशिन्दे ज़लीलो ख़्वार हो जाएंगे । इस लिये मैं येह मुनासिब ख़याल करती हूँ कि कुछ हदाया व तहाइफ़ उन के पास भेज दूँ इस से इम्तिहान हो जाएगा कि हज़रते सुलैमान सिर्फ़ बादशाह हैं या **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के नबी भी हैं । अगर वोह नबी होंगे तो हरगिज़ मेरा हदिय्या क़बूल नहीं करेंगे बल्कि हम लोगों को अपने दीन के इत्तिबाअ का हुक्म देंगे और अगर वोह सिर्फ़ बादशाह होंगे तो मेरा हदिय्या क़बूल कर के नर्म हो जाएंगे । चुनान्वे, बिल्कीस ने पांच सो गुलाम और पांच सो लोंडियां बेहतरीन लिबास और ज़ेवरों से आरास्ता कर के भेजे और इन लोगों के साथ पांच सो सोने की ईंटें, और बहुत से जवाहिरात और मुश्को अम्बर और एक जड़ाव ताज मअ एक ख़त के अपने क़ासिद के साथ भेजा । हुद-हुद सब देख कर रवाना हो गया और हज़रते सुलैमान **عليه السلام** के दरबार में आ कर सब ख़बरें पहुंचा दीं । चुनान्वे, बिल्कीस का क़ासिद जब चन्द दिनों के बा'द तमाम सामानों को ले कर दरबार में हाज़िर हुवा तो हज़रते सुलैमान **عليه السلام** ने ग़ज़ब नाक हो कर क़ासिद से फ़रमाया :

قَالَ أَتَدُونَنِي بِأَلٍ فَمَا أَتَى اللَّهَ خَيْرٌ مِّمَّا أَتَيْتُمْ بَلْ أَنْتُمْ بِهَدْيَتِكُمْ تَفْرَحُونَ ۝ ارْجِعْ إِلَيْهِمْ فَلَنَأْتِيَهُمْ بِجُودٍ لَا قَبْلَ لَهُمْ  
بِهَؤُلَاءِ نَحْرَجَهُمْ مِنْهَا أَذِلَّةً وَهُمْ صُغُرُونَ ۝ (प १९, النمل, ३६ تا ३८)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** फ़रमाया क्या माल से मेरी मदद करते हो तो जो मुझे **अल्लाह** ने दिया वोह बेहतर है उस से जो तुम्हें दिया बल्कि तुम्हीं अपने तोहफ़े पर खुश होते हो पलट जा उन की तरफ़ तो ज़रूर हम उन पर वोह लश्कर लाएंगे जिन की उन्हें ताक़त न होगी और ज़रूर हम उन को उस शहर से ज़लील कर के निकाल देंगे यूं कि वोह पस्त होंगे ।

चुनान्वे, इस के बा'द जब कासिद ने वापस आ कर बिल्कीस को सारा माजरा सुनाया तो बिल्कीस हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** के दरबार में हाज़िर हो गई और हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** का दरबार और यहां के अज़ाइबात देख कर उस को यकीन आ गया कि हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** खुदा **عَزَّوَجَلَّ** के नबिय्ये बर हक़ हैं और इन की सल्तनत **अल्लाह** तआला ही की तरफ़ से है । हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** ने बिल्कीस को अपने दीन की दा'वत दी तो उस ने निहायत ही इख़्लास के साथ इस्लाम क़बूल कर लिया फिर हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** ने बिल्कीस से निकाह कर के उस को अपने महल में रख लिया ।

इस सिलसिले में हुद-हुद ने जो कारनामे अन्जाम दिये वोह बिलाशुबा अज़ाइबाते आलम में से हैं जो यकीनन हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** के मो'जिज़ात में से हैं ।

### ﴿48﴾ तख़्ते बिल्कीस किस तरह आया

मलिकए सबा “बिल्कीस” का तख़्ते शाही अस्सी गज़ लम्बा और चालीस गज़ चौड़ा था, येह सोने चांदी और तरह तरह के जवाहिरात और मोतियों से आरास्ता था, जब हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** ने बिल्कीस के कासिद और उस के हदाया व तहाइफ़ को ठुकरा दिया और उस को येह हुक्म नामा भेजा कि वोह मुसलमान हो कर मेरे दरबार में हाज़िर हो जाए तो आप के दिल में येह ख़्वाहिश पैदा हुई कि बिल्कीस के यहां आने से पहले ही उस का तख़्त मेरे दरबार में आ जाए चुनान्वे, आप ने अपने दरबार में दरबारियों से येह फ़रमाया :

قَالَ يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّبِعُوا أَمْرِي وَلَا تَتَّبِعُوا أَهْوَاءَ شَهْوَاهِكُمْ أَنْ يَأْتِيَنَّكُمْ مِنْ بَيْنِ يَدَيْكُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝  
 قَالَ عِزِّي مِنْ أَلْحِينَ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ تَقُومَ مِنْ مَقَامِكَ وَإِنِّي عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ أَمِينٌ ۝ (پ ۹، النمل: ۳۸، ۳۹)

**तर्जमए कन्जुल इमान :-** सुलैमान ने फरमाया ऐ दरबारियो ! तुम में कौन है कि वोह उस का तख्त मेरे पास ले आए कब्ल इस के कि वोह मेरे हुजूर मुतीअ हो कर हाजिर हों एक बड़ा ख़बीष जिन्न बोला कि वोह तख्त हुजूर में हाजिर कर दूंगा कब्ल इस के कि हुजूर इजलास बरखास्त करें और मैं बेशक इस पर कुव्वत वाला अमानतदार हूं।

जिन्न का बयान सुन कर हज़रते सुलैमान عليه السلام ने फरमाया कि मैं येह चाहता हूं कि इस से भी जल्द वोह तख्त मेरे दरबार में आ जाए। येह सुन कर आप के वज़ीर हज़रते “आसिफ़ बिन बरख़िया” رضي الله تعالى عنه जो इस्मे आ’ज़म जानते थे और एक बा करामत वाली थे। इन्हों ने हज़रते सुलैमान عليه السلام से अर्ज़ किया जैसा कि कुरआने मजीद में है :

قَالَ الَّذِي عِنْدَهُ عِلْمٌ مِنَ الْكِتَابِ أَنَا آتِيكَ بِهِ قَبْلَ أَنْ يَرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ ۝ (پ ९، النمل: २०)

**तर्जमए कन्जुल इमान :-** उस ने अर्ज़ की जिस के पास किताब का इल्म था कि मैं उसे हुजूर में हाजिर कर दूंगा एक पल मारने से पहले।

चुनान्चे, हज़रते आसिफ़ बिन बरख़िया ने रूहानी कुव्वत से बिल्कीस के तख्त को मुल्के सबा से बैतुल मुक़दस तक हज़रते सुलैमान عليه السلام के महल में खींच लिया और तख्त ज़मीन के नीचे नीचे चल कर लम्हा भर में एक दम हज़रते सुलैमान عليه السلام की कुरसी के करीब नुमूदार हो गया। तख्त को देख कर हज़रते सुलैमान عليه السلام ने येह कहा :

هَذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّي ۖ لِيَبْلُوَنِي ءَأَشْكُرُ أَمْ أَكْفُرُ ۚ وَمَنْ شَكَرَ فَإِنَّمَا يَـُٔيَسِّرْهُ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ رَبِّيَ غَنِيٌّ كَرِيمٌ ۝ (प ९، النمل: २०)



**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** येह मेरे रब के फ़ज़ल से है ताकि मुझे आज़माए कि मैं शुक्र करता हूं या नाशुक्री और जो शुक्र करे तो वोह अपने भले को शुक्र करता है और जो नाशुक्री करे तो मेरा रब बे परवाह है सब ख़ूबियों वाला ।

**दर्से हिदायत :-** इस कुरआनी वाक़िए से षाबित होता है कि **अल्लाह** तआला अपने औलिया को बड़ी बड़ी रूहानी ताक़त व कुव्वत अता फ़रमाता है । देख लीजिये हज़रते आसिफ़ बिन बरख़िया **رضی اللہ تعالیٰ عنہ** ने पलक झपकने भर की मुद्दत में तख़्ते बिल्कीस को मुल्के सबा से दरबारे सुलैमान में हाज़िर कर दिया । और खुद अपनी जगह से हिले भी नहीं । इसी तरह बहुत से औलियाए किराम ने सेंकड़ों मील की दूरी से आदमियों और जानवरों को लम्हा भर में बुला लिया है । येह सब औलिया की उस रूहानी ताक़त का करिश्मा है जो खुदावन्दे कुदूस अपने वलियों को अता फ़रमाता है इस लिये कभी हरगिज़ औलियाए किराम को अपने जैसा न खयाल करना और न उन के आ'जा की ताक़तों को आ़म इन्सानों की ताक़तों पर क़ियास करना । कहां अ़वाम और कहां औलिया । औलियाए किराम को अपने जैसा समझ लेना येह गुमराही का सर चश्मा है । हज़रते मौलाना रूमी **عليه الرحمة** ने मषनवी शरीफ़ में इसी मज़मून पर रोशनी डालते हुवे बड़ी वज़ाहत के साथ तहरीर फ़रमाया है ।

جملة عالم زين سبب گمراه شد	کم کسی ز ابدال حق آگاه شد
कि खुदा के औलिया से बहुत कम लोग आगाह हुवे	तमाम दुन्या इस वजह से गुमराह हो गई
اولياء را همچو خود پنداشتند	همسری با انبياء برداشتند
और अम्बिया के साथ बराबरी कर बैठे	लोगों ने औलिया को अपने जैसा समझ लिया
ایں ندانستند ایشان از عمی	هست فرقے درمیان بے انتہا
कि अ़वाम और औलिया के दरमियान बे इन्तिहा फ़र्क़ है	उन लोगों ने अपने अन्धेपन से येह नहीं जाना

बहर हाल खुलासए कलाम येह है कि औलियाए किराम को आ़म इन्सानों की तरह नहीं समझना चाहिये बल्कि येह अ़क़ीदा रख कर औलियाए किराम की ता'जीमो तकरीम करनी चाहिये कि उन लोगों पर

खुदावन्दे करीम का खास फज़ले अज़ीम है और येह लोग बे पनाह रूहानी ताक़तों के बादशाह बल्कि शहनशाह हैं। येह लोग **عَزَّوَجَلَّ** के हुक्म से बड़ी बड़ी बलाएं और मुसीबतें टाल सकते हैं और इन की क़ब्रों का भी अदब रखना लाज़िम है कि औलिया की क़ब्रों पर फुयूज़ व बरकाते खुदावन्दी की बारिश होती रहती है और जो अक़ीदत व महब्बत से इन की क़ब्रों की ज़ियारत करता है वोह ज़रूर इन बुजुर्गों के फुयूज़ों बरकात से फ़ैज़याब हुवा करता है। इस ज़माने में **फ़िर्क़ए वहाबिय्या** औलियाए किराम की बे अदबी करता रहता है। मैं अपने **सुन्नी भाइयों** को येह नसीहत व वसिय्यत करता हूं कि इन गुमराहों से हमेशा दूर रहें। और इन लोगों के ज़हिरी सादा लिबासों और वुजू व नमाज़ों से फ़रैब न खाएं कि इन लोगों के दिल बहुत गन्दे हैं और येह लोग नूरे ईमान की तजल्लियों से महरूम हो चुके हैं (معاذ الله منهم)

#### ﴿49﴾ हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** की बे मिष्ल वफ़ात

मुल्के शाम में जिस जगह हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** का ख़ैमा गाड़ा गया था। ठीक उसी जगह हज़रते दावूद **عَلَيْهِ السَّلَام** ने बैतुल मुक़द्दस की बुन्याद रखी। मगर इमारत पूरी होने से क़ब्ल ही हज़रते दावूद **عَلَيْهِ السَّلَام** की वफ़ात का वक़्त आन पहुंचा। और आप ने अपने फ़रज़न्द हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** को इस इमारत की तक़मील की वसिय्यत फ़रमाई। चुनान्वे हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** ने ज़िन्नों की एक जमाअत को इस काम पर लगाया और इमारत की ता'मीर होती रही। यहां तक कि आप की वफ़ात का वक़्त भी क़रीब आ गया और इमारत मुक़म्मल न हो सकी तो आप ने येह दुआ मांगी कि इलाही मेरी मौत ज़िन्नों की जमाअत पर ज़ाहिर न होने पाए ताकि वोह बराबर इमारत की तक़मील में मसरूफ़े अमल रहे और इन सभों को जो इल्मे ग़ैब का दा'वा है वोह भी बातिल ठहर जाए। येह दुआ मांग कर आप मेहराब में दाख़िल हो गए और अपनी आदत के मुताबिक़ अपनी लाठी टेक कर इबादत में खड़े हो गए और इसी हालत में आप की वफ़ात हो गई मगर ज़िन्न मज़दूर येह समझ कर कि आप ज़िन्दा खड़े हुवे हैं बराबर काम में मसरूफ़ रहे और अर्सए

दराज़ तक आप का इसी हालत में रहना जिन्नों के गुरौह के लिये कुछ बाइषे हैरत इस लिये नहीं हुवा कि वोह बारहा देख चुके थे कि आप एक एक माह बल्कि कभी कभी दो दो माह बराबर इबादत में खड़े रहा करते हैं। गुरज़ एक साल तक वफ़ात के बा'द आप अपनी लाठी के सहारे खड़े रहे यहां तक कि ब हुक्मे इलाही दीमकों ने आप के असा को खा लिया और असा के गिर जाने से आप का जिस्मे मुबारक ज़मीन पर आ गया। उस वक़्त जिन्नों की जमाअत और तमाम इन्सानों को पता चला कि आप की वफ़ात हो गई है। कुरआने मजीद में **अल्लाह** तआला ने इस वाक़िए को इन लफ़्ज़ों में बयान फ़रमाया है कि

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلَى مَوْتِهِ إِلَّا دَابَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ  
مِنْسَاتَهُ ۖ فَلَمَّا خَرَ تَبَيَّنَتِ الْجِنَّ أَنْ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ الْغَيْبَ مَا  
لَيْسُوا فِي الْعَذَابِ الْمُبِينِ ۝ (پ ۲۲، سبأ: ۱۴)

**तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान :-** फिर जब हम ने उस पर मौत का हुक्म भेजा जिन्नों को उस की मौत न बताई मगर ज़मीन की दीमक ने कि उस का असा खाती थी फिर जब सुलैमान ज़मीन पर आया जिन्नों की हकीकत खुल गई अगर ग़ैब जानते होते तो इस ख़वारी के अज़ाब में न होते।

**दर्से हिदायत :-** (1) इस कुरआनी वाक़िए से येह हिदायत मिलती है कि हज़रते अम्बिया **عليهم السلام** के मुक़द्दस बदन वफ़ात के बा'द सड़ते गलते नहीं हैं। क्यूंकि आप ने अभी अभी पढ़ लिया कि एक साल तक हज़रते सुलैमान **عليه السلام** वफ़ात के बा'द असा के सहारे खड़े रहे। और इन के जिस्म मुबारक में किसी किस्म का कोई तग़य्युर रूनुमा नहीं हुवा। येही हाल तमाम अम्बिया **عليهم السلام** का उन की क़ब्रों में है कि उन के बदन को मिट्टी खा नहीं सकती। चुनान्वे, हदीष शरीफ़ में है जिस को इब्ने माजा ने रिवायत किया है कि

إِنَّ اللَّهَ حَرَّمَ عَلَى الْأَرْضِ أَنْ تَأْكُلَ أَجْسَادَ الْأَنْبِيَاءِ فَنَبِيُّ اللَّهِ حَتَّى يُرَزَقَ

(مسند ابن ماجه، كتاب الجنائز، باب ذكر وفاته.... الخ، ج ۳، ص ۲۹۱، رقم ۱۶۳۷)

बेशक **अल्लाह** ने ज़मीन पर ह़राम फ़रमा दिया है कि वोह अम्बिया के जिसमें को खाए लिहाज़ा **अल्लाह** के नबी ज़िन्दा हैं और उन को रोज़ी दी जाती है।

और हाशियए मिश्कात में तहरीर है कि हर नबी की येही शान है कि वोह क़ब्रों में ज़िन्दा हैं और **अल्लाह** तअ़ला उन को रोज़ी अ़ता फ़रमाता है और येह ह़दीष सहीह है। और इमाम बैहकी ने फ़रमाया है कि अम्बिया **عَلَيْهِمُ السَّلَام** मुख़लिफ़ अवक़ात में मुतअद्दिद मक़ामात पर तशरीफ़ ले जाएं येह जाइज़ व दुरुस्त है।

(مرقاة المفاتيح، كتاب الصلوة، باب الجمعة، الفصل الثالث، ج ۳، ص ۲۶۰، رقم ۱۳۶۶)

इसी लिये अहले सुन्नत व जमाअत का येही अ़कीदा है कि हज़रते अम्बिया **عَلَيْهِمُ السَّلَام** अपनी अपनी मुक़द्स क़ब्रों में हयाते जिस्मानी के लवाज़िम के साथ ज़िन्दा हैं। वहाबिय्यों का येह अ़कीदा है कि वोह मर कर मिट्टी में मिल गए। इसी लिये येह गुस्ताख़ फ़िर्का अम्बियाए किराम की क़ब्रों को मिट्टी का ढेर कह कर उन मुक़द्स क़ब्रों की तौहीन और उन को मुन्हदिम करने की कोशिश में लगा रहता है। ह़द हो गई कि आलमे इस्लाम की इन्तिहाई बेचैनी के बा वुजूद गुम्बदे ख़ज़रा को मिस्मार कर देने की स्कीमें बराबर हुकूमते सज़्दिय्या में बनती रहती हैं मगर खुदावन्दे करीम का येह फ़ज़ले अज़ीम है कि अब तक वोह इस प्लान को ब-रूएकार नहीं ला सके हैं और **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** आइन्दा भी उन का येह शैतानी प्लान पूरा न हो सकेगा। क्यूंकि

**जिस का हामी हो खुदा उस को घटा सकता है कौन**

**जिस का हाफ़िज़ हो खुदा उस को मिटा सकता है कौन**

(2) हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** की उम्र शरीफ़ 53 साल की हुई। 13 बरस की उम्र में आप को बादशाही मिली और चालीस बरस तक आप तख़्ते सल्तनत पर जल्वा गर रहे। आप का मज़ारे अक़द्स बैतुल अक़द्स में है। **والله تعالى اعلم**

## ﴿50﴾ क़ारून का अन्जाम

क़ारून हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के चचा “यसहर” का बेटा था। बहुत ही शकील और ख़ूब सूरत आदमी था। इसी लिये लोग उस के हुस्नो ज़माल से मुतअब्धिर हो कर उस को “मुनव्वर” कहा करते थे। इस के साथ साथ उस में येह कमाल भी था कि वोह बनी इस्राईल में “तौरात” का बहुत बड़ा आलिम, और बहुत ही मिलनसार व बा अख़्लाक़ इन्सान था। और लोग उस का बहुत ही अदबो एहतिराम करते थे।

लेकिन बे शुमार दौलत उस के हाथ में आते ही उस के हालात में एक दम तग़य्युर पैदा हो गया और सामरी की तरह मुनाफ़िक़ हो कर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का बहुत बड़ा दुश्मन हो गया और आ'ला दरजे का मुतकब्बिर और मग़रूर हो गया। जब ज़कात का हुक्म नाज़िल हुवा तो उस ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के रू बरू येह अहद किया कि वोह अपने तमाम मालों में से हज़ारहवां हिस्सा ज़कात निकालेगा मगर जब उस ने मालों का हिसाब लगाया तो एक बहुत बड़ी रक़म ज़कात की निकली। येह देख कर उस पर एक दम हिर्स व बुख़ल का भूत सुवार हो गया और न सिर्फ़ ज़कात का मुन्किर हो गया बल्कि आम तौर पर बनी इस्राईल को बहकाने लगा कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام इस बहाने तुम्हारे मालों को ले लेना चाहते हैं, यहां तक कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से लोगों को बर गुश्ता करने के लिये उस ख़बीष ने येह गन्दी और घिनावनी चाल चली कि एक औरत को बहुत ज़ियादा मालो दौलत दे कर आमादा कर लिया कि वोह आप पर बदकारी का इल्ज़ाम लगाए। चुनान्चे, ऐन उस वक़्त जब कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام वा'ज़ फ़रमा रहे थे। क़ारून ने आप को टोका कि फ़ुलानी औरत से आप ने बदकारी की है। हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि उस औरत को मेरे सामने लाओ। चुनान्चे, वोह औरत बुलाई गई तो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया कि ऐ औरत ! उस **अब्बाह** की क़सम ! जिस ने बनी इस्राईल के लिये दरया को फ़ाड़ दिया। और आफ़ि़यत व सलामती के साथ दरया के पार करा कर फ़िराऔन से नजात दी।

सच सच कह दे कि वाकिआ क्या है ? हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के जलाल से औरत सहम कर कांपने लगी और उस ने मजमए आम में साफ़ साफ़ कह दिया कि ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नबी ! मुझ को क़ारून ने कपीर दौलत दे कर आप पर बोहतान लगाने के लिये आमादा किया है। उस वक़्त हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام आबदीदा हो कर सजदए शुक्र में गिर पड़े और ब-हालते सजदा आप ने येह दुआ मांगी कि या **अल्लाह** ! क़ारून पर अपना क़हर व ग़ज़ब नाज़िल फ़रमा दे। फिर आप ने मजमअ से फ़रमाया कि जो क़ारून का साथी हो वोह क़ारून के साथ ठहरा रहे और जो मेरा साथी हो वोह क़ारून से जुदा हो जाए। चुनान्वे, दो ख़बीषों के सिवा तमाम बनी इस्राईल क़ारून से अलग हो गए।

फिर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने ज़मीन को हुक्म दिया कि ऐ ज़मीन ! तू इस को पकड़ ले तो क़ारून एक दम घुटनों तक ज़मीन में धंस गया फिर आप ने दोबारा ज़मीन से येही फ़रमाया तो वोह कमर तक ज़मीन में धंस गया। येह देख कर क़ारून रोने और बिलबिलाने लगा और क़राबत व रिश्तेदारी का वासिता देने लगा मगर आप ने कोई इल्तिफ़ात न फ़रमाया। यहां तक कि वोह बिल्कुल ज़मीन में धंस गया। दो मन्हूस आदमी जो क़ारून के साथी हुवे थे, लोगों से कहने लगे कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने क़ारून को इस लिये धंसा दिया है ताकि क़ारून के मकान और उस के ख़ज़ानों पर खुद क़ब्ज़ा कर लें। तो आप ने **अल्लाह** तआला से दुआ मांगी कि क़ारून का मकान और ख़ज़ाना भी ज़मीन में धंस जाए। चुनान्वे, क़ारून का मकान जो सोने का था और उस का सारा ख़ज़ाना, सभी ज़मीन में धंस गया। (صاوى، ج ۴، ص ۵۲۶، ۵۲۷، ۵۲۸، ۲۰، القصص: ۸۱)

**क़ारून का ख़ज़ाना :-** इस को कुरआन की ज़बान से सुनिये। **अल्लाह** तआला का इरशाद है कि हम ने क़ारून को इतने ख़ज़ाने दिये थे कि उन ख़ज़ानों की कुन्जियां एक मज़बूत और ताक़तवर जमाअत ब मुश्किल उठा सकती थी। कुरआने मजीद में है :

إِنَّ قَارُونَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوسَىٰ فَبَغَىٰ عَلَيْهِمْ ۖ وَآتَيْنَاهُ مِنَ الْكُتُوبِ  
مَا إِنَّ مَفَاتِحَهُ لَتَنُوزُّ أَلْبَعَصَةَ أُولِي الْقُوَّةِ (ص ۲۰، القصص: ۷۶)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** बेशक क़ारून मूसा की क़ौम से था फिर उस ने उन पर ज़ियादती की और हम ने उस को इतने खज़ाने दिये जिन की कुंजिया एक ज़ोरआवर जमाअत पर भारी थीं ।

**हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की नसीहत :-** हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने क़ारून को जो नसीहत फ़रमाई वोह येह है कि जिस को कुरआने मजीद ने बयान फ़रमाया है । इसी ख़ैर ख़्वाही वाली नसीहत को सुन कर क़ारून हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का दुश्मन हो गया । ग़ौर कीजिये कि कितनी मुख़्लिसाना और किस क़दर प्यारी नसीहत है जो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के साथ साथ सारी क़ौमे क़ारून को सुनाई जाती रही कि :

إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ ① وَابْتَغِ فِيمَا  
أَشَكَ اللَّهُ الدَّارَ الْآخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَأَحْسِنْ كَمَا  
أَحْسَنَ اللَّهُ إِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفُسَادَ فِي الْأَرْضِ ②  
(پ ۲۰، القصص: ۷۷-۷۶)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** जब उस से उस की क़ौम ने कहा इतरा नहीं बेशक **अल्लाह** इतराने वालों को दोस्त नहीं रखता और जो माल तुझे **अल्लाह** ने दिया है उस से आख़िरत का घर तलब कर और दुन्या में अपना हिस्सा न भूल और एहसान कर जैसा **अल्लाह** ने तुझ पर एहसान किया और ज़मीन में फ़साद न चाह ।

क़ारून ने अपने माल के घमन्ड में इस मुख़्लिसाना नसीहत को ठुकरा दिया और ख़ूब बन संवर कर तकब्बुर और गुरूर से इतराता हुवा क़ौम के सामने आया और हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की बदगोई और ईजा रसानी करने लगा । इस का नतीजा क्या हुवा ? इस को कुरआन की ज़बान से सुनिये और खुदा की इस काहिराना गिरिफ़्त पर ख़ौफ़े इलाही से थरति रहिये । **अल्लाह** अक्बर

**क़ारून ज़मीन में धंस गया :-**

فَخَسَفْنَا بِهِ وَبِدَارِهِ الْأَرْضَ ③ فَمَا كَانَ لَهُ مِنْ فِئَةٍ يَنْصُرُوهُ  
مِنْ دُونِ اللَّهِ ④ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِينَ ⑤  
(پ ۲۰، القصص: ८۱)



**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** तो हम ने उसे और उस के घर को ज़मीन में धंसा दिया तो उस के पास कोई जमाअत न थी कि **अल्लाह** से बचाने में उस की मदद करती और न वोह बदला ले सका ।

**दर्से हिदायत :-** येह इब्रत नाक वाकिअ़ा हमें येह दर्से हिदायत देता है कि अगर **अल्लाह** तआला मालो दौलत अता फ़रमाए तो इस फ़र्ज़ को लाज़िम जाने कि अपने अम्वाल की ज़कात अदा करता रहे और हरगिज़ हरगिज़ अपने मालो दौलत पर गुरूर और घमन्ड कर के न इतराए । क्यूंकि **अल्लाह** तआला ही दौलत देता है और जब वोह चाहता है पल भर में दौलत छीन भी लेता है । हर वक़्त इस का ध्यान रखते हुवे तवाज़ोअ़ और इन्किसारी की आदत रखे और हरगिज़ हरगिज़ कभी अम्बिया व औलिया व सालिहीन की ईज़ा रसानी व बदगोई न करे कि इन मक्बूलाने बारगाहे इलाही की दुआ और बद दुआ से वोह हो जाया करता है जिस का लोग तसव्वुर और ख़याल भी नहीं कर सकते । (والله تعالى اعلم)

### जन्नत में भी उ-लमा की हाज़त होगी

मदीने के सुल्तान, रहमते आलमिय्यान सरवरे ज़ीशान **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने पुरनूर है : जन्नती जन्नत में उ-लमाए किराम के मोहताज होंगे, इस लिये कि वोह हर जुमुआ को **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के दीदार से मुशरफ़ होंगे **अल्लाह** तआला फ़रमाएगा : **تَمْنُوا عَلَى مَا شِئْتُمْ** या'नी मुझ से मांगो, जो चाहो । वोह जन्नती “उ-लमाए किराम” की तरफ़ मुतवज्जेह होंगे कि अपने रख्बे करीम **عَزَّوَجَلَّ** से क्या मांगें ? वोह फ़रमाएंगे : येह मांगों वोह । मांगो जैसे वोह लोग दुन्या में उ-लमाए किराम के मोहताज थे, जन्नत में भी उन के मोहताज होंगे ।

(फैज़ाने सुन्नत, जि.1, स.1172)

(الفردوس بمأثور الخطاب، ج ١، ٢٣٠، الحديث ٨٨٩، الجامع الصغير للسيوطي، ص ١٣٥، حديث ٢٢٣٥)

## ﴿51﴾ रूमी मग़लूब हो कर फिर ग़ालिब होंगे

फ़ारस और रूम की दोनों सल्तनतों में जंग छिड़ी हुई थी और चूँकि अहले फ़ारस मजूसी थे। इस लिये अरब के मुशरिकीन उन का ग़लबा पसन्द करते थे और रूमी चूँकि अहले किताब थे इस लिये मुसलमानों को उन का फ़तहयाब होना अच्छा लगता था। ख़ुसरू परवेज़ बादशाह फ़ारस और कैसरे रूम दोनों बादशाहों की फ़ौजों सर ज़मीने शाम के करीब मा'रिका आरा हुई और घमसान की जंग के बा'द अहले फ़ारस ग़ालिब हुवे। मुसलमानों को ये ख़बर बड़ी गिरां गुज़री और कुफ़ारे मक्का इस ख़बर से मसरूर हो कर मुसलमानों से कहने लगे कि तुम भी अहले किताब और रूमी नसारा भी अहले किताब, और अहले फ़ारस भी आतश परस्त और हम भी बुत परस्त, हमारे भाई तुम्हारे भाइयों पर ग़ालिब हो गए। अगर हमारी तुम्हारी जंग हुई तो इसी तरह हम भी तुम पर ग़ालिब होंगे। इस मौक़अ पर कुरआने मजीद की ये आयतें नाज़िल हुई जिन में ग़ैब की ख़बर दी गई है :

الْمَ ۝ غَلِبَتِ الرُّومُ ۝ فِي آدْنَى الْأَرْضِ وَهُمْ مِّنْ بَعْدِ غَلِبِهِمْ  
سَيَعْلَبُونَ ۝ فِي بَصْرَمَ سِنِينَ ۝ (پ ۱ ۲، الروم: ۱-۳)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** रूमी मग़लूब हुवे पास की ज़मीन में और अपनी मग़लूबी के बा'द अ़न करीब ग़ालिब होंगे चन्द बरस में।

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने इन आयात को सुन कर कुफ़ारे मक्का में येह ए'लान करा दिया कि खुदा की क़सम ! रूमी अहले फ़ारस पर ग़लबा पा जाएंगे। लिहाज़ा ऐ अहले मक्का ! तुम इस वक़्त के नतीजए जंग से खुशी न मनाओ। चूँकि ब ज़ाहिर रूमियों के फ़तहयाब होने के अस्बाब दूर दूर तक नज़र न आते थे इस लिये “उबय्य बिन ख़लफ़” आप के बिल मुक़ाबिल खड़ा हो गया और आप के और उस के दरमियान सो सो ऊंट की शर्त लग गई कि अगर नव साल के अन्दर रूमी ग़ालिब न आए तो हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ एक सो ऊंट देंगे और अगर रूमी ग़ालिब आ जाएं तो उबय्य बिन ख़लफ़ एक सो ऊंट

देगा। उस वक़्त तक जूआ इस्लाम में ह़राम नहीं हुवा था। खुदा की शान कि सात ही बरस में कुरआन की इस ग़ैबी ख़बर की सदाक़त का जुहूर हो गया और ख़ालिस सुल्हे हुदैबिया के दिन सि. 6 हि. में रूमी अहले फ़ारस पर ग़ालिब हो गए और रूमियों ने “मदाइन” में घोड़े बांधे और इराक़ में “रूमिया” नामी शहर बसाया और हज़रते अबू बक्र सिदीक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने शर्त के सो ऊंट उबय्य बिन ख़लफ़ की अवलाद से वुसूल कर लिये क्यूँकि वोह उस दरमियान में मर चुका था। हुज़ूर सय्यदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते अबू बक्र सिदीक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को हुक्म दिया कि शर्त के ऊंटों को जो उन्होंने ने उबय्य बिन ख़लफ़ की अवलाद से वुसूल किये हैं सब सदका कर दें ! और अपनी ज़ात पर कुछ भी सर्फ़ न करें।

(مدارک التنزیل، ج ۳، ص ۲۵۸، پ ۲۱، الروم: ۳)

**दर्से हिदायत :-** फ़ारस व रूम की जंग में रूमी इस दरजे शिकस्त खा चुके थे कि उन की अस्करी ताक़त ही फ़ना हो गई थी और ब ज़ाहिर उन के फ़तहयाब होने का कोई इम्कान ही नहीं था। मगर सात ही बरस में रूमियों को ऐसी फ़तह हासिल हो गई कि कोई इस को सोच भी नहीं सकता था। रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की येह ग़ैबी ख़बर आप की सिद्दहते नबुव्वत और कुरआने करीम के कलामे इलाही होने की रोशन दलील है। **سُبْحَانَ اللَّهِ** सच है।

हज़ार फ़ल्सफ़ियों की चुनां चुनीं बदली खुदा की बात बदलनी न थी नहीं बदली

### ﴿52﴾ ग़ज़वए अहज़ाब की आंधी

“ग़ज़वए अहज़ाब” सि. 4 या सि. 5 हि. में पेश आया। इस जंग का दूसरा नाम “ग़ज़वए ख़न्दक” भी है। जब “बनू नज़ीर” के यहूदियों को जिला वतन कर दिया गया तो यहूदियों के सरदारों ने मक्का जा कर कुप्फ़ारे मक्का को नबी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ जंग करने की तरगीब दिलाई और वा'दा किया कि हम तुम्हारा साथ देंगे। चुनान्वे, उन यहूदियों ने कषीर ता'दाद में हथियार और रक़म दे कर कुप्फ़ारे मक्का को मदीने पर हम्ला करने पर उभार दिया। और अबू सुफ़यान ने मुशरिकीन व यहूदियों के बहुत से क़बाइल को जम्अ कर के एक अज़ीम फ़ौज के साथ

मदीने पर धावा बोल कर हम्ला कर दिया। मक्का से कबीलए “खज़ाआ” के चन्द लोगों ने हुजूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को कुप्फ़ार की इन तय्यारियों की इत्तिलाअ दे दी तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते सलमान फ़रसी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के मश्वरे से मदीने के गिर्द एक खन्दक़ खुदवानी शुरू कर दी। इस खन्दक़ को खोदने में मुसलमानों के साथ खुद रहमते आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने भी काम किया। मुसलमान खन्दक़ खोद कर फ़ारिग़ ही हुवे थे कि मुशरिकीन एक लश्करे ज़रार ले कर टूट पड़े और मदीनए तय्यिबा पर हल्ला बोल दिया। और तीन तरफ़ से काफ़िरों का लश्कर इस ज़ोरो शोर के साथ उमड पड़ा कि शहरे मदीना की फ़ज़ाओं में हर तरफ़ गर्दो गुबार का तूफ़ान उठ गया। इस ख़ौफ़नाक चढ़ाई और लश्करे कुप्फ़ार की मा'रिका आराई का नक्शा कुरआन की ज़बान से सुनिये :

إِذْ جَاءُوكُم مِّنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنكُمْ وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيِّينَ مِيثَاقَهُمْ لَعَنَّاهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوبَهُمْ قَاسٍ ۖ فَهُمْ لَا يَتَذَكَّرُونَ ﴿١٠٠﴾ هَٰذَا كَيْفَ يُبَدِّلُ الْوَحْيَ وَالْمُؤْمِنُونَ ۚ  
رُلُّوا زُلْفَى الْأَشْيَاءِ ۖ ﴿١٠١﴾ (پ ۲۱، الاحزاب: ۱۰-۱۱)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** जब काफ़िर तुम पर आए तुम्हारे ऊपर से और तुम्हारे नीचे से और जब कि ठिटक कर रह गई निगाहें और दिल गलों के पास आ गए और तुम **अल्लाह** पर तरह तरह के गुमान करने लगे (उम्मीद व यास के) वोह जगह थी कि मुसलमानों की जांच हुई और ख़ूब सख़्ती से झन्डोड़े गए।

इस लड़ाई में मुनाफ़िकीन जो मुसलमानों के दोश ब दोश खड़े थे वोह कुप्फ़ार के इन लश्करों को देखते ही बुजदिल हो कर फिसल गए और इन के निफ़ाक़ का पर्दा चाक हो गया। और वोह जंग से जान चुरा कर अपने घरों में छुप कर बैठे रहने की इजाज़त त़लब करने लगे। लेकिन इस्लाम के सच्चे जां निषार मुहाजिरीन व अन्सार इस तरह सीनए सिपर हो कर डट गए कि वोह कोहे सल्अ और कोहे उहुद की पहाड़ियां सर उठा उठा कर इन मुजाहिदीन की ऊलुल अज़्मियों और जां निषारियों को हैरत की निगाह से देखने लगे ! इन फ़िदा कारों की ईमानी ज़ुरात व इस्लामी

शुजाअत की तस्वीर सफ़हाते कुरआन पर ब सूरते तहरीर देखिये खुदावन्दे आलम का इरशाद है :

وَلَسَّارَ الْيُؤْمُونَ الْأَحْزَابِ لَقَالُوا هَذَا مَا وَعَدَنَا اللَّهُ وَرَسُولُهُ  
وَصَدَّقَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ وَمَا زَادَهُمْ إِلَّا إِيْثَارًا وَتَسْلِيمًا ﴿٢١﴾ (پ ۲۱، الاحزاب: ۲۲)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और जब मुसलमानों ने काफ़ि़रों के लश्कर देखे बोले यह है वोह जो हमें वा'दा दिया था **अल्लाह** और उस के रसूल ने और सच फ़रमाया **अल्लाह** और उस के रसूल ने और इस से उन्हें न बढ़ा मगर ईमान और **अल्लाह** की रिज़ा पर राज़ी होना ।

कुप्फ़ार ने जब मदीने के गिर्द ख़न्दक़ को हाइल देखा तो हैरान रह गए और कहने लगे कि येह तो ऐसी तदबीर है कि जिस से अरब के लोग अब तक नावाक़िफ़ थे । बहर हाल काफ़ि़रों ने ख़न्दक़ के किनारे से मुसलमानों पर तीर अन्दाज़ी और संगबारी शुरूअ कर दी । कहीं कहीं से काफ़ि़रों ने ख़न्दक़ को पार भी कर लिया और ज़म कर लड़ाई भी हुई । मुसलमान काफ़ि़रों के इस मुहासरे से गो परेशान थे । मगर उन के अज़्मे इस्तिक़लाल में बाल बराबर भी फ़र्क़ नहीं आया । वोह अपने अपने मोरचों पर ज़म कर दिफ़ाई जंग लड़ते रहे । अचानक एक दम **अल्लाह** तआला ने मुसलमानों की इस त्रह मदद फ़रमाई कि नागहां मशरिफ़ की जानिब से एक ऐसी तूफ़ान ख़ैज़ और हलाकत अंगेज़ शदीद आंधी आई जो क़हरे क़हहार व ग़ज़बे जब्बार बन कर लश्करे कुप्फ़ार पर खुदा की मार बन गई । देगें चूल्हों से उलट पलट हो कर इधर उधर लुढ़क गई । ख़ैमे उखड़ उखड़ कर उड़ गए और हर तरफ़ घटा टोप अन्धेरा छा गया । और शदीद सर्दी की लहरों ने काफ़ि़रों को झन्झोड़ डाला । फिर **अल्लाह** तआला ने फ़िरिश्तों की फ़ौज़ भेज दी जिन के रो'ब व दबदबे से कुप्फ़ार के दिल लरज़ गए । और उन पर ऐसी दहशत व वहशत सुवार हो गई कि उन्हें राहे फ़रार इख़्तियार करने के सिवा कोई चारा ही न रहा । चुनान्चे, लश्करे कुप्फ़ार के सिपह सालार अबू सुफ़यान ने हांपते कांपते हुवे अपने लश्कर

में ए'लान कर दिया कि राशन ख़त्म हो चुका और मौसिम निहायत ख़राब है और यहूदियों ने हमारा साथ छोड़ दिया। लिहाज़ा अब मदीने का मुहसरा बेकार है। येह कह कर कूच का नक्क़ारा बजा दिया और बहुत सा सामान छोड़ कर मैदाने जंग से भाग निकला और दूसरे क़बाइल भी तित्तर बित्तर हो कर इधर उधर भाग गए और पन्दरह या चोबीस रोज़ के बा'द मदीने का मतलअ कुप्फ़ार के गर्दों गुबार से साफ़ हो गया।

(مدارج النبوت (فارسی) ج ۲، ص ۱۴۲-۱۴۳، بحث غزوہ خندق)

गज़वए अहज़ाब की येही वोह आंधी है जिस का ज़िक्र खुदावन्दे कुहूस ने कुरआन में इस तरह फ़रमाया है।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اذْكُرُوا نِعْمَةَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَاءَتْكُمْ جُنُودٌ  
فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا وَجُنُودًا لَّمْ تَرَوْهَا (پ ۱، الاحزاب: ۹)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** ऐ ईमान वालो ! **अल्लाह** का एहसान अपने ऊपर याद करो जब तुम पर कुछ लश्कर आए तो हम ने उन पर आंधी और वोह लश्कर भेजे जो तुम्हें नज़र न आए।

**दर्से हिदायत :-** इस वाक़िए से हम को येह सबक़ मिलता है कि जब कुप्फ़ार का मुक़ाबला जंग में हो तो मुसलमानों को किसी हाल में भी हरगिज़ हरगिज़ मायूस न होना चाहिये और येह यकीन रख कर मुक़ाबले पर डटे रहना चाहिये कि ज़रूर ज़रूर नुस्ते खुदावन्दी और इम्दादे ग़ैबी मुसलमानों की मदद करेगी बस शर्त येह है कि इख़लासे निय्यत के साथ मुसलमान षाबित क़दम रहें और सब्रो इस्तिक़लाल के साथ मैदाने जंग में डटे रहें। चुनान्वे, जंगे बद्र व जंगे उहुद व जंगे अहज़ाब वग़ैरा कुफ़ व इस्लाम की लड़ाइयों में येह मन्ज़र नज़र आया कि इन्तिहाई मुश्किल हालात में भी जब मुसलमान षाबित क़दम रहे तो ग़ैब से नुस्ते खुदावन्दी **غَوْجُل** और इम्दादे ग़ैबी ने इस तरह जल्वा दिखाया कि दम ज़दन में जंग का पांसा पलट गया और मुसलमानों को फ़ट्टे मुबीन हासिल हो गई और कुप्फ़ार बा वुजूदे अपनी कषरत व शौकत के शिकस्त खा कर भाग निकले। (والله تعالى اعلم)

### ﴿53﴾ कौमे सबा क़ सैलाब

“सबा” अरब का एक क़बीला है जो अपने मूरिषे आ’ला सबा बिन यशजब बिन या’रब बिन क़हतान के नाम से मशहूर है। इस क़ौम की बस्ती यमन में शहरे “सन्आ” से छे मील की दूरी पर वाकेअ थी। इस आबादी की आबो हवा और ज़मीन इतनी साफ़ और इस क़दर लतीफ़ व पाकीज़ा थी कि इस में मच्छर न मख़बी न पिस्सू न खटमल न सांप न बिच्छू। मौसिम निहायत मो’तदिल न गर्मी न सर्दी। यहां के बागात में कषीर फल आते थे। कि जब कोई शख्स सर पर टोकरा लिये गुज़रता तो बिगैर हाथ लगाए किस्म किस्म के फलों से उस का टोकरा भर जाता था। गरज़ येह क़ौम बड़ी फ़ारिगुलबाली और खुशहाली में अम्नो सुकून और आराम व चैन से ज़िन्दगी बसर करती थी मगर ने’मतों की कषरत और खुशहाली ने इस क़ौम को सरकश बना दिया था। **अल्लाह** तआला ने इस क़ौम की हिदायत के लिये यके बा’द दिगरे तेरह नबियों को भेजा जो इस क़ौम को खुदा की ने’मतें याद दिला दिला कर अज़ाबे इलाही से डराते रहे। मगर इन सरकशों ने खुदा के मुक़द्दस नबियों को झुटला दिया और इस क़ौम का सरदार जिस का नाम “हम्माद” था वोह इतना मुतकब्बिर और सरकश आदमी था कि जब उस का लड़का मर गया तो उस ने आस्मान की तरफ़ थूका और अपने कुफ़्र का ए’लान कर दिया। और ए’लानिय्या लोगों को कुफ़्र की दा’वत देने लगा और जो कुफ़्र करने से इन्कार करता, उस को क़त्ल कर देता था और खुदा **عَزَّوَجَلَّ** के नबियों से निहायत ही बे अदबी और गुस्ताखी के साथ कहता था कि आप लोग **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** से कह दीजिये कि वोह अपनी ने’मतों को हम से छीन ले। जब हम्माद और उस की क़ौम का तुग़यान व इस्थान बहुत ज़ियादा बढ़ गया तो **अल्लाह** तआला ने इस क़ौम पर सैलाब का अज़ाब भेजा। जिस से इन लोगों के बागात और अम्वाल व मकानात सब गर्क हो कर फ़ना हो गए और पूरी बस्ती रैत के तोदों में दफ़न हो गई और इस तरह येह क़ौम तबाहो बरबाद हो गई कि इन की बरबादी मुल्के अरब में ज़रबुल मषल बन गई। उम्दा और लज़ीज़ फलों के बागात की जगह झाऊ और जंगली बैरू के ख़ारदार और ख़ौफ़नाक जंगल उग गए और येह क़ौम उम्दा और लज़ीज़ फलों के लिये तरस गई।



**सैलाब किस तरह आया ? :-** कौमे सबा की बस्ती के किनारे पहाड़ों के दामन में बन्द बांध कर मलिका बिल्कीस ने तीन बड़े बड़े तालाब नीचे ऊपर बना दिये थे। एक चूहे ने खुदा **عَزَّوَجَلَّ** के हुक्म से बन्द की दीवार में सुराख कर दिया और वोह बढ़ते बढ़ते बहुत बड़ा शिगाफ़ बन गया और यहां तक कि बन्द की दीवार टूट गई और नागहां जोरदार सैलाब आ गया। बस्ती वाले इस सुराख व शिगाफ़ से गाफ़िल थे और अपने घरों में चैन की बांसरी बजा रहे थे कि अचानक सैलाब के धारों ने इन की बस्ती को ग़ारत कर डाला। और हर तरफ़ बरबादी और वीरानी का दौरा हो गया। **अल्लाह** तआला ने कौमे सबा के इस हलाकत आफ़रीं सैलाब का तज़क़िरा फ़रमाते हुवे कुरआने मजीद में फ़रमाया :

لَقَدْ كَانَ لِسَبَإٍ فِي مَسْكَنِهِمْ آيَةٌ جِئْنِي عَنْ يَمِينٍ وَشَالٍ مُّكْرَمِينَ  
رَزَقْنَاهُمْ وَأَشْرَقُوا لَهُمْ يُلْكُهُمْ وَرَأْبُ غَفُورٍ ۝ فَأَعْرَضُوا  
فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَبَدَّ لَهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتِ أُكُلٍ  
حَظْوٍ وَأَشْلٍ وَشَيْءٍ مِّنْ سَدْرٍ قَلِيلٍ ۝ ذَٰلِكَ جَزَاؤُهُمْ بِمَا كَفَرُوا ۖ  
هَلْ نُجْزِي إِلَّا الْكَافِرِينَ ۝ (پ ۲۲، سبأ: ۱۵-۱۷)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** बेशक सबा के लिये उन की आबादी में निशानी थी दो बाग़ दहने और बाएं। अपने रब का रिज़क़ खाओ और उस का शुक्र अदा करो पाकीज़ा शहर, बख़्शने वाला रब तो उन्होंने ने मुंह फेरा तो हम ने उन पर जोर का अहला (सैलाब) भेजा और उन के बाग़ों के इवज़ दो बाग़ उन्हें बदल दिये जिन में बकटा (बद मज़ा) मेवा और झाऊ (झाड़ी) और कुछ थोड़ी सी बैरियां हम ने उन्हें येह बदला दिया उन की नाशुक्रा की सज़ा और हम किसे सज़ा देते हैं ? उसी को जो नाशुक्रा है।  
**दर्से हिदायत :-** कौमे सबा की येह हलाकत व बरबादी उन की सरकशी और खुदा **عَزَّوَجَلَّ** की ने'मतों की नाशुक्रा के सबब से हुई। उन की बद आ'मालियां और खुदा **عَزَّوَجَلَّ** के नबियों के साथ बे अदबियां और गुस्ताखियां जब बहुत बढ़ गईं तो खुदावन्दे क़्हार व ज़ब्बार का क़हर व ग़ज़ब अज़ाब बन कर सैलाब की सूरत में आ गया और उन को तबाहो बरबाद कर दिया गया।

सच है कि नेकी का अघर आबादी और बदी का अघर बरबादी है। लिहाजा हर ने'मत पाने वाली क़ौम को लाज़ि़म है कि खुदा की ने'मतों का शुक्र अदा करे और सरकशी व गुनाह से हमेशा किनारा कशी इख़्तियार करे, वरना ख़तरा है कि अज़ाबे इलाही न उतर पड़े क्यूंकि जो क़ौम सरकशी और बद आ'माली को अपना तरीक़ा कार बना लेती है, उस का लाज़िमी अघर येही होता है कि वोह क़ौम अज़ाबे इलाही की मार से बरबाद और उस की आबादियां तहस नहस हो कर वीरान बन जाती हैं। (نَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْهُ)

### ﴿54﴾ हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के तीन मुबल्लिगीन

“अन्ताकिय्या” मुल्के शाम का एक बेहतरीन शहर था। जिन की फ़स्लीलें संगीन दीवारों से बनी हुई थीं और पूरा शहर पांच पहाड़ों से घिरा हुआ था। और शहर की आबादी का रक़बा बारह मील तक फैला हुआ था। हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने ह्वारियों में से दो मुबल्लिगीनों को तब्लीगे दीन के लिये उस शहर में भेजा। एक का नाम “सादिक” और दूसरे का नाम “मस्दूक” था। जब येह दोनों शहर में पहुंचे तो एक बड़्ठे चरवाहे से इन दोनों की मुलाक़ात हुई जिस का नाम “हबीब नज्जार” था। सलाम के बा'द हबीब नज्जार ने पूछा कि आप लोग कौन हैं और कहां से आए हैं और मक्सद क्या है? तो इन दोनों साहिबान ने कहा कि हम दोनों हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के भेजे हुवे मुबल्लिगीन हैं और इस बस्ती वालों को तौहीद और खुदा परस्ती की दा'वत देने आए हैं तो हबीब नज्जार ने कहा कि आप लोगों के पास इस की कोई निशानी भी है? तो इन दोनों ने कहा कि जी हां हम लोग मरीजों और मादर जाद अन्धों को खुदा عَزَّوَجَلَّ के हुक्म से शिफ़ा देते हैं। (येह इन दोनों की करामत और हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام का मो'जिज़ा था)। येह सुन कर हबीब नज्जार ने कहा कि मेरा एक लड़का मुद्तों से बीमार है। क्या आप लोग उस को तन्दुरुस्त कर देंगे? इन दोनों ने कहा कि जी हां! उस को हमारे पास लाओ। चुनान्चे, इन दोनों ने उस मरीज़ लड़के पर अपना हाथ फेर दिया और वोह फ़ौरन ही तन्दुरुस्त हो कर खड़ा हो गया। येह ख़बर बिजली की तरह सारे शहर में फैल गई और बहुत से मरीज़ जम्अ हो गए और सब शिफ़ायाब भी हो गए।

इस शहर का बादशाह “अन्तीखा” नामी एक बुत परस्त था वोह इन दोनों की ज़बान से तौहीद की दा’वत सुन कर मारे गुस्से के आपे से बाहर हो गया। और उस ने दोनों मुबल्लिगों को गिरिफ़्तार कर के सो सो दूर लगा कर जैल खाने में कैद कर दिया। इस के बा’द हज़रते ईसा عليه السلام ने अपने हवारियों के सरदार हज़रते “शमऊन” رضي الله تعالى عنه को अन्ताकिय्या भेजा। आप किसी तरह बादशाह के दरबार में पहुंच गए और बादशाह से कहा कि आप ने हमारे दो आदमियों को कोड़े लगा कर जैल खाने में कैद कर दिया है। कम से कम आप उन दोनों की पूरी बात तो सुन लेते। बादशाह ने उन दोनों को जैल खाने से बुलवा कर गुफ़्तगू शुरू की तो इन दोनों ने कहा कि हम येही कहने के लिये यहां आए हैं कि तुम लोग इन बुतों की इबादत को छोड़ कर खुदाए वहदहू की इबादत करो जिस ने तुम को और तुम्हारे बुतों को भी पैदा किया है। जब बादशाह ने इन दोनों से कोई निशानी त़लब की तो इन दोनों साहिबों ने एक ऐसे मादर जाद अन्धे को जिस के सर में आंखें थीं ही नहीं, हाथ फेर दिया तो उस की पेशानी में आंखों के दो सूराख़ बन गए। फिर इन दोनों साहिबान ने मिट्टी के दो ग़लूले (गोले) बना कर इन सूराख़ों में रख कर दुआ कर दी तो येह दोनों गोले आंखें बन कर रोशन हो गए और मादर जाद अन्धा अंखयारा बन गया। हज़रते शमऊन ने फ़रमाया कि ऐ बादशाह ! क्या तुम्हारे बुतों में भी येह कुदरत है ? बादशाह ने कहा कि नहीं तो हज़रते शमऊन ने फ़रमाया कि फिर तुम उस की इबादत क्यूं नहीं करते जो ऐसी कुदरत वाला है कि अन्धों को आंखें अ़ता फ़रमा देता है। येह सुन कर बादशाह ने कहा कि क्या तुम्हारा खुदा मुर्दों को ज़िन्दा कर सकता है ? अगर वोह मुर्दों को ज़िन्दा कर सकता है तो एक मुर्दे को ज़िन्दा कर दे जो मेरे एक दहक़ान का लड़का है और वोह कई रोज़ से मरा पड़ा है। और मैं ने उस के बाप के इन्तिज़ार में अभी तक उस को दफ़न नहीं किया है। बादशाह इन तीनों साहिबान को ले कर लड़के की लाश के पास गया और इन तीनों साहिबान ने दुआ मांगी तो खुदा के हुक्म से वोह मुर्दा ज़िन्दा हो गया। और बुलन्द आवाज़ से कहा कि मैं बुत परस्त था तो मैं मरने के बा’द जहन्नम की वादियों में दाख़िल किया गया। लिहाज़ा मैं तुम लोगों को अज़ाबे इलाही

से डराते हुवे **अब्बाह** पर ईमान लाने की दा'वत देता हूं और तुम लोगों को नसीहत करता हूं कि खुदा के पैगम्बर हज़रते ईसा **عَلَيْهِ السَّلَام** का कलिमा पढ़ कर इन तीनों मुबल्लिगीन की बात मान कर इन लोगों के साथ अच्छा सुलूक करो क्योंकि ये तीनों साहिबान हज़रते ईसा **عَلَيْهِ السَّلَام** के हवारी और उन के फ़रस्तादा हैं।

येह मन्ज़र देख कर और मुर्दे की तक़रीर सुन कर सब के सब हैरान रह गए। इतने में हबीब नज्जार भी दौड़ते हुवे पहुंच गए और इन्होंने भी बादशाह और सारे शहर वालों को मुबल्लिगीन की तस्दीक़ के लिये पुर ज़ोर तक़रीर कर के आमादा कर लिया। यहां तक कि बादशाह और उस के तमाम दरबारियों ने ईमान की दा'वत को क़बूल कर लिया और सब साहिबे ईमान हो गए मगर चन्द मन्हूस लोग जो बुतों की महबूबत में अक्ल व होश खो चुके थे वोह ईमान नहीं लाए बल्कि हबीब नज्जार को क़त्ल कर दिया तो उन मर्दूदों पर अज़ाब आया और अज़ाबे इलाही से हलाक कर दिये गए। (तफ़सीर सावय, ज, ५, ص १८०-१८१, २, २२, प १३)

इस वाक़िए को कुरआने मजीद ने इन लफ़्ज़ों में बयान फ़रमाया है :

وَأَصْرِبْ لَهُمْ مَثَلًا أَصْحَابَ الْقَرْيَةِ ۖ إِذْ جَاءَهَا الْمُرْسَلُونَ ۖ إِذْ أَرْسَلْنَا إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوا إِنَّا إِلَيْكُم مُّرْسَلُونَ ۖ قَالُوا مَا أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَمَا أَنْزَلَ الرَّحْمَنُ مِنْ شَيْءٍ ۖ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا كَذِبُونَ ۖ قَالُوا رَبُّنَا يَعْلَمُ إِنَّا إِلَيْكُم لَمُرْسَلُونَ ۖ وَمَا عَلَيْنَا الْإِبْلَغُ الْمُبِينُ ۖ قَالُوا إِنَّا نَطْغُرُ نَا بِكُمْ لَعْنٌ لَكُم تَنْتَهُوا لِرِجْسِكُمْ وَلَيْسَ لَكُم مِّنَّا عِدَابُ اللَّهِ ۖ قَالُوا طَائِفُكُمْ مَعَكُمْ ۖ أَيْنَ ذُكِّرْتُمْ ۖ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُونَ ۖ وَجَاءَ مِنَ اقْصَا الْمَدِينَةِ رَجُلٌ يَّسْعَى قَالَ لِقَوْمِ أَتِيعُوا الْمُرْسَلِينَ ۖ اتَّبِعُوا مَن لَّا يَسْأَلْكُمْ أَجْرًا وَهُمْ مُّهْتَدُونَ ۖ (پ ۲۲، پ ۱۳-۲۱)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और उन से मिषाल बयान करो उस शहर वालों की जब उन के पास फ़रस्तादे (रसूल) आए जब हम ने उन की तरफ़ दो भेजे फिर उन्होंने ने उन को झुटलाया तो हम ने तीसरे से ज़ोर दिया अब उन सब ने कहा कि बेशक हम तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं बोले तुम तो नहीं मगर हम जैसे आदमी और रहमान ने कुछ नहीं उतारा तुम निरे झूटे हो वोह बोले हमारा रब जानता है कि बेशक ज़रूर हम तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं और हमारे जिम्मे नहीं मगर साफ़ पहुंचा देना बोले हम तुम्हें मन्हूस समझते हैं बेशक तुम अगर बाज़ न आए तो ज़रूर हम तुम्हें संगसार करेंगे बेशक हमारे हाथों तुम पर दुख की मार पड़ेगी। उन्होंने ने फ़रमाया तुम्हारी नुहूसत तो तुम्हारे साथ है क्या इस पर बुदकते हो कि तुम समझाए गए बल्कि तुम हद से बढ़ने वाले लोग हो और शहर के परले कनारे से एक मर्द दौड़ता आया बोला ऐ मेरी कौम ! भेजे हुआँ की पैरवी करो ऐसों की पैरवी करो जो तुम से कुछ नेग (अन्न) नही मांगते और वोह राह पर हैं।

**दर्से हिदायत :-** हज़रते ईसा عليه السلام के तीनों मुबल्लिगीन या'नी सादिक् व मस्टूक और शमऊन की सरगुज़िशत और तब्लीगे दीन की राह में उन हज़रात की दुश्वारियाँ और कैदो बन्द के मसाइब और होशरुबा धमकियों को देख कर येह सबक मिलता है कि तब्लीगे दीन करने वालों को बड़ी बड़ी मुसीबतों और मुशकिलात का सामना करना पड़ता है। मगर जब आदमी इस राह में मुस्तक़िल मिज़ाज बन कर षाबित क़दम रहता है और सब्रो तहम्मुल के साथ इस दीनी काम में डटा रहता है तो **अल्लाह** तआला ग़ैब से उस की कामयाबी का सामान पैदा फ़रमा देता है वोह मुकल्लिबुल कुलूब और हादी है वोह एक लम्हे में मुन्किरीन के दिलों को बदल देता है और दिलों की गुमराही दूर फ़रमा कर हिदायत का नूर बख़्श देता है। (والله تعالى علم)

### ﴿55﴾ फूला बाग़ मिनटों में ताशज

हज़रते ईसा عليه السلام के आस्मान पर उठा लिये जाने के थोड़े दिनों बाद का वाकिआ है कि यमन में “सन्आ” शहर से दो कोस की दूरी पर एक बाग़ था जिस का नाम “ज़रदान” था। इस बाग़ का मालिक बहुत ही नेक नफ़्स और सख़ी आदमी था। उस का येह दस्तूर था कि फलों को तोड़ने के वक़्त वोह फ़कीरो और मिस्कीनों को बुलाता था और ए’लान कर देता था कि जो फल हवा से गिर पड़ें या जो हमारी झोली से अलग जा कर गिरें वोह सब तुम लोग ले लिया करो। इस तरह उस बाग़ का बहुत सा फल फुकरा व मसाकीन को मिल जाया करता था। बाग़ का मालिक मर गया तो उस के तीनों बेटे उस बाग़ के मालिक हुवे मगर येह तीनों बहुत बख़ील हुवे। उन लोगों ने आपस में तै कर लिया कि अगर फ़कीरों और मिस्कीनों को हम लोग बुलाएंगे तो बहुत से फल येह लोग ले जाएंगे और हम लोगों के अहलो इयाल की रोज़ी में तंगी हो जाएगी। चुनान्चे, इन तीनों भाइयों ने क़सम खा कर येह तै कर लिया कि सूरज निकलने से क़ब्ल ही चल कर हम लोग बाग़ का फल तोड़ लें ताकि फुकरा व मसाकीन को ख़बर ही न हो। चुनान्चे, इन लोगों की बद निय्यती की नुहूसत ने येह अघरे बद दिखाया कि नागहां रात ही में **अल्लाह** तआला ने बाग़ में एक आग भेज दी। जिस ने पूरे बाग़ को जला कर खाक सियाह कर डाला और उन लोगों को इस की ख़बर भी न हुई। येह लोग अपने मन्सूबे के मुताबिक़ रात के आख़िरी हिस्से में निहायत ख़ामोशी के साथ फल तोड़ने के लिये ख़ाना हो गए और रास्ते में चुपके चुपके बातें करते थे ताकि फ़कीरों और मिस्कीनों को ख़बर न मिल जाए। लेकिन येह लोग जब बाग़ के पास पहुंचे तो वहां जले हुवे दरख़्तों को देख कर हैरान रह गए। चुनान्चे, एक बोल पड़ा कि हम लोग रास्ता भूल कर किसी और जगह चले आए हैं मगर उन में से जो ब निस्बत दूसरे भाइयों के कुछ नेक नफ़्स था। उस ने कहा कि हम रास्ता नहीं भूले हैं बल्कि **अल्लाह** तआला ने हम लोगों को फलों से महरूम कर दिया है लिहाज़ा तुम लोग खुदा की तस्बीह पढ़ो तो इन सभों ने येह पढ़ना

शुरूअ कर दिया कि **سُبْحَنَ رَبِّيَ إِنَّكَ كَاطِلِيْبٌ ۝** या'नी हमारे रब के लिये पाकी है हम लोग यकीनन ज़ालिम हैं कि हम ने फुकरा व मसाकीन का हक मार लिया फिर वोह तीनों भाई एक दूसरे को मलामत करने लगे और आखिर में येह कहने लगे कि

عَلَى رَبِّنَا أَنْ يَبْدِلَ لَنَا خَيْرَ امْرَأَتٍهَا إِنَّا إِلَى رَبِّنَا لارْغَبُونَ ۝ (پ ۲۹، القلم: ۳۲)

**तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान :-** उम्मीद है कि हमें हमारा रब इस से बेहतर बदल दे हम अपने रब की तरफ़ रग़बत लाते हैं ।

हज़रते अब्दुल्लाह बिन मसऊद **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने फ़रमाया कि इन लोगों ने सच्चे दिल से तौबा कर ली तो **अल्लाह** तआला ने उन लोगों की तौबा क़बूल फ़रमा ली और फिर उन लोगों को इस के बदले एक दूसरा बाग़ अता फ़रमा दिया जिस में बहुत ज़ियादा और बहुत बड़े बड़े फल आने लगे । इस बाग़ का नाम “हैवान” था और उस में एक एक अंगूर इतना बड़ा बड़ा होता था कि उस का एक खोशा एक खच्चर का बोझ हो जाया करता था । अबू ख़ालिद यमानी का बयान है कि मैं उस बाग़ में गया था तो मैं ने देखा कि उस बाग़ में अंगूरों के खोशे हब्शी आदमी के क़द के बराबर बड़े थे । (تفسير صاوی، ج ۶، ص ۲۲۱، پ ۲۹، القلم: ۳۲)

**दर्से हिदायत :-** इस वाकिए से सबक़ मिलता है कि सख़ावत और नेक निय्यती का अषर माल में खैरो बरक़त और माल की फ़िरावानी है और बख़ीली व बद निय्यती का षमरा माल की हलाक़त व बरबादी है । और येह भी मा'लूम हुवा कि सच्ची तौबा कर लेने से **अल्लाह** तआला ज़ाइल शुदा ने'मत से बड़ी और बढ़ कर ने'मत अता फ़रमा दिया करता है । सच है कि

ذَٰلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ

**﴿56﴾ दरबारे दावूद عَلَيْهِ السَّلَام में एक अजीब मुक़द्दमा**

हज़रते दावूद **عَلَيْهِ السَّلَام** की निनानवे बीवियां थीं । इस के बा'द आप ने एक दूसरी औरत को निकाह का पैग़ाम दिया जिस को एक मुसलमान ने पहले से पैग़ाम दे रखा था लेकिन आप का पैग़ाम पहुंचने के बा'द औरत के औलिया दूसरे की तरफ़ भला कब और कैसे तवज्जोह कर



सकते थे ? आप से निकाह हो गया। येह बात न तो शरअन नाजाइज़ थी, न उस ज़माने के रस्मो रवाज के खिलाफ़ थी। लेकिन हज़रते अम्बियाए किराम عليهم السلام की शान बहुत ही अरफ़अ व आ'ला होती है। येह आप के मन्सबे अ़ली के मुनासिब न था। इस लिये **अब्बाह** तअ़ाला की मरज़ी येह हुई कि आप को इस पर मुतनब्बेह और आगाह कर दिया जाए।

चुनान्वे, इस का ज़रीअ येह बनाया कि फ़िरिशते मुद्ई और मुद्दआ अलैह बन कर आप के दरबार में एक मुक़द्दमा ले कर आए और बजाए दरवाज़े से दाख़िल होने के दीवार फांद कर मस्जिद में आए। आप इन लोगों को दीवार फांदते देख कर कुछ घबरा गए। तो फ़िरिशतों ने कहा कि आप डरें नही। हम दो फ़रीक़ हैं कि एक ने दूसरे पर ज़ियादती की है। लिहाज़ा आप हमारा ठीक ठीक फैसला कर दीजिये और हमें सीधी राह चलाइये। हमारा मुक़द्दमा येह है कि मेरा येह भाई इस के पास निनानवे दुम्बियां हैं और मेरे पास एक ही दुम्बी है। अब येह कहता है कि तू अपनी एक दुम्बी भी मेरे हवाले कर दे और इस बात के लिये मुझ पर दबाव डालता है। येह सुन कर हज़रते दावूद عليه السلام ने फ़ौरन येह फैसला फ़रमा दिया कि बेशक येह ज़ियादती है कि वोह तेरी दुम्बी को अपनी दुम्बियों में मिला लेने को कहता है और इस में कोई शुबा नहीं कि अक़षर साझे वाले एक दूसरे पर ज़ियादती करते रहते हैं। बजुज़ उन लोगों के जो साहिबे ईमान और नेक अमल हों और ऐसों की ता'दाद बहुत ही कम है। मुक़द्दमे का फैसला सुना कर हज़रते दावूद عليه السلام का माथा ठनका और इन्हों ने समझ लिया कि इस मुक़द्दमे की पेशी दर हकीक़त येह मेरा इम्तिहान था। चुनान्वे, फ़ौरन ही आप सजदे में गिर पड़े और खुदा से मुआफ़ी मांगने लगे तो **अब्बाह** तअ़ाला ने आप को मुआफ़ फ़रमा दिया। चुनान्वे, कुरआने मजीद में है :

فَعَفَّرْنَا لَهُ ذُلِّكَ ۖ وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَزُنُفًى وَحُسْنَ مَآلٍ ۖ يٰدَاوُدُ إِنَّا جَعَلْنَاكَ خَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ فَاحْكُم بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوَىٰ فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ (پ ۲۳، ص: ۲۴، ۲۵)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** तो हम ने उसे येह मुआफ़ फ़रमा दिया और बेशक उस के लिये हमारी बारगाह में ज़रूर कुर्ब और अच्छ ठिकाना है। ऐ दावूद बेशक हम ने तुझे ज़मीन में नाइब किया तू लोगों में सच्चा हुक्म कर और ख़्वाहिश के पीछे न जाना कि तुझे **अल्लाह** की राह से बहका देगी।

**दर्से हिदायत :-** हज़रते अम्बियाए किराम **عَلَيْهِمُ السَّلَام** की शान बहुत ही अज़ीमुशान है इस लिये बहुत ही मा'मूली और छोटी छोटी बातों पर भी खुदावन्दे कुहूस की तरफ़ से इन हज़रत को आगाही दी जाती है और येह नुफ़ूसे कुदसिय्या भी बारगाहे खुदावन्दी में इस क़दर मुतीअ और मुतवाजेअ होते हैं कि फ़ौरन ही दरबारे खुदावन्दी में सजदा रैज हो कर अफ़वे तकसीर की इस्तिदआ करने लगते हैं। मषल मशहूर है कि **حَسَنَاتُ الْأَبْرَارِ سَيِّئَاتُ الْمُفْرِّينَ** या 'नी नेक लोगों की नेकियां मुक़रबीन के लिये ख़ताओं का दरजा रखती हैं। क्यूं न हो।

**जिन के रुत्बे हैं सिवा**

**उन को सिवा मुश्किल है**

**﴿57﴾ إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ छोड़ने का नुक्शान**

हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** की निनानवे बीवियां थीं। एक मरतबा आप ने फ़रमाया कि मैं रात भर अपनी निनानवे बीवियों के पास दौरा करूंगा और सब के एक एक लड़का पैदा होगा तो मेरे येह सब लड़के **अल्लाह** की राह में घोड़ों पर सुवार हो कर जिहाद करेंगे। मगर येह फ़रमाते वक़्त आप ने **إِنَّ شَاءَ اللَّهُ** नहीं कहा। ग़ालिबन आप उस वक़्त किसी ऐसे शग़ल में थे कि इस का ख़याल न रहा। इस **“إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ”** को छोड़ देने का येह अषर हुवा कि सिर्फ़ एक औरत हामिला हुई और उस के भी एक नाक़िसुल ख़लक़त (कच्चा बच्चा) हुवा। हुज़ूर ख़ातिमुन्नबिय्यीन **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया कि अगर हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** ने **“إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ”** कह दिया होता तो उन सब औरतों के लड़के पैदा होते और वोह खुदा की राह में जिहाद करते। (بخاری شریف، کتاب الجهاد، باب من طلب الولد للجهاد، ج ۴، ص ۲۲، رقم ۲۸۱۹)

कुरआने मजीद में **अल्लाह** तआला ने इस वाक़िए को इजमालन बहुत मुख़्तसर तरीक़े पर इस तरह बयान फ़रमाया है :

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَانَ وَالْقَيْنَاعِلَىٰ كُرْسِيِّهِ جَسَدًا ثُمَّ أَنَابَ ۖ قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُلْكًا لَا يَنْبَغِي لِأَحَدٍ مِّنْ بَعْدِي ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿٣٥﴾ (پ ۲۳، ص: ۳۴، ۳۵)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** और बेशक हम ने सुलैमान को जांचा और उस के तख्त पर एक बे जान बदन डाल दिया फिर रुजूअ लाया अर्ज़ की ऐ मेरे रब मुझे बख़्श दे और मुझे ऐसी सल्तनत अता कर कि मेरे बा'द किसी को लाइक न हो बेशक तू ही बड़ी दैन वाला ।

**दर्से हिदायत :-** इस कुरआनी वाकिए से यह सबक मिलता है कि मुसलमान को लाज़िम है कि आइन्दा के लिये जो काम करने को कहे तो “**ان شاء الله تعالى**” ज़रूर कह दे । इस मुक़द्दस जुम्ले की बरकत से बड़ी उम्मीद है कि वोह काम हो जाएगा । और “**ان شاء الله تعالى**” छोड़ देने का अन्जाम सरासर नुक्सान और नाकामी व महरूमी है । ग़ौर कीजिये कि हज़रते सुलैमान **عليه السلام** जो खुदावन्दे कुहूस के प्यारे नबी और बे मिषाल बादशाह भी हैं । मगर इन्होंने ने ला शुऊरी तौर पर **ان شاء الله تعالى** कहना छोड़ दिया तो इन का मक्सद जो आ'ला दरजे की इबादत थी पूरा नहीं हुवा और वोह इस बात पर निहायत मतासफ़ और रन्जीदा हो कर खुदा की तरफ़ रुजूअ हुवे, वोह अपनी मग़फ़िरत की दुआ मांगने लगे, फिर भला हम तुम गुनहगारों का क्या ठिकाना है ? कि अगर हम तुम **ان شاء الله تعالى** कहना छोड़ देंगे तो भला किस तरह हम अपने मक्सद में कामयाब होंगे ? लिहाज़ा **ان شاء الله تعالى** कहना ज़रूर याद रखिये । क्योंकि **अल्लाह** तआला ने हमारे रसूले मक़बूल हुज़ूर ख़ातिमुन्नबिय्यीन **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को कुरआने मजीद में बड़ी ताकीद के साथ यह हुक्म दिया है कि आइन्दा के लिये जो काम भी करने को कहिये तो ज़रूर “**ان شاء الله تعالى**” कह लीजिये ।

चुनान्वे, **अल्लाह** तआला ने अपने हबीब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को यह हुक्म फ़रमाया :

وَلَا تَقُولَنَّ لِشَآئٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذَٰلِكَ عَدَاوَةٌ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ  
وَإِذْ كُنَّ رَبَّكَ إِذَا نَسِيتَ (پ ۵، الکہف: ۲۳، ۱۴)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** और हरगिज किसी बात को न कहना कि मैं कल येह कर दूंगा मगर येह कि **अल्लाह** चाहे और अपने रब की याद कर जब तू भूल जाए।

### ﴿58﴾ अस्हाबुल उख़्दूद के मजलिस

“अस्हाबुल उख़्दूद” के बारे में मुफ़स्सिरिन का इख़िलाफ़ है कि येह कौन लोग थे ? और इन का क्या वाकिआ था। इस बारे में हज़रते सुहैब **रَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है कि अगली उम्मतों में एक बादशाह था जो खुदाई का दावा करता था और एक जादूगर उस के दरबार का बहुत ही मुकर्रब था। एक दिन जादूगर ने बादशाह से कहा कि मैं अब बुढ़ा हो चुका हूं। लिहाजा तुम एक लड़के को मेरे पास भेज दो ताकि मैं उस को अपना जादू सिखा दूं। चुनान्चे, बादशाह ने एक होशियार लड़के को जादूगर के पास भेज दिया। लड़का रोज़ाना जादूगर के पास आने जाने लगा लेकिन रास्ते में एक ईमानदार राहिब रहता था। लड़का एक दिन उस राहिब के पास बैठा तो उस की बातें लड़के को बहुत पसन्द आ गईं। चुनान्चे, लड़का जादूगर के पास आने जाने में रोज़ाना राहिब के पास बैठने लगा। एक दिन लड़के ने देखा कि एक बड़ा और मुहीब जानवर खड़ा इन्सानों का रास्ता रोके हुवे है। लड़के ने येह मन्ज़र देख कर येह कहा कि आज येह ज़ाहिर हो जाएगा कि जादूगर अफ़ज़ल है या राहिब ? चुनान्चे, लड़के ने एक पथ्थर उठा कर येह दुआ मांगी कि या **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** अगर तेरे दरबार में येह मजहब जादूगर से ज़ियादा मक़बूल व महबूब हो तो इस जानवर को इसी पथ्थर से मक़तूल फ़रमा दे। येह दुआ कर के लड़के ने जानवर को उस पथ्थर से मार दिया तो येह बहुत बड़ा जानवर एक छोटे से पथ्थर से क़त्ल हो कर मर गया और लोगों का रास्ता खुल गया। लड़के ने राहिब से येह पूरा वाकिआ बयान किया तो राहिब ने

कहा कि ऐ लड़के ! खुदा **عَزَّوَجَلَّ** के दरबार में तेरा मरतबा बुलन्द हो गया है । लिहाजा अब तू अन करीब इम्तिहान में डाला जाएगा । इस लिये किसी को मेरा पता न बताना और इम्तिहान के वक़्त सब्र करना । इस के बा'द येह लड़का इस क़दर साहिबे करामत हो गया कि इस की दुआओं से मादर जाद अन्धे और कोढ़ी शिफ़ा पाने लगे । रफ़्ता रफ़्ता बादशाह के दरबार में उस का चर्चा होने लगा तो बादशाह का एक बहुत ही मुक़र्रब हम नशीन जो अन्धा हो गया था, उस लड़के के पास बहुत से हदाया और तहाइफ़ ले कर हाज़िर हुवा । और अपनी बसारत के लिये दुआ का तालिब हुवा । तो लड़के ने कहा कि अगर तू **अल्लाह** तआला पर ईमान लाए तो मैं तेरे लिये दुआ करूंगा । चुनान्चे, वोह ईमान लाया और लड़के ने उस के लिये दुआ कर दी तो फ़ौरन ही वोह अंखयारा हो गया और बादशाह के दरबार में गया तो बादशाह ने पूछा कि तुम्हारी आंखों में बसारत कैसे आ गई ? तो मुक़र्रब हम नशीन ने कहा कि मेरे रब ने मुझे बसारत अता फ़रमा दी है । बादशाह ने ग़ज़ब नाक हो कर कहा कि क्या मेरे सिवा भी तुम्हारा कोई रब है ? तो उस ने कहा कि हां, **अल्लाह** तआला मेरा और तेरा दोनों का रब है । बादशाह ने उस को त़रह त़रह की सज़ाएं दे कर पूछा कि किस ने तुझे येह बताया है ? तो उस ने लड़के का नाम बता दिया । फिर बादशाह ने लड़के को कैद कर के उस को इस क़दर मारा पीटा कि उस ने राहिब का नाम बता दिया । बादशाह ने राहिब को गिरफ़्तार कर के उस से कहा कि तुम अपने अक़ीदे को छोड़ दो मगर राहिब ने साफ़ साफ़ कह दिया कि मैं अपने इस अक़ीदे पर आख़िरी दम तक काइम रहूंगा । येह सुन कर बादशाह आग बगोला हो गया और उस ने राहिब के सर पर आरा चलवा कर उस के दो टुकड़े कर दिये । इस के बा'द बादशाह ने अपने मुक़र्रब हम नशीन के सर पर भी आरा चलवा दिया । फिर लड़के को सिपाहियों के सिपुर्द किया और हुक्म दिया कि इस को पहाड़ की चोटी पर चढ़ा कर ऊपर से नीचे लुड़का दो । लड़के ने पहाड़ पर चढ़ कर दुआ मांगी तो एक ज़लज़ला आया और बादशाह के सिपाही ज़लज़ले के झटकों से हलाक हो गए और लड़का सलामती के साथ फिर बादशाह के सामने आ खड़ा हो गया । फिर बादशाह ने ग़ैज़ो ग़ज़ब में भर कर हुक्म दिया

कि इस लड़के को कश्ती पर बिठा कर समन्दर में ले जाओ और समन्दर की गहराई में ले जा कर इस को समन्दर में फेंक दो। चुनान्वे, बादशाह के सिपाही इस को कश्ती में बिठा कर ले गए। फिर जब लड़के ने दुआ मांगी तो कश्ती गर्क हो गई और सब सिपाही हलाक हो गए और लड़का सिद्धत व सलामती के साथ बादशाह के सामने आ कर खड़ा हो गया और बादशाह हैरान रह गया। फिर लड़के ने बादशाह से कहा कि अगर तू मुझ को शहीद करना चाहता है तो इस की सिर्फ एक ही सूरत है कि तू मुझ को सूली पर लटका कर और यह पढ़ कर मुझे तीर मार कि **”بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ”** चुनान्वे, इसी तरीक़े से बादशाह ने उस लड़के को तीर मार कर शहीद कर दिया।

येह मन्ज़र देख कर हज़ारों के मजमअ ने बुलन्द आवाज़ से येह ए’लान करना शुरूअ कर दिया कि हम इस लड़के के रब पर ईमान लाए। बादशाह गुस्से में बोखला गया और उस ने गढ़ा खुदवा कर उस में आग जलवाई। जब आग के शो’ले खूब बुलन्द होने लगे तो उस ने ईमानदारों को पकड़वा कर उस आग में डालना शुरूअ कर दिया। यहां तक कि सतत्तर मोअमिनीन को उस आग में जला डाला। आखिर में एक ईमान वाली औरत अपने बच्चे को गोद में लिये हुवे आई और जब बादशाह ने उस को आग में डालने का इरादा किया तो वोह कुछ घबराई तो उस के दूध पीते बच्चे ने कहा कि ऐ मेरी मां ! सन्न कर तू हक़ पर है। बच्चे की आवाज़ सुन कर उस की मां का ज़ब्र ईमानी बेदार हो गया और वोह मुतमइन हो गई। फिर ज़ालिम बादशाह ने उस मोमिना को भी उस के बच्चे के साथ आग में फेंक दिया।

बादशाह और उस के साथी ख़न्दक के किनारे मोअमिनीन के आग में जलने का मन्ज़र कुरसियों पर बैठ कर देख रहे थे और अपनी कामयाबी पर खुशी मना रहे थे और कहकहे लगा रहे थे कि एक दम कहरे इलाही ने ज़ालिमों को अपनी गिरिफ्त में ले लिया। और वोह इस तरह कि ख़न्दक की आग के शो’ले इस क़दर भड़क कर बुलन्द हुवे कि बादशाह और उस के साथियों को आग ने अपनी लपेट में ले लिया और सब के सब लम्हा भर में जल कर राख का ढेर हो गए और बाकी तमाम दूसरे मोअमिनीन को **अल्लाह** तआला ने काफ़िर और ज़ालिम के शर से बचा लिया :

(تفسیر صاوی، ج ۶، ص ۲۳۳۹-۲۳۴۰، پ ۳۰، البروج: ۴۱-۴۲)

इस वाकिए को **अल्लाह** तआला ने कुरआने मजीद में इन लफ्ज़ों के साथ बयान फ़रमाया है :

قَتَلَ أَصْحَابُ الْأَحْدُودِ النَّارِذَاتِ الْوُقُودِ ۖ إِذْهُمْ عَلَيْهَا يَنْصُورُونَ

(پ ۳۰، البروج: ۴-۷)

**तर्जमए कन्ज़ुल इमान :-** खाई वालों पर ला'नत हो वोह उस भड़कती आग वाले जब वोह उस के किनारों पर बैठे थे और वोह खुद गवाह हैं जो कुछ मुसलमानों के साथ कर रहे थे ।

**दर्से हिदायत :-** (1) इस वाकिए से येह हिदायत का सबक मिलता है कि उमूमन खुदा की तरफ़ से इम्तिहान हुवा करता है और ब वक्ते इम्तिहान मोमिनो का बलाओं और मुसीबतों पर साबिरो शाकिर रहना ही इस इम्तिहान की कामयाबी है ।

(2) येह भी मा'लूम हुवा की ईमाने कामिल की येही निशानी है कि मोमिन खुदा **عَزَّوَجَلَّ** की राह में पड़ने वाली तकलीफ़ों और मुसीबतों से घबरा कर कभी भी उस में तज़ब-जुब नहीं पैदा होता, बल्कि मोमिन ख़्वाह फूलों के हार के नीचे हो या तलवार के नीचे, पानी में गर्क किया जाए या आग के शो'लों में जलाया जाए हर हाल में बहर सूरत वोह अपने ईमान पर इस्तिक़ामत व इस्तिक़लाल के साथ पहाड़ की तरह काइम रहता है और इस का ख़ातिमा ईमान ही पर होता है । येह वोह सअ़ादते उज़्मा है कि जिस को नसीब हो जाए उस की खुश बख़्शियों की मे'राज हो जाती है और वोह खुदा **عَزَّوَجَلَّ** और रसूल **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की बारगाह में वोह कुर्ब हासिल कर लेता है कि आस्मानों के फ़िरिश्ते उस के आ'ला मरातिब की सर बुलन्दियों के मद्दाह और षना ख़्वां बन जाते हैं ।

### ﴿59﴾ चार क़ाबिले इब्रत औरतें

**वाहिला :-** येह हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَام** की बीवी थी । इस को एक नबिय्ये बरहक की जौजिय्यत का शरफ़ हासिल हुवा और बरसों येह **अल्लाह** तआला के नबी **عَلَيْهِ السَّلَام** की सोहबत से सरफ़राज़ रही मगर इस की बद नसीबी क़ाबिले इब्रत है कि इस को ईमान नसीब नहीं हुवा बल्कि येह हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَام** की दुश्मनी और तौहीन व बे अदबी के सबब से बे ईमान हो कर मर गई और जहन्नम में दाख़िल हुई ।



येह हमेशा अपनी कौम में झूटा प्रोपेगन्डा करती रहती थी कि हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام मजनून और पागल हैं, लिहाज़ा उन की कोई बात न मानो।  
**वाइला :-** येह हज़रते लूत عَلَيْهِ السَّلَام की बीवी थी। येह भी **अल्लाह** के एक जलीलुल क़द्र नबी عَلَيْهِ السَّلَام की जौजिय्यत व सोहबत से बरसों सरफ़राज़ रही मगर इस के सर पर बद नसीबी का ऐसा शैतान सुवार था कि सच्चे दिल से कभी ईमान नहीं लाई बल्कि उम्र भर मुनाफ़िका रही और अपने निफ़ाक़ को छुपाती रही। जब कौमे लूत पर अज़ाब आया और पथ्थरों की बारिश होने लगी, उस वक़्त हज़रते लूत عَلَيْهِ السَّلَام अपने घर वालों और मोअमिनीन को साथ ले कर बस्ती से बाहर चले गए थे। “वाइला” भी आप के साथ थी। आप ने फ़रमा दिया था कि कोई शख़्स बस्ती की तरफ़ न देखे वरना वोह भी अज़ाब में मुब्तला हो जाएगा। चुनान्वे, आप के साथ वालों में से किसी ने भी बस्ती की तरफ़ नहीं देखा और सब अज़ाब से महफूज़ रहे लेकिन वाइला चूँकि मुनाफ़िका थी उस ने हज़रते लूत عَلَيْهِ السَّلَام के फ़रमान को ठुकरा कर बस्ती की तरफ़ देख लिया और शहर को उलट पलट होते देख कर चिल्लाने लगी कि “يَا قَوْمَا” हाए रे मेरी कौम, येह ज़बान से निकलते ही नागहां अज़ाब का एक पथ्थर इस को भी लगा और येह भी हलाक हो कर जहन्नम रसीद हो गई।

**आसिया :-** आसिया बन्ते मुज़ाहिम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا येह फ़िरऔन की बीवी हैं। फ़िरऔन तो हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का बदतरिन दुश्मन था लेकिन हज़रते आसिया رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने जब जादूगरों को हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के मुक़ाबले में मग़लूब होते देख लिया तो फ़ौरन उन के दिल में ईमान का नूर चमक उठा और वोह ईमान ले आई। जब फ़िरऔन को ख़बर हुई तो उस ज़ालिम ने इन पर बड़े बड़े अज़ाब किये, बहुत ज़ियादा ज़दो कौब के बा'द चौमीखा कर दिया या'नी चार खूंटियां गाड़ कर हज़रते आसिया رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के चारों हाथों पैरों में लोहे की मैखें ठोंक कर चारों खूंटों में इस तरह जकड़ दिया कि वोह हिल भी नहीं सकती थीं और भारी पथ्थर सीने पर रख कर धूप की तपिश में डाल दिया और दाना पानी बन्द कर दिया लेकिन इन मसाइब व शदाइद के बा वुजूद वोह अपने

ईमान पर काइम व दाइम रहीं और फिरऔन के कुफ़्र से खुदा **عَزَّوَجَلَّ** की पनाह और जन्नत की दुआएं मांगती रहीं और इसी हालत में उन का ख़ातिमा बिल ख़ैर हो गया और वोह जन्नत में दाख़िल हो गई और इब्ने कैसान का कौल है कि वोह ज़िन्दा ही उठा कर जन्नत में पहुंचा दी गई।

**मरयम :-** मरयम बन्ते इमरान **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا**, येह हज़रते ईसा **عَلَيْهِ السَّلَام** की वालिदा हैं। चूंकि हज़रते ईसा **عَلَيْهِ السَّلَام** इन के शिकम से बिगैर बाप के पैदा हुवें इस लिये इन की कौम ने ता'न व बद गोईयों से इन को बड़ी बड़ी ईजाए पहुंचाई मगर येह साबिर रह कर इतने बड़े बड़े मरातिब व दर्जात से सरफ़राज़ हुई कि खुदावन्दे कुहूस ने कुरआने मजीद में इन की मदहो षना का बार बार खुतबा इरशाद फ़रमाया। इन चारों औरतों के बारे में कुरआने मजीद ने सूरए तहरीम में फ़रमाया जिस का तर्जमा येह है :  
**“اَللّٰهُ** तअ़ला काफ़ि़रों की मिषाल देता है। जैसे हज़रते नूह **(عَلَيْهِ السَّلَام)** की औरत (वाहिला) और हज़रते लूत **(عَلَيْهِ السَّلَام)** की औरत (वाइला) येह दोनों हमारे दो मुक़र्रब बन्दों के निकाह में थीं। फिर इन दोनों ने उन दोनों से दगा किया तो वोह दोनों पैग़म्बरान, इन दोनों औरतों के कुछ काम न आए और इन दोनों औरतों के बारे में खुदा का येह फ़रमान हो गया कि तुम दोनों जहन्नमी औरतों के साथ जहन्नम में दाख़िल हो जाओ। और **اَللّٰهُ** तअ़ला मुसलमानों की मिषाल बयान फ़रमाता है। फिरऔन की बीवी (आसिया) जब उन्होंने ने अर्ज़ की ऐ मेरे रब ! मेरे लिये अपने पास जन्नत में घर बना और मुझे फिरऔन और उस के काम से नजात दे और मुझे ज़ालिम लोगों से नजात बख़्श और इमरान की बेटी मरयम जिस ने अपनी पारसाई की हिफ़ाज़त की तो हम ने उस में अपनी तरफ़ की रूह फूँकी और उस ने अपने रब की बातों और उस की किताबों की तस्दीक़ की और फ़रमां बरदारों में से हुई।

(प २८, التحريم: १ - १२)

**दर्से हिदायत :-** वाहिला और वाइला दोनों नबी की बीवियां हो कर कुफ़्र व निफ़ाक़ में गिरिफ़तार हो कर जहन्नम रसीद हुई और फ़िरऔन जैसे काफ़िर की बीवी हज़रते आसिया رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ईमाने कामिल की दौलत पा कर जन्नत में दाख़िल हुई और हज़रते आसिया رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا हक़ ज़ाहिर हो जाने के बा'द इस तरह ईमान लाई कि फ़िरऔन के सब आराम व राहत को ठुकरा दिया और बे पनाह तक्लीफ़ों और ईज़ाओं के बा वुजूद अपने ईमान पर काइम रहीं, बिलाशुबा येह बातें काबिले इब्रत हैं ।

### ﴿60﴾ हज़रते फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के तीन रोज़े

हज़रते हसन व हज़रते हुसैन رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا बचपन में एक मरतबा बीमार हो गए तो हज़रते अली व हज़रते फ़ातिमा व हज़रते फ़िज़्ज़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ ने इन शाहज़ादों की सिह्दत के लिये तीन रोज़ों की मन्नत मानी । **अल्लाह** तआला ने दोनों शाहज़ादों को शिफ़ा दे दी । जब नज़्र के रोज़ों को अदा करने का वक़्त आया तो सब ने रोज़े की निय्यत कर ली । हज़रते अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ एक यहूदी से तीन साअ जव लाए । एक एक साअ तीनों दिन पकाया लेकिन जब इफ़्तार का वक़्त आया और तीनों रोज़ादारों के सामने रोटियां रखी गईं तो एक दिन मिस्कीन, एक दिन यतीम, एक दिन कैदी दरवाज़े पर आ गए और रोटियों का सुवाल किया तो तीनों दिन सब रोटियां साइलों को दे दी गईं और सिर्फ़ पानी से इफ़्तार कर के अगला रोज़ा रख लिया गया । (हज़रते फ़िज़्ज़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا हज़रते बीबी फ़ातिमा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के घर की खादिमा थीं ।) (तफ़्सीर ख़ातन العرف़ान، ص १०३३، २९प، १०३३، २९प، १०३३)

क़ुरआने मजीद में **अल्लाह** तआला ने अपने महबूब صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की प्यारी बेटी के घर की इस सरगुज़़शत को इन लफ़्ज़ों में बयान फ़रमाया :

وَيُطْعَمُونَ الطَّعَامَ عَلَى حُبِّهِ مِسْكِينًا وَيَتِيمًا وَأَسِيرًا ۝ إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ  
لِيُوقُوا اللَّهَ لَا تَرِيدُ مِنْكُمْ جَزَاءً وَلَا شُكُورًا ۝ (२९प، १०३३، २९प)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और ख़ाना खिलाते हैं उस की महबूबत पर मिस्कीन और यतीम और असीर (कैदी) को उन से कहते हैं हम तुम्हें ख़ास **अल्लाह** के लिये खाना देते हैं तुम से कोई बदला या शुक्र गुज़ारी नहीं मांगते ।

**दर्से हिदायत :-** سُبْحَانَ اللَّهِ इस वाकिए से अहले बैते नबुव्वत की सखावत का अजीबो गरीब और अदीमुल मिषाल हाल मा'लूम होता है। मुसलसल तीन रोज़े और सहरी व इफ़तार में सिर्फ़ पानी पी कर रोज़े रखना और खुद भूके रह कर रोटियां साइलों को दे देना येह कोई मा'मूली बात नहीं है।

**अल्लाह अकबर !** किसी ने क्या ख़ूब कहा है कि

भूके रहते थे खुद औरों को खिला देते थे

कैसे साबिर थे मुहम्मद ﷺ के घराने वाले

### ﴿61﴾ शहाद की जन्नत

येह आप “कौमे आद की आंधी” उन्वान में पढ़ चुके हैं कि कौमे आद का मूरिषे आ'ला आद बिन औस बिन अरम बिन साम बिन नूह है। इस “आद” के बेटों में “शहाद” भी है। येह बड़ी शानो शौकत का बादशाह हुवा है। इस ने अपने वक़्त में तमाम बादशाहों को अपने झन्डे के नीचे जम्अ कर के सब को अपना मुतीओ फ़रमां बरदार बना लिया था। इस ने पैग़म्बरों की ज़बान से जन्नत का ज़िक्र सुन कर बराहे सरकशी दुन्या में एक जन्नत बनानी चाही और इस इरादे से एक बहुत बड़ा शहर बनाया जिस के महल सोने चांदी की ईंटों से ता'मीर किये गए और ज़बरजद और याकूत के सुतून इन की इमारतों में नसब किये गए और ऐसे ही फ़र्श मकानों में बनाए गए। संगरेजों की जगह आबदार मोती बिछाए गए। हर महल के गिर्द जवाहिरात से पुर नहरें जारी की गईं। किस्म किस्म के दरख़्त ज़ीनत और साए के लिये लगाए गए। अल ग़रज़ इस सरकश ने अपने ख़याल से जन्नत की तमाम चीज़ें और हर किस्म की ऐशो इशरत के सामान इस शहर में जम्अ कर दिये। जब येह शहर मुकम्मल हुवा तो शहाद बादशाह अपने आ'याने सल्तनत के साथ इस की तरफ़ रवाना हुवा। जब एक मन्ज़िल का फ़ासिला बाकी रह गया तो आस्मान से एक हौलनाक आवाज़ आई जिस से **अल्लाह** तआला ने शहाद और उस के तमाम साथियों को हलाक कर दिया और वोह अपनी बनाई हुई जन्नत को देख भी न सका।

हज़रते अमीरे मुआविया رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के दौरै हुकूमत में हज़रते अब्दुल्लाह बिन क़िलाबा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अपने गुमशुदा ऊंट को तलाश

करते हुवे सह्राए अदन से गुज़र कर उस शहर में पहुंचे और उस की तमाम ज़ीनतों और आराइशों को देखा मगर वहां कोई रहने बसने वाला इन्सान नहीं मिला। यह थोड़े से जवाहिरात वहां से ले कर चले आए। जब यह ख़बर हज़रते अमीरे मुअविय्या رضي الله تعالى عنه को मा'लूम हुई तो उन्होंने ने अब्दुल्लाह बिन क़िलाबा को बुला कर पूरा हाल दरयाफ़्त किया और इन्होंने ने जो कुछ देखा था सब कुछ बयान कर दिया। फिर हज़रते अमीरे मुअविय्या رضي الله تعالى عنه ने का'बे अहबार رضي الله تعالى عنه को बुला कर दरयाफ़्त किया कि क्या दुनिया में कोई ऐसा शहर मौजूद है ? तो उन्होंने ने फ़रमाया कि हां जिस का ज़िक्र कुरआने मजीद में भी आया है। यह शहर शद्दाद बिन आद ने बनाया था लेकिन यह सब अज़ाबे इलाही से हलाक हुवे और इस क़ौम में से कोई एक आदमी भी बाक़ी नहीं रहा और आप के ज़माने में एक मुसलमान जिस की आंखें नीली, क़द छोटा और उस के अब्रू पर एक तिल होगा, अपने ऊंट को तलाश करते हुवे इस वीरान शहर में दाख़िल होगा, इतने में अब्दुल्लाह बिन क़िलाबा رضي الله تعالى عنه आ गए। तो का'बे अहबार ने इन को देख कर फ़रमाया कि ब खुदा वोह शख़्स जो शद्दाद की बनाई हुई ज़न्त को देखेगा, वोह येही शख़्स है।

(تفسير خزان العرفان، ص १०५-१०६، प ३०، الفجر: ८)

कौमे आद और दूसरी सरकश कौमों का हाल बयान करते हुवे कुरआने मजीद ने इरशाद फ़रमाया :

الْمُرْتَكِفُ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۖ إِرْمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۖ الَّتِي لَمْ يَخْلُقْ  
مِثْلَهَا فِي الْبِلَادِ ۖ وَشُودَ الَّذِينَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۖ وَفِرْعَوْنَ  
ذِي الْأَوْتَادِ ۖ الَّذِينَ طَعَوْا فِي الْبِلَادِ ۖ فَكَثُرُوا فِيهَا الْفُسَادُ ۖ  
فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ۖ (پ ३०، الفجر: १-۱۳)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** क्या तुम ने न देखा तुम्हारे रब ने आद के साथ कैसा किया और वोह इरम हृद से ज़ियादा तूल वाले कि उन जैसा शहरों में पैदा न हुवा और षमूद जिन्होंने ने वादी में पथ्थर की चट्टानें काटीं और फिरऔन कि चौमैखा करता (सख़्त सज़ाएं देता) जिन्होंने ने शहरों में सरकशी की फिर उन में बहुत फ़साद फैलाया तो उन पर तुम्हारे रब ने अज़ाब का कोड़ा ब-कुव्वत मारा।

दर्से हिदायत :- **अब्बाह** तअला को बन्दों की सरकशी और तकब्बुर व गुरूर बेहद नापसन्द है इस लिये खुदावन्दे कुहूस का दस्तूर है कि हर सरकश और मुतकब्बिर कौम जिस ने ज़मीन में अपनी सरकशी और जुल्म व उदवान से फ़साद फेलाया। उस कौम को क़हरे इलाही ने किसी न किसी अज़ाब की सूत में ज़ाहिर हो कर हलाक व बरबाद कर दिया। शहाद और कौमे आद के दूसरे अफ़राद सब अपनी सरकशी और तकब्बुर की वजह से खुदा के मग़ज़ूब ठहरे और जब इन लोगों का तमरुद और जुल्म व उदवान इस दरजे बढ़ गया कि रूए ज़मीन का ज़र्रा ज़र्रा उन के गुनाहों और बद आ'मालियों से बिल बिला उठा तो खुदावन्दे क़हहार व जब्बार के अज़ाबों ने इन सब सरकशों और ज़ालिमों को तबाहो बरबाद कर के सफ़हए हस्ती से हर्फ़े ग़लत की तरह मिटा दिया। लिहाज़ा उन कौमों के उरूज व ज़वाल और इन लोगों के अज़ाबे इलाही से पामाल होने की दास्तानों से इब्रत व नसीहत हासिल करनी चाहिये। क्यूंकि कुरआने करीम में इन अक़वाम के अन्जाम के ज़िक्र का मक़सद ही येह है कि अहले कुरआन इन की दास्तान सुन कर इब्रत पकड़ें और ख़ौफ़े इलाही से हर दम लज़ा बर अन्दाम रहें। मुसलमानों को लाज़िम है कि कुरआने मजीद की ब-क़षरत तिलावत करें और इस का तर्जमा भी पढ़ा करें और इन अक़वाम की हलाकत से इब्रत हासिल करें। हर वक़्त तौबा व इस्तिग़फ़ार करते रहें और हर किस्म की बद ए'तिक़ादियों और बद आ'मालियों से हमेशा बचते रहें। आ'माले सालेहा की कोशिश करते रहें और मालो दौलत के गुरूर व घमन्ड में सरकशी व तकब्बुर न करें बल्कि हमेशा दिल में ख़ौफ़े खुदा **عَزَّوَجَلَّ** रख कर तवाज़ोअ व इन्किसारी को अपनी आदत बनाएं और जहां तक हो सके अपनी ज़िन्दगी में अच्छे आ'माल करते रहें। **وَاللّٰهُ هُوَ الْمَوْفِقُ**

### ﴿62﴾ अस्थाबे फ़ील व लश्करे अबामील

यमन व हबशा का बादशाह “अबरहा” था। उस ने शहरे “सन्आ” में एक गिरजाघर बनाया था और उस की ख़्वाहिश थी कि हज़ करने वाले बजाए मक्कए मुकर्रमा के सन्आ में आएँ और इसी गिरजाघर का तवाफ़ करें और यहीं हज़ का मैला हुवा करे। अरब खुसूसन कुरैशियों

को येह बात बहुत शाक़ गुज़री। चुनान्चे, कुरैश के कबीलए बनू किनाना के एक शख़्स ने आपे से बाहर हो कर सन्झा का सफ़र किया और अबरहा के गिरजा घर में दाख़िल हो कर पेशाब पाख़ाना कर दिया। और इस के दरो दीवार को नजासत से आलूदा कर डाला। इस हरकत पर अबरहा बादशाह को बहुत तैस आया और उस ने का'बए मुअज़्ज़मा को ढा देने की क़सम खा ली। और इस इरादे से अपना लश्कर ले कर रवाना हो गया। इस लश्कर में बहुत से हाथी थे और इन का पेश रू एक बहुत बड़ा कोह पैकर हाथी था जिस का नाम महमूद था। अबरहा ने अपनी फ़ौज ले कर मक्काए मुकर्रमा पर चढ़ाई कर दी और अहले मक्का के सब जानवरों को अपने कब्ज़े में ले लिया। जिस में अब्दुल मुत्तलिब के ऊंट भी थे। येही अब्दुल मुत्तलिब जो हमारे हुज़ूर ख़ातिमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दादा हैं, ख़ानए का'बा के मुतवल्ली और अहले मक्का के सरदार थे। येह बहुत ही रो'बदार और निहायत ही जसीम व बा शिकवा आदमी थे। येह अबरहा के पास आए, अबरहा ने इन की बहुत ता'जीम की और आने का मक्सद पूछा तो आप ने फ़रमाया कि तुम मेरे ऊंटों को मुझे वापस दे दो। येह सुन कर अबरहा ने कहा कि मुझे बड़ा तअज़्जुब हो रहा है कि मैं तो तुम्हारे का'बा को ढाने के लिये फ़ौज ले कर आया हूं जो तुम्हारा और तुम्हारे बाप दादा का एक बहुत मुक़द्दस व मोहतरम मक़ाम है। आप ने इस के बारे में कुछ भी मुझ से नहीं कहा, सिर्फ़ अपने ऊंटों का मुतालबा कर रहे हैं? हज़रते अब्दुल मुत्तलिब ने फ़रमाया कि मैं अपने ऊंटों ही का मालिक हूं इस लिये ऊंटों के लिये कह रहा हूं और का'बा का जो मालिक है वोह खुद इस की हिफ़ाज़त फ़रमाएगा। मुझे इस की कोई फ़िक्र नहीं। अबरहा ने आप के ऊंटों को वापस कर दिया। फिर आप ने कुरैश से फ़रमाया कि तुम लोग पहाड़ों की घाटियों और चोटियों पर पनाह गुर्जी हो जाओ। चुनान्चे, कुरैश ने आप के मश्वरे पर अमल किया। इस के बा'द हज़रते अब्दुल मुत्तलिब ने का'बे का दरवाज़ा पकड़ कर बारगाहे इलाही में का'बे की हिफ़ाज़त के लिये ख़ूब रो रो कर दुआ मांगी और दुआ से फ़रिग़ हो कर आप भी अपनी क़ौम के साथ पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए। अबरहा ने सुब्ह तड़के अपने लश्करों को ले



कर का'बए मुक़द्दसा पर धावा बोल देने का हुक्म दे दिया और हाथियों को चलने के लिये उठाया लेकिन हाथियों का पेश रू महमूद जो सब से बड़ा था वोह का'बे की तरफ़ न चला जिस तरफ़ उस को चलाते थे चलता था मगर का'बए मुक़र्रमा की तरफ़ जब उस को चलाते थे तो वोह बैठ जाता था। इतने में **अल्लाह** तआला ने समन्दर की जानिब से परन्दों का लश्कर भेज दिया और हर परन्दे के पास तीन कंकरियां थीं, दो पन्नों में और एक चोंच में। अबाबीलों के इस लश्कर ने अबरहा की फ़ौजों पर इस ज़ोर की संग बारी की, कि अबरहा की फ़ौज बद हवास हो कर भागने लगी। मगर कंकरियां गो छोटी छोटी थीं लेकिन वोह क़हरे इलाही के पथ्थर थे कि परन्दे जब उन कंकरियों को गिराते तो वोह संगरेजे फ़ील सुवारों के ख़ोद को तोड़ कर, सर से निकल कर, जिस्म को चीर कर, हाथी के बदन को छेदते हुवे ज़मीन पर गिरते थे। हर कंकरी पर उस शख्स का नाम लिखा था जो उस कंकरी से हलाक किया गया। इस तरह अबरहा का पूरा लश्कर हलाक व बरबाद हो गया और का'बए मुअज़्ज़मा महफूज़ रह गया। येह वाकिआ जिस साल वुकूअ पज़ीर हुवा उस साल को अहले अरब “आमुल फ़ील” (हाथी वाला साल) कहने लगे और इस वाकिए से पचास रोज़ के बा'द हुज़ूर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की विलादत हुई।

(تفسير خزائن العرفان، ص १०८، १०९، ११०، الفيل)

इस वाकिए को **अल्लाह** तआला ने कुरआने मजीद में बयान फ़रमाते हुवे एक सूरह नाज़िल फ़रमाई जिस का नाम ही “सूरए फ़ील” है या'नी

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحَابِ الْفِيلِ ۚ  
 أَكَمْ يَجْعَلُ كَيْدُهُمْ فِي تَضَلُّلٍ ۚ  
 وَآمَرْنَا عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيلَ ۖ  
 تَرْمِيهِمْ بِحِجَارٍ أَسْبَاطٍ ۖ  
 فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّأْكُولٍ ۝

(الفيل: १-५)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** ऐ महबूब क्या तुम ने न देखा? तुम्हारे रब ने उन हाथी वालों का क्या हाल किया, क्या उन का दाऊं तबाही में न डाला और उन पर परन्दों की टुकड़ियां (फ़ौजें) भेजीं कि उन्हें कंकर के पथ्थरों से मारते तो उन्हें कर डाला जैसे खाई खेती की पत्ती (भूसा)।

**दर्से हिदायत :-** इस से मा'लूम हुआ कि कुरआने मजीद की तरह का'बए मुअज़्ज़मा की हिफ़ाज़त का जिम्मा भी खुदावन्दे कुद्दूस ने अपने जिम्मे करम पर ले रखा है कि कोई तागूती ताक़त न कुरआने मजीद को फ़ना कर सकती है न का'बा को सफ़हए हस्ती से मिटा सकती है क्योंकि खुदावन्दे करीम इन दोनों का मुहाफ़िज़ व निगहबान है। (والله تعالى أعلم)

### ﴿63﴾ फ़त्हे मक्का की पेश गोई

हिजरत के वक़्त इन्तिहाई रन्जीदगी के आलम में हुज़ूर ताजदार **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने अपने यारे ग़ार सिद्दीके जां निषार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को साथ ले कर रात की तारीकी में मक्का से हिजरत फ़रमा कर अपने वतने अज़ीज़ को ख़ैरबाद कह दिया था और मक्का से निकलते वक़्त खुदा के मुक़द्दस घर ख़ानए का'बा पर एक हसरत भरी निगाह डाल कर येह फ़रमाते हुवे मदीने रवाना हुवे थे कि “ऐ मक्का ! खुदा की क़सम ! तू मेरी निगाहे महबूबत में तमाम दुन्या के शहरों से ज़ियादा प्यारा है। अगर मेरी कौम मुझे न निकालती तो मैं हरगिज़ तुझे न छोड़ता।” उस वक़्त किसी को येह ख़याल भी नहीं हो सकता था कि मक्का को इस बे सरोसामानी के आलम में ख़ैरबाद कहने वाला सिर्फ़ आठ ही बरस बा'द एक फ़ातेहे आ'ज़म की शानो शौकत के साथ इसी शहर मक्का में नुज़ूले इजलाल फ़रमाएगा और का'बतुल्लाह में दाख़िल हो कर अपने सजदों के जमाल व जलाल से खुदा के मुक़द्दस घर की अज़मत को सरफ़राज़ फ़रमाएगा। लेकिन हुआ येह कि अहले मक्का ने सुल्हे हुदैबिया के मुआहदे को तोड़ डाला। और सुल्ह नामे से ग़द्दारी कर के “अहद शिकनी” के मुर्तकिब हो गए कि हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के हलीफ़ बनू ख़ज़ाआ को मक्का वालों ने बे दर्दी के साथ क़त्ल कर दिया। बेचारे बनू ख़ज़ाआ उस ज़ालिमाना हम्ले की ताब न ला कर हरमे का'बा में पनाह लेने के लिये भागे तो इन दरिन्दा सिफ़्त इन्सानों ने हरमे इलाही के एहतिराम को भी ख़ाक में मिला दिया और हरमे का'बा में भी ज़ालिमाना तौर पर बनू ख़ज़ाआ का खून बहाया। इस हम्ले में बनू ख़ज़ाआ के तेईस आदमी क़त्ल हो गए। इस तरह अहले मक्का ने अपनी इस हरकत से हुदैबिया के मुआहदे को तोड़ डाला। और येही फ़त्हे मक्का की तम्हीद हुई।

चुनान्चे, 10 रमज़ान सि. 8 हि. को रसूलुल्लाह ﷺ मदीने से दस हजार लश्करे पुर अन्वार साथ ले कर मक्का की तरफ़ रवाना हुवे । मदीने से चलते वक़्त हुज़ूर ﷺ और तमाम सहाबए किराम रोज़ादार थे लेकिन जब आप मक़ामे “कदीद” में पहुंचे तो पानी मांगा और अपनी सुवारी पर बैठे हुवे पूरे लश्कर को दिखा कर आप ने पानी नौश फ़रमाया और सब को रोज़ा छोड़ देने का हुक्म फ़रमाया । चुनान्चे, आप और आप के अस्हाब ने सफ़र और जिहाद में होने की वजह से रोज़ा रखना मौकूफ़ कर दिया ।

(بخاری شریف، کتاب المغازی، باب غزوة الفتح فی رمضان، رقم ۲۷۴۶، ج ۵، ص ۱۴۶)

गरज़ फ़ातिहाना शानो शौकत के साथ बानिये का’बा के जानशीन हुज़ूर रहमतुल्लिल आलमीन ﷺ ने सर ज़मीने मक्का में नुज़ूले इजलाल फ़रमाया और हुक्म दिया कि मेरा झन्डा मक़ामे “हज़ून” (जन्तुल मा’ला) के पास गाड़ा जाए और हज़रते ख़ालिद बिन वलीद رضی اللہ تعالیٰ عنہ के नाम फ़रमान जारी कर दिया कि वोह फ़ौजों के साथ मक्का के बालाई हिस्से या’नी “कदा” की तरफ़ से मक्का में दाख़िल हों ।

(بخاری شریف، کتاب المغازی، باب این رکوز النبی صلی اللہ علیہ وسلم الخ، رقم ۲۷۴۸، ج ۵، ص ۱۴۷)

रहमते आलमियान ﷺ ने मक्का की सरज़मीन में क़दम रखते ही जो पहला फ़रमाने शाही जारी फ़रमाया वोह येह ए’लान था कि जिस के लफ़्ज़ लफ़्ज़ में रहमतों के दरया मौजें मार रहे हैं :

“जो शख़्स हथयार डाल देगा उस के लिये अमान है । जो शख़्स अपना दरवाज़ा बन्द कर लेगा उस के लिये अमान है जो का’बा में दाख़िल हो जाएगा उस के लिये अमान है ।”

इस मौक़अ पर हज़रते अब्बास رضی اللہ تعالیٰ عنہ ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह ! अबू सुफ़्यान एक फ़ख़्र पसन्द आदमी है उस के लिये कोई ऐसी इम्तियाज़ी बात फ़रमा दीजिये कि उस का सर फ़ख़्र से उंचा हो जाए तो आप ने फ़रमाया कि “जो अबू सुफ़्यान के घर में दाख़िल हो जाए उस के लिये अमान है ।”

हुज़ूर ﷺ जब फ़ातिहाना हैषियत से मक्का में दाख़िल होने लगे तो आप अपनी ऊंटनी “कस्वा” पर सुवार थे और आप एक सियाह रंग का इमामा बांधे हुवे थे । और बुख़ारी में है कि आप के सर

पर “मुग़फ़र” था। आप के एक जानिब हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ और दूसरी जानिब उसैद बिन हुज़ैर رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ थे और आप के चारों तरफ़ जोश में भरा हुआ हथियारों में डूबा हुआ लश्कर था जिस के दरमियान को कुब्बए नबवी था। इस शाहाना जुलूस के जाहो जलाल के बा वुजूद शहनशाहे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शाने तवाजोअ का येह अलम था कि आप सूरए फ़तह की तिलावत फ़रमाते हुवे इस तरह सर झुकाए हुवे ऊंटनी पर बैठे हुवे थे कि आप का सर मुबारक ऊंटनी के पालान से लग लग जाता था। आप की येह कैफ़ियते तवाजोअ खुदावन्दे कुहूस का शुक्र अदा करने और उस की बारगाहे अज़मत में अपनी इज़्ज व नियाज़ मन्दी का इज़हार करने के लिये थी। (ज़रफ़ानि, ज २, व ३२०-३२१) **बैतुल्लाह में दाख़िला :-** फिर आप अपनी ऊंटनी पर सुवार हो कर और हज़रते उसामा बिन जैद को ऊंटनी के पीछे बिठा कर मस्जिदे हराम की तरफ़ रवाना हुवे और हज़रते बिलाल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ और हज़रते उषमान बिन तलहा जहबी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का'बा के किलीद बरदार भी आप के साथ थे। आप ने मस्जिदे हराम में अपनी ऊंटनी को बिठाया और का'बे का तवाफ़ किया और हज़रे अस्वद को बोसा दिया।

(بخاری شریف، کتاب المغازی، باب دخول النبی صلی اللہ علیہ وسلم من اعلیٰ مکة، رقم ۴۲۸۹، ج ۵، ص ۱۲۸-۱۲۹)

का'बा के अन्दरूने हिसार तीन सो साठ बुतों की क़तार थी। आप खुद ब नफ़से नफ़ीस एक छड़ी ले कर खड़े हुवे और इन बुतों को छड़ी की नोक से ठोंके मार मार कर गिराते जाते थे। और की आयत “جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ” तिलावत फ़रमाते थे। या'नी हक़ आ गया और बातिल मिट गया और बातिल मिटने ही की चीज़ थी।

(بخاری شریف، کتاب المغازی، باب این رکن النبی صلی اللہ علیہ وسلم البرایہ یوم الفتح، رقم الحديث ۴۲۸۷، ج ۵، ص ۱۲۸)

फ़िर उन बुतों को जो ऐन का'बे के अन्दर थे आप ने उन सब को निकालने का हुक्म फ़रमाया। जब तमाम बुतों से का'बा पाक हो गया तो आप अपने साथ उसामा बिन जैद और हज़रते बिलाल رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ और उषमान बिन तलहा जहबी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को साथ ले कर ख़ानए का'बा के अन्दर तशरीफ़ ले गए और तमाम गोशों पर तकवीर पढ़ी और दो रक्अत नमाज़ भी पढ़ी।

(بخاری، ج ۱، ص ۲۱۸ و بخاری، ج ۲، ص ۲۱۴)

का'बए मुकद्दसा के अन्दर से जब आप बाहर निकले तो हज़रते उषमान बिन तलहा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को बुला कर का'बा की कुन्जी उन के हाथ में अता फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया कि خُذُوهَا خَالِدَةً تَالِدَةً لَا يَنْزِعُهَا مِنْكُمْ إِلَّا ظَالِمٌ या'नी लो येह कुंजी हमेशा हमेशा के लिये तुम लोगों में रहेगी। येह कुंजी तुम से वोही छीनेगा जो ज़ालिम होगा। (ज़रफ़ानि, ज २, व २३९)

**शहनशाहे दो अलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का दरबारे अम :-** इस के बा'द हरमे इलाही में आप ने सब से पहला दरबारे अम मुअकिद फ़रमाया जिस में अफ़वाजे इस्लाम के इलावा हज़ारों कुफ़्फ़ार व मुशरिकीन के अ़वामो ख़्वास का एक ज़बरदस्त इज़दहाम था। इस दरबार में आप ने एक खुतबा दिया और फिर अहले मक्का को मुखातब कर के आप ने फ़रमाया कि बोलो, तुम को मा'लूम है कि आज मैं तुम से क्या मुअमला करने वाला हूं।

इस दहशत अंगेज़ और खौफ़नाक सुवाल से तमाम मुजरिमीन ह्वास बाख़्ता हो कर कांप उठे, लेकिन ज़बीने रहमत के पैग़म्बराना तेवरों को देख कर सब यक ज़बान हो कर बोले “أَخْ كَرِيمٌ وَأَبْنُ أَخٍ كَرِيمٍ” या'नी आप करम वाले भाई और करम वाले बाप के बेटे हैं। येह सुन कर फ़ातेहे मक्का صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अपने करीमाना लहजे में इरशाद फ़रमाया कि

لَا تَتَرَبَّبَ عَلَيْكُمْ الْيَوْمَ فَادْهَبُوا أَنْتُمْ الطُّلُقَاءُ

आज तुम पर कोई मलामत नहीं, जाओ तुम सब आज़ाद हो।

(شرح الزرقاني، باب غزوة الفتح الأعظم، ج ३، ص २२९ و السنن الكبرى للبيهقي،

كتاب السير، باب فتح مكة حرسها الله تعالى، الحديث: १८२८، ج ९، ص २००)

बिल्कुल ग़ैर मुतवक्केअ तौर पर एक दम अचानक येह फ़रमाने रहमत सुन कर सब मुजरिमों की आंखें फ़र्ते नदामत से अशक़बार हो गईं। और कुफ़्फ़ार की ज़बानों पर لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ के ना'रों से हरमे का'बा के दरोदीवार पर बारिशे अन्वार होने लगी। मुजरिमों की नज़र में नागहां एक अजीब इन्क़िलाब बरपा हो गया कि समां ही बदल गया, फ़ज़ा ही पलट गई और एक दम ऐसा महसूस होने लगा कि

जहां तारीक था जुल्मत कदा था सख्त काला था

कोई पदों से क्या निकला, घर घर उजाला था

**फ़ट्हे मक्का की तारीख़ :-** इस में बड़ा इख़िलाफ़ येह है कि मक्काए मुकर्रमा कौन सी तारीख़ में फ़ट्हा हुवा ? इमाम बैहकी ने 13 रमज़ान, इमामे मुस्लिम ने 16, इमाम अहमद ने 18 रमज़ान बताया, मगर मुहम्मद बिन इस्हाक़ ने अपने मशाइख़ की एक जमाअत से रिवायत करते हुवे फ़रमाया कि 20 रमज़ान 8 हि. को मक्का फ़ट्हा हुवा । (والله تعالى اعلم)

(شرح الزرقاني، باب غزوة الفتح الأعظم، ج 3، ص 396-397)

फ़ट्हे मक्का की पेशन गोइयां और बिशारतें कुरआने करीम की चन्द आयतों में मज़कूर हैं इन में से सूरए नस्स भी है। चुनान्वे, खुदावन्दे करीम ने इरशाद फ़रमाया :

إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ ۖ وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ  
أَفْوَاجًا ۖ فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ۚ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا (پ 30، النصر: 1-3)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** जब **अल्लाह** की मदद और फ़ट्हा आए और लोगों को तुम देखो कि **अल्लाह** के दीन में फ़ौज फ़ौज दाख़िल होते हैं तो अपने रब की षना करते हुवे उस की पाकी बोलो और उस से बख़्शिश चाहो बेशक वोह बहुत तौबा क़बूल करने वाला है ।

**दर्से हिदायत :-** फ़ट्हे मक्का के वाक़िए से येह सबक़ मिलता है कि हुज़ूर रहमतुल्लिल अलमीन **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इस मौक़अ पर अफ़वो दर गुज़र और रहमो करम का जो ए'लान व इज़हार फ़रमाया तारीख़े अलम में किसी फ़ातेह की ज़िन्दगी में इस की मिषाल नहीं मिल सकती ।

गौर फ़रमाइये कि अशराफ़े कुरैश के इन ज़ालिमों और ज़फ़कारों में वोह लोग भी थे जो बारहा आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर पथ्थर की बारिश कर चुके थे, वोह खूख़्वार भी थे जिन्हों ने बारहा आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** पर क़ातिलाना हम्ले किये थे, वोह बे रहम व बे दर्द भी थे जिन्हों ने आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के दन्दाने मुबारक को शहीद, और आप **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** के चेहरए अन्वर को लहू लुहान कर डाला था । वोह औबाश भी थे जो

बरसहा बरस तक अपनी बोहतान तराशियों और शर्मनाक गालियों से आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के क़ल्बे मुबारक को ज़ख्मी कर चुके थे। वोह सफ़्फ़ाक और दरिन्दा सिफ़्त भी थे जो आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के गले में चादर का फन्दा डाल कर आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का गला घोट चुके थे। वोह जुल्मो सितम के मुजस्समे, और पाप के पुतले भी थे, जिन्होंने आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا की साहिबज़ादी हज़रते ज़ैनब को नेज़ा मार कर ऊंट से गिरा दिया था और उन का हम्ल साक़ित हो गया था। वोह जफ़ाकार व खूँख़्वार भी थे जिन के जारेहाना हम्लों और ज़ालिमाना यलगार से बार बार मदीने के दरो दीवार हिल चुके थे। वोह सितम गार भी थे जिन्होंने हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के प्यारे चचा हज़रते हम्ज़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को क़त्ल किया और उन की नाक कान काटने वाले, उन की आंखे फोड़ने वाले, उन का जिगर चबाने वाले भी इस मज्मअ में मौजूद थे। वोह बे रहम भी थे जिन्होंने शम्प् नबुव्वत के जां निषार परवानों हज़रते बिलाल, हज़रते सुहैब, हज़रते अम्मार, हज़रते खुब्बाब, हज़रते खुबैब, हज़रते ज़ैद बिन दशना رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ को रस्सियों से बांध बांध कर कोड़े मार मार कर जलती रैतों पर लिटाया था, किसी को आग के दहकते हुवे कोइलों पर सुलाया था, किसी को सूली पर लटका कर शहीद कर दिया था। येह तमाम जोरो जफ़ा और जुल्मो सितम गारी के पैकर, जिन के जिस्म के रौंगटे रौंगटे और बदन के बाल बाल, जुल्मो उदवान और सरकशी व तुग़यान के वबाल से शर्मनाक मज़ालिम और ख़ौफ़नाक जुर्मों के पहाड़ बन चुके थे, आज येह सब के सब दस बारह हज़ार मुहाजिरीन व अन्सार के लश्कर की हिरासत में मुजरिम बने हुवे खड़े कांप रहे थे और अपने दिलों में येह सोच रहे थे कि शायद आज हमारी लाशों को कुतों से नोचवा कर हमारी बोटियां चीलों और कव्वों को खिला दी जाएंगी और अन्सार व मुहाजिरीन की ग़ज़बनाक फ़ौज़ें हमारे बच्चे बच्चे को खाको खून में मिला कर हमारी नस्लों को नेस्तो नाबूद कर डालेंगी और हमारी बस्तियों को ताख़्तो ताराज कर के तहस नहस कर देंगी, मगर इन सब मुजरिमीन को रहमते अ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने येह कह कर मुआफ़ फ़रमा दिया कि



इन्तिक़ाम तो कैसा ? बदला तो कहां का ? आज तुम पर कोई मलामत भी नहीं । ऐ आस्मान बोल ! ऐ ज़मीन बता ! ऐ चांद व सूरज तुम बोलो ! क्या तुम ने रूए ज़मीन पर ऐसा फ़ातेह और रहम दिल शहनशाह कभी देखा है ? या कभी सुना है ? सुन लो तुम्हारे पास इस के सिवा कोई जवाब नहीं है कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सिवा और कोई फ़ातेह न हुवा है न होगा । क्यूंकि रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपने हर कमाल में बे मिष्ल व बे मिषाल हैं ।

मुसलमानो ! येह है हमारे हुज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का उस्वए हसना और सीरते मुबारका । लिहाज़ा हम मुसलमानों पर लाज़िम है कि अपने प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के उस्वए हसना और सीरते मुक़द्दसा पर अमल करते हुवे अपने दुश्मनों से बदला और इन्तिक़ाम लेने का ज़ब्बा अपने दिल से निकाल कर अपने दुश्मनों को दरगुज़र करने और मुआफ़ कर देने की कोशिश करें । क्यूंकि लोगों की तक़सीरात और ख़ताओं को मुआफ़ कर देना, येह हमारे रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की सुन्नत भी है और येही उम्मत के लिये हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की ता'लीम भी है । जैसा कि आप गुज़श्ता सफ़्हात पर येह हदीष पढ़ चुके हैं कि “صِلْ مَنْ قَطَعَكَ وَاعْفُ عَمَّنْ ظَلَمَكَ وَأَحْسِنُ إِلَى مَنْ آسَأَكَ” या'नी जो तुम से तअल्लुक काटे तुम उस से मैल मिलाप रखो और जो तुम पर जुल्म करे उस को मुआफ़ कर दिया करो और जो तुम्हारे साथ बद सुलूकी करे तुम उस के साथ एहसान और अच्छा सुलूक करो और कुरआने मजीद में भी अफ़वे तक़सीर और दुश्मनों से दरगुज़र कर देने वालों के बड़े बड़े दरजात व मरातिब बयान किये गए हैं । इरशादे बारी तआला है कि

وَالْعَافِينَ عَنِ النَّاسِ <sup>ط</sup> (प ४, अल عمران: १३४)

या'नी लोगों की ख़ताओं को मुआफ़ कर देने वाले **अल्लाह** तआला के महबूब बन्दे हैं और बड़े दरजात वाले हैं ।

ख़ुदावन्दे करीम हर मुसलमान को रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के उस्वए हसना और सीरते मुबारका पर अमल कर ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए । (आमीन)

### ﴿64﴾ जादू का इलाज

रिवायत है कि लुबैद बिन आ'सिम यहूदी और उस की बेटियों ने हुजूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर जादू कर दिया था जिस का अषर हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के (जाहिरी) जिस्मे मुबारक पर नुमूदार हुवा। लेकिन आप के क़ल्ब और अक्ल व ए'तिकाद पर कुछ भी अषर नहीं हो सका। चन्द रोज़ के बा'द हज़रते जिब्रील عَلَيْهِ السَّلَام हाज़िरे ख़िदमत हुवे और उन्होंने ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ एक यहूदी ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ पर जादू कर दिया है और जादू का जो कुछ सामान है वोह फुत्तां कुंवें में एक पथ्थर के नीचे दबा दिया गया है। हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते अ़ली رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को भेजा। उन्होंने ने कुंवें का पानी निकाल कर पथ्थर उठा या तो उस के नीचे से खजूर के गाभे की थेली बर आमद हुई। उस में हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के मूए मुबारक जो कंघी से टूटे थे और कंघी के टूटे हुवे कुछ दन्दाने और एक डोर या कमान का चिल्ला जिस में ग्यारह गिरहें लगी हुई थीं और एक मोम का पुतला जिस में ग्यारह सूइयां चुभी थीं। येह सब सामान पथ्थर के नीचे से निकला और येह सब सामान हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की खिदमत में लाया गया।

इस के बा'द कुरआने मजीद की दोनों सूरतें قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ और قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ नाज़िल हुई। इन दोनों सूरतों में ग्यारह आयतें हैं। हर एक आयत के पढ़ने से एक एक गिरह खुलती जाती थी। यहां तक कि सब गिरहें खुल गईं और हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ बिल्कुल शिफ़ायाब हो गए। (تفسير خزائن العرفان، ص १०९) और जादू का सारा सामान ज़ेरे ज़मीन दफ़न कर दिया गया।

**दर्से हिदायत :-** ता'वीज़ात और अमलियात जिस में कोई लफ़्ज़ कुफ़्रो शिर्क का न हो जाइज़ हैं। इसी तरह गन्डे बनाना और इन पर गिरहें लगा कर आयाते कुरआन और अस्माए इलाहिyyा पढ़ कर फूंक मारना भी जाइज़ है। जमहूर सहाबा और ताबेईन इसी पर हैं, और हदीषे अ़इशा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا में है कि जब हुजूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के घर वालों में से

कोई बीमार होता तो आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** इन दोनों सूरतों को पढ़ कर उस पर दम फ़रमाते थे ।  
(تفسير خزائن العرفان ، ص ۶۳، پ ۳۰، الفلق: ۴)

और बुखारी व मुस्लिम की हदीष में है कि हुजुरे अकरम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** रात को जब बिस्तरे मुबारक पर तशरीफ़ लाते तो अपने दोनों हाथों पर दम फ़रमाया करते और अपने सर से पाउं तक पूरे जिस्मे मुबारक पर अपने दोनों हाथों को फ़िराया करते थे जहां तक दस्ते मुबारक पहुंच सकते, येह अमल तीन मरतबा फ़रमाते ।  
(تفسير خزائن العرفان ، ص ۶۳، پ ۳۰، الفلق: ۴)

खुलासा येह है कि **قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ** और **قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ** येह दोनों सूरतें जिन्न व शयातीन और नज़रे बद् व आसेब और तमाम अमराज़ खुसूसन जादू टोने का मुजर्रब इलाज हैं । इन को लिख कर ता'वीज़ बनाएं और गले में पहनाएं । और इन को बार बार पढ़ कर मरीज़ पर दम करें और खाने पानी और दवाओं पर पढ़ कर फूंक मारें और मरीज़ को खिलाएं पिलाएं । **ان شاء اللّٰہ تعالیٰ** हर मरज़ खुसूसन जादू टोना दफ़् अ हो जाएगा और मरीज़ शिफ़ायब हो जाएगा । इसी तरह कुरआने मजीद की दूसरी तमाम सूरतों के खुसूसी ख़वास हैं जिन को हम ने अपनी किताब “जन्नती ज़ेवर” में तफ़्सील के साथ तहरीर कर दिया है और इन आ'माल की हर सुन्नी मुसलमान पाबन्दे शरीअत को हम ने इजाज़त भी दे दी है । लिहाज़ा सुन्नी मुसलमानों को चाहिये कि वोह इन आ'माले कुरआनी के फ़वाइद व मनाफ़ेअ से खुद भी फ़ैज़याब हों और दूसरे लोगों को भी फ़ाइदा पहुंचाएं । हदीष शरीफ़ में है कि

“خَيْرُ النَّاسِ مَنْ يَنْفَعُ النَّاسَ”

या'नी बेहतरीन आदमी वोह है जो लोगों को नफ़अ पहुंचाए । (واللّٰہ تعالیٰ اعلم)

(كشف الخفاء ومزيل الالباس ، ج ۱، ص ۳۲۸، رقم الحديث ۱۲۵۲)

### सूरतुल फ़लक़

**قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝۱ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝۲ وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۝۳ وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ۝۴ وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝۵**  
(الفلق: १- ५)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** तुम फ़रमाओ मैं उस की पनाह लेता हूं जो सुब्ह का पैदा करने वाला है उस की सब मख़्लूक के शर से और अन्धेरी डालने वाले के शर से जब वोह डूबे और उन औरतों के शर से जो गिरहों में फूंकती हैं और हसद वाले के शर से जब वोह मुझ से जले ।

### सूरतुननास

قُلْ أَعُوذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝ مَلِكِ النَّاسِ ۝ إِلَهِ النَّاسِ ۝ مِنْ شَرِّ  
الْوَسْوَاسِ الْخَنَّاسِ ۝ الَّذِي يُوَسْوِسُ فِي صُدُورِ النَّاسِ ۝ مِنَ  
الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝ (ب ३०, الناس: १-६)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** तुम कहो मैं उस की पनाह में आया जो सब लोगों का रब सब लोगों का बादशाह सब लोगों का खुदा उस के शर से जो दिल में बड़े ख़तरे डाले और दबक रहे वोह जो लोगों के दिलों में वस्वसे डालते हैं जिन और आदमी ।

### ﴿65﴾ हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام की बताई हुई दुआ

हज़रते अल्लामा मुहम्मद बिन सम्माक عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ बहुत जलीलुल क़द्र मुहदिष और बा क़रामत वली थे । एक मरतबा येह बहुत सख़्त बीमार हो गए तो इन के मुतवस्सिलीन इन का क़ारुरा ले कर एक नसरानी त़बीब के पास चले । रास्ते में इन लोगों को एक बहुत ही खुश पोशाक बुजुर्ग मिले जिन के बदन से बेहतरीन खुशबू आ रही थी । इन्होंने ने फ़रमाया कि तुम लोग कहां जा रहे हो ? इन लोगों ने कहा कि हज़रते मुहम्मद बिन सम्माक عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ बहुत सख़्त अलील हैं येह उन का क़ारुरा है जिस को हम फुलां त़बीब के पास ले जा रहे हैं । येह सुन कर उन बुजुर्ग ने फ़रमाया कि سُبْحَنَ اللَّهِ एक **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के वली के लिये तुम लोग एक **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ के दुश्मन से मदद त़लब कर रहे हो ? क़ारुरा फेंक कर वापस जाओ और मुहम्मद बिन सम्माक عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ से कह दो कि मक़ामे दर्द पर **وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنَاهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ** (प १५, بنی اسرائیل १०) पढ़ कर दम करें ।

येह फ़रमा कर बुजुर्ग ग़ाइब हो गए और लोगों ने वापस हो कर हज़रते मुहम्मद बिन सम्माक عَلَيْهِ الرِّحْمَةُ से ज़िक्र किया तो आप ने मक़ामे दर्द पर हाथ रख कर आयत के इन दोनों जुम्लों को पढ़ा तो फ़ौरन ही आराम हो गया। फिर हज़रते मुहम्मद बिन सम्माक عَلَيْهِ الرِّحْمَةُ ने लोगों से फ़रमाया कि वोह बुजुर्ग जिन्होंने ने तुम लोगों को येह वज़ीफ़ा बताया, तुम्हें येह ख़बर है कि वोह कौन बुजुर्ग थे ? लोगों ने कहा की जी नहीं। हम लोगों ने उन्हें नहीं पहचाना। तो हज़रते मुहम्मद बिन सम्माक عَلَيْهِ الرِّحْمَةُ ने फ़रमाया कि वोह बुजुर्ग हज़रते सय्यिदुना ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام थे।

(तफ़सीर मदारक़ुल तन्ज़ील, ज ३, व १९५, प १५, बनी इस्राय़ील: १०५)

कुरआने मजीद की आयत का इतना सा टुकड़ा हर मरज़ की मुकम्मल दवा और मुजर्रब इलाज है। मरज़ की जगह पर हाथ रख कर पढ़ दिया जाए तो बीमारी दूर हो जाती है। लेकिन शर्त येह है कि पढ़ने वाला पाबन्दे शरीअत और सिद्के मक़ाल व रिज़्के हलाल पर कार बन्द हो। बिलाशुबा येह आयत शिफ़ाए अमराज़ के लिये कुरआने मजीद के अज़ाइब में से है। (والله تعالى اعلم)

وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى خَيْرِ خَلْقِهِ مُحَمَّدٍ وَّآلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ

### तिलावत की अहमियत व आदाब

عَنْ أَبِي هُرَيْرَةَ قَالَ قَالَ رَسُولُ اللَّهِ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ نَزَلَ الْقُرْآنُ عَلَى خَمْسَةِ أَوْجِهٍ حَلَالٍ وَحَرَامٍ وَمُحْكَمٌ وَمُتَشَابِهٌ وَأَمْثَالٌ فَاحْلُوا الْحَلَالَ وَحَرِّمُوا الْحَرَامَ وَعَمِلُوا بِالْمُحْكَمِ وَأَمْنُوا بِالْمُتَشَابِهِ وَاعْتَبِرُوا بِالْأَمْثَالِ۔

(مشكاة المصابيح, كتاب الإيمان, باب الاعتصام بالكتاب والسنة, الفصل الثانی, ج १, ص ९९, رقم १८२)

हज़रते अबू हुरैरा से रिवायत है इन्होंने ने कहा कि रसूलुल्लाह رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने फ़रमाया कि कुरआन पांच तरीकों पर नाज़िल हुवा। हलाल व हराम व मोहकम व मुतशाबेह और अमषाल। तो तुम लोग हलाल को हलाल जानो और हराम को हराम जानो और मोहकम पर अमल करो और मुतशाबेह पर ईमान लाओ और अमषालों (गुज़िश्ता उम्मतों के किस्सों और मिषालों) से इब्रत हासिल करो। कुरआने अज़ीम

के मज़क़ूरा बाला पांचों मज़ामीन पर मुत्तलअ होने के लिये ज़रूरी है कि कुरआने पाक को बग़ैर और बार बार समझ कर पढ़ा जाए। इसी लिये तिलावते कुरआने मजीद का इस क़दर ज़ियादा षवाब है कि हर हर्फ़ के बदले दस नेकियां मिलती हैं या'नी मषलन किसी ने सिर्फ़ **آلَمْ** पढ़ा और उस की तिलावत मक्बूल हो गई तो उस को तीस नेकियां मिलेंगी क्योंकि उस ने कुरआन के तीन हर्फ़ों को पढ़ा है।

### तिलावत के चन्द आदाब

❶ मिसवाक कर के सहीह तरीके से वुजू कर ले और क़िल्ला रू हो कर बैठ जाए और **أَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ** بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ पढ़ कर अल्फ़ाज़ व माअनी में ग़ौरो फ़िक्क करते हुवे दिल को पूरी तरह मुतवज्जेह कर के खुशूअ व खुजूअ और निहायत इज्ज व इन्किसारी के साथ तिलावत में मशगूल हो और न बहुत बुलन्द आवाज़ से पढ़े और न बहुत पस्त आवाज़ करे। बल्कि दरमियानी आवाज़ से पढ़े।

❷ बेहतर येह है कि देख कर तिलावत करे क्योंकि कुरआने मजीद को देखना भी इबादत है और इबादतों में षवाब भी दो गुना मिलता है। हदीष शरीफ़ में है कि जिस ने देख कर कुरआने मजीद की तिलावत की उस के लिये दो हज़ार नेकियां लिखी जाएंगी और जिस ने ज़बानी पढ़ा उस के लिये एक हज़ार नेकियां लिखी जाएंगी।

(کنز العمال، کتاب الاذکار، قسم الاقوال، الباب فی تلاوة القرآن الخ رقم ۲۳۰۱، ج ۱، ص ۲۶۰)

❸ तीन दिन से कम में कुरआने करीम न ख़त्म करे बल्कि कम अज़ कम तीन दिन या सात दिन या चालीस दिन में कुरआने करीम ख़त्म करे ताकि मअनी व मतालिब को समझ कर तिलावत करे।

❹ तरतील के साथ इत्मिनान से और ठहर ठहर कर तिलावत करे। इरशादे रब्बानी है :

وَرَسَّی الْقُرْآنَ تَرْتِیْلًا ۝ (پ ۲۹، المزمل: ۴)

या'नी ख़ूब ठहर ठहर कर कुरआने मजीद को पढ़ो।

इस में कई फ़ाइदे हैं, अवल्लन तो इस से कुरआने मजीद की अज़मत ज़ाहिर होती है। और षानिय्यन कुरआने मजीद के अज़ाइब व ग़राइब को सोचना और मअानी को समझना ही तिलावत का मक़सूदे आ'ज़म है और येह तरतील के बिग़ैर दुश्वार है।

﴿5﴾ ब वक़्ते तिलावत हर लफ़्ज़ के मअानी पर नज़र रखे और वा'दा व वईद को समझने की कोशिश करे और हर ख़िताब में अपने को मुखातब तसव्वुर करे और अम्र व नहय और क़सस व हिकायात में अपने आप को मरजए ख़िताब समझे और अहक़ाम पर अमल पैरा होने और ममनूआत से बाज़ रहने का पुख़्ता इरादा कर ले।

﴿6﴾ दौराने तिलावत जिस जगह जन्नत और उस की ने'मतों का ज़िक्र आए या हिफ़ज़ो अमान और सलामतिये ईमान या किसी भी पसन्दीदा चीज़ का ज़िक्र आए तो ठहर कर दुआ करे और जिस जगह जहन्नम और उस के अज़ाबों का ज़िक्र आए या उन जैसी किसी भी बाइषे ख़ौफ़ चीज़ का तज़क़िरा आए तो ठहर कर इन चीज़ों से **اللَّهُمَّ** की पनाह मांगे और ख़ौफ़े इलाही **عَزَّوَجَلَّ** से रो पड़े और अगर रोना न आए तो कम अज़ कम रोने की सूरत बना ले।

﴿7﴾ रात के वक़्त तिलावत की कषरत करे क्यूंकि इस वक़्त ज़ेहन पुर सुकून और दिल मुतमइन होता है। तिलावत के लिये सब से अफ़ज़ल वक़्त साल भर में रमज़ान शरीफ़ के आख़िरी दस अय्याम और जुल हिज्जा के इब्तिदाई दस दिन हैं। इस के बा'द जुमुआ फिर दो शम्बा फिर पंज शम्बा और रात में तिलावत का बेहतरीन वक़्त मग़रिब और इशा के दरमियान है और इस के बा'द निस्फ़ शब के बा'द और दिन में सब से उम्दा सुब्ह का वक़्त है।

﴿8﴾ खुश इल्हानी और तजवीद के साथ हुरूफ़ की सहीह अदाएगी और अवकाफ़ की रिआयत करते हुवे तिलावत करे मगर इस का लिहाज़ रहे कि खुश इल्हानी के लिये क़वाइदे मौसीकी और गाने के लहजों का हरगिज़ हरगिज़ इस्ति'माल न करे।



﴿9﴾ तिलावत के वक्त कुरआने करीम की अज़मत पर नज़र रखे और आयते करीमा

لَوَأْنُرُنَا هَذَا الْقُرْآنَ عَلَى جَبَلٍ لَرَأَيْنَاهُ خَاشِعًا مُتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللَّهِ (پ २८, الحشر: २) या'नी अगर हम येह कुरआन किसी पहाड़ पर उतारते तो ज़रूर तू उसे देखता झुका हुवा पाश पाश होता **अल्लाह** के खौफ़ से।

आयत के इस मज़मून को ब वक्ते तिलावत अपने ज़ेहन में हाज़िर रखे और खौफ़े इलाही से भरपूर हो कर निहायत अज़िज़ी के साथ तिलावत करे।

﴿10﴾ जो आयतें अपने हाल के मुताबिक़ हों, उन को बार बार पढ़ना चाहिये और कुरआने अज़ीम पढ़ते वक्त येह खयाल जमाए कि गोया खुदावन्दे तअाला के हुज़ूर में पढ़ रहा है। जब इस मन्ज़िल पर पहुंच जाए तो येह तसव्वुर जमाए कि गोया रब्बे करीम मुझ ही से ख़िताब फ़रमा रहा है और इस तरक्की की इन्तिहा येह है कि येह तसव्वुर पैदा हो जाए कि कुरआने अज़ीम पढ़ने वाला गोया **अल्लाह** तअाला और उस की सिफ़ात व अफ़अाल को उस के कलाम में देख रहा है। लेकिन येह बुलन्द मर्तबा सिद्दीक़ीन के लिये मख़सूस है हर कसो नाक़िस को येह हासिल नहीं होता।

﴿11﴾ जब तन्हाई में हो तो दरमियानी आवाज़ से तिलावत करना बेहतर है। लेकिन अगर बुलन्द आवाज़ से तिलावत करने में रियाकारी का खौफ़ हो या किसी नमाज़ी की नमाज़ में ख़लल का अन्देशा हो या कुछ लोग गुफ़्तगू में मसरूफ़ हैं और उन के तिलावत न सुनने का गुमान हो तो इन सूरतों में कुरआने मजीद को आहिस्ता पढ़ना बेहतर है। ऐसे मवाक़ेअ के लिये हदीषों में वारिद हुवा है कि “पोशीदा अमल” ज़ाहिरी अमल से सत्तर गुना ज़ियादा षवाब रखता है।

बहर हाल कुरआने मजीद की तिलावत के वक्त आदाब का लिहाज़ रखना निहायत ज़रूरी है ताकि दीन व दुन्या की बे शुमार बरकतें हासिल हों और हरगिज़ हरगिज़ आदाब से ग़फ़लत न होने पाए कि येह ग़फ़लत बरकाते दीन से बहुत बड़ी महरूमी का सबब है।

اللَّهُمَّ اجْعَلْنَا مِنَ الصّٰدِقِيْنَ وَلَا تَجْعَلْنَا مِنَ الْغٰفِلِيْنَ اٰمِيْنَ بِجَاهِ سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَعَلَى الْاٰلِهِ وَصَحْبِهِ اَجْمَعِيْنَ ۝

# अज्ञातबुल कुरआन

دَلِيلُ الْحَقِّ  
مُبْسِمًا وَمُحَمَّدًا وَمُصَلِّيًا  
अर्जे मुशन्निफ़

بِحَمْدِ اللَّهِ تَعَالَى “अजाइबुल कुरआन” तब्ब़ हो जाने के बा’द जो पेंसठ उन्वानों पर कुरआनी अजाइबात का बेहतरीन गुलदस्ता है। अब कुरआने मजीद के मजीद चन्द अजाइबात और तअज़्जुब ख़ैज़ व हैरत अंगेज़ वाकिआत का मजमूआ, जो सत्तर उन्वानों पर मुश्तमिल है, नीज़ इन उन्वानात से तअल्लुक रखने वाली आयतों का तर्जमा, तफ़्सीर व शाने नुज़ूल व निकात व दर्से हिदायत “ग़राइबुल कुरआन” के नाम से नाज़िरीन की खिदमत में पेश करता हूं।

अजाइबुल कुरआन और “ग़राइबुल कुरआन” येह दोनों किताबें कुरआने मजीद के मजामीन पर अय्यामे अलालत में मेरी मेहनतों का षमरा हैं। मौला तअ़ला अपने हबीबे करीम ﷺ के तुफ़ैल मेरी इन दीनी तस्नीफ़त को क़बूलिय्यते दारैन की क़रामतों से सरफ़राज़ फ़रमाए। और मेरे लिये, नीज़ वालिदैन्, असातिज़ा व तलामिज़ा व मुरीदीन के लिये जादे आख़िरत व ज़रीअए मग़फ़िरत बनाए और मेरे नवासे अज़ीजुल क़द्र मौलाना फ़ैजुल हक़ साहिब को फ़ैज़ाने इल्मो अमल व बरकाते दारैन की दौलतों से माला माल फ़रमाए कि वोह इस किताब की तदवीन व तबयीज़ में मेरे शरीके कार बने रहे। (आमीन)

नाज़िरीने किराम से गुज़ारिश है कि वोह मेरी मुकम्मल सिह्हत व अफ़िय्यत के लिये दुआएं करते रहें। ताकि मैं सिह्हत मन्द हो कर आख़िरे हयात तक दर्से हदीष व मवाइज़ व तस्नीफ़त का काम जारी रख सकूं।

وما ذالك على الله بعزيز وهو حسبي ونعم الوكيل وصلى الله تعالى على

حبيبه محمد واله وصحبه اجمعين

अब्दुल मुस्तफ़ा अल आ’जमी (غَفَى عَنْهُ) घोसी

23 रमज़ान सि. 1402 हि.

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

مُبْسِمًا وَمُحَمَّدًا وَمُصَلِّيًا

### «1» तख़लीके आदम عَلَيْهِ السَّلَام

हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की न मां हैं न बाप। बल्कि **अल्लाह** तआला ने इन को मिट्टी से बनाया है। चुनान्वे, रिवायत है कि जब खुदावन्दे कुहूस غَزْوَجَل ने आप को पैदा करने का इरादा फ़रमाया तो हज़रते इज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म दिया कि ज़मीन से एक मुठ्ठी मिट्टी लाएं। हुक्मे खुदावन्दी غَزْوَجَل के मुताबिक हज़रते इज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام ने आस्मान से उतर कर ज़मीन से एक मुठ्ठी मिट्टी उठाई तो पूरी रुए ज़मीन की ऊपरी परत छिलके के मानिन्द उतर कर आप की मुठ्ठी में आ गई। जिस में साठ रंगों और मुख़लिफ़ कैफ़ियतों वाली मिट्टियां थीं। या'नी सफ़ेद व सियाह और सुर्ख़ व ज़र्द रंगों वाली और नर्म व सख़्त, शीरीं व तल्ख़, नम्कीन व फीकी वगैरा कैफ़ियतों वाली मिट्टियां शामिल थी। (تذكرة الانبياء، ص २४८)

फिर इस मिट्टी को मुख़लिफ़ पानियों से गूंधने का हुक्म फ़रमाया। चुनान्वे, एक मुद्दत के बा'द येह चिपकने वाली बन गई। फिर एक और मुद्दत तक येह गूंधी गई तो कीचड़ की तरह बूदार गारा बन गई। फिर येह खुश्क हो कर खनखनाती और बजती हुई मिट्टी बन गई। फिर इस मिट्टी से हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام का पुतला बना कर जन्नत के दरवाजे पर रख दिया गया जिस को देख देख कर फ़िरिश्तों की जमाअत तअज्जुब करती थी। क्यूंकि फ़िरिश्तों ने ऐसी शक्लो सूरत की कोई मख़्लूक कभी देखी ही नहीं थी। फिर **अल्लाह** तआला ने इस पुतले में रूह को दाख़िल होने का हुक्म फ़रमाया। चुनान्वे, रूह दाख़िल हो कर जब आप के नथनों में पहुंची तो आप को छींक आई और जब रूह ज़बान तक पहुंच गई, तो आप ने اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ पढ़ा और **अल्लाह** तआला ने फ़रमाया “يَرْحَمُكَ اللَّهُ”

या'नी **अल्लाह** तअला तुम पर रहमत फ़रमाए । ऐ अबू मुहम्मद (आदम) मैं ने तुम को अपनी हम्द ही के लिये बनाया है । फिर रफ़ता रफ़ता पूरे बदन में रूह पहुंच गई और आप ज़िन्दा हो कर उठ खड़े हुवे ।

(तفسير خازن، ج ۱، ص ۴۳، پ ۱، البقرة: ۳۰)

तर्मिज़ी और अबू दावूद में येह हदीष है कि हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** का पुतला जिस मिट्टी से बनाया गया चूँकि वोह मुख़लिफ़ रंगों और मुख़लिफ़ कैफ़ियतों की मिट्टियों का मजमूआ थी इसी लिये आप की अवलाद या'नी इन्सानों में मुख़लिफ़ रंगों और क़िस्म क़िस्म के मिज़ाजों वाले लोग हो गए ।

(تفسير صاوی، ج ۱، ص ۴۹، پ ۱، البقرة: ۳۰)

हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** की कुन्यत अबू मुहम्मद या अबुल बशर और आप का लक़ब “ख़लीफ़तुल्लाह” है और आप सब से पहले **अल्लाह** तअला के नबी हैं । आप ने नव सो साठ बरस की उम्र पाई और ब वक़्ते वफ़ात आप की अवलाद की ता'दाद एक लाख हो चुकी थी । जिन्होंने ने तरह तरह की सन्ज़तों और इमारतों से ज़मीन को आबाद किया ।

(تفسير صاوی، ج ۱، ص ۴۸، پ ۱، البقرة: ۳۰)

कुरआने मजीद में बार बार इस मजमून का बयान किया गया है कि हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** की तख़लीक़ मिट्टी से हुई । चुनान्वे, सूरए आले इमरान में इरशाद फ़रमाया कि

إِنَّمَا مَثَلُ عِيسَىٰ عِنْدَ اللَّهِ كَمَثَلِ آدَمَ ۖ خَلَقَهُ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ۝ (پ ۳، آل عمران: ۵۹)  
**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** ईसा की कहावत **अल्लाह** के नज़दीक आदम की तरह है उसे मिट्टी से बनाया फिर फ़रमाया हो जा वोह फ़ौरन हो जाता है ।

إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِنْ طِينٍ لَّازِبٍ ۝ (پ ۲۳، الصّافات: ۱)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** बेशक हम ने उन को चिपकती मिट्टी से बनाया ।

कहीं येह फरमाया कि

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِنْ حَمَإٍ مَسْتُوٍّ ﴿٣٦﴾ (پ ۱، الحجر: ۲۶)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** और बेशक हम ने आदमी को बजती हुई मिट्टी से बनाया जो अस्ल में एक सियाह बूदार गारा थी ।

**हज़रते हव्वा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا :-** जब हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को खुदावन्दे कुद्दूस ने बहिश्त में रहने का हुक्म दिया तो आप जन्नत में तन्हाई की वजह से कुछ मलूल हुवे तो **अल्लाह** तआला ने आप पर नींद का ग़लबा फ़रमाया और आप गहरी नींद सो गए तो नींद ही की हालत में आप की बाईं पस्ती से **अल्लाह** तआला ने हज़रते हव्वा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا को पैदा फ़रमा दिया ।

जब आप नींद से बेदार हुवे तो येह देख कर हैरान रह गए कि एक निहायत ही ख़ूब सूरत और हसीनो ज़मील औरत आप के पास बैठी हुई है । आप ने उन से फ़रमाया कि तुम कौन हो ? और किस लिये यहां आई हो ? तो हज़रते हव्वा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने जवाब दिया कि मैं आप की बीवी हूं और **अल्लाह** तआला ने मुझे इस लिये पैदा फ़रमाया है ताकि आप को मुझ से उन्स और सुकूने क़ल्ब हासिल हो । और मुझे आप से उन्सियत और तस्कीन मिले और हम दोनों एक दूसरे से मिल कर खुश रहें और प्यार व महब्वत के साथ ज़िन्दगी बसर करें और खुदावन्दे कुद्दूस **عَزَّوَجَلَّ** (تفسير روح المعاني، ج ۱، ص ۳۱۶، ۱، البقرة: ۳۵) की ने'मतों का शुक्र अदा करते रहें ।

कुरआने मजीद में चन्द मक़ामात पर **अल्लाह** तआला ने हज़रते हव्वा के बारे में इरशाद फ़रमाया, मषलन !

وَخَلَقْ مِنْهَا رَوْحًا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيرًا وَنِسَاءً ﴿٣٧﴾ (پ ۳، النساء: ۱)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** और उसी में से उस का जोड़ा बनाया और उन दोनों से बहुत से मर्द व औरत फैला दिये ।

**दर्से हिदायत :-** हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام व हव्वा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की तख़लीक़ का वाकिआ मज़ामीने कुरआने मजीद के उन अज़ाइबात में से है जिस के दामन में बड़ी बड़ी इब्रतों और नसीहतों के गोहरे आबदार के अम्बार पोशीदा हैं जिन में से चन्द येह हैं ।

**अल्लाह** तआला ने हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को मिट्टी से बनाया और हज़रते हव्वा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا को हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की पस्ली से पैदा फ़रमाया । कुरआन के इस फ़रमान से येह हकीक़त इयां होती है कि ख़ल्लाके आलम جَنَّاتِ ने इन्सानों को चार तरीकों से पैदा फ़रमाया है :

﴿अव्वल﴾ येह कि मर्द व औरत दोनों के मिलाप से, जैसा कि आम तौर पर इन्सानों की पैदाइश होती है । चुनान्चे, कुरआने मजीद में साफ़ साफ़ ए'लान है कि

إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ طُفَّةٍ أَمْشَاجٍ (پ ۲۹، الدهر : ۲)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** बेशक हम ने आदमी को पैदा किया मिली हुई मनी से ﴿दुवुम﴾ येह कि तन्हा मर्द से एक इन्सान पैदा हो । और वोह हज़रते हव्वा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا हैं कि **अल्लाह** तआला ने उन को हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की बाई पस्ली से पैदा फ़रमा दिया ।

﴿सिवुम﴾ येह कि तन्हा एक औरत से एक इन्सान पैदा हो । और वोह हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام हैं जो कि पाक दामन कंवारी बीबी मरयम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के शिकम से बिगैर बाप के पैदा हुवे ।

﴿चहारुम﴾ येह कि बिगैर मर्द व औरत के भी एक इन्सान को खुदावन्दे कुद्दूस عَزَّوَجَلَّ ने पैदा फ़रमा दिया और वोह इन्सान हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام हैं कि **अल्लाह** तआला ने उन को मिट्टी से बना दिया ।

इन वाकिआत से मुन्दरिजए ज़ैल अस्बाक़ की तरफ़ राहनुमाई होती है ।

﴿1﴾ खुदावन्दे कुद्दूस ऐसा क़ादिरो क़य्यूम और ख़ल्लाक़ है कि इन्सानों को किसी खास एक ही तरीके से पैदा फ़रमाने का पाबन्द नहीं है, बल्कि वोह ऐसी अज़ीम कुदरत वाला है कि वोह जिस तरह चाहे इन्सानों को पैदा फ़रमा दे । चुनान्चे, मज़कूरए बाला चार तरीकों से उस ने इन्सानों को पैदा फ़रमा दिया । जो उस की कुदरत व हिकमत और उस की अज़ीमुशशान ख़ल्लाक़िय्यत का निशाने आ 'जम है ।



سُبْحَنَ اللّٰهُ खुदावन्दे कुहूस की शाने खालिक्वियत की अज़मत का क्या कहना ? जिस खल्लाके आलम ने कुरसी व अर्श और लौहो कलम और ज़मीनो आस्मान को “कुन” फ़रमा कर मौजूद फ़रमा दिया और उस की कुदरते कामिला और हिक्मते बालिगा के हुज़ूर खलकते इन्सानी की भला हकीकत व हैषियत ही क्या है । लेकिन इस में कोई शक नहीं कि तख़्तीके इन्सान उस कादिरे मुतलक का वोह तख़्तीकी शाहकार है कि काइनाते आलम में इस की कोई मिषाल नहीं । क्यूंकि वुजूदे इन्सान आलमे खलक की तमाम मख़्लूक़ात के नुमूनों का एक जामेअ मरक्कअ है । **अल्लाह** अक्बर ! क्या ख़ूब इरशाद फ़रमाया । मौलाए काइनात हज़रते अली मुर्तजा **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** ने कि

اَتَّخَسَّبُ اِنَّكَ جَرْمٌ صَغِيرٌ وَفِيكَ اِنْطَوٰى الْعَالَمُ الْاَكْبَرُ

**तर्जमा :-** ऐ इन्सान ! क्या तू येह गुमान करता है कि तू एक छोटा सा जिस्म है ? हालांकि तेरी अज़मत का येह हाल है कि तेरे अन्दर आलमे अक्बर सिमटा हुआ है ।

﴿2﴾ मुमकिन था कि कोई मर्द येह खयाल करता कि अगर हम मर्दों की जमाअत न होती तो तन्हा औरतों से कोई इन्सान पैदा नहीं हो सकता था । इसी तरह मुमकिन था कि औरतों को येह गुमान होता कि अगर हम औरतें न होतीं तो तन्हा मर्दों से कोई इन्सान पैदा न होता । इसी तरह मुमकिन था कि औरत व मर्द दोनों मिल कर येह नाज़ करते कि अगर हम मर्दों और औरतों का वुजूद न होता तो कोई इन्सान पैदा नहीं हो सकता था, तो **अल्लाह** तआला ने चारों तरीकों से इन्सानों को पैदा फ़रमा कर औरतों और मर्दों दोनों का मुंह बन्द कर दिया कि देख लो, हम ऐसे कादिरो कय्यूम हैं कि हज़रते हव्वा **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا** को तन्हा मर्द या'नी हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** की पस्ली से पैदा फ़रमा दिया । लिहाज़ा ऐ औरतो ! तुम येह गुमान मत रखो कि अगर औरतें न होतीं तो कोई इन्सान पैदा न होता । इसी तरह हज़रते ईसा **عَلَيْهِ السَّلَام** को तन्हा औरत के शिकम से बिगैर मर्द के पैदा फ़रमा कर मर्दों को तम्बीह फ़रमा दी कि ऐ मर्दों ! तुम येह नाज़ न करो कि अगर तुम न होते तो इन्सानों की पैदाइश नहीं हो सकती थी । देख लो ! हम ने हज़रते ईसा **عَلَيْهِ السَّلَام** को तन्हा औरत के शिकम से बिगैर मर्द

के पैदा फ़रमा दिया। और हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को बिगैर मर्द व औरत के मिट्टी से पैदा फ़रमा कर औरतों और मर्दों का मुंह बन्द फ़रमा दिया कि ऐ औरतो और मर्दों ! तुम कभी भी अपने दिल में खयाल न लाना कि अगर हम दोनों न होते तो इन्सानों की जमाअत पैदा नहीं हो सकती थी। देख लो ! हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के न बाप हैं न मां, बल्कि हम ने उन को मिट्टी से पैदा फ़रमा दिया। **اَللّٰهُ** جَلَّ جَلَالُهُ ने कि

اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿١٠﴾ (پ ۱۳، الرعد: ۱۶)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** **اَللّٰهُ** (عَزَّوَجَلَّ) हर चीज़ का बनाने वाला है और वोह अकेला सब पर ग़ालिब है।

वोह जिस को चाहे और जैसे चाहे और जब चाहे पैदा फ़रमा देता है। उस के अफ़ाल और उस की कुदरत किसी अस्बाब व इलल, और किसी खास तौर तरीकों की बन्दिशों के मोहताज नहीं हैं। वोह **قَالَ يٰمَرْيَمُ** ط (پ ۳۰، البروج: ۱۶) है।

या'नी वोह जो चाहता है करता है। उस की शान है **يَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَاءُ وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَرِيدُ**। या'नी जिस चीज़ और जिस काम का वोह इरादा फ़रमाता है उस को कर डालता है। न कोई उस की मशियत व इरादे में दख़ल अन्दाज़ हो सकता है, न किसी को उस के किसी काम में चूँ व चरा की मजाल हो सकती है। (والله تعالى اعلم)

## ﴿2﴾ **ख़िलाफ़ते आदम عَلَيْهِ السَّلَام**

हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام का लक़ब “ख़लीफ़तुल्लाह” है। जब **اَللّٰهُ** तअ़ाला ने हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को अपनी ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाने का इरादा फ़रमाया तो इस सिलसिले में **اَللّٰهُ** तअ़ाला और फ़िरिश्तों में जो मुकालमा हुवा वोह बहुत ही तअज़्जुब ख़ैज़ होने के साथ साथ निहायत ही फ़िक्र अंगेज़ व इब्रत आमोज़ भी है, जो हस्बे ज़ैल है :

**اَللّٰهُ** तअ़ाला : “ऐ फ़िरिश्तो ! मैं ज़मीन में अपना ख़लीफ़ा बनाने वाला हूँ जो मेरा नाइब बन कर ज़मीन में मेरे अहक़ाम को नाफ़िज़ करेगा।

**मलाइका :** ऐ बारी तअ़ाला ! क्या तू ज़मीन में ऐसे शख़्स को अपनी ख़िलाफ़त व नियाबत के शरफ़ से सरफ़राज़ फ़रमाएगा जो ज़मीन में

फ़साद बरपा करेगा और क़त्लो ग़ारतगिरी से ख़ूरैज़ी का बाज़ार गर्म करेगा ? ऐ खुदावन्दे तअ़ाला ! इस शख्स से ज़ियादा तेरी ख़िलाफ़त के हक़दार तो हम मलाइका की जमाअत हैं, क्यूँकि हम मलाइका न ज़मीन में फ़साद फैलाएंगे, न ख़ूरैज़ी करेंगे बल्कि हम तेरी हम्दो षना के साथ तेरी सबूहिyyत का ए'लान और तेरी कुदूसिय्यत और पाकी का बयान करते रहते हैं और तेरी तस्बीह व तक्दीस से हर लहज़ा व हर आन रतबुलिस्सान रहते हैं इस लिये हम फ़िरिश्तों की जमाअत ही में से किसी के सर पर अपनी ख़िलाफ़त व नियाबत का ताज रख कर उस को "ख़लीफ़तुल्लाह" के मुअज़्ज़ लक़ब से सर बुलन्द फ़रमा ।

**अल्लाह तअ़ाला :** ऐ फ़िरिश्तो ! आदम (عليه السلام) के ख़लीफ़ा बनाने में जो हिक्मतें और मस्लेहतें हैं उन को मैं ही जानता हूँ, तुम गुरौहे मलाइका उन हिक्मतों और मस्लेहतों को नहीं जानते ।

फ़िरिश्ते बारी तअ़ाला के इस इरशाद को सुन कर अगर्चे ख़ामोश तो हो गए मगर उन्होंने ने अपने दिल में येह ख़याल छुपाए रखा कि **अल्लाह तअ़ाला** ख़्वाह किसी को भी अपना ख़लीफ़ा बना दे मगर वोह फ़ज़्लो कमाल में हम फ़िरिश्तों से बढ़ कर न होगा । क्यूँकि हम मलाइका फ़ज़ीलत की जिस मन्ज़िल पर हैं वहां तक किसी मख़्लूक की भी रसाई न हो सकेगी । इस लिये फ़ज़ीलत के ताजदार बहर हाल हम फ़िरिश्तों की जमाअत ही रहेगी ।

इस के बा'द **अल्लाह तअ़ाला** ने हज़रते आदम (عليه السلام) को पैदा फ़रमा कर तमाम छोटी बड़ी चीज़ों का इल्म उन को अता फ़रमा दिया इस के बा'द फिर **अल्लाह तअ़ाला** और मलाइका का हस्बे ज़ैल मुकालमा हुवा ।

**अल्लाह तअ़ाला :** ऐ फ़िरिश्तो ! अगर तुम अपने इस दा'वे में सच्चे हो कि तुम से अफ़ज़ल कोई दूसरी मख़्लूक नहीं हो सकती तो तुम तमाम उन चीज़ों के नाम बताओ जिन को मैं ने तुम्हारे पेशे नज़र कर दिया है ।

**मलाइका :** ऐ **अल्लाह तअ़ाला** ! तू हर नक्स व ऐब से पाक है हमें तो बस इतना ही इल्म है जो तू ने हमें अता फ़रमा दिया है इस के सिवा हमें और किसी चीज़ का कोई इल्म नहीं है हम बिल यकीन येह जानते हैं और मानते हैं कि बिला शुबा इल्मो हिक्मत का ख़ालिको मालिक तो सिर्फ़ तू ही है ।

फिर **अल्लाह** तआला ने हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को मुखातब फ़रमा कर इरशाद फ़रमाया कि ऐ आदम तुम इन फ़िरिश्तों को तमाम चीज़ों के नाम बताओ। तो हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام ने तमाम अश्या के नाम और उन की हिक़मतों का इल्म फ़िरिश्तों को बता दिया जिस को सुन कर फ़िरिश्ते मुतअज्जिब व मह्वे हैरत हो गए।

**अल्लाह** तआला : ऐ फ़िरिश्ते ! क्या मैं ने तुम से येह नहीं फ़रमा दिया था कि मैं आस्मानो ज़मीन की छुपी हुई तमाम चीज़ों को जानता हूँ और तुम जो अलानिय्या येह कहते थे कि आदम फ़साद बरपा करेंगे इस को भी मैं जानता हूँ और तुम जो खयालात अपने दिलों में छुपाए हुवे थे कि कोई मख़्लूक तुम से बढ़ कर अफ़ज़ल नहीं पैदा होगी, मैं तुम्हारे दिलों में छुपे हुवे उन खयालात को भी जानता हूँ।

फिर हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के फज़लो कमाल के इज़हार व ए'लान के लिये और फ़िरिश्तों से इन की अज़मत व फ़ज़ीलत का ए'तिराफ़ कराने के लिये **अल्लाह** तआला ने सब फ़िरिश्तों को हुक्म फ़रमाया कि तुम सब हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को सजदा करो। चुनान्चे, सब फ़िरिश्तों ने आप को सजदा किया लेकिन इब्लीस ने सजदे से इन्कार कर दिया और तकब्बुर किया तो काफ़िर हो कर मर्दूदे बारगाह हो गया।

इस पूरे मज़मून को कुरआने मजीद ने अपने मो'जिज़ाना तर्ज़े बयान में इस तरह ज़िक़र फ़रमाया है :

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلِكَةِ إِنِّي جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيفَةً ۖ قَالُوا أَتَجْعَلُ فِيهَا مَن يُفْسِدُ فِيهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَاءَ ۚ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ۚ قَالَ إِنِّي أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ (٣٠) وَعَلَّمَ آدَمَ الْأَسْمَاءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلِكَةِ فَقَالَ أَنْذِئُونِي بِأَسْمَاءِ هَؤُلَاءِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ۝ (٣١) قَالُوا سُبْحَنَكَ لَا عِلْمَ لَنَا إِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَلِيمُ الْحَكِيمُ ۝ (٣٢) قَالَ يَا آدَمُ أَنْبِئْهُمْ بِأَسْمَاءِهِمْ ۚ فَلَمَّا أَنْبَأَهُمْ بِأَسْمَائِهِمْ قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَّكُمْ إِنِّي أَعْلَمُ غَيْبَ السَّمُوتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَأَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُونَ ۝ (٣٣) وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلِكَةِ اسْجُدُوا لِآدَمَ فَسَجَدُوا إِلَّا إِبْلِيسَ ۖ أَبَىٰ

وَاسْتَكْبَرَ ۖ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۝ (٣٤) (پ ۱، البقرة: ۳۰-۳۴)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़िरिश्तों से फ़रमाया मैं ज़मीन में अपना नाइब बनाने वाला हूँ। बोले : क्या ऐसे को नाइब करेगा जो इस में फ़साद फैलाए और खून रैज़ियां करे और हम तुझे सराहते हुवे तेरी तस्बीह करते और तेरी पाकी बोलते हैं। फ़रमाया : मुझे मा'लूम है जो तुम नहीं जानते और **अल्लाह** तआला ने आदम को तमाम अश्या के नाम सिखाए फिर सब अश्या मलाइका पर पेश कर के फ़रमाया सच्चे हो तो इन के नाम तो बताओ, बोले पाकी है तुझे हमें कुछ इल्म नहीं मगर जितना तू ने हमें सिखाया। बेशक तू ही इल्मो हिक्मत वाला है। फ़रमाया : ऐ आदम बता दे इन्हें सब अश्या के नाम। जब आदम ने उन्हें सब के नाम बता दिये, फ़रमाया मैं न कहता था कि मैं जानता हूँ आस्मानों और ज़मीन की सब छुपी चीज़ें और मैं जानता हूँ जो कुछ तुम ज़ाहिर करते और जो कुछ तुम छुपाते हो और याद करो जब हम ने फ़िरिश्तों को हुक्म दिया कि आदम को सजदा करो तो सब ने सजदा किया सिवाए इब्लीस के मुन्किर हुवा और गुरूर किया और काफ़िर हो गया।

**दर्से हिदायत :-** इन आयाते करीमा से मुन्दरिजए जैल हिदायत के अस्बाक़ मिलते हैं।

﴿1﴾ **अल्लाह** तआला की शान **فَعَالٌ لَّيَّيُّنٌ** है। या'नी वोह जो चाहता है करता है न कोई उस के इरादे में दख़ल अन्दाज़ हो सकता है न किसी की मजाल है कि उस के किसी काम में चूनी चरा कर सके। मगर इस के बा वुजूद हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** की तख़लीक़ व ख़िलाफ़त के बारे में खुदावन्दे कुद्दूस ने मलाइका की जमाअत से मश्वरा फ़रमाया। इस में येह हिदायत का सबक़ है कि बारी तआला जो सब से ज़ियादा इल्म व कुदरत वाला है और फ़ाइले मुख़्तार है जब वोह अपने मलाइका से मश्वरा फ़रमाता है तो बन्दे जिन का इल्म और इक्त़िदार व इख़्तियार बहुत ही कम है तो उन्हें भी चाहिये कि वोह जिस किसी काम का इरादा करें तो अपने मुख़्तिस दोस्तों, और साहिबाने अक्ल हमदर्दों से अपने काम के बारे में मश्वरा कर लिया करें कि येह **अल्लाह** तआला कि सुन्नत और उस का मुक़द्दस दस्तूर है।

﴿2﴾ फ़िरिश्तों ने हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के बारे में यह कहा कि वोह फ़सादी और ख़ुरैज़ हैं। लिहाज़ा उन को ख़िलाफ़ते इलाहिय्या से सरफ़राज़ करने से बेहतर यह है कि हम फ़िरिश्तों को ख़िलाफ़त का शरफ़ बख़्शा जाए। क्यूँकि हम मलाइका खुदा की तस्बीहो तक्दीस और उस की हम्दो षना को अपना शिअरे जिन्दगी बनाए हुवे हैं लिहाज़ा हम मलाइका हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام से ज़ियादा ख़िलाफ़त के मुस्तहिक् हैं।

फ़िरिश्तों ने अपनी यह राए इस बिना पर दी थी कि उन्होंने ने अपने इजतिहाद से यह समझ लिया कि पैदा होने वाले ख़लीफ़ा में तीन कुव्वतें बारी तअ़ाला वदीअत फ़रमाएगा, एक कुव्वते शहविय्या, दूसरी कुव्वते ग़ज़बिय्या, तीसरी कुव्वते अक्लिय्या और चूँकि कुव्वते शहविय्या और कुव्वते ग़ज़बिय्या इन दोनों से लूटमार और क़त्लो ग़ारत वगैरा किस्म किस्म के फ़सादात रू नुमा होंगे, इस लिये फ़िरिश्तों ने बारी तअ़ाला के जवाब में यह अर्ज़ किया कि ऐ खुदावन्दे तअ़ाला ! क्या तू ऐसी मख़्लूक को अपनी ख़िलाफ़त से सरफ़राज़ फ़रमाएगा जो ज़मीन में किस्म किस्म के फ़साद बरपा करेगी और क़त्लो ग़ारत गिरी से ज़मीन में खूँ रैज़ी का तूफ़ान लाएगी। इस से बेहतर तो यह है कि तू हम फ़िरिश्तों में से किसी को अपना ख़लीफ़ा बना दे। क्यूँकि हम तेरी हम्द के साथ तेरी तस्बीह पढ़ते हैं और तेरी तक्दीस और पाकी का चर्चा करते रहते हैं तो **अब्बास** तअ़ाला ने यह फ़रमा कर फ़िरिश्तों को ख़ामोश कर दिया कि मैं जिस मख़्लूक को ख़लीफ़ा बना रहा हूँ उस में जो जो मस्लेहतें और जैसी जैसी हिक्मतें हैं उन को बस मैं ही जानता हूँ तुम फ़िरिश्तों को उन हिक्मतों और मस्लेहतों का इल्म नहीं है।

वोह मस्लेहतें और हिक्मतें क्या थीं ? इस का पूरा पूरा इल्म तो सिर्फ़ अल्लिमुल गुयूब ही को है। मगर ज़ाहिरी तौर पर एक हिक्मत और मस्लेहत यह भी मा'लूम होती है कि फ़िरिश्तों ने हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के बदन में कुव्वते शहविय्या व कुव्वते ग़ज़बिय्या को फ़साद व खूँ रैज़ी का मम्बअ और सर चश्मा समझ कर इन को ख़िलाफ़त का अहल नहीं समझा। मगर फ़िरिश्तों की नज़र इस पर नहीं पड़ी कि हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام में कुव्वते शहविय्या और कुव्वते ग़ज़बिय्या के साथ साथ कुव्वते अक्लिय्या भी है और कुव्वते अक्लिय्या की येह शान है कि अगर वोह ग़ालिब हो कर कुव्वते शहविय्या और कुव्वते ग़ज़बिय्या को अपना



मुतीअ व फ़रमां बरदार बना ले तो कुव्वते शहविय्या व कुव्वते ग़ज़बिय्या बजाए फ़साद व खूँ रैज़ी के हर ख़ैर व ख़ूबी का मम्बअ और हर किस्म की सलाहो फ़लाह का सरचश्मा बन जाया करती हैं, येह नुक्ता फ़िरिश्तों की निगाह से ओझल रह गया। इसी लिये बारी तआला ने फ़िरिश्तों के जवाब में फ़रमाया कि मैं जो जानता हूँ उस को तुम नहीं जानते और फ़िरिश्ते येह सुन कर ख़ामोश हो गए।

इस से येह हिदायत का सबक़ मिलता है कि चूँकि बन्दे खुदावन्दे कुद्दूस के अफ़आल और उस के कामों की मस्लेहतें और हिक़मतों से कमा हक्क़हु वाकिफ़ नहीं हैं इस लिये बन्दों पर लाज़िम है कि **अल्लाह** तआला के किसी फ़े'ल पर तन्कीद व तबसेरे से अपनी ज़बान को रोके रहें। और अपनी कम अक्ली व कोताह फ़हमी का ए'तिराफ़ करते हुवे येह ईमान रखें और ज़बान से ए'लान करते रहें कि **अल्लाह** तआला ने जो कुछ किया और जैसा भी किया बहर हाल वोही हक्क़ है और **अल्लाह** तआला ही अपने कामों की हिक़मतों और मस्लेहतों को ख़ूब जानता है जिन का हम बन्दों को इल्म नहीं है।

﴿3﴾ **अल्लाह** तआला ने हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** को तमाम अश्या के नामों, और उन की हिक़मतों का इल्म ब ज़रीअए इल्हाम एक लम्हे में अता फ़रमा दिया। इस से मा'लूम हुवा कि इल्म का हुसूल किताबों के सबक़न सबक़न पढ़ने ही पर मौकूफ़ नहीं है बल्कि **अल्लाह** तआला जिस बन्दे पर अपना फ़ज़ल फ़रमा दे उस को बिग़ैर सबक़ पढ़ने और बिग़ैर किसी किताब के ब ज़रीअए इल्हाम चन्द लम्हों में इल्म हासिल करा देता है और बिग़ैर तहसीले इल्म के उस का सीना इल्मो इरफ़ान का ख़ज़ीना बन जाया करता है। चुनान्चे, बहुत से औलियाए किराम के बारे में मो'तबर रिवायात से षाबित है कि उन्होंने ने कभी किसी मद्रसे में क़दम नहीं रखा। न किसी उस्ताद के सामने जानूँए तलम्मुज़ किया न कभी किसी किताब को हाथ लगाया, मगर शैख़े कामिल की बातिनी तवज्जोह और फ़ज़ले रब्बी की ब दौलत चन्द मिनटों बल्कि चन्द सेंकन्डों में इल्हाम के ज़रीए वोह तमाम उलूम व मअरिफ़ के जामेए कमालात बन गए और बुजुर्गों के इल्मी तबहूहर और आलिमाना महारत का येह आलम हो गया



कि बड़े बड़े दर्सगाही मौलवी जो उलूम व मअरिफ़ के पहाड़ शुमार किये जाते थे इन बुजुर्गों के सामने तिफ़ले मक्तब नज़र आने लगे ।

﴿4﴾ इन वाकिआत से मा'लूम हुवा कि खुदा की नियाबत और ख़िलाफ़त का दारो मदार कषरते इबादत और तस्बीह व तक्दीस नहीं है बल्कि इस का दारो मदार उलूम व मुअरिफ़ की कषरत पर है । चुनान्वे हज़रते मलाइका عَلَيْهِمُ السَّلَام बा वुजूदे कषरते इबादत और तस्बीह व तक्दीस “ख़लीफ़तुल्लाह” के लक़ब से सरफ़राज़ नहीं किये गए और हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام उलूम व मअरिफ़ की कषरत की बिना पर ख़िलाफ़त के शरफ़ से मुमताज़ बना दिये गए जिस पर कुरआने मजीद की आयाते करीमा शाहिदे अद्ल हैं ।

﴿5﴾ इस से येह भी मा'लूम हुवा कि उलूम की कषरत को इबादत की कषरत पर फ़ज़ीलत हासिल है और एक अ़ालिम का दरजा एक अ़ाबिद से बहुत ज़ियादा बुलन्द तर है । चुनान्वे, येही वजह है कि हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के इल्मी फ़ज़लो कमाल और बुलन्द दरजात के इज़हार व ए'लान के लिये और मलाइका से इस का ए'तिराफ़ कराने के लिये **अब्बाह** तअ़ाला ने तमाम फ़िरिश्तों को हुक्म फ़रमाया कि तमाम फ़िरिश्ते हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के रू बरू सजदा करें । चुनान्वे, तमाम मलाइका ने हुक्मे इलाही की ता'मील करते हुवे हज़रते आदम को सजदा कर लिया और वोह इस की बदौलत **تقرب الى الله** और महबूबिय्यते खुदावन्दी की बुलन्द मन्ज़िल पर फ़ाइज़ हो गए और इब्लीस चूँकि अपने तकब्बुर की मन्हूसिय्यत में गिरिफ़्तार हो कर इस सजदे से इन्कार कर बैठा तो वोह मर्दूदे बारगाहे इलाही हो कर ज़िल्लत व गुमराही के ऐसे अमीक़ ग़ार में गिर पड़ा कि क़ियामत तक वोह इस ग़ार से नहीं निकल सकता और हमेशा हमेशा वोह दोनों जहां की ला'नतों का हक़दार बन गया और क़हरे क़्हहार व ग़ज़बे जब्बार में गिरिफ़्तार हो कर दाइमी अज़ाबे नार का सज़ावार बन गया ।

﴿6﴾ इस से येह भी मा'लूम हुवा कि किसी के इल्म को जांचने और इल्म की क़िल्लत व कषरत का अन्दाज़ा लगाने के लिये इम्तिहान का तरीक़ा जो आज कल राइज़ है येह **अब्बाह** तअ़ाला की सुन्नते क़दीमा है कि खुदावन्दे अ़ालम ने फ़िरिश्तों के इल्म को कम और हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के इल्म को ज़ाइद ज़ाहिर करने के लिये फ़िरिश्तों और हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام

का इम्तिहान लिया। तो फिरिश्ते इस इम्तिहान में नाकाम रह गए और हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام कामयाब हो गए।

﴿7﴾ इब्लीस ने हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को खाक का पुतला कह कर इन की तहकीर की और अपने को आतशी मख़्लूक कह कर अपनी बड़ाई और तकब्बुर का इज़हार किया और सजदए आदम عَلَيْهِ السَّلَام से इन्कार किया, दर हकीकत शैतान के इस इन्कार का बाइष उस का तकब्बुर था इस से येह सबक मिलता है कि तकब्बुर वोह बुरी शै है कि बड़े से बड़े बुलन्द मरातिब व दरजात वाले को ज़िल्लत के अज़ाब में गिरिफ़्तार कर देती है बल्कि बा'ज अवकात तकब्बुर कुफ़्र तक पहुंचा देता है और तकब्बुर के साथ साथ जब महबूबाने बारगाहे इलाही की तौहीन और तहकीर का भी ज़ब्बा हो तो फिर तो उस की शनाअत व ख़बाषत और बे पनाह मन्हूसिय्यत का कोई अन्दाज़ा ही नहीं कर सकता और उस के इब्लीसे लईन होने में कोई शको शुबा किया ही नहीं जा सकता। इस लिये उन लोगों को इब्रत आमोज़ सबक लेना चाहिये जो बुजुर्गाने दीन की तौहीन कर के अपनी इबादतों पर इज़हारे तकब्बुर करते रहते हैं कि वोह इस दौर में इब्लीस कहलाने के मुस्तहिक् नहीं तो फिर क्या हैं ? (والله تعالى اعلم)

### ﴿3﴾ उलूमे आदम عَلَيْهِ السَّلَام की एक फ़ेहरिस्त

हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को **अल्लाह** तआला ने कितने और किस क़दर उलूम अता फ़रमाए और किन किन चीज़ों के उलूम व मआरिफ़ को आलिमुल ग़ैब व शहादह ने एक लम्हे के अन्दर उन के सीनए अक्दस में ब ज़रीअए इल्हाम जम्अ फ़रमा दिया, जिन की बदौलत हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام उलूम व मआरिफ़ की इतनी बुलन्द तरीन मन्ज़िल पर फ़ाइज़ हो गए कि फिरिश्तों की मुक़द्दस जमाअत आप के इल्मी वक़ार व इरफ़ानी अज़मत व इक्तिदार के रू बरू सर ब सुजूद हो गई, इन उलूम की एक फ़ेहरिस्त आप कुतबे ज़माना हज़रते अल्लामा शैख़ इस्माईल हक्की عَلَيْهِ الرّحمة की शोहरए आफ़ाक़ तफ़सीर रूहुल बयान शरीफ़ में पढ़िये जिस का तर्जमा हस्बे ज़ैल है, वोह फ़रमाते हैं :

**अल्लाह** तआला ने हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को तमाम चीज़ों का नाम, तमाम ज़बानों में सिखा दिया और उन को तमाम मलाइका के नाम और तमाम अवलादे आदम के नाम, और तमाम हैवानात व नबातात

व जमादात के नाम, और तमाम चीज़ की सन्तों के नाम और तमाम शहरों और तमाम बस्तियों के नाम और तमाम परन्दों और दरख्तों के नाम और जो आइन्दा आलमे वुजूद में आने वाले हैं सब के नाम और कियामत तक पैदा होने वाले तमाम जानदारों के नाम और तमाम खाने पीने की चीज़ों के नाम और जन्नत की तमाम ने'मतों के नाम और तमाम चीज़ों और सामानों के नाम, यहां तक कि पियाला और पियाली के नाम ।

और हदीष शरीफ में है कि **अल्लाह** तआला ने आप को सात लाख ज़बानें सिखाई हैं ।  
(तفسير روح البيان، ج ۱، ص ۱۰۰، پ ۱، البقرة: ۳۱)

इन उलूमे मजकूरए बाला की फ़ेहरिस्त को कुरआने मजीद ने अपने मो'जिज़ाना जवामेउल कलम के अन्दाज़े बयान में सिर्फ़ एक जुम्ले के अन्दर बयान फ़रमा दिया है । चुनान्वे, इरशादे रब्बानी है कि

وَعَلَّمَ آدَمَ الْأَسْمَاءَ كُلَّهَا (پ ۱، البقرة: ۳۱)

और **अल्लाह** तआला ने आदम को तमाम अश्या के नाम सिखाए ।  
**दर्से हिदायत :-** हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** के ख़ज़ाईने इल्म की येह अज़ीम फ़ेहरिस्त देख कर सोचिये कि जब हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** के उलूम व मअरिफ़ की येह मन्ज़िल है तो फिर हुज़ूर सय्यिदे आदम व सरवरे अवलादे आदम, ख़लीफ़तुल्लाहिल आ'ज़म हज़रते मुहम्मदुरसूलुल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के उलूमे आलिया की कषरत व वुस्अत और उन की रिफ़अत व अज़मत का क्या आलम होगा ? मैं कहता हूं कि **वल्लाह** हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** के उलूम को सरकारे दो आलम **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के उलूम से इतनी भी निस्बत नहीं हो सकती जितनी कि एक क़तरे को समन्दर से और एक ज़रे को तमाम रूए ज़मीन से निस्बत है ।  
**अल्लाहु अक्बर !** कहां उलूमे आदम और कहां उलूमे सय्यिदे आलम !

**फ़र्श ता अर्श सब आईना, ज़माइर हाज़िर**

**बस कसम खाइये उम्मी तेरी दानाई की**

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

﴿4﴾ **इब्लीस क्या था और क्या हो गया ?**

इब्लीस जिस को शैतान कहा जाता है । येह फ़िरिश्ता नहीं था बल्कि जिन्न था जो आग से पैदा हुवा था । लेकिन येह फ़िरिश्तों के साथ

साथ मिला जुला रहता था और दरबारे खुदावन्दी में बहुत मुक़र्रब और बड़े बड़े बुलन्द दरजात व मरातिब से सरफ़राज़ था । हज़रते का'ब अहबार **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** का बयान है कि इब्लीस चालीस हज़ार बरस तक जन्नत का ख़ुज़ानची रहा और अस्सी हज़ार बरस तक मलाइका का साथी रहा और बीस हज़ार बरस तक मलाइका को वा'ज़ सुनाता रहा और तीस हज़ार बरस तक मुक़र्रबीन का सरदार रहा और एक हज़ार बरस तक रूहानिय्यीन की सरदारी के मन्सब पर रहा और चौदह हज़ार बरस तक अर्श का तवाफ़ करता रहा और पहले आस्मान में उस का नाम आबिद और दूसरे आस्मान में ज़ाहिद, और तीसरे आस्मान में अरिफ़ और चौथे आस्मान में वली और पांचवें आस्मान में तकी और छठे आस्मान में ख़ाज़िन और सातवें आस्मान में अज़ाज़ील था और लौहे महफूज़ में इस का नाम इब्लीस लिखा हुआ था और येह अपने अन्जाम से ग़ाफ़िल और ख़ातिमे से बे ख़बर था ।

(تفسير صاوى، ج ۱، ص ۵۱، پ ۱، البقرة: ۳۴، تفسير جمل، ج ۱، ص ۶۰)

लेकिन जब **اَللّٰهُ** तआला ने हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** को सजदा करने का हुक्म दिया तो इब्लीस ने इन्कार कर दिया और हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** की तहक़ीर और अपनी बड़ाई का इज़हार कर के तकब्बुर किया इसी जुर्म की सज़ा में खुदावन्दे आलम ने उस को मर्दूदे बारगाह कर के दोनों जहान में मलज़ुन फ़रमा दिया और उस की पैरवी करने वालों को जहन्नम में अज़ाबे नार का सज़ावार बना दिया । चुनान्चे, कुरआने मजीद में इरशादे रब्बानी हुवा कि

قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ۚ قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِنْهُ ۚ خَلَقْتَنِي مِنْ نَّارٍ وَّاَخْلَقْتَهُ مِنْ طِينٍ ۝۱۲ قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُونُ لَكَ اَنْ تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ ۝۱۳ قَالَ اُنْظِرْنِيْ اِلٰى يَوْمٍ يُبْعَثُوْنَ ۝۱۴ قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ۝۱۵ قَالَ فَبِمَا اَغْوَيْتَنِيْ لَاقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝۱۶ ثُمَّ لَا تِيْلَهُمْ مِّنْ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَّمِنْ خَلْفِهِمْ وَّعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَّعَنْ شَمَائِلِهِمْ ۝۱۷ وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ۝۱۸ قَالَ اَخْرِجْهُمْ مِنْهَا مَذْءُ وَّمَا مَدْحُوْرًا ۝۱۹ لٰكِنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَآ مَلَكًا جَهَنَّمَ مِنْكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝۲۰

(پ ۸، الاعراف: ۱۲- ۱۸)

**तर्जमए कञ्जुल ईमान :-** फ़रमाया : किस चीज़ ने तुझे रोका कि तू ने सजदा न किया जब मैं ने तुझे हुक्म दिया था बोला : मैं इस से बेहतर हूँ तू ने मुझे आग से बनाया और इसे मिट्टी से बनाया । फ़रमाया : तू यहां से उतर जा तुझे नहीं पहुंचता कि यहां रह कर गुरूर करे निकल तू है ज़िल्लत वालों में बोला मुझे फ़ुरसत दे उस दिन तक कि लोग उठाएं जाएं, फ़रमाया : तुझे मोहलत है, बोला : तो क़सम इस की, कि तू ने मुझे गुमराह किया मैं ज़रूर तेरे सीधे रास्ते पर इन की ताक में बैठूंगा फिर ज़रूर मैं इन के पास आऊंगा इन के आगे और पीछे और दाहिने और बाएं से और तू उन में अक़षर को शुक्र गुज़ार न पाएगा । फ़रमाया : यहां से निकल जा रह किया गया रान्दा (धुत्कारा) हुवा ज़रूर जो इउन में से तेरे कहे पर चला मैं तुम सब से जहन्नम भर दूंगा ।

**दर्से हिदायत :-** कुरआने मजीद के इस अजीब वाक़िए में इब्रतों और नसीहतों की बड़ी बड़ी दरख़शिन्दा और ताबिन्दा तजल्लियां है इसी लिये इस वाक़िए को खुदावन्दे कुद्दूस ने मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ में और मुतअद्दत तर्जें बयान के साथ कुरआने मजीद के सात मक़ामात में बयान फ़रमाया है या'नी सूरए बक़रह, सूरए आ'राफ़, सूरए हज़र, सूरए बनी इस्राईल, सूरए कहफ़, सूरए ताहा, सूरए २ में इस दिल हिला देने वाले वाक़िए का तज़क़िरा मज़कूर है जिस से मुन्दरिजए ज़ैल हक़ाइक़ का दर्से हिदायत मिलता है ।

﴿1﴾ इस से एक बहुत बड़ा दर्से हिदायत तो येह मिलता है कि कभी हरगिज़ हरगिज़ अपनी इबादतों और नेकियों पर घमन्ड और गुरूर नहीं करना चाहिये और किसी गुनहगार को अपनी मग़फ़िरत से कभी मायूस नहीं होना चाहिये क्यूंकि अन्जाम क्या होगा और ख़ातिमा कैसा होगा आम बन्दों को इस की कोई ख़बर नहीं है और नजात व फ़लाह का दारो मदार दर हकीक़त ख़ातिमा बिल ख़ैर पर ही है । बड़े से बड़ा आबिद अगर उस का ख़ातिमा बिल ख़ैर न हुवा तो वोह जहन्नमी होगा और बड़े से बड़ा गुनहगार अगर उस का ख़ातिमा बिल ख़ैर हो गया तो वोह जन्नती होगा देख लो इब्लीस कितना बड़ा इबादत गुज़ार और किस क़दर मुक़र्रबे बारगाह था और कैसे कैसे मरातिब व दरजात के शरफ़ से सरफ़राज़ था । मगर अन्जाम

क्या हुआ ? कि उस की सारी इबादतें ग़ारत व अकारत हो गईं और वोह दोनों ज़हान में मलज़न हो कर अज़ाबे जहन्नम का हक़दार बन गया । क्योंकि उस को अपनी इबादतों और बुलन्दिये दरजात पर गुरूर और तकब्बुर हो गया था मगर वोह अपने अन्जाम और ख़ातिमे से बिल्कुल बे ख़बर था ।

हदीष शरीफ़ में है कि एक बन्दा अहले जहन्नम के आ'माल करता रहता है हालांकि वोह जन्नती होता है और एक बन्दा अहले जन्नत के अमल करता रहता है हालांकि वोह जहन्नमी होता है ।

يَا نِي اَمَلُكَ يَا نِي اَمَلُكَ يَا نِي اَمَلُكَ يَا نِي اَمَلُكَ

(مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الایمان، باب الایمان بالقدر، الفصل الاول، ص ۲۰)

खुदान्वदे करीम हर मुसलमान को ख़ातिमा बिल ख़ैर की सआदत नसीब फ़रमाए और बुरे अन्जाम और बुरे ख़ातिमे से महफूज़ रखे ।  
आमीन । (والله تعالیٰ اعلم)

﴿2﴾ इस से येह भी मा'लूम हुआ कि अल़िम हो या जाहिल मुत्तकी हो या गुनहगार हर आदमी को ज़िन्दगी भर शैतान के वस्वसों से होशियार और उस के फ़रैबों से बचते रहना चाहिये । क्योंकि शैतान ने क़सम खा कर खुदा के हुज़ूर में ए'लान कर दिया है कि मैं आगे पीछे और दाएं बाएं से वस्वसे डाल कर तेरे बन्दों को सिराते मुस्तक़ीम से बहकाता रहूंगा और बहुत से बन्दों को खुदा का शुक्र गुज़ार होने से रोक दूंगा ।

﴿3﴾ शैतान ने आगे पीछे और दाएं बाएं चार जानिबों से इन्सानों पर हम्ला आवर होने और वस्वसे डालने का ए'लान किया है इस से मा'लूम हुआ कि ऊपर और नीचे इन दोनों जानिबों से शैतान इन्सानों पर कभी हम्ला आवर नहीं होगा न ऊपर और नीचे की जानिब से कोई वस्वसा डाल सकेगा । लिहाज़ा अगर कोई इन्सान अपने ऊपर या नीचे की तरफ़ से कोई रोशनी या कोई भी हैरत व तअज्जुब ख़ैज़ चीज़ देखे तो उसे समझ लेना चाहिये कि येह शैतानी करतब या इब्लीस का वस्वसा नहीं है बल्कि उस को ख़ैर समझ कर उस की जानिब मुतवज्जेह हो और खुदावन्दे कुद्ूस की तरफ़ से ख़ैर और भलाई की उम्मीद रखे । (والله تعالیٰ اعلم)

### «5» बनी इस्राईल पर ताऊन का अजाब

जब “मैदाने तीह” में बनी इस्राईल ने येह ख्वाहिश ज़ाहिर की, कि हम ज़मीन से उगने वाले ग़ल्ले और तरकारियां खाएंगे तो उन लोगों को हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने समझाया कि तुम लोग “मन्न व सलवा” के नफ़ीस खाने को छोड़ कर गेहूं, दाल और तरकारियों जैसी ख़सीस और घटियां गिज़ाएं क्यूं त़लब कर रहे हो ? मगर जब बनी इस्राईल अपनी ज़िद पर अड़े रहे तो **अल्लाह** तआला ने हुक्म दिया कि तुम लोग मैदाने तीह से निकल कर शहरे बैतुल मुक़द्दस में दाख़िल हो जाओ और वहां बे रोक टोक अपनी पसन्द की और मन भाती गिज़ाएं खाओ मगर येह ज़रूरी है कि तुम लोग बैतुल मुक़द्दस के दरवाज़े में कमाले अदब व एहतिराम के साथ झुक कर दाख़िल होना और दाख़िल होते वक़्त येह दुआ मांगते रहना कि या **अल्लाह !** तू हमारे गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा दे तो हम तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देंगे ।

मगर बनी इस्राईल जो हमेशा से सरकश और शरारतों के आदी और खुदा की नाफ़रमानियों के ख़ूगर थे, बैतुल मुक़द्दस के करीब पहुंच कर एक दम इन लोगों की रगे शरारत भड़क उठी और येह नाफ़रमान लोग बजाए झुक के दाख़िल होने के अपनी सुरीनों पर घसिटते हुवे दरवाज़े में दाख़िल हुवे और **حِطَّة** (मुआफी की दुआ) के बदले **حبة في شعرة** (एक दाना है एक बाल में) कहते हुवे और मज़ाक़ व तमसख़ुर करते हुवे बैतुल मुक़द्दस के दरवाज़े में घुसते चले गए । फ़रमाने रब्बानी की इस नाफ़रमानी और हुक्मे इलाही के साथ तमसख़ुर की वजह से इन लोगों पर क़हरे खुदावन्दी ब सूरते अज़ाब नाज़िल हो गया कि अचानक इन लोगों में ताऊन की बीमारी वबाई शक़ल में फैल गई और घन्टे भर में सत्तर हज़ार बनी इस्राईल दर्दों कर्ब से मछली की तरह तड़प तड़प कर मर गए ।

(صاوی، ج ۳، ص ۳۱ و جلالین)



**ताऊन :-** एक मोहलिक वबाई बीमारी है जिस को डॉक्टर “प्लेग” कहते हैं इस बीमारी में गर्दन और बगलों और कन्जे रान में आम की घुटली के बराबर गलटियां निकल आती हैं। जिन में बेपनाह दर्द और नाकाबिले बरदाश्त सोज़िश होती है और शदीद बुखार चढ़ जाता है और आंखें सुख् हो जाती हैं और दर्दनाक जलन से शो'ले की तरह जलने लगती हैं और मरीज शिद्दे दर्द और शदीद बे चैनी व बे करारी में तड़प तड़प कर बहुत जल्द मर जाता है और जिस बस्ती में ये वबा फैल जाती है उस बस्ती की अकषर आबादी मौत के घाट उतर जाती है और हर तरफ़ वीरानी और खौफ़ व हरास का दौरा दौरा फैल जाता है।

**अल्लाह** तआला ने बनी इस्राईल के इस वाक़िए का ज़िक्र फ़रमाते हुवे कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया कि

وَإِذْ قُلْنَا ادْخُلُوا هَذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُنُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَاذْخُلُوا  
الْبَابَ سَجَدًا وَقُولُوا حِطَّةٌ نَغْفِرْ لَكُمْ خَطِيئَتَكُمْ وَسَنُرِيدُ الْمُحْسِنِينَ ﴿٥٩﴾  
فَبَدَّلَ الَّذِينَ ظَلَمُوا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِي قِيلَ لَهُمْ فَأَنزَلْنَا عَلَى الَّذِينَ  
ظَلَمُوا أَرْجُزًا مِّنَ السَّمَاءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ﴿٦٠﴾ (پ ۱، البقرة ۵۸-۵۹)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** और जब हम ने फ़रमाया उस बस्ती में जाओ फिर उस में जहां चाहो बे रोक टोक खाओ और दरवाजे में सजदा करते दाख़िल हो और कहो हमारे गुनाह मुआफ़ हों, हम तुम्हारी ख़ताएं बख़्श देंगे और करीब है कि नेकी वालों को और ज़ियादा दे तो ज़ालिमों ने और बात बदल दी जो फ़रमाई गई थी उस के सिवा तो हम ने आस्मान से उन पर अज़ाब उतारा बदला उन की बे हुक्मी का।

**दर्से हिदायत :-** इस वाक़िए से मा'लूम हुवा कि खुदावन्दे कुहूस की नाफ़रमानी और अहकामे रब्बानी के साथ तमसख़ुर व मज़ाक़ करने का कितना भयानक और किस क़दर हौलनाक अन्जाम होता है कि आख़िरत का अज़ाब तो अपनी जगह बर करार ही है दुन्या में क़हरे इलाही ब सूरते अज़ाब नाज़िल हो जाता है जिस से लोग हलाक हो कर फ़ना के घाट उतर जाते हैं और बस्तियां वीरान हो जाती हैं। معاذ الله منه

**फ़ाइदा :-** “ताऊन” बनी इस्राईल के हक़ में अज़ाब था मगर इस ख़ैरुल उमम या’नी ख़ातिमुल अम्बिया صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की उम्मत के हक़ में येह बीमारी रहमत है क्यूंकि हदीष शरीफ़ में आया है कि ताऊन की बीमारी में मरने वाला शहीद होता है। (तफ़सीर सवाय, ज १, प २४, अ१, البقرة: ५९)

**मस्अला :-** येह है कि जिस बस्ती में ताऊन की वबा फैली हो वहां जाना नहीं चाहिये और अगर अपनी बस्ती में वबा आ जाए तो बस्ती छोड़ कर दूसरी जगह भागना नहीं चाहिये बल्कि ताऊन की वबा में अपनी बस्ती ही के अन्दर खुदा पर तवक्कुल कर के सब्र के साथ रहना चाहिये अगर इस बीमारी में मर गया तो शहीद होगा और ताऊन के डर से बस्ती छोड़ कर भागने वाले पर इतना बड़ा गुनाह होता है जितना कि जिहाद के मैदान छोड़ कर भागने वालों पर गुनाह होता है इस लिये हरगिज़ हरगिज़ भागना नहीं चाहिये बल्कि इस बीमारी में सब्र के साथ अपनी ही बस्ती में मुकीम रहना चाहिये कि इस पर खुदावन्दे तआला ने अज़्रो षवाब का वा’दा फ़रमाया है। (والله تعالى اعلم)

### ﴿६﴾ सफ़ व मरवा

येह छोटी छोटी दो पहाड़ियां हैं जो हरमे का’बए मुकर्रमा के बिल्कुल क़रीब ही हैं और आज कल तो बुलन्द इमारतों और ऊंची सड़कों और दोनों पहाड़ियों के दरमियान छत बन जाने और ता’मीरात के रद्दो बदल से दोनों पहाड़ियां बराए नाम ही कुछ बुलन्दी रखती हैं। इन्हीं दोनों पहाड़ियों पर चढ़ कर और चक्कर लगा कर हज़रते बीबी हाजरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا ने उस वक़्त पानी की जुस्तजू और तलाश की थी जब कि हज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام शीर ख़्वार बच्चे थे और प्यास की शिद्दत से बे क़रार हो गए थे इसी लिये ज़मानए क़दीम से येह दोनों पहाड़ियां बहुत मुक़द्दस मानी जाती हैं और हुज्जाजे किराम इन दोनों पहाड़ियों पर चढ़ कर बड़े एहतिराम और ज़ब्बए अक़ीदत के साथ तवाफ़ करते और दुआएं मांगा करते थे।

मगर ज़मानए जाहिलिय्यत में एक मर्द जिस का नाम “असाफ़” था और एक औरत जिस का नाम “नाइला” था इन दोनों ख़बीषों ने

खानए का'बा के अन्दर ज़िनाकारी कर ली तो इन दोनों पर येह क़हरे इलाही नाज़िल हो गया कि येह दोनों मस्ख़ हो कर पथ्थर की मूरत और बुत बन गए फिर ज़मानए जाहिलिय्यत के बुत परस्तों ने इन दोनों मुजस्समों को का'बा से उठा कर सफ़ा व मरवा की दोनों पहाड़ियों पर रख दिया और इन दोनों बुतों की पूजा करने लगे ।

फिर जब अरब में इस्लाम फैल गया तो मुसलमान “असाफ़ व नाइला” दोनों बुतों की वजह से इन दोनों पहाड़ियों पर जाने को गुनाह समझने लगे उस वक़्त **अल्लाह** तआला ने कुरआने मजीद में येह हुक्म नाज़िल फ़रमाया कि सफ़ा व मरवा के तवाफ़ और इन दोनों की ज़ियारत में कोई ह़रज व गुनाह नहीं बल्कि ह़ज व उ़मरह दोनों इबादतों में सफ़ा व मरवा का तवाफ़ ज़रूरी है । (तفسير صاوى، ج ۱، ص ۱۳۲، ۲، البقرة: ۱۵۸)

फ़ते मक्का के दिन हुज़ूर सय्यिदे अकरम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** ने इन दोनों पहाड़ियों पर से “असाफ़ व नाइला” दोनों बुतों को तोड़ फोड़ कर नेस्तो नाबूद कर दिया और इन दोनों पहाड़ियों को हस्वे दस्तूरे साबिक़ मुक़द्दस व मुअज़्ज़म क़रार दे कर इन दोनों का तवाफ़ ह़ज व उ़मरह में ज़रूरी क़रार दिया गया । चुनान्वे, कुरआने मजीद में इरशाद हुवा कि

إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللَّهِ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ اعْتَبَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَطَّوَّفَ بِهِمَا وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَإِنَّ اللَّهَ شَاكِرٌ عَلِيمٌ ﴿۵۸﴾ (البقرة: ۱۵۸)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- बेशक सफ़ा और मरवा **अल्लाह** के निशानों से हैं तो जो इस घर का ह़ज या उ़मरह करे उस पर कुछ गुनाह नहीं कि इन दोनों के फेरे करे और जो कोई भली बात अपनी तरफ़ से करे तो **अल्लाह** नेकी का सिला देने वाला ख़बरदार है ।

दर्से हिदायत :- सफ़ा और मरवा दोनों पहाड़ियों पर हज़रते हाजरा **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا** ने दौड़ कर पानी तलाश किया तो एक नबी या'नी हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ السَّلَام** की बीवी और एक नबी या'नी हज़रते इस्माईल **عَلَيْهِ السَّلَام**

की मां हज़रते बीबी हाजरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا के क़दम इन पहाड़ियों पर पड़ जाने से इन दोनों पहाड़ियों को येह इज़्ज़त व अज़मत मिल गई कि हज़रते बीबी हाजरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की एक मुक़द्दस यादगार बन जाने का इन दोनों पहाड़ियों को ए'ज़ाज़ व शरफ़ मिल गया और येह दोनों पहाड़ियां हज़ व उमरह करने वालों के लिये त़वाफ़ व सअय का एक मक़बूल व मोहतरम मक़ाम बन गई। इस से येह हिदायत का सबक़ मिलता है कि **अल्लाह** वालों और **अल्लाह** वालियों से अगर किसी जगह को कोई ख़ास तअल्लुक़ हासिल हो जाए तो वोह जगह बहुत मुअज़्ज़ज़ व मुअज़्ज़म बन जाती है और हर मुसलमान के लिये वोह जगह काबिले ता'ज़ीम व लाइक़े एह़तिराम हो जाती है वरना मक्कए मुअज़्ज़मा में बहुत सी पहाड़ियां और छोटे बड़े बहुत से पहाड़ हैं, मगर सफ़ा व मरवा की छोटी छोटी पहाड़ियों को जो तक़द्दुस व अज़मत हासिल है वोह किसी दूसरे पहाड़ को हासिल नहीं। इस की वजह इस के सिवा और क्या हो सकती है कि येह दोनों पहाड़ियां एक **अल्लाह** वाली की एक मुबारक जिद्दो जहद की यादगार हैं।

इसी पर गुम्बदे ख़ज़रा और औलियाउल्लाह के रोज़ों और इन हज़रात की इबादत गाहों और दूसरे मुक़द्दस मक़ामात को क़ियास कर लेना चाहिये कि येह सब ख़ासाने खुदा की निस्बत व तअल्लुक़ की वजह से मुअज़्ज़ज़ व मुअज़्ज़म और काबिले तक़द्दुस व लाइक़े ता'ज़ीम व एह़तिराम हैं और इन सब जगहों की ता'ज़ीम व तौकीर खुदावन्दे कुद्दूस की खुश्नूदी का बाइष और इन सब मक़ामात की बे अदबी व तह़कीर क़हरे क़हहार व ग़ज़बे जब्बार का सबब है। लिहाज़ा उन लोगों को जो गुम्बदे ख़ज़रा और मक़ाबिरे औलियाउल्लाह की बे अदबी करते और इन को मुन्हदिम और मिस्मार करने का प्लान बनाते रहते हैं, उन्हें इन हक़ाइक़ के सितारों से हिदायत की रोशनी हासिल करनी चाहिये और अपनी नुहूसतों और बद बख़्तियों से ताइब हो कर सिराते मुस्तक़ीम की राह पर षाबित क़दम हो जाना चाहिये। खुदावन्दे कुद्दूस अपने हबीबे करीम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के तुफ़ैल में सब को हिदायत का नूर अता फ़रमाए और सिराते मुस्तक़ीम की शाहराह पर चलाए। (आमीन)

### ﴿7﴾ सत्तर आदमी मर कर ज़िन्दा हो गए

हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام जब कोहे तूर पर चालीस दिन के लिये तशरीफ़ ले गए तो “सामरी” मुनाफ़िक़ ने चांदी सोने के ज़ेवरात पिघला कर एक बछड़े की मूरत बना कर हज़रते ज़िब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام के घोड़े के पाउं तले की मिट्टी उस मूरत के मुंह में डाल दी तो वोह ज़िन्दा हो कर बोलने लगा । फिर सामरी ने मजमए आ़म में येह तक़रीर शुरू कर दी कि ऐ बनी इस्राईल ! हज़रते मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) खुदा से बातें करने के लिये कोहे तूर पर तशरीफ़ ले गए हैं लेकिन खुदा तो खुद हम लोगों के पास आ गया है और बछड़े की तरफ़ इशारा कर के बोला कि येही खुदा है “सामरी” ने ऐसी गुमराह कुन तक़रीर की, कि बनी इस्राईल को बछड़े के खुदा होने का यक़ीन आ गया और वोह बछड़े को पूजने लगे । जब हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام कोहे तूर से वापस तशरीफ़ लाए तो बनी इस्राईल को बछड़ा पूजते देख कर बेहद नाराज़ हुवे फिर ग़ज़ब व जलाल में आ कर उस बछड़े को तोड़ फोड़ कर बरबाद कर दिया । फिर **अल्लाह** तआला का येह हुक्म नाज़िल हुवा कि जिन लोगों ने बछड़े की परस्तिश नहीं की है वोह लोग बछड़ा पूजने वालों को क़त्ल करें । चुनान्वे, सत्तर हज़ार बछड़े की पूजा करने वाले क़त्ल हो गए । इस के बा’द येह हुक्म नाज़िल हुवा कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام सत्तर आदमियों को मुन्तख़ब फ़रमा कर के कोहे तूर पर ले जाएं और येह सब लोग बछड़ा पूजने वालों की तरफ़ से मा’ज़िरत त़लब करते हुवे येह दुआ मांगे कि बछड़ा पूजने वालों के गुनाह मुआफ़ हो जाएं, चुनान्वे, हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने चुन चुन कर अच्छे अच्छे सत्तर आदमियों को साथ लिया और कोहे तूर पर तशरीफ़ ले गए । जब लोग कोहे तूर पर त़लबे मा’ज़िरत व इस्तिग़फ़ार करने लगे तो **अल्लाह** तआला की तरफ़ से आवाज़ आई कि

“ऐ बनी इस्राईल ! मैं ही हूं, मेरे सिवा तुम्हारा कोई मा’बूद नहीं मैं ने ही तुम लोगों को फ़िरऔन के जुल्म से नजात दे कर तुम लोगों को बचाया है लिहाज़ा तुम लोग फ़क़त मेरी ही इबादत करो और मेरे सिवा किसी को मत पूजो ।

**अल्लाह** तआला का येह कलाम सुन कर येह सत्तर आदमी एक ज़बान हो कर कहने लगे कि ऐ मूसा ! हम हरगिज़ हरगिज़ आप की बात नहीं मानेंगे जब तक हम **अल्लाह** तआला को अपने सामने न देख लें। येह सत्तर आदमी अपनी ज़िद पर बिल्कुल अड़ गए कि हम को आप खुदा का दीदार कराए वरना हम हरगिज़ नहीं मानेंगे कि खुदावन्दे आलम ने येह फ़रमाया है। हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने इन लोगों को बहुत समझाया, मगर येह शरीर व सरकश लोग अपने मुतालबे पर अड़े रह गए यहां तक कि **अल्लाह** तआला ने अपने ग़ज़ब व जलाल का इज़हार इस तरह फ़रमाया कि एक फ़िरिश्ता आया और उस ने एक ऐसी ख़ौफ़नाक चीख़ मारी कि ख़ौफ़ व हरास से लोगों के दिल फट गए और येह सत्तर आदमी मर गए। फिर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने खुदावन्दे आलम से कुछ गुफ़्तगू की और इन लोगों के लिये ज़िन्दा हो जाने की दुआ मांगी तो येह लोग ज़िन्दा हो गए।

(تفسير صاوى، ج ۱، ص ۲۴، ۲۵، پ ۱، البقرة: ۵۵، ۵۶)

وَإِذْ قُلْتُمْ يٰمُوسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرٰى اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذْتُمْ  
الصُّعْقَةَ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُونَ ۝ ثُمَّ بَعَثْنٰكُم مِّنْۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ  
تَشْكُرُونَ ۝ (پ ۱، البقرة: ۵۵، ۵۶)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और जब तुम ने कहा ऐ मूसा हम हरगिज़ तुम्हारा यक़ीन न लाएंगे जब तक अलानिय्या खुदा को न देख लें तो तुम्हें कड़क ने आ लिया और तुम देख रहे थे फिर मरे पीछे हम ने तुम्हें ज़िन्दा किया कि कहीं तुम एहसान मानो।

**दर्से हिदायत :-** **﴿1﴾** इस वाक़िए से येह सबक़ मिलता है कि अपने पैग़म्बर की बात न मान कर अपनी ज़िद पर अड़े रहना बड़ी ही ख़तरनाक बात है फिर इन सत्तर आदमियों का मर कर ज़िन्दा हो जाना येह खुदावन्दे कुहूस की कुदरते कामिला का इज़हार व ए'लान है, ताकि लोग ईमान रखें कि **अल्लाह** तआला क़ियामत के दिन सब मरे हुवे इन्सानों को दोबारा ज़िन्दा फ़रमाएगा।

**﴿2﴾** इस वाक़िए से येह भी मा'लूम हुवा कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की शरीअत का क़ानून येह था कि गुनाहे शिर्क करने वालों को क़त्ल कर दिया

जाए, फिर कौम के नेक लोग उन के लिये तलबे मा'जिरत और दुआए मगफिरत करें, तब उन शिर्क करने वालों की तौबा क़बूल होती थी। मगर हमारे हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया, खातिमुन्नबिय्यीन **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की शरीअत चूँकि आसान शरीअत है इस लिये इस के क़ानून में तौबा क़बूल होने के लिये येही काफ़ी है कि गुनाह करने वाले ने अगर्चे कुफ़्र व शिर्क का गुनाह कर लिया हो सच्चे दिल से अपने गुनाह पर **اَللّٰهُ** तआला के हुज़ूर शर्मिन्दा हो कर मुआफ़ी तलब करे और अपने दिल में येह अहद व अज़्म करे कि फिर वोह येह गुनाह नहीं करेगा तो **اَللّٰهُ** तआला उस की तौबा क़बूल फ़रमा लेगा और उस के गुनाह को मुआफ़ फ़रमा देगा। तौबा क़बूल होने के लिये गुनाह करने वालों को क़त्ल नहीं किया जाएगा।

**صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** येह हुज़ूर रहूमतुल्लिल आलामीन **سُبْحَنَ اللهُ** की रहमत के तुफ़ैल है कि वोह अपनी उम्मत पर रऊफ़ुरहीम और बेहद मेहरबान हैं तो इन के तुफ़ैल **اَللّٰهُ** तआला भी अपने हबीब की उम्मत पर बहुत ज़ियादा रहीमो करीम बल्कि अरहमुराहीमीन है।

**اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ**

### ﴿8﴾ एक तारीख़ी मुनाज़रा

येह नमरूद और हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह **عَلَيْهِ السَّلَام** का मुनाज़रा है जिस की रूदाद कुरआने मजीद में मज़कूर है।

**नमरूद कौन था ? :-** “नमरूद” बड़े तनतने का बादशाह था सब से पहले इस ने अपने सर पर ताजे शाही रखा और खुदाई का दा'वा किया। येह वलदुज़िना और हरामी था और इस की मां ने ज़िना करा लिया था जिस से नमरूद पैदा हुवा था कि सल्तनत का कोई वारिष पैदा न होगा तो बादशाहत ख़त्म हो जाएगी। लेकिन येह हरामी लड़का बड़ा हो कर बहुत इक्बाल मन्द हुवा और बहुत बड़ा बादशाह बन गया। मशहूर है कि पूरी दुन्या की बादशाही सिर्फ़ चार ही शख़्सों को मिली जिन में से दो मोमिन थे और दो काफ़िर। हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** और हज़रते जुल क़रनैन तो साहिबाने ईमान थे और नमरूद व बख़्त नसर येह दोनों काफ़िर थे।



नमरूद ने अपनी सल्तनत भर में येह क़ानून नाफ़िज़ कर दिया था कि इस ने ख़ूराक की तमाम चीज़ों को अपनी तहवील में ले लिया था। येह सिर्फ़ उन ही लोगों को ख़ूराक का सामान दिया करता था जो लोग इस की खुदाई को तस्लीम करते थे। चुनान्वे, एक मरतबा हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام उस के दरबार में ग़ल्ला लेने के लिये तशरीफ़ ले गए तो उस ख़बीष ने कहा कि पहले तुम मुझ को खुदा तस्लीम करो ज़भी मैं तुम को ग़ल्ला दूंगा। हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने भरे दरबार में अलल ए'लान फ़रमा दिया कि तू झूटा है और मैं सिर्फ़ एक खुदा का परस्तार हूं जो وحده لا شريك له है येह सुन कर नमरूद आपे से बाहर हो गया और आप को दरबार से निकाल दिया और एक दाना भी नहीं दिया। आप और आप के चन्द मुत्तबिर्इन जो मोमिन थे भूक की शिद्दत से परेशान हो कर जां बलब हो गए। उस वक़्त आप एक थेला ले कर एक टीले के पास तशरीफ़ ले गए और थेले में रैत भर कर लाए और खुदावन्दे कुहूस से दुआ मांगी तो वोह रैत आटा बन गई और आप ने उस को अपने मुत्तबिर्इन को खिलाया और खुद भी खाया। फिर नमरूद की दुश्मनी इस हद तक बढ़ गई कि उस ने आप को आग में डलवा दिया। मगर वोह आग आप पर गुलज़ार बन गई और आप सलामती के साथ उस आग से बाहर निकल आए और अलल ए'लान नमरूद को झूटा कह कर खुदाए وحده لا شريك له की तौहीद का चरचा करने लगे। नमरूद ने आप के कलिमए हक़ से तंग आ कर एक दिन आप को अपने दरबार में बुलाया और हस्बे ज़ैल मुकालमा ब सूरते मुनाज़रा शुरूअ कर दिया।

(تفسير صاوی، ج ۱، ص ۲۱۹، ۲۲۰، پ ۳، البقرة، ۲۵۸)

**नमरूद :-** ऐ इब्राहीम ! बताओ तुम्हारा रब कौन है जिस की इबादत की तुम लोगों को दा'वत दे रहे हो ?

**हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام :-** ऐ नमरूद ! मेरा रब वोही है जो लोगों को जिलाता और मारता है।

**नमरूद :-** येह तो मैं भी कर सकता हूं चुनान्वे, उस वक़्त उस ने दो कैदियों को जेल खाने से दरबार में बुलवाया एक को मौत की सज़ा हो

चुकी थी और दूसरा रिहा हो चुका था। नमरूद ने फांसी पाने वाले को तो छोड़ दिया और बे कुसूर को फांसी दे दी और बोला कि देख लो कि जो मुर्दा था मैं ने उस को जिला दिया और जो ज़िन्दा था मैं ने उस को मुर्दा कर दिया।

हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने समझ लिया कि नमरूद बिल्कुल ही अहमक और निहायत ही घामड़ आदमी है जो “जिलाने और मारने” का येह मतलब समझ बैठा, इस लिये आप ने उस के सामने एक दूसरी बहुत ही वाज़ेह और रोशन दलील पेश फ़रमाई चुनान्वे, आप ने इरशाद फ़रमाया :

**हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام :-** ऐ नमरूद ! मेरा रब वोही है जो सूरज को मशरिक से निकालता है अगर तू खुदा है तो एक दिन सूरज को मग़रिब से निकाल दे।

हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की येह दलील सुन कर नमरूद मबहूत व हैरान रह गया और कुछ भी न बोल सका। इस तरह येह मुनाज़रा ख़त्म हो गया और हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام इस मुनाज़रे में फ़त्हे मन्द हो कर दरबार से बाहर तशरीफ़ लाए और तौहीदे इलाही का वा'ज़ अलल ए'लान फ़रमाना शुरू कर दिया। कुरआने मजीद ने इस मुनाज़रे की रूदाद इन लफ़्ज़ों में बयान फ़रमाई कि

اَلَمْ تَرَ اِلَ الَّذِي حَاجَّ اِبْرٰهٖمَ فِى رَبِّهٖۤ اَنْ اَشۡهَدُ اللّٰهُ اِلٰهًاۚ اِنۡكَرٰٓتَ ۚ  
اِبْرٰهٖمُ رَبِّی الَّذِیۡ یُحِیۡ وَیُمِیۡتُ ۚ قَالَ اَنَا۠ حٰجٍ وَّ اُمِیۡتٌ ۚ قَالَ اِبْرٰهٖمُ  
فَاِنَّ اللّٰهَ یَاۡتِیۡ بِالشَّمۡسِ مِنَ الْمَشْرِقِ ۚ فَاَتٰ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ ۚ فَبُهِتَ  
الَّذِیۡ كَفَرَ ۗ وَاللّٰهُ لَا یَهْدِی الْقَوۡمَ الظّٰلِمِیۡنَ ﴿۲۵۸﴾ (البقرة ۲५८)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** ऐ महबूब ! क्या तुम ने न देखा था उसे जो इब्राहीम से झगड़ा उस के रब के बारे में उस पर कि **अल्लाह** ने उसे बादशाही दी जब कि इब्राहीम ने कहा कि मेरा रब वोह है कि जिलाता और मारता है बोला मैं जिलाता और मारता हूं इब्राहीम ने फ़रमाया तो **अल्लाह** सूरज को लाता है पूरब (मशरिक) से तू उस को पश्चिम (मग़रिब) से ले आ तो होश उड़ गए काफ़िर के और **अल्लाह** राह नहीं दिखाता ज़ालिमों को।

**दर्से हिदायत :-** इस वाकिए से चन्द अस्बाक की रोशनी मिलती है कि ﴿1﴾ हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام खुदा तआला की तौहीद के ए'लान पर पहाड़ की तरह काइम रहे न नमरूद की बेशुमार फ़ौजों से खाइफ़ हुवे, न उस के जुल्मो ज़ब्र से मरऊब हुवे बल्कि जब उस ज़ालिम ने आप को आग के शो'लों में डलवा दिया उस वक़्त भी आप के पाए अज़मो इस्तिक़लाल में बाल बराबर लगज़िश नहीं हुई और आप बराबर ना'रए तौहीद बुलन्द करते रहे फिर उस बे रहम ने आप पर दाना पानी बन्द कर दिया। इस पर भी आप के अज़मे इस्तिक़ामत में ज़रा बराबर फ़र्क़ नहीं आया। फिर उस ने आप को मुनाज़रे का चलेन्ज दिया और दरबारे शाही में त़लब किया ताकि शाही रो'ब व दाब दिखा कर आप عَلَيْهِ السَّلَام को मरऊब कर दे लेकिन आप ने बिल्कुल बे ख़ौफ़ हो कर मुनाज़रे का चलेन्ज क़बूल फ़रमा लिया और दरबारे शाही में पहुंच कर ऐसी मज़बूत और दन्दान शिकन दलील पेश फ़रमाई कि नमरूद के होश उड़ गए और वोह हक्का बक्का हो कर ला जवाब और ख़ामोश हो गया और भरे दरबार में इस कलिमए हक़ की तजल्ली हो गई कि

جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَّقَ الْبَاطِلُ إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوتًا ﴿٥٨﴾ (پہا ۱، بنی اسرائیل: ۸)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** हक़ आया और बातिल मिट गया बेशक बातिल को मिटना ही था।

बिल आख़िर हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की सदाक़त व हक्कानिय्यत का परचम सर बुलन्द हो गया और नमरूद एक मच्छर जैसी हकीर मख़्लूक से हलाक कर दिया गया। हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام के उस्वए हसना से उ-लमाए हक़ को सबक़ लेना चाहिये कि बातिल परस्तों के मुक़ाबले में हर किस्म के ख़ौफ़ व हरास और तकालीफ़ से बे नियाज़ हो कर आख़िरी दम तक डटे रहना चाहिये और येह ईमान व यकीन रखना चाहिये कि ज़रूर ज़रूर नुस्ते खुदावन्दी हमारी इम्दाद व दस्तगीरी फ़रमाएगी और बिल आख़िर बातिल परस्तों के मुक़ाबले में हम ही फ़त्हमन्द होंगे और बातिल परस्त यकीनन ख़ाइब व ख़ासिर हो कर हलाक व बरबाद हो जाएंगे।

﴿2﴾ येह ईमान व अक़ीदा मज़बूती के साथ रखना चाहिये कि **अल्लाह** तआला हम हक़ परस्तों को ग़ैब से रोज़ी का सामान देगा क्यूंकि ज़ालिम

नमरूद ने जब हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को गुल्ला देना बन्द कर दिया और मुल्क भर में इन को कहीं एक दाना भी नहीं मिला तो **अल्लाह** तआला ने रैत और मिट्टी को इन के लिये आटा बना दिया और इस्लाम के इस अक़ीदे की हक्कानिय्यत का सूरज चमक उठा कि

(إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ) (प ५८, الذारियात: ५८)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** बेशक **अल्लाह** ही बड़ा रिज़्क देने वाला कुव्वत वाला कुदरत वाला है।

बहर हाल हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام का येह तर्जे फ़िक्क व अमल और आप का येह उस्वा तमाम हक्क परस्त आलिमों के लिये चरागे राह है और हकीकत येह है कि आप के उस्वए हसना पर अमल करने वाले ज़रूर ज़रूर कामयाबी से हम किनार होंगे येह वोह ताबन्दा हकीकत है जो आफ़ताबे आलम ताब से भी ज़ियादा ताबनाक और रोशन है। سُبْحَنَ اللَّهِ किस क़दर हकीकत अप्पोज़ है येह शे'र कि

आज भी हो जो इब्राहीम सा ईमां पैदा

आग कर सकती है अन्दाज़े गुलिस्तां पैदा

﴿९﴾ **इन्सानों में हमेशा दुश्मनी रहेगी**

हज़रते आदम और हज़रते हव्वा عليهما السلام निहायत ही आराम और चैन के साथ जन्नत में रहते थे। **अल्लाह** तआला ने फ़रमा दिया था कि जन्नत का जो फल भी चाहो बे रोक टोक सैर हो कर तुम दोनों खा सकते हो। मगर सिर्फ़ एक दरख़्त का फल खाने की मुमानअत थी कि इस के क़रीब मत जाना। वोह दरख़्त गेहूँ था या अंगूर वगैरा था। चुनान्चे, दोनों उस दरख़्त से मुद्दते दराज़ तक बचते रहे। लेकिन इन दोनों का दुश्मन इब्लीस बराबर ताक में लगा रहा। आख़िर उस ने एक दिन अपना वस्वसा डाल ही दिया और क़सम खा कर कहने लगा कि मैं तुम दोनों का ख़ैर ख़्वाह हूँ और **अल्लाह** तआला ने जिस दरख़्त से तुम दोनों को मन्अ कर दिया है वोह “शजरतुल खुल्द” है या'नी जो उस दरख़्त का फल खाएगा, वोह कभी जन्नत से नहीं निकाला जाएगा। पहले हज़रते

हव्वा **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا** इस शैतानी वस्वसे का शिकार हो गई और उन्होंने ने हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** को भी इस पर राज़ी कर लिया और वोह नागहां ग़ैर इरादी तौर पर उस दरख़्त का फल खा बैठे ।

आप ने अपने इजतिहाद से येह समझ लिया कि **لَا تَقْرَبُوا هَذِهِ الشَّجَرَةَ** (प १, البقرة: ३५) की नहय तन्ज़ीही है और वाकैई हरगिज़ हरगिज़ नहय तहरीमी नहीं थी । वरना हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** नबी होते हुवे हरगिज़ हरगिज़ उस दरख़्त का फल न खाते क्यूंकि नबी तो हर गुनाह से मा'सूम होता है बहर हाल हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** से इस सिलसिले में इजतिहादी ख़ता सरज़द हो गई और इजतिहादी ख़ता मा'सियत नहीं होती ।

(تفسير خزائن العرفان، ص १०९२، प १، البقرة: ३५)

लेकिन हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** चूँकि दरबारे इलाही में बहुत मुक़र्रब और बड़े बड़े दरजात पर फ़ाइज़ थे इस लिये इस इजतिहादी ख़ता पर भी मौरिदे इताब हो गए । फ़ौरन ही बहिश्ती लिबास दोनों के बदन से गिर पड़े और येह दोनों ज़न्नत के पत्तों से अपना सित्र छुपाने लगे, और खुदावन्दे कुदूस का हुक्म हो गया कि तुम दोनों ज़न्नत से ज़मीन पर उतर पड़ो । उस वक़्त **اَللّٰهُ** तआला ने हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** से दो ख़ास बातें इरशाद फ़रमाई । एक तो येह कि तुम्हारी अवलाद में बा'ज बा'ज का दुश्मन होगा कि हमेशा आपस में इन्सानों की दुश्मनी चलती रहेगी । दूसरी येह कि उम्र भर तुम दोनों को ज़मीन में ठहरना है फिर इस के बा'द हमारी ही तरफ़ लौट कर आना है । चुनान्वे, कुरआने मजीद में इस वाकिए को बयान फ़रमाते हुवे **اَللّٰهُ** तआला ने बयान फ़रमाया कि

**فَاَزَلَّاهُمَا الشَّيْطَانُ عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيْهِ ۚ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ**

**لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ** (प १, البقرة: ३५)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** तो शैतान ने ज़न्नत से उन्हें लगज़िश दी और जहां रहते थे वहां से उन्हें अलग कर दिया और हम ने फ़रमाया नीचे उतरो आपस में एक तुम्हारा दूसरे का दुश्मन और तुम्हें एक वक़्त तक ज़मीन में ठहरना और बरतना है ।

इस इरशादे रब्बानी से येह सबक़ मिलता है कि येह जो इन्सानों में मुख़लिफ़ वुजूहात की बिना पर अ़दावतें और दुश्मनियां चल रही हैं येह कभी ख़त्म होने वाली नहीं। लाख कोशिश करो कि दुन्या में लोगों के दरमियान अ़दावत और दुश्मनी का ख़ातिमा हो जाए मगर चूँकि येह हुक्मे खुदावन्दी के बाइष है इस लिये येह अ़दावतें कभी हरगिज़ ख़त्म न होंगी। कभी एक मुल्क दूसरे मुल्क का दुश्मन होगा, कभी मज़दूर और सरमायादार में दुश्मनी रहेगी, कभी अमीर व ग़रीब की अ़दावत ज़ोर पकड़ेगी, कभी मज़हबी व लिसानी दुश्मनी रंग लाएगी, कभी तहज़ीब व तमहुन के बाहमी टकराव की दुश्मनी उभरेगी, कभी ईमानदारों और बे ईमानों की अ़दावत रंग दिखाएगी।

अल ग़रज़ दुन्या में इन्सानों की आपस में अ़दावत व दुश्मनी का बाज़ार हमेशा गर्म ही रहेगा इस लिये लोगों को इस से रन्जीदा और कबीदा ख़ातिर होने की कोई ज़रूरत ही नहीं है और न इस अ़दावत और दुश्मनी को ख़त्म करने की तदबीरों पर ग़ौरो ख़ौज़ कर के परेशान होने से कोई फ़ाइदा है।

क्यूँकि जिस तरह अन्धेरे और उजाले की दुश्मनी, आग और पानी की दुश्मनी, गर्मी और सर्दी की दुश्मनी कभी ख़त्म नहीं हो सकती, ठीक इसी तरह इन्सानों में आपस की दुश्मनी कभी ख़त्म नहीं हो सकती। क्यूँकि **اَبْرَٰهِيْمُ** **عَزَّوَجَلَّ** ने हज़रते आदम व हव्वा **عليهما السلام** के ज़मीन पर आने से पहले ही येह फ़रमा दिया कि **بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ** या'नी एक इन्सान दूसरे इन्सान का दुश्मन होगा तो येह अ़दावत व दुश्मनी ख़लक़ी और फ़िज़ी है जो हुक्मे इलाही और उस की मशिय्यत से है तो फिर भला कौन है जो इस अ़दावत का दुन्या से ख़ातिमा करा सकता है। (والله تعالى اعلم)

### ﴿10﴾ आदम **عليه السلام** की तौबा कैसे कबूल हुई ?

हज़रते आदम **عليه السلام** ने जन्नत से ज़मीन पर आने के बा'द तीन सो बरस तक नदामत की वजह से सर उठा कर आस्मान की तरफ़ नहीं देखा और रोते ही रहे रिवायत है कि अगर तमाम इन्सानों के आंसू

जम्अ किये जाएं तो इतने नहीं होंगे जितने आंसू हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के ख़ौफ़े इलाही से ज़मीन पर गिरे और अगर तमाम इन्सानों और हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के आंसूओं को जम्अ किया जाए तो हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के आंसू इन सब लोगों से ज़ियादा होंगे । (तفسير صاوى، ج ۱، ص ۵۵، پ ۱، البقرة: ۳۷)

बा'ज रिवायात में है कि आप ने यह पढ़ कर दुआ मांगी कि  
 سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَتَعَالَى جَدُّكَ  
 لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ ظَلَمْتُ نَفْسِي فَاغْفِرْ لِي إِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ.

या'नी ऐ **अल्लाह !** मैं तेरी हम्द के साथ तेरी पाकी बयान करता हूं । तेरा नाम बरकत वाला है और तेरी बुजुर्गी बहुत ही बुलन्द मर्तबा है और तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं है । मैं ने अपनी जान पर जुल्म किया है तू मुझे बख़्श दे क्यूंकि तेरे सिवा कोई नहीं जो गुनाहों को बख़्श दे ।

(तفسير جمل على الجلالين، ج ۱، ص ۲۳، پ ۱، البقرة: ۳۷)

और एक रिवायत में है कि आप ने

رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا وَإِنْ لَمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ ۝

या'नी ऐ हमारे परवर दगार ! हम ने अपनी जानों पर जुल्म कर लिया और अगर तू हमें रहम फ़रमा कर न बख़्शेगा तो हम घाटा उठाने वालों में से हो जाएंगे । (तفسير जाललिन، ص ۱۳، پ ۸، الاعراف: ۲۳)

लेकिन हाकिम व तबरानी व अबू नोएम व बैहकी ने हज़रते अली मुर्तज़ा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरफूअन रिवायत की है कि जब हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام पर इताबे इलाही हुवा तो आप तौबा की फ़ि़क़्र में हैरान थे । नागहां इस परेशानी के अ़ालम में याद आया कि वक्ते पैदाइश मैं ने सर उठा कर देखा था कि अ़र्श पर लिखा हुवा है لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ उसी वक्त मैं ने समझ लिया था कि बारगाहे इलाही में वोह मर्तबा किसी को मुयस्सर नहीं जो मुहम्मद صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को हासिल है कि **अल्लाह** तअ़ाला ने इन का नाम अपने नामे अक्दस के साथ मिला कर अ़र्श पर



तहरीर फरमाया है। लिहाजा आप ने अपनी दुआ में رَبَّنَا ظَلَمْنَا أَنْفُسَنَا के साथ येह अर्ज किया कि اسئلك بحق محمد ان تغفرلى और इब्ने मुन्जिर की रिवायत में येह कलिमात भी हैं कि

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ بِحَقِّ مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَكَرَامَتِهِ عَلَيْكَ اَنْ تَغْفِرَ لِّىْ خَطِيْئَتِىْ

या'नी ऐ **अल्लाह** ! तेरे बन्दे खास मुहम्मद صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जाह व मर्तबे के तुफैल में और इन की बुजुर्गी के सदेके में जो इन्हें तेरे दरबार में हासिल है मैं तुझ से दुआ करता हूँ कि तू मेरे गुनाह को बख्श दे। येह दुआ करते ही हक़ तआला ने इन की मग़फ़िरत फरमा दी और तौबा मक़बूल हुई।  
(تفسير خزائن العرفان، ص ۹۴، ۱۰۹۵، ۱، ۱، البقرة: ۳۷)

कुरआने मजीद में **अल्लाह** तआला ने इरशाद फरमाया कि

فَتَلَقَّىٰ آدَمُ مِنْ رَبِّهِ كَلِمَاتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ۚ إِنَّهُ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيمُ ﴿٣٧﴾ (پ ۱، البقرة: ۳۷)

तर्जमए कन्जुल ईमान :- फिर सीख लिये आदम ने अपने रब से कुछ कलिमे तो **अल्लाह** ने उस की तौबा क़बूल की बेशक वोही है बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान।

दर्से हिदायत :- इस वाकिए से चन्द अस्वाक़ पर रोशनी पड़ती है जो येह हैं :

﴿1﴾ इस से मा'लूम हुवा कि मक़बूलाने बारगाहे इलाही के वसीले से बहक़के फुलां व बजाहे फुलां कह कर दुआ मांगनी जाइज और हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की सुन्नत है।

﴿2﴾ हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की तौबा दसवीं मुहर्रम को क़बूल हुई जन्नत से निकलते वक़्त दूसरी ने'मतों के साथ अरबी ज़बान भी आप से भुला दी गई थी और बजाए इस के सिरयानी ज़बान आप की ज़बान पर जारी कर दी गई थी। मगर तौबा क़बूल होने के बा'द फिर अरबी ज़बान भी आप को अता कर दी गई।  
(تفسير خزائن العرفان، ص ۹۵، ۱، ۱، البقرة: ۳۷)

﴿3﴾ चूँकि हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की ख़ता इजतिहादी थी और इजतिहादी ख़ता मा'सियत नहीं है इस लिये जो शख्स हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को आसी या ज़ालिम कहेगा वोह नबी की तौहीन के सबब से काफ़िर हो जाएगा। **अल्लाह** तआला मालिको मौला है वोह अपने बन्दए खास हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام को जो चाहे फ़रमाए उस में उन की इज़्ज़त है दूसरे की क्या मजाल कि ख़िलाफ़े अदब कोई लफ़्ज़ ज़बान पर लाए और कुरआने मजीद में **अल्लाह** तआला के फ़रमाए हुवे कलिमात को दलील बनाए। **अल्लाह** तआला ने हमें अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की ता'ज़ीम व तौकीर और उन के अदब व इताअत का हुक्म फ़रमाया है लिहाज़ा हम पर येही लाज़िम है कि हम हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام और दूसरे तमाम अम्बियाए किराम का अदब व एहतिराम लाज़िम जानें और हरगिज़ हरगिज़ इन हज़रात की शान में कोई ऐसा लफ़्ज़ न बोलें जिस में अदब की कमी का कोई शाइबा भी हो। (والله تعالى اعلم)

### ﴿11﴾ हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के हवारी

हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के बारह “हवारी” जो आप पर ईमान ला कर और अपने अपने इस्लाम का ए'लान कर के अपने तन मन धन से हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की नुस्त व हिमायत के लिये हर वक़्त और हर दम कमरबस्ता रहे, येह कौन लोग थे ? और इन लोगों को “हवारी” का लक़ब क्यूँ और किस मा'ना के लिहाज़ से दिया गया ?

तो इस बारे में साहिबे तफ़्सीरे जमल ने फ़रमाया कि “हवारी” का लफ़्ज़ “हूर” से मुश्तक़ है जिस के मा'ना सफ़ेदी के हैं चूँकि इन लोगों के कपड़े निहायत सफ़ेद और साफ़ थे और इन के कुलूब और निय्यतें भी सफ़ाई सुथराई में बहुत बुलन्द मक़ाम रखती थीं इस बिना पर इन लोगों को “हवारी” कहने लगे और बा'ज़ मुफ़स्सरीन का कौल है कि चूँकि येह लोग रिज़्के हलाल त़लब करने के लिये धोबी का पेशा इख़्तियार कर के कपड़ों की धुलाई करते थे इस लिये येह लोग “हवारी” कहलाए और एक कौल येह भी है कि येह सब लोग शाही ख़ानदान से थे और बहुत ही

साफ़ और सफ़ेद कपड़े पहनते थे इस लिये लोग इन को हवारी कहने लगे। हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के पास एक पियाला था जिस में आप खाना खाया करते थे और वोह पियाला कभी खाने से ख़ाली नहीं होता था। किसी ने बादशाह को इस की इत्तिलाअ दे दी तो उस ने आप को दरबार में त़लब कर के पूछा कि आप कौन हैं ? तो आप ने फ़रमाया कि मैं ईसा बिन मरयम खुदा का बन्दा और उस का रसूल हूँ। वोह बादशाह आप की ज़ात और आप के मो'जिज़ात से मुतअब्बिर हो कर आप पर ईमान लाया और सल्तनत का तख़्तो ताज छोड़ कर अपने तमाम अक़ारिब के साथ आप की ख़िदमत में रहने लगा। चूँकि शाही ख़ानदान बहुत ही सफ़ेद पोश था। इस लिये येह सब “हवारी” के लक़ब से मशहूर हो गए और एक क़ौल येह भी है कि येह सफ़ेद पोश मछेरों की एक जमाअत थी जो मछलियों का शिकार किया करते थे, हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام इन लोगों के पास तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया कि तुम लोग मछलियों का शिकार करते हो अगर तुम लोग मेरी पैरवी करने पर कमरबस्ता हो जाओ तो तुम लोग आदमियों का शिकार कर के उन को हयाते जावेदानी से सरफ़राज़ करने लगोगे। उन लोगों ने आप से मो'जिज़ा त़लब किया तो उस वक़्त “शमऊन” नामी मछली के शिकारी ने दरया में जाल डाल रखा था मगर सारी रात गुज़र जाने के बा वुजूद एक मछली भी जाल में नहीं आई तो आप ने फ़रमाया कि अब तुम जाल दरया में डालो। चुनान्चे, जैसे ही उस ने जाल को दरया में डाला लम्हा भर में इतनी मछलियां जाल में फंस गई कि जाल को कश्ती वाले नहीं उठा सके। चुनान्चे, दो कश्तियों की मदद से जाल उठाया गया और दोनों कश्तियां मछलियों से भर गई। येह मो'जिज़ा देख कर दोनों कश्ती वाले जिन की ता'दाद बारह थी सब कलिमा पढ़ कर मुसलमान हो गए। इन ही लोगों का लक़ब “हवारी” है।

और बा'ज़ उ-लमा का क़ौल है कि बारह आदमी हज़रते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान लाए और इन लोगों के ईमाने कामिल और हुस्ने निय्यत की बिना पर इन लोगों को येह करामत मिल गई कि जब भी इन लोगों को

भूक लगती तो येह लोग कहते किया रूहल्लाह ! हम को भूक लगी है, तो हज़रते ईसा عليه السلام ज़मीन पर हाथ मार देते तो ज़मीन से दो रोटियां निकल कर इन लोगों के हाथों में पहुंच जाया करती थीं और जब येह लोग प्यास से फ़रयाद किया करते थे तो हज़रते ईसा عليه السلام ज़मीन पर हाथ मार दिया करते और निहायत शीरीं और ठन्डा पानी इन लोगों को मिल जाया करता था इसी तरह येह लोग खाते पीते थे । एक दिन इन लोगों ने हज़रते ईसा عليه السلام से पूछा कि ऐ रूहल्लाह ! हम मोमिनों में सब से अफ़ज़ल कौन है ? तो आप ने फ़रमाया कि जो अपने हाथ की कमाई से रोज़ी हासिल कर के दिखाए । येह सुन कर इन बारह हज़रात ने रिज़्के हलाल के लिये धोबी का पेशा इस्तिथार कर लिया चूँकि येह लोग कपड़ों को धो कर सफ़ेद करते थे इस लिये “हवारी” के लक़ब से पुकारे जाने लगे ।

और एक कौल येह भी है कि हज़रते ईसा عليه السلام को इन की वालिदा ने एक रंगरेज़ के हां मुलाज़िम रखवा दिया था । एक दिन रंगरेज़ मुख़लिफ़ कपड़ों को निशान लगा कर चन्द रंगों को रंगने के लिये आप के सिपुर्द कर के कहीं बाहर चला गया । आप ने इन सब कपड़ों को एक ही रंग के बरतन में डाल दिया । रंगरेज़ ने घबरा कर कहा कि आप ने सब कपड़ों को एक ही रंग का कर दिया । हालांकि मैं ने निशान लगा कर मुख़लिफ़ रंगों का रंगने के लिये कह दिया था । आप ने फ़रमाया कि ऐ कपड़ो ! तुम **अल्लाह** तआला के हुक्म से उन्हीं रंगों के हो जाओ, जिन रंगों का येह चाहता था । चुनान्वे, एक ही बरतन में से लाल, सब्ज़, पीला, जिन जिन कपड़ों को रंगरेज़ जिस जिस रंग का चाहता था वोह कपड़ा उसी रंग का हो कर निकलने लगा । आप का येह मो'जिज़ा देख कर तमाम हाज़िरीन जो सफ़ेद पोश थे और जिन की ता'दाद बारह थी, सब ईमान लाए येही लोग “हवारी” कहलाने लगे ।

हज़रते इमाम क़फ़ाल عليه الرحمة ने फ़रमाया कि मुमकिन है कि इन बारह हवारियों में कुछ लोग बादशाह हों और कुछ मछरे हों और कुछ धोबी हों और कुछ रंगरेज़ हों । चूँकि येह हज़रते ईसा عليه السلام के

मुख़्लिस जां निषार थे और इन लोगों के कुलूब और निय्यतें साफ़ थीं इस बिना पर इन बारह पाक बाजों और नेक नफ़्सों को “हवारी” का लक़बे मुअज़्ज़ अता किया गया। क्यूंकि “हवारी” मा'ना मुख़्लिस दोस्त के हैं।

(تفسير جمل على الجلالين، ج، ص २२-२३، प ३، آل عمران: ५२)

बहर हाल कुरआने मजीद में हवारियों का ज़िक्र फ़रमाते हुवे

**अल्लाह** तआला ने इरशाद फ़रमाया कि

فَلَمَّا أَحَسَّ عِيسَى مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ مَنْ أَنْصَارِي إِلَى اللَّهِ قَالَ  
الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللَّهِ آمَنَّا بِاللَّهِ وَأَشْهَدُ بِكَ أَنْتَ مُسْلِمُونَ ﴿٥٢﴾

(प ३, آل عمران: ५२)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** फिर जब ईसा ने उन से कुफ़ पाया बोला कौन मेरे मददगार होते हैं **अल्लाह** की तरफ़। हवारियों ने कहा हम दीने खुदा के मददगार हैं हम **अल्लाह** पर ईमान लाए और आप गवाह हो जाएं कि हम मुसलमान हैं।

दूसरी जगह कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया कि

وَإِذْ أَوْحَيْتُ إِلَى الْحَوَارِيِّينَ أَنْ امْنُوا بِي وَبِرَسُولِي قَالُوا آمَنَّا  
وَأَشْهَدُ بِكَ أَنْتَ مُسْلِمُونَ ﴿٥٣﴾ (پ ۴، المائدة: ۱۱۱)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और जब मैं ने हवारियों के दिल में डाला कि मुझ पर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ, बोले हम ईमान लाए और गवाह रह कि हम मुसलमान हैं।

**दर्से हिदायत :-** हज़रते ईसा **عَلَيْهِ السَّلَام** के हावारी अगर्चे ता'दाद में सिर्फ़ बारह थे मगर यहूदियों के मुक़ाबले में आप की नुस्त व हिमायत में जिस पा मर्दी और अज़्म व इस्तक़लाल के साथ डटे रहे उस से हर मुसलमान को दीन के मुआमले में षाबित क़दमी का सबक़ मिलता है।

इस किस्म के मुख़्लिस अहबाब और मख़्सूस जां निषार अस्हाब

**अल्लाह** तआला हर नबी को अता फ़रमाता है। चुनान्वे, जंगे ख़न्दक़

के दिन हुजूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि हर नबी के “हवारी” हुवे हैं और मेरे हवारी “जुबैर” हैं।

(مشکوٰۃ المصابیح، کتاب الفتن، باب مناقب العشرة رضی اللہ عنہم، الفصل الاول، ص ۵۶۵)

और हज़रते क़तादा का बयान है कि कुरैश में बारह सहाबए किराम हुजूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के “हवारी” हैं जिन के नामी येह हैं।

(1) हज़रते अबू बक्र (2) हज़रते उमर (3) हज़रते उषमान (4) हज़रते अली (5) हज़रते हम्ज़ा (6) हज़रते जा'फ़र (7) हज़रते अबू उबैदा बिन अल जराह (8) हज़रते उषमान बिन मज़ऊन (9) हज़रते अब्दुरहमान बिन औफ़ (10) हज़रते सा'द बिन अबी वक्कास (11) हज़रते तल्हा बिन उबैदुल्ला (12) हज़रते जुबैर बिन अल अक्वाम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ। कि इन मुख़्लिस जां निषारों ने हर मौक़अ पर हुजूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की नुस्त व हिमायत का बे मिषाल रेकोर्ड काइम कर दिया।

(تفسير معالم التنزيل للبغوی، ج ۱، ص ۲۳۶، پ ۳، آل عمران: ۵۲)

## जहन्नम के दरवाजे पर नाम

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है, **अल्लाह** صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के महबूब, दानाए गुयूब मुनज़्ज़हुन अनील उयूब का फ़रमाने इब्रत निशान है :

مَنْ تَرَكَ صَلَاةً مُتَعَمِّدًا كُتِبَ اسْمُهُ عَلَى بَابِ النَّارِ فَيَمْنُ يَدْخُلُهَا

या'नी “जो कोई जान बूझ कर एक नमाज़ भी क़ज़ा कर देता है, उस का नाम जहन्नम के उस दरवाजे पर लिख दिया जाता है जिस से वोह जहन्नम में दाख़िल होगा।”

(1282 स. 1 जि. सुन्नत, फ़ैज़ाने सुन्नत, (حلیۃ الاولیاء، ج ۶، ص ۲۹۹، حدیث ۱۰۵۹)

## ﴿12﴾ मुर्तदीन से जिहाद करने वाले

हुजूर अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की हयाते मुबारका में चन्द आदमी और वफ़ाते अक्दस के बा'द बहुत लोग मुर्तद होने वाले थे जिन से इस्लाम की बका को शदीद ख़तरा लाहिक् होने वाला था। लेकिन कुरआने मजीद ने बरसों पहले येह ग़ैब की ख़बर दी और येह पेश गोई फ़रमा दी कि इस भयानक और ख़तरनाक वक़्त पर **अल्लाह** तआला एक ऐसी क़ौम को पैदा फ़रमाएगा जो इस्लाम की मुहाफ़िज़त करेगी और वोह ऐसी छे सिफ़तों की जामेअ होगी जो तमाम दुन्यवी व उख़वी फ़ज़ाइल व कमालात का सर चश्मा हैं और येही छे सिफ़ात इन मुहाफ़िज़ीने इस्लाम की अ़लामात और इन की पहचान का निशान होंगी और वोह छे सिफ़ात येह हैं :

﴿1﴾ वोह **अल्लाह** तआला के महबूब होंगे ﴿2﴾ वोह **अल्लाह** तआला से महबूब करेंगे ﴿3﴾ वोह मोअमिनीन पर बहुत मेहरबान होंगे ﴿4﴾ वोह काफ़िरो के लिये बहुत सख़्त होंगे ﴿5﴾ वोह खुदा की राह में जिहाद करेंगे ﴿6﴾ वोह किसी मलामत करने वाले की मलामत से खाइफ़ नहीं होंगे।

साहिबे तफ़्सीरे जमल ने कशाफ़ के हवाले से तहरीर फ़रमाया है कि अरब के ग़्यारह क़बीले इस्लाम क़बूल कर लेने के बा'द आगे पीछे इस्लाम से मुन्हरिफ़ हो कर मुर्तद हो गए। तीन क़बाइल तो हुजूर عليه الصّلاة والسّلام की मौजूदगी में और सात क़बीले हज़रते अमीरुल मोअमिनीन अबू बक्र सिद्दीक رضي الله تعالى عنه के दौरै ख़िलाफ़त में और एक क़बीला हज़रते अमीरुल मोअमिनीन उमर फ़ारूक رضي الله تعالى عنه के ख़लीफ़ा होने के बा'द। मगर येह ग़्यारह क़बाइल अपनी इन्तिहाई कोशिशों के बा वुजूद इस्लाम का कुछ भी न बिगाड़ सके। बल्कि मुजाहिदीने इस्लाम के सरफ़रोशाना जिहादों की बदौलत येह सब मुर्तदीन तहस नहस हो कर फ़ना के घाट उतर गए और परचमे इस्लाम बराबर बुलन्द से बुलन्द तर होता ही चला गया। और कुरआने मजीद का वा'दा और ग़ैब की ख़बर बिल्कुल सच और सहीह़ षाबित हो कर रही।

**ज़मानए रिसालत के तीन मुर्तदीन :-** ﴿1﴾ क़बीलए बनी मुदलिज जिस का रईस “अस्वद अनिसी” था जो “जुल हमार” के लक़ब से मशहूर था।



हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते मुआज़ बिन जबल और यमन के सरदारों को फ़रमान भेजा कि मुर्तदीन से जिहाद करें। चुनान्वे, फ़ीरोज़ दैलमी के हाथ से अस्वद अनिसी क़त्ल हुवा और उस की जमाअत बिखर गई और हुजूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को बिस्तरे अलालत पर येह खुश ख़बरी सुनाई गई कि अस्वद अनिसी क़त्ल हो गया है। इस के दूसरे दिन ही हुजूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام का विसाल हो गया।

﴿2﴾ क़बीलए बनू हनीफ़ा जिस का सरदार “मुसैलिमा कज़्ज़ाब” था। जिस से हज़रते अबू बक्र رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने जिहाद फ़रमाया और लड़ाई के बा’द हज़रते वहशी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के हाथ से मुसैलिमतुल कज़्ज़ाब मक्तूल हुवा और उस का गुरौह कुछ क़त्ल हो गया और कुछ दोबारा दामने इस्लाम में आ गए।

﴿3﴾ क़बीलए बून असद, जिस का अमीर तल्हा बिन खुवैलद था। हुजूर अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उस के मुकाबले के लिये हज़रते ख़ालिद बिन वलीद رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को भेजा और जंग के बा’द तल्हा बिन खुवैलद शिकस्त खा कर मुल्के शाम भाग गया मगर फिर दोबारा इस्लाम क़बूल कर लिया और आख़िरी दम तक इस्लाम पर षाबित क़दम रहा और उस की फ़ौज कुछ कट गई कुछ ताइब हो कर फिर दोबारा मुसलमान हो गए।

ख़िलाफ़ते सिद्दीके अक्बर के सात मुर्तद क़बाइल :-

﴿1﴾ क़बीलए फ़ज़ारा जिस का सरदार उयैना बिन हसन फ़ज़ारी था  
 ﴿2﴾ क़बीलए ग़तफ़ान जिस का सरदार कुरा बिन सलमा कुशैरी था  
 ﴿3﴾ क़बीलए बनू सुलैम जिन का सरग़ना फ़जाह बिन यालैल था  
 ﴿4﴾ क़बीलए बनी यरबूअ जिस का सरबरा मालिक बिन बुरैदा था  
 ﴿5﴾ क़बीलए बनू तमीम जिन की अमीर सजाह बिन्ते मन्ज़र एक औरत थी जिस ने मुसैलिमतुल कज़्ज़ाब से शादी कर ली थी  
 ﴿6﴾ क़बीलए कन्दा जो अशअष बिन कैस के पैरूकार थे  
 ﴿7﴾ क़बीलए बनू बक्र जो ख़तमी बिन यज़ीद के ताबेअदार थे। अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने इन मुर्तद होने वाले सातों क़बीलों से महीनों तक बड़ी खूँ रैज जंग फ़रमाई। चुनान्वे, कुछ इन में से मक्तूल हो गए और कुछ तौबा कर के फिर दामने इस्लाम में आ गए।

**दौरे फ़ारूकी का मुर्तद कबीला :-** अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर फ़ारूके आ'जम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के दौरे ख़िलाफ़त में सिर्फ़ एक ही कबीला मुर्तद हुवा और येह कबीलाए ग़स्सान था। जिस की सरदारी जबला बिन ऐहम कर रहा था। मगर हज़रते उमर फ़ारूके आ'जम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के परचम के नीचे सहाबए किराम ने जिहाद कर के इस गुरौह का क़त्ल क़म्अ कर दिया और फिर इस के बा'द कोई कबीला भी मुर्तद होने के लिये सर नहीं उठा सका।

इस तरह मुर्तद होने वाले इन ग्यारह कबीलों का सारा फ़ितना व फ़साद मुजाहिदीने इस्लाम के जिहादों की बदौलत हमेशा के लिये ख़त्म हो गया।

(تفسير جمل على الجلالين، ج ٢، ص ٢٣٩، ٢، المائدة: ٥٢)

इन मुर्तदीन से लड़ने वाले और इन शरीरों का क़त्ल क़म्अ करने वाले सहाबए किराम थे। जिन के बारे में बरसों पहले कुरआने मजीद ने ग़ैब की ख़बर देते हुवे येह इरशाद फ़रमाया था कि

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَنْ يَرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ فَسَوْفَ يَأْتِي اللَّهَ بِقَوْمٍ  
يُحِبُّهُمْ وَيُجِبُّونَهُ أَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٍ عَلَى الْكَافِرِينَ  
يُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَائِمٍ ۚ ذَٰلِكُمْ فَضْلُ اللَّهِ  
يُؤْتِيهِ مَن يَشَاءُ ۚ وَاللَّهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ﴿٥٢﴾

(المائدة: ٥٢)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** ऐ ईमान वालों तुम में जो कोई अपने दीन से फ़िरेगा तो अज़न करीब **अल्लाह** ऐसे लोग लाएगा कि वोह **अल्लाह** के प्यारे और **अल्लाह** उन का प्यारा मुसलमानों पर नर्म और काफ़िरों पर सख़्त **अल्लाह** की राह में लड़ेंगे और किसी मलामत करने वाले की मलामत का अन्देशा न करेंगे येह **अल्लाह** का फ़ज़ल है जिसे चाहे दे और **अल्लाह** वुस्अत वाला इल्म वाला है।

**दर्से हिदायत :-** इन आयात से हस्बे ज़ैल अन्वारे हिदायत की तज्जलियां नुमूदार होती हैं।

मुर्तदीन के फ़ितनों और शोरिशों से इस्लाम को कोई नुक़सान नहीं पहुंच सकता क्यूंकि **अल्लाह** तआला मुर्तदों के मुकाबले के लिये हर दौर में एक ऐसी जमाअत को पैदा फ़रमा देगा जो तमाम मुर्तदीन की फ़ितना पर्दाजियों को ख़त्म कर के इस्लाम का बोल बाला करती रहेगी जिन की छे निशानियां होंगी ।

इन आयाते बय्यिनात से षाबित होता है कि सहाबए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** जिन्होंने ने मुर्तदीन के ग्यारह क़बाइल की शोरिशों को ख़त्म कर के परचमे इस्लाम को बुलन्द से बुलन्द तर कर दिया । येह सहाबए किराम मुन्दरिजए जैल छे अज़ीम सिफ़ात के शरफ़ से सरफ़राज़ थे । या'नी (1) सहाबए किराम **अल्लाह** के महबूब हैं (2) वोह काफ़िरों के हक़ में बहुत सख़्त हैं (3) वोह **अल्लाह** तआला के मुहिब हैं (4) वोह मुसलमानों के लिये रहम दिल हैं (5) वोह मुजाहिदे फ़ी सबीलिल्लाह हैं (6) वोह **अल्लाह** तआला के मुआमले में किसी मलामत करने वाले का अन्देशा व ख़ौफ़ नहीं रखते ।

फ़िर आयत के आख़िर में खुदावन्दे कुहूस ने इन सहाबए किराम के मरातिब व दरजात की अज़मत व सर बुलन्दी पर अपने फ़ज़्लो इन्आम की मोहर षब्त फ़रमाते हुवे येह इरशाद फ़रमाया कि येह सब **अल्लाह** का फ़ज़ल है और **अल्लाह** तआला का फ़ज़्लो करम बड़ी वुस्अत वाला है और **अल्लाह** तआला ही को ख़ूब मा'लूम है कि कौन उस के फ़ज़ल का हक़दार है ।

**अल्लाहु अक्बर !** **سُبْحَنَ اللَّهِ** क्या कहना है सहाबए किराम की अज़मतों की बुलन्दी का । रसूल **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने सहाबए किराम **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ** के फ़ज़्लो कमाल का ए'लान फ़रमाया और खुदावन्दे कुहूस ने इन लोगों के जामेउल कमालात होने का कुरआने मजीद में ख़ुतबा पढ़ा ।

### ﴿13﴾ काफ़िरों की मायूसी

हिजरत के बा'द गो बराबर इस्लाम तरक्की करता रहा और हर महाज़ पर कुफ़्फ़ार के मुकाबले में मुसलमानों को फ़ुतूहात भी हासिल होती रहीं और कुफ़्फ़ार अपनी चालों में नाकाम व नामुराद भी होते रहे । मगर फिर भी कुफ़्फ़ार बराबर इस्लाम की बेख़ कनी में मसरूफ़ ही रहे

और यह आस लगाए हुवे थे कि किसी न किसी दिन ज़रूर इस्लाम मिट जाएगा और फिर अरब में बुत परस्ती का चरचा हो कर रहेगा। कुफ़ार अपनी इसी मौहूम उम्मीद की बिना पर बराबर अपनी इस्लाम दुश्मनी स्कीमों में लगे रहे और तरह तरह के फ़ितने बपा करते रहे।

मगर 10 हि. हुज्जतुल वदाअ के मौक़अ पर जब काफ़िरों ने मुसलमानों का अज़ीम मज्मअ मैदाने अरफ़ात में देखा और इन हज़ारों मुसलमानों के इस्लामी जोश और रसूल के साथ इन के वालिहाना ज़ब्बाते अक़ीदत का नज़ारा देख लिया तो कुफ़ार के हौसलों और उन की मौहूम उम्मीदों पर औस पड़ गई और वोह इस्लाम की तबाही व बरबादी से बिल्कुल ही मायूस हो गए। चुनान्चे, इस वाक़िए की अक्कासी करते हुवे ख़ास मैदाने अरफ़ात में बा'दे अस्र येह आयात नाज़िल हुई। (जमल ज १, २१२)

اَلْيَوْمَ يَيسُ الزّٰیْنُ كَفَرُوْا مِنْ دِیْنِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ  
اَلْيَوْمَ اكْمَلْتُ لَكُمْ دِیْنَكُمْ وَاَتَمَمْتُ عَلَیْكُمْ نِعَمَتِیْ وَرَضِیْتُ لَكُمْ  
اَلْاِسْلَامَ دِیْنًا (پ १, المائدة: ३)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** आज तुम्हारे दीन की तरफ़ से काफ़िरों की आस टूट गई तो उन से न डरो और मुझ से डरो आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी ने'मत पूरी कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम को दीन पसन्द किया।

रिवायत है कि एक यहूदी ने अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर फ़ारूके आ'ज़म رضی اللہ تعالیٰ عنہ से कहा कि तुम्हारी किताब में एक ऐसी आयत है कि अगर हम यहूदियों पर ऐसी आयत नाज़िल हुई होती तो हम लोग इस दिन को ईद का दिन बना लेते। तो आप ने फ़रमाया कि कौन सी आयत ? तो उस ने कहा कि اَلْيَوْمَ اكْمَلْتُ لَكُمْ دِیْنَكُمْ (प १, मائدة: ३) वाली आयत। तो आप ने फ़रमाया कि जिस दिन और जिस जगह और जिस वक़्त येह आयत नाज़िल हुई हम उस को अच्छी तरह जानते और पहचानते हैं वोह जुमुआ का दिन था और अरफ़ात का मैदान था और हुज़ूर عليه الصّلوٰة والسلام अस्र के बा'द ख़ुतबा इरशाद फ़रमा रहे थे कि येह आयत नाज़िल हुई :

आप का मतलब येह था कि इस आयत के नुज़ूल के दिन तो हमारी दो ईदें थीं। एक तो अरफ़ा का दिन येह भी हमारी ईद का दिन है। दूसरा जुमुआ का दिन येह भी हमारी ईद ही का दिन है इस लिये अब अलग से हम को ईद मनाने की कोई ज़रूरत ही नहीं है।

(तफ़सीर ज़मल, २, ४, १८०, २, ४, १८०, २, ४, १८०)

येह भी रिवायत है कि इस आयत के नुज़ूल के बा'द हज़रते अमीरुल मोअमिनीन फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ रोने लगे। तो हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि ऐ उमर ! तुम रोते क्यूं हो ? तो आप ने अर्ज किया कि या रसूलल्लाह ! हमारा दीन रोज़ बरोज़ बढ़ता जा रहा है लेकिन अब जब कि येह दीन कामिल हो गया है तो येह काइदा है कि “हर कमाल राज़ वाले” कि जो चीज़ अपने कमाल को पहुंच जाती है वोह घटना शुरू हो जाती है फिर इस आयत से वफ़ाते नबवी की तरफ़ भी इशारा मिल रहा है क्यूंकि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام दीन को कामिल करने ही के लिये दुन्या में तशरीफ़ लाए थे तो जब दीन कामिल हो चुका तो ज़ाहिर है कि हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) अब इस दुन्या में रहना पसन्द नहीं फ़रमाएंगे।

**दर्से हिदायत :-** ﴿1﴾ **अल्लाह** तआला ने इस आयत में इस बात पर मोहर लगा दी कि अब काफ़िरों की कोई जिद्दो जहद और कोशिश भी इस्लाम को ख़त्म नहीं कर सकती। क्यूंकि कुफ़ार की उम्मीद व आस पर नाउम्मीदी व यास के बादल छा गए हैं। क्यूंकि इन का इस्लाम को मिटा देने का ख़्वाब अब कभी भी शर्मिन्दए ता'बीर न हो सकेगा।

﴿2﴾ इस आयत ने ए'लान कर दिया कि दीने इस्लाम मुकम्मल हो चुका है अब अगर कोई येह कहे कि इस्लाम में फुलां फुलां मसाइल नाक़िस रह गए हैं या इस्लाम में कुछ तरमीम और इज़ाफ़े की ज़रूरत है तो वोह शख्स कज़ाब और झूठा है और दर हकीक़त वोह कुरआन की तकज़ीब करने वाला मुल्हिद और इस्लाम से ख़ारिज है। दीने इस्लाम बिलाशुबा यकीनन कामिल व मुकम्मल हो चुका है इस पर ईमान रखना ज़रूरियाते दीन में से है।

### ﴿14﴾ इस्लाम और साधू की जिन्दगी

उ-लमाए तफ़्सीर का बयान है कि एक दिन हुजुरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने वा'ज फ़रमाया और कियामत की हौलनाकियों का इस अन्दाज़ में बयान फ़रमाया कि सामेईन मुतअष्विर हो कर ज़ारो क़तार रोने लगे, और लोगों के दिल दहल गए और लोग इस क़दर ख़ौफ़ो हरास से लर्जा बरअन्दाम हो गए कि दस जलीलुल क़द्र सहाबए किराम हज़रते उषमान बिन मज़ऊन जमही के मकान पर जम्अ हुवे जिन में हज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ व हज़रते अली व हज़रते अब्दुल्लाह बिन मसऊद व हज़रते अब्दुल्लाह बिन अम्र व हज़रते अबू ज़र ग़िफ़ारी व हज़रते सालिम व हज़रते मिकदाद व हज़रते सलमान फ़ारसी व हज़रते मा'क़िल बिन मक़रन व हज़रते उषमान बिन मज़ऊन (رَضَوْنَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِمْ أَجْمَعِينَ) थे और इन हज़रात ने आपस में मश्वरा कर के येह मन्सूबा बनाया कि अब आज से हम लोग साधू बन कर जिन्दगी बसर करेंगे, टाट वग़ैरा के मोटे कपड़े पहनेंगे और रोज़ाना दिन भर रोज़े रख कर सारी रात इबादत करेंगे, बिस्तर पर नहीं सोएंगे और अपनी औरतों से अलग रहेंगे और गोश्त चरबी और घी वग़ैरा कोई मुरग़न ग़िज़ा नहीं खाएंगे न कोई खुशबू लगाएंगे और साधू बन कर रूए ज़मीन में ग़श्त करते फ़िरेंगे।

जब हुजुरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को सहाबए किराम के इस मन्सूबे की इत्तिलाअ मिली तो आप ने हज़रते उषमान बिन मज़ऊन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से फ़रमाया कि मुझे ऐसी ऐसी ख़बर मा'लूम हुई है तुम बताओ कि वाक़िआ क्या है ? तो हज़रते उषमान बिन मज़ऊन رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अपने साथियों को ले कर बारगाहे नबुव्वत में हाज़िर हुवे और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! हुजूर को जो इत्तिलाअ मिली है वोह बिल्कुल सहीह है। इस मन्सूबे से बजुज़ नेकी और ख़ैर त़लब करने के हमारा कोई दूसरा मक्सद नहीं है। येह सुन कर हुजुरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के जमाले नबुव्वत पर क़दरे जलाल का जुहूर हो गया और आप ने फ़रमाया कि मैं जो दीन ले कर आया हूं उस में इन बातों का हुक्म नहीं है। सुनो ! तुम्हारे ऊपर तुम्हारी जानों का भी हक़ है। लिहाज़ा कुछ दिन रोज़ा रखो और कुछ दिनों में खाओ पियो और रात के कुछ हिस्से में जाग कर इबादत करो और

कुछ हिस्से में सो रहा करो। देखो मैं **अल्लाह** का रसूल हो कर कभी रोज़ा रखता हूँ और कभी रोज़ा नहीं भी रखता हूँ। और गोश्त, चरबी, घी भी खाता हूँ। अच्छे कपड़े भी पहनता हूँ और अपनी बीवियों से भी तअल्लुक रखता हूँ और खुशबू भी इस्ति'माल करता हूँ येह मेरी सुन्नत है और जो मुसलमान मेरी सुन्नत से मुंह मोड़ेगा वोह मेरे तरीके पर और मेरे फरमां बरदारों में से नहीं है।

इस के बा'द सहाबए किराम का एक मज्मअ जम्अ फ़रमा कर आप ने निहायत ही मुअष्विर वा'ज बयान फ़रमाया जिस में आप ने बर मला इरशाद फ़रमाया कि सुन लो ! मैं तुम्हें इस बात का हुक्म नहीं देता कि तुम लोग साधू बन कर राहिबाना जिन्दगी बसर करो। मेरे दीन में गोश्त वगैरा लजीज़ ग़िज़ाओं और औरतों को छोड़ कर और तमाम दुन्यावी कामों से क़त्ए तअल्लुक कर के साधूओं की तरह किसी कुट्टी या पहाड़ की खो में बैठ रहना या ज़मीन में गश्त लगाते रहना हरगिज़ हरगिज़ नहीं है। सुन लो ! मेरी उम्मत की सियाहत जिहाद है इस लिये तुम लोग बजाए ज़मीन में गश्त करते रहने के जिहाद करो और नमाज़ व रोज़ा और हज़ व ज़कात की पाबन्दी करते हुवे खुदा की इबादत करते रहो और अपनी जानों को सख़्ती में न डालो। क्योंकि तुम लोगों से पहले अगली उम्मतों में जिन लोगों ने साधू बन कर अपनी जानों को सख़्ती में डाला, तो **अल्लाह** तआला ने भी उन लोगों पर सख़्त सख़्त अहकाम नाज़िल फ़रमा कर उन्हें सख़्ती में मुब्तला फ़रमा दिया जिन अहकाम को वोह लोग निबाह न सके और बिल आखिर नतीजा येह हुवा कि **अल्लाह** तआला के अहकाम से मुंह मोड़ कर वोह लोग हलाक हो गए।

(تفسير جمل على الجلالين، ج ٤، ص ٢٦٤، ٢٦٥، المائدة: ٨٢)

हुज़ूरे अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के इस वा'ज के बा'द ही सूरए माइदा की मुन्दरिजए ज़ैल आयाते शरीफ़ा नाज़िल हो गई।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَحَرُّوا عَنِ مَآ أَحَلَّ اللَّهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوا  
إِنَّ اللَّهَ لَا يَحِبُّ الْمُعْتَدِينَ ﴿٨٨﴾ وَكُلُوا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ حَلَالًا طَيِّبًا  
وَأَتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُونَ ﴿٨٩﴾

(پ ٤، المائدة: ٨٤-٨٨)



**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** ऐ ईमान वालो ! हराम न ठहराओ वोह सुथरी चीजें कि **अल्लाह** तअला ने तुम्हारे लिये हलाल कीं और हृद से न बढ़ो। बेशक हृद से बढ़ने वाले **अल्लाह** को नापसन्द हैं। और खाओ जो कुछ तुम्हें **अल्लाह** ने रोजी दी हलाल पाकीजा और डरो **अल्लाह** से जिस पर तुम्हें ईमान है।

**दर्से हिदायत :-** इन आयात से सबक मिलता है कि इस्लाम में साधू बन कर ज़िन्दगी बसर करने की इजाज़त नहीं है, उम्दा ग़िज़ाओं और अच्छे कपड़ों को अपने ऊपर हराम ठहरा कर और बीवी बच्चों से क़तए तअल्लुक कर के साधूओं की तरह किसी कुटिया में धूनी रमा कर बैठ रहना, या जंगलों और बियाबानों में चक्कर लगाते रहना, येह हरगिज़ हरगिज़ इस्लामी तरीका नहीं है। ख़ूब समझ लो कि जो मुफ़्त ख़ोर बाबा लोग इस तरह की ज़िन्दगी गुज़ार कर अपनी दुर्वेशी का ढोंग रचा कर कुटियों या मैदानों में बैठे हुवे अपनी बाबाइय्यत का प्रचार कर रहे हैं और जाहिलों को अपने दामे तज़वीर में फांसे हुवे हैं। ख़ूब आंख खोल कर देख लो और कान खोल कर सुन लो कि येह साधूओं का रंग ढंग इस्लामी तरीका नहीं है बल्कि अस्ल और सच्चा इस्लाम वोही है जो रसूले अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की सुन्नत और इन के मुक़द्दस तरीके के मुताबिक़ हो। लिहाज़ा जो शख़्स सुन्नतों का दामन थाम कर ज़िन्दगी बसर कर रहा हो, दर हकीक़त उसी की ज़िन्दगी इस्लामी ज़िन्दगी है और सूफ़ियाए किराम की दुर्वेशाना ज़िन्दगी भी येही है।

ख़ूब समझ लो कि नबुव्वत की सुन्नतों को छोड़ कर ज़िन्दगी का जो तरीका भी इख़्तियार किया जाए वोह दर हकीक़त न इस्लामी ज़िन्दगी है न सूफ़िया की दुर्वेशाना ज़िन्दगी। लिहाज़ा आज कल जिन बाबाओं ने राहिबाना और साधूओं की ज़िन्दगी इख़्तियार कर रखी है उन के इस तर्ज़े अमल को इस्लाम और बुजुर्गी से दूर का भी कोई तअल्लुक नहीं है। मुसलमानों को इस से होशियार रहना चाहिये। और यकीन रखना चाहिये कि येह सब मक्रो कैद का ख़ूबसूरत जाल बिछाए हुवे हैं जिस में भोले भाले अकीदत मन्द मुसलमान फंसे रहते हैं और इस बहाने बाबा लोग

अपना उल्लू सीधा करते रहते हैं। एक सच्ची हकीकत का इज़हार और हक़ का ए'लान हम आलिमों का फ़र्ज़ है जिस को हम अदा कर रहे हैं।

**मानो न मानो आप को येह इख़्तियार है  
हम नेको बद जनाब को समजाए जाएंगे**

### ﴿15﴾ दो बड़े एक छोटा दुश्मन

कुरआने मजीद ने बार बार इस मस्अले पर रोशनी डाली और ए'लान फ़रमाया कि हर काफ़िर मुसलमान का दुश्मन है और कुफ़्फ़ार के दिलो दिमाग़ में मुसलमानों के खिलाफ़ एक ज़हर भरा हुवा है और हर वक़्त और हर मौक़अ पर काफ़िरों के सीने मुसलमानों की अदावत और कीने से आग की भट्टी की तरह जलते रहते हैं लेकिन सुवाल येह है कि कुफ़्फ़ार के तीन मशहूर फ़िर्कों यहूद व मुशरिकीन और नसारा में से मुसलमानों के सब से बड़े और सख़्त तरीन दुश्मन कौन है? और कौन सा फ़िर्का है जिस के दिल में निस्वतन मुसलमानों की दुश्मनी कम है? तो इस सुवाल के जवाब में सूरए माइदह की मुन्दरिजए जैल आयते शरीफ़ नाज़िल हुई है। लिहाज़ा इस पर कामिल ईमान रखते हुवे अपने बड़े और छोटे दुश्मनों को पहचान कर इन सभों से होशियार रहना चाहिये। इरशादे खुदावन्दी है कि

لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِلَّذِينَ آمَنُوا الْيَهُودَ وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا  
لَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُم مَّوَدَّةً لِلَّذِينَ آمَنُوا الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصْرِي ذَلِكَ  
بِأَنَّهُمْ قَسِيصَيْنِ وَرُءُوبَانِ وَأَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ ﴿٨٢﴾ (المائدة: ٨٢)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** ज़रूर तुम मुसलमानों का सब से बढ़ कर दुश्मन यहूदियों और मुशरिकों को पाओगे और ज़रूर तुम मुसलमानों की दोस्ती में सब से ज़ियादा करीब उन को पाओगे जो कहते थे हम नसारा हैं येह इस लिये कि इन में आलिम और दुर्वेश हैं और येह ग़ुरूर नहीं करते।

**दर्से हिदायत :-** इस आयत की रोशनी में गुज़श्ता तवारीख़ के सफ़हात की वरक़ गरदानी कर के अपने ईमान को मजीद इतमीनान बख़्शे कि

यहूदियों और मुशरिकों ने मुसलमानों के साथ जैसी जैसी सख्त अदावतों का मुजाहिदा किया है, ईसाइयों ने इन लोगों से बहुत कम मुसलमानों के साथ बुरा बरताव किया है और यहूदियों और मुशरिकों ने मुसलमानों पर जैसे जैसे जुल्मो सितम के पहाड़ तोड़े हैं, ईसाइयों ने इस दर्जे मुसलमानों पर मजालिम नहीं किये हैं। लिहाजा मुसलमानों को चाहिये कि यहूद व मुशरिकीन को अपना सब से बड़ा दुश्मन तसव्वुर कर के कभी भी इन लोगों पर ए'तिमाद न करें और हमेशा इन बदतरीन दुश्मनों से होशियार रहें और ईसाइयों के बारे में भी येही अक़ीदा रखें कि येह भी मुसलमानों के दुश्मन ही हैं मगर फिर भी इन के दिलों में मुसलमानों के लिये कुछ नर्म गोशे भी हैं। इस लिये येह यहूदियों और मुशरिकों की ब निस्बत कम दरजे के दुश्मन हैं।

येही इस आयते मुबारका का खुलासा व मतलब है जो मुसलमानों के वासिते इन के छोटे बड़े दुश्मनों की पहचान के लिये बेहतरीन शम्प् राह बल्कि रोशनी का मनारा है। (والله تعالى اعلم)

### ﴿16﴾ अम्बिया के क़तिल

कुरआने मजीद ने मुतअद्दिद जगह पर यहूदियों की शरारतों और फ़ितना पर्दाजियों का तफ़्सीली बयान करते हुवे बार बार येह ए'लान फ़रमाया है कि इन ज़ालिमों ने अपने अम्बिया और पैगम्बरों को भी क़त्ल किये बिगैर नहीं छोड़ा, चुनान्वे, इरशाद फ़रमाया कि

إِنَّ الَّذِينَ يَكْفُرُونَ بِآيَاتِ اللَّهِ وَيَقْتُلُونَ النَّبِيَّ بِغَيْرِ حَقٍّ  
يَقْتُلُونَ الَّذِينَ يَأْمُرُونَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ لَبِئْسَ لَهُمْ بَعْدَآبٍ  
الْيَمِيمُ ﴿٢١﴾ (پ ۳، ال عمران: ۲۱)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- वोह जो **अल्लाह** की आयतों से मुन्किर होते और पैगम्बरों को नाहक़ शहीद करते और इन्साफ़ का हुक्म करने वालों को क़त्ल करते हैं उन्हें खुशख़बरी दो दर्दनाक अज़ाब की।

हज़रते अबू उबैदा बिन अल ज़र्राह **رضي الله تعالى عنه** से रिवायत है कि नबिय्ये अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने इरशाद फ़रमाया कि यहूदियों ने

एक दिन में पैतालीस नबियों और एक सो सत्तर सालिहीन को क़त्ल कर दिया था जो इन को अच्छी बातों का हुक्म दिया करते थे। (तारिख़ ابن كثير، ج २، ص ५५)।  
चुनान्वे, हज़रते यह्या व हज़रते ज़करिय्या عليهما السلام की शहादत भी इसी सिलसिले की कड़ियां हैं।

**हज़रते यह्या عليه السلام की शहादत :-** इब्ने असाकिर ने “अल मुस्तस्क्रा फ़िल फ़ज़ाइलिल अक्सा” में हज़रते यह्या عليه السلام की शहादत का वाकिआ इस तरह तहरीर फ़रमाया है कि दिमश्क़ के बादशाह “हद्वद बिन हिदार” ने अपनी बीवी को तीन तलाक़ें दे दी थीं। फिर वोह चाहता था कि वोह बिगैर हलाला उस को वापस कर के अपनी बीवी बना ले। उस ने हज़रते यह्या عليه السلام से फ़तवा तलब किया तो आप ने फ़रमाया वोह अब तुम पर ह़राम हो चुकी है उस की बीवी को येह बात सख़्त ना गवार गुज़री और वोह हज़रते यह्या عليه السلام के क़त्ल के दरपे हो गई। चुनान्वे, उस ने बादशाह को मजबूर कर के क़त्ल की इजाज़त हासिल कर ली और जब कि वोह “मस्जिदे जबरून” में नमाज़ पढ़ रहे थे ब हालते सजदा उन को क़त्ल करा दिया और एक तश्त में उन का सर मुबारक अपने सामने मंगवाया। मगर कटा हुआ सर इस हालत में भी येही कहता रहा कि “तू बिगैर हलाला कराए बादशाह के लिये हलाल नहीं” और इसी हालत में उस पर खुदा का येह अज़ाब नाज़िल हो गया कि वोह औरत सर मुबारक के साथ ज़मीन में धंस गई। (البداية والنهاية، ج २، ص ५५)।

**हज़रते ज़करिय्या عليه السلام का मक्तल :-** यहूदियों ने जब हज़रते यह्या عليه السلام को क़त्ल कर दिया तो फिर उन के वालिदे माजिद हज़रते ज़करिय्या عليه السلام की तरफ़ येह ज़ालिम लोग मुतवज्जेह हुवे कि इन को शहीद कर दें। मगर जब हज़रते ज़करिय्या عليه السلام ने येह देखा तो वहां से हट गए और एक दरख़्त के शिगाफ़ में रूपोश हो गए। यहूदियों ने उस दरख़्त पर आरा चला दिया। जब आरा हज़रते ज़करिय्या عليه السلام पर पहुंचा तो खुदा की वह्य आई कि ख़बरदार ऐ ज़करिया ! अगर आप ने कुछ भी आहो ज़ारी की तो हम पूरी रूए ज़मीन को तहोबाला कर देंगे। और अगर तुम ने सब्र किया तो हम भी इन यहूदियों पर अपना अज़ाब

नाज़िल कर देंगे। चुनान्वे, हज़रते ज़करिया عليه السلام ने सब्र किया और ज़ालिम यहूदियों ने दरख़्त के साथ उन के भी दो टुकड़े कर दिये।

(البدایه والنهایه، ج ۲، ص ۵۵)

इस में इख़िलाफ़ है कि हज़रते यहूया عليه السلام की शहादत का वाकिआ किस जगह पेश आया ? पहला कौल येह है कि “मस्जिदे जबरून” में शहादत हुई। मगर हज़रते सुफ़यान शैरी ने शमर बिन अतिय्या से येह कौल नक़ल किया है कि बैतुल मुक़द्दस में हैकल सुलैमानी और कुरबान गाह के दरमियान आप शहीद किये गए जिस जगह आप से पहले सत्तर अम्बिया عليهم السلام को यहूदी क़त्ल कर चुके थे। (तاريخ ابن كثير، ج ۲، ص ۵۵)

बहर हाल येह सब को मुसल्लम है कि यहूदियों ने हज़रते यहूया عليه السلام को शहीद कर दिया और जब हज़रते ईसा عليه السلام को इन की शहादत का हाल मा'लूम हुवा तो आप ने अलल ए'लान अपनी दा'वते हक़ का वा'ज शुरू कर दिया और बिल आख़िर यहूदियों ने आप के क़त्ल का भी मन्सूबा बना लिया। बल्कि क़त्ल के लिये आप के मकान में एक यहूदी दाख़िल भी हो गया। मगर **الله** तआला ने आप को एक बदली भेज कर आस्मान पर उठा लिया जिस का मुफ़स्सल वाकिआ हमारी इसी किताब के अगले बाब “अजाइबुल कुरआन” में मज़कूर है।  
**दर्से हिदायत :-** हज़रते यहूया और हज़रते ज़करिया عليهما السلام की शहादत के वाकिआत और हालात से अगर्चे हकीक़त में निगाहें बहुत से नताइज हासिल कर सकती हैं। ताहम चन्द बातें खुसूसी तौर पर काबिले तवज्जोह हैं :

﴿1﴾ दुन्या में इन यहूदियों से ज़ियादा षक़ियुल क़ल्ब और बद बख़्त कोई और नहीं हो सकता जो हज़रते अम्बिया عليهم السلام को नाहक़ क़त्ल करते थे। हालांकि येह बरगुज़िदा और मुक़द्दस हस्तियां न किसी को सताती थीं न किसी के माल व दौलत पर हाथ डालती थीं बल्कि बिगैर किसी उजरत व इवज के लोगों की इस्लाह कर के उन्हें फ़लाह व सआदते दारैन की इज़्जतों से सरफ़राज़ करती थीं। चुनान्वे, हज़रते अबू उबैदा सहाबी رضي الله تعالى عنه ने हुज़ूरे अक्दस صلی الله تعالى علیه وآله وسلم से दरयाफ़्त किया कि कियामत के दिन सब से बड़े और ज़ियादा अज़ाब का मुस्तहिक् कौन होगा ? तो आप ने इरशाद फ़रमाया कि

رَجُلٌ قَتَلَ نَبِيًّا أَوْ مَنَ أَمَرَ بِالْمَعْرُوفِ وَنَهَى عَنِ الْمُنْكَرِ.

वोह शख्स जो किसी नबी को या ऐसे शख्स को क़त्ल करे जो भलाई का हुक्म देता हो और बुराई से रोकता हो ।

(तफ़सीर ابن كثير، ج २، ص २२، प ३، آل عمران: २१)

बहर हाल ज़ालिम यहूदियों ने अपनी शकावत से खुदा के नबियों के साथ जो ज़ालिमाना सुलूक किया और जिस बे दर्दी के साथ इन मुक़द्दस नुफूस का खून बहाया अक्वामे आलम में इस की मिषाल नहीं मिल सकती । इस लिये खुदावन्दे क़हहार व जब्बार ने अपने क़हरो ग़ज़ब से इन ज़ालिमों को दोनों ज़हान में मलज़न कर दिया । लिहाज़ा हर मुसलमान पर लाज़िम है कि इन मलज़नों से हमेशा नफ़रत व दुश्मनी रखे ।

﴿2﴾ बनी इस्राईल चूँकि मुख़लिफ़ क़बाइल में तक्सीम थे इस लिये इन के दरमियान एक ही वक़्त में मुतअद्दिद नबी और पैग़म्बर मबरूज़ होते रहे और इन सब नबियों की ता'लीमात की बुन्याद हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की किताब तौरेत ही रही और इन सब अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की हैषिय्यत हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام के नाइबीन की रही ।

﴿3﴾ उ-लमाए किराम को अपनी जिन्दगी की आख़िरी सांस तक हक़ पर डट कर इस की तब्लीग़ करते रहना चाहिये और हक़ के मुआमले में अपनी जान की भी परवाह नहीं करनी चाहिये । जैसा कि आप ने पढ़ लिया कि सर कट जाने के बा'द भी हज़रते यह्या عَلَيْهِ السَّلَام के कटे हुवे सर से येही आवाज़ आती रही कि तीन तलाकों के बा'द बिगैर हलाला कराए हुवे औरत से उस का शोहर दोबारा निकाह नहीं कर सकता । (والله تعالى اعلم)

### ﴿17﴾ मुनाफ़िकों की एक साजिश

जंगे उहुद का मुकम्मल और मुफ़स्सल बयान तो हम अपनी किताब “सीरतुल मुस्तफ़ा صَلَّی اللّهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم” में तहरीर कर चुके हैं मगर हम यहां तो सिर्फ़ मुनाफ़िकों की एक ख़तरनाक साजिश का ज़िक्र कर रहे हैं जो जंगे उहुद के दिन इन बदबख़्तों ने रसूले खुदा صَلَّی اللّهُ تَعَالَى عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ख़िलाफ़ की थी । जिस पर कुरआने मजीद ने रोशनी डाली है और जो बहुत ही काबिले इब्रत और निहायत ही नसीहत आमोज़ है और वोह येह

है कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ जब मदीने से बाहर जंग के लिये निकले तो एक हजार का लश्कर परचमे नबुव्वत के नीचे था। इस लश्कर में तीन सो मुनाफ़ि़कीन भी अब्दुल्लाह बिन उबय्य की सरकारदगी में हम रिकाब थे। मुनाफ़ि़कीन पहले ही कुफ़ारे मक्का के साथ येह साजिश कर चुके थे कि मुख़्लिस मुसलमानों को बुज़दिल बनाने के लिये येह तरी़का इख़्तियार करेंगे कि शुरुअ में मुसलमानों के लश्कर के साथ निकलेंगे फिर मुसलमानों से कट कर मदीने वापस आ जाएंगे। चुनान्चे, मुनाफ़ि़कों का सरदार येह बहाना बना कर लश्करे इस्लाम से कट कर जुदा हो गया कि जब मुहम्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) ने हम तजरिबा कारों की बात नहीं मानी कि मदीने में रह कर मदा-फ़आना जंग करनी चाहिये बल्कि उल्टा नौजवानों की बात मान कर मदीने से निकल पड़े तो हम को क्या ज़रूरत है कि हम अपनी जानों को हलाकत में डालें। मगर الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ कि मुनाफ़ि़कों का मक्सद पूरा नहीं हुवा क्यूंकि मुख़्लिस मुसलमानों पर इन लोगों के लश्करे इस्लाम से जुदा हो जाने का मुतलक़न कोई अषर नहीं पड़ा। अलबत्ता मुसलमानों के दो क़बीले “बनू सलमा” व “बनू हारिषा” में कुछ थोड़ी सी बद दिली और बुज़दिली पैदा हो चुकी थी मगर मुख़्लिस मुसलमानों के जोशे जिहाद को देख कर इन दोनों क़बीलों की भी हिम्मत बुलन्द हो गई और येह लोग भी षाबित क़दम रह कर पूरे जां निषाराना ज़बाते सरफ़रोशी के साथ मुशरिकीन के दल-बादल लश्करों से टकरा गए और आखिरी दम तक परचमे नबुव्वत के ज़ेरे साया मुशरिकों से जंग करते रहे इस वाकिए का ज़िक्र करते हुवे कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया कि

وَاِذْ عَدُوَّتْ مِنْ اَهْلِكَ ثَبَوْنِ الْمُؤْمِنِينَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ وَاللّٰهُ  
سَيِّئٌ عَلَيْهِمْ ۙ اِذْ هَمَّتْ طَّآئِفَتْنِ مِنْكُمْ اَنْ تَفْشَلُوْا وَاللّٰهُ وَلِيُّهَا ۗ وَ  
عَلَى اللّٰهِ فَاَيُّتُوْكَلِّ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٢١﴾ (پ ۴، آل عمران: ۱۲۱- ۱۲۲)

तर्जमए कन्ज़ुल इमान :- और याद करो ऐ महबूब जब तुम सुब्ह को अपने दौलत खाने से बर आमद हुवे मुसलमानों को लड़ाई के मोरचों पर काइम करते और अब्बाह सुनता जानता है जब तुम में के दो गुरौहों का



इरादा हुवा कि नामर्दी कर जाएं और **अल्लाह** उन का संभालने वाला है और मुसलमानों को **अल्लाह** ही पर भरोसा चाहिये ।

अल गरज जंगे उहुद में मुनाफ़िकों की येह ख़तरनाक साज़िश और ख़ौफ़नाक तदबीर बिल्कुल नाकाम हो कर रह गई और بِحَمْدِ اللَّهِ تَعَالَى अगर्चे सत्तर मुसलमानों ने जामे शहादत नोश किया लेकिन आख़िर में फ़ट्हे मुबीन ने पैग़म्बर के क़दमे नबुव्वत का बोसा लिया और मुशरिकीन नाकाम हो कर मैदाने जंग छोड़ कर अपने घरों को चले गए और परचमे इस्लाम बुलन्द ही रहा ।

**दर्से हिदायत :-** इस वाकिए से सबक़ मिलता है कि अगर मोअमिनीन इख़्लासे निय्यत के साथ मुत्तहिद हो कर मैदाने जंग में काफ़िरो के साथ जवां मर्दी और उलूल अज़्मी के साथ जिहाद में डटे रहें तो मुनाफ़िकों और काफ़िरो की हर साज़िश व तदबीर को खुदावन्दे कुदूस नाकाम बना देता है मगर येह हकीक़त बड़ी ही सदाक़त मआब है कि

**बराए फ़तह पहली शर्त है षाबित क़दम रहना  
जमाअत को बहम रखना, जमाअत का बहम रहना**

**﴿18﴾ हज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام**

येह हज़रते हज़क़ील عَلَيْهِ السَّلَام के ख़लीफ़ा और जानशीन हैं । बेशतर मुअर्रिख़ीन का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि हज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام हज़रते हारून عَلَيْهِ السَّلَام की नस्ल से हैं और इन का नसब नामा येह है । इल्यास बिन यासीन बिन फ़ख़ास बिन ऐज़रा बिन हारून (عَلَيْهِ السَّلَام) । हज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام की बिअूषत के मुतअल्लिक़ मुफ़स्सरीन व मुअर्रिख़ीन का इत्तिफ़ाक़ है कि वोह शाम के बाशिन्दों की हिदायत के लिये भेजे गए और “बअ़ल-बक़” का मशहूर शहर उन की रिसालत व हिदायत का मर्कज़ था ।

इन दिनों “बअ़ल-बक़” शहर पर “अरजब” नामी बादशाह की हुकूमत थी जो सारी क़ौम को बुत परस्ती पर मजबूर किये हुवे था और इन लोगों का सब से बड़ा बुत “बअ़ल” था जो सोने का बना हुवा था और बीस गज़ लम्बा था और उस के चार चेहरे बने हुवे थे और चार सो

खुदाम उस बुत की खिदमत करते थे जिन को सारी क़ौम बेटों की तरह मानती थी और उस बुत में से शैतान की आवाज़ आती थी जो लोगों को बुत परस्ती और शिर्क का हुक्म सुनाया करता था। इस माहोल में हज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام इन लोगों को तौहीद और खुदा परस्ती की दा'वत देने लगे मगर क़ौम इन पर ईमान नहीं लाई। बल्कि शहर का बादशाह "अरजब" इन का दुश्मने जा बन गया और उस ने हज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام को क़त्ल कर देने का इरादा कर लिया। चुनान्चे, आप शहर से हिजरत फ़रमा कर पहाड़ों की चोटियों और ग़ारों में रूपोश हो गए और पूरे सात बरस तक ख़ौफ़ व हरास के आलम में रहे और जंगली घासों और जंगल के फूलों और फलों पर ज़िन्दगी बसर फ़रमाते रहे। बादशाह ने आप की गिरफ़्तारी के लिये बहुत से जासूस मुक़र्रर कर दिये थे। आप ने मुश्किलात से तंग आ कर येह दुआ मांगी कि इलाही ! मुझे इन ज़ालिमों से नजात और राहत अता फ़रमा तो आप पर वही आई कि तुम फुलां दिन फुलां जगह पर जाओ और वहां जो सुवारी मिले बिला ख़ौफ़ उस पर सुवार हो जाओ। चुनान्चे, उस दिन उस मक़ाम पर आप पहुंचे तो एक सुख़ रंग का घोड़ा खड़ा था। आप उस पर सुवार हो गए और घोड़ा चल पड़ा तो आप के चचा ज़ाद भाई हज़रते "अल युसअ" عَلَيْهِ السَّلَام ने आप को पुकारा और अर्ज़ किया कि अब मैं क्या करूं ? तो आप ने अपना कम्बल उन पर डाल दिया। येह निशानी थी कि मैं ने तुम को बनी इस्राईल की हिदायत के लिये अपना ख़लीफ़ा बना दिया। फिर **अल्लाह** तआला ने आप को लोगों की नज़रों से ओझल फ़रमा दिया और आप को खाने और पीने से बे नियाज़ कर दिया और आप को **अल्लाह** तआला ने फ़िरिश्तों की जमाअत में शामिल फ़रमा लिया और हज़रते अल युसअ عَلَيْهِ السَّلَام निहायत अज़म व हिम्मत के साथ लोगों की हिदायत करने लगे। चुनान्चे, **अल्लाह** तआला ने हर दम हर क़दम पर इन की मदद फ़रमाई और बनी इस्राईल आप पर ईमान लाए और आप की वफ़ात तक ईमान पर काइम रहे।

हज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام के मो'जिज़ात :- **अल्लाह** तआला ने तमाम पहाड़ों और हैवानात को आप के लिये मुसख़्ख़र फ़रमा दिया और

आप को सत्तर अम्बिया की ताक़त बख़्श दी। ग़ज़ब व जलाल और कुव्वत व ताक़त में हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का हम पल्ला बना दिया। और रिवायात में आया है कि हज़रते इल्यास और हज़रते ख़िज़्र (عليهما السلام) हर साल के रोज़े बैतुल मुक़द्दस में अदा करते हैं और हर साल हज़ के लिये मक्कए मुकर्रमा जाया करते हैं और साल के बाकी दिनों में हज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام तो जंगलों और मैदानों में ग़श्त फ़रमाते रहते हैं और हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام दरयाओं और समन्दरों की सैर फ़रमाते रहते हैं और येह दोनों हज़रात आख़िरी ज़माने में वफ़ात पाएंगे जब कि कुरआने मजीद उठा लिया जाएगा।

हज़रते अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से एक हदीष मरवी है कि हम लोग एक जिहाद में रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के साथ थे तो रास्ते में एक आवाज़ आई कि या **अल्लाह !** तू मुझ को हज़रते मुहम्मद صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की उम्मत में बना दे जो उम्मत मर्हूमा और मुस्तजाबुद्दा'वात है तो हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि ऐ अनस ! तुम इस आवाज़ का पता लगाओ तो मैं पहाड़ में दाख़िल हुवा, तो अचानक येह नज़र आया कि एक आदमी निहायत सफ़ेद कपड़ों में मल्बूस लम्बी दाढ़ी वाला नज़र आया जब उस ने मुझे देखा तो पूछा कि तुम रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सहाबी हो ? तो मैं ने अर्ज़ किया कि जी हां ! तो उन्होंने ने फ़रमाया कि तुम जा कर हुज़ूर से मेरा सलाम अर्ज़ करो और येह कह दो कि आप के भाई इल्यास (عَلَيْهِ السَّلَام) आप से मुलाक़ात का इरादा रखते हैं। चुनान्चे, मैं ने वापस आ कर हुज़ूर से सारा मुआमला अर्ज़ किया तो आप मुझ को हमराह ले कर रवाना हुवे और जब आप उन के करीब पहुंच गए मैं पीछ हट गया। फिर दोनों साहिबान देर तक गुफ़्तगू फ़रमाते रहे और आस्मान से एक दस्तरख़्वान उतर पड़ा तो हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने मुझे बुला भेजा और मैं ने दोनों हज़रात के साथ में खाना खाया। जब हम लोग खाने से फ़ारिग़ हो चुके तो आस्मान से एक बदली आई और वोह हज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام को उठा कर आस्मान की तरफ़ ले गई और मैं उन के सफ़ेद कपड़ों को देखता ही रह गया।

(तफ़सीर صावय, ज ५, ص १८९, १, २३, الضّفت: १२३)

**हज़रते इल्यास और कुरआन :-** कुरआने मजीद में हज़रते इल्यास عَلَيْهِ السَّلَام का तज़क़िरा दो जगह आया है सूरए अन्आम में और सूरए الصُّفّت में। सूरए अन्आम में तो सिर्फ़ इन को अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की फ़ेहरिस्त में शुमार किया है और सूरए الصُّفّت में आप की बिअषत और कौम की हिदायत के मुतअल्लिक़ मुख़्तसर तौर पर बयान फ़रमाया है।

चुनान्वे, सूरए अन्आम में है :

وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِ دَاوُدَ وَسُلَيْمَانَ وَأَيُّوبَ وَيُوسُفَ وَمُوسَى وَهَارُونَ ۚ  
كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٨٦﴾ وَذَكَرْنَا يُوحْيَىٰ وَعِيسَىٰ وَالْيَاسَ ۚ  
كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٧﴾ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيُوسُفَ وَلُوطًا ۚ وَكُلًّا فَضَّلْنَا  
عَلَى الْعَالَمِينَ ﴿٨٨﴾ (پ ۷، الانعام: ۸۴ تا ۸۶)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और उस की अवलाद में से दावूद और सुलैमान और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा और हारून को और हम ऐसा ही बदला देते हैं नेक़ूकारों को और ज़क़रिय्या और यह्या और ईसा और इल्यास को येह सब हमारे कुर्ब के लाइक़ हैं। और इस्माईल और युसअ और यूनस और लूत को और हम ने हर एक को उस के वक़्त में सब पर फ़ज़ीलत दी।

और सूरए الصُّفّت में इस तरह इरशाद फ़रमाया कि

وَإِنَّ الْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِينَ ﴿٨٦﴾ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿٨٧﴾  
أَتَدْعُونَ بَعْلًا وَتَذَرُونَ أَحْسَنَ الْخَالِقِينَ ﴿٨٨﴾ اللَّهُ رَبُّكُمْ وَرَبُّ  
أَبَائِكُمُ الْأَوَّلِينَ ﴿٨٩﴾ فَكَذَّبُوهُ فَأَنَّهُم مُّكْصَرُونَ ﴿٩٠﴾ إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ  
الْمُخْلِصِينَ ﴿٩١﴾ وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ ﴿٩٢﴾ سَلَامٌ عَلَىٰ آلِ يَاسِينَ ﴿٩٣﴾  
كَذَلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ﴿٩٤﴾ إِنَّهُم مِّنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ ﴿٩٥﴾

(پ ۲३, الصفات: ۱۲۳ تا ۱۳۲)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और बेशक इल्यास पैग़म्बरों से है। जब उस ने अपनी कौम से फ़रमाया क्या तुम डरते नहीं क्या बअल को पूजते हो और छोड़ते हो सब से अच्छा पैदा करने वाले **اللّٰهُ** को जो ख़ब है तुम्हारा

और तुम्हारे अगले बाप दादा का फिर उन्होंने ने उसे झुटलाया तो वोह ज़रूर पकड़े आएंगे मगर **अल्लाह** के चुने हुवे बन्दे और हम ने पिछलों में उस की घना बाकी रखी। सलाम हो इल्यास पर बेशक हम ऐसा ही सिला देते हैं नेकों को बेशक वोह हमारे आ'ला दरजे के कामिलुल ईमान बन्दों में है।

हज़रते इल्यास **عَلَيْهِ السَّلَام** और इन की क़ौम का वाकिआ अगर्चे कुरआने मजीद में बहुत ही मुख़ासर मज़कूर है ताहम इस से येह सबक़ मिलता है कि यहूदियों की ज़ेह्निय्यत इस क़दर मस्ख़ हो गई थी कि कोई ऐसी बुराई नहीं थी जिस के करने पर येह लोग हरीस न हों बा वुजूद येह कि इन में हिदायत के लिये मुसलसल अम्बियाए किराम तशरीफ़ लाते रहे मगर फिर भी बुत परस्ती, कवाकब परस्ती और ग़ैरुल्लाह की इबादत इन लोगों से न छूट सकी। फिर येह लोग आ'ला दरजे के झूटे, बद अहद और रिश्वत ख़ोर भी रहे और **अल्लाह** तआला के मुक़द्दस नबियों को ईज़ाएं देना और इन को क़त्ल कर देना इन ज़ालिमों का महबूब मशग़ला रहा है। बहर हाल इन ज़ालिमों के वाकिआत से जहां इन लोगों की बद बख़्ती व कजरवी और मुजरिमाना शकावत पर रोशनी पड़ती है, वहीं हम लोगों को येह नसीहत व इब्रत भी हासिल होती है कि अब जब कि नबुव्वत का सिलसिला ख़त्म हो चुका है तो हमारे लिये बेहद ज़रूरी है कि खुदा के आख़िरी पैग़ाम या'नी इस्लाम पर मज़बूती से काइम रह कर यहूदियों के ज़ालिमाना तरीकों की मुख़ालफ़त करें और कुफ़र की तरफ़ से पहुंचने वाली तक्लीफ़ों और मुसीबतों पर सब्र कर के खुदा के मुक़द्दस नबियों के उस्वए हसना की पैरवी करें। (والله تعالى اعلم)

### ﴿19﴾ जंगे बद्र की बारिश

जंगे बद्र का मुफ़स्सल हाल तो हम अपनी किताब “सीरतुल मुस्तफ़ा **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ**” में मुकम्मल लिख चुके हैं यहां जंगे बद्र में नुस्रते इलाही ने बारिश की सूरत में जो तजल्ली फ़रमाई जिस में मैदाने जंग का नक्शा ही बदल गया, इस का हम एक जल्वा दिखा रहे हैं।

वाक़िआ़ येह हुवा कि रसूले अकरम ﷺ तीन सो तेरह सहाबए किराम की जमाअत को हमराह ले कर मक़ामे बदर में तशरीफ़ ले गए और बदर के क़रीब पहुंच कर मदीने की जानिब वाले रूख़ “अदवतुहुन्या” पर खैमाज़न हो गए और मुशरिकीन आगे बढ़े तो बदर पहुंच कर मदीने से दूर मक्का की जानिब वाले “उदवतुल क़सवा” पर उतरे और महाज़े जंग का नक्शा इस तरह बना कि मुशरिकीन और मुसलमान बिल्कुल आमने सामने थे मगर मुसलमानों का महाज़े जंग इस क़दर रैतिला था कि इन्सानों और घोड़ों दोनों के क़दम रैत में धंसे जा रहे थे और वहां चलना फिरना दुश्वार था और मुशरिकीन का महाज़े जंग बिल्कुल हमवार और पुख़्ता फ़र्श की तरह था। ग़रज़ दुश्मन ता’दाद में तीन गुने से ज़ियादा, सामाने जंग से पूरी तरह मुकम्मल, रसल व रसाइल में हर तरह मुतमइन थे। फिर मज़ीद बरआं इन का महाज़े जंग भी अपने महूले वुकूअ के लिहाज़ से निहायत उम्दा था। इन सहूलतों के इलावा पानी के सब कुंवें भी दुश्मनों ही के कब्जे में थे। इस लिये मुसलमानों को पानी की बेहद तकलीफ़ थी, खुद पीने के लिये कहां से पानी लाएं ? जानवरों को कैसे सैराब करें ? वुजू और गुस्ल की क्या सूरत हो ? ग़रज़ सहाबए किराम इन्तिहाई फ़िक्रमन्द और परेशान थे। इस मौक़अ पर शैतान ने मुसलमानों के दिलों में वस्वसा डाल दिया कि ऐ मुसलमानो ! तुम गुमान करते हो कि तुम हक़ पर हो और तुम में **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) का रसूल भी मौजूद है और तुम **अल्लाह** वाले हो और हाल येह है कि मुशरिकीन पानी पर काबिज़ हैं और तुम बिगैर वुजू व गुस्ल के नमाज़ें पढ़ते हो और तुम और तुम्हारे जानवर प्यास से बे ताब हो रहे हैं।

इस मौक़अ पर नागहां नुस्ते आस्मानी ने इस तरह जल्वा सामानी फ़रमाई कि ज़ोरदार बारिश हो गई जिस ने मुसलमानों के लिये रैतीली ज़मीन को जमा कर पुख़्ता फ़र्श की तरह हमवार बना दिया और नशैब की वजह से होज़ नुमा गढ़ों में पानी का ज़ख़ीरा मुहय्या कर दिया और दुश्मनों की ज़मीन को कीचड़ वाली दल-दल बना दिया जिस पर काफ़िरों का चलना फिरना दुश्वार हो गया और मुसलमान इन पानी के ज़ख़ीरों की

वजह से कुंवों से बे नियाज़ हो गए और मुसलमानों के दिलों से शैतानी वस्वसा दूर हो गया और लोग मुतमइन हो गए ।

**अल्लाह** तआला ने कुरआने मजीद में इस अजीबो ग़रीब बारिश की मन्ज़र कशी इन अल्फ़ाज़ में फ़रमाई है कि

وَيَنْزِلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً لِّيُطَهِّرَ كُمْ بِهِ وَيُذْهِبَ عَنْكُمُ رَجَزَ الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ عَلَى قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ ۝ (پ ۹، الانفال: ۱۱)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और आस्मान से तुम पर पानी उतारा कि तुम्हें इस से सुथरा कर दे और शैतान की नापाकी तुम से दूर फ़रमा दे और तुम्हारे दिलों की ढारस बन्धाए और इस से तुम्हारे क़दम जमा दे ।

इस आयत में **अल्लाह** तआला ने बद्र में इस नागहानी बारिश के चार फ़ाइदे बयान फ़रमाए हैं :

﴿1﴾ ताकि जो बे वुजू और बे गुस्ल हों वोह वुजू और गुस्ल कर के पाको साफ़ और सुथरे हो जाएं ।

﴿2﴾ मुसलमानों के दिलों से शैतानी वस्वसे दूर हो जाए ।

﴿3﴾ मुसलमानों के दिलों को ढारस मिल जाए कि हम हक़ पर हैं और

**अल्लाह** तआला ज़रूर हमारी मदद फ़रमाएगा ।

﴿4﴾ महाजे जंग की रैतीली ज़मीन इस काबिल हो जाए कि इस पर क़दम जम सकें अल ग़रज़ जंगे बद्र की येह बारिश मुसलमानों के लिये बाराने रहमत और कुफ़ार के लिये सामाने ज़हमत बन गई ।

**दर्से हिदायत :-** जंगे बद्र में मुसलमानों को जिन मुश्किल हालात का सामना था ज़ाहिर है कि अक्ले इन्सानी आलमे अस्बाब पर नज़र करते हुवे इस के सिवा और क्या फ़ैसला कर सकती थी कि वोह इस जंग को टाल दें । मगर सादिकुल ईमान मुसलमानों ने अपने रसूल की मरज़ी पा कर हर किस्म की बे सरो सामानी के बा वुजूद हक़ व बातिल की मा'रिका आराई के लिये वालिहाना और फ़िदा काराना जज़्बात के साथ खुद को पेश कर दिया और निहायत षाबित क़दमी और उलूल अज़्मी के साथ मैदाने जंग में कूद पड़े तो **अल्लाह** तआला ने इन मुसलमानों की किस किस तरह इमदाद व



नुस्त फ़रमाई, इस पर एक नज़र डाल कर खुदावन्दे कुहूस के फ़ज़ले अज़ीम की जल्वा सामानियों का नज़ारा कीजिये और येह देखिये कि **अल्लाह** तआला ने इस जंग में किस किस तरह मुसलमानों की मदद फ़रमाई ।

❶ मुसलमानों की निगाह में दुश्मनों की ता'दाद अस्ल ता'दाद से कम नज़र आई ताकि मुसलमान मरऊब न हों और मुशरिकीन की नज़रों में मुसलमान मुठ्ठी भर नज़र आएँ ताकि वोह जंग से जी न चुराएँ और हक़ व बातिल की जंग टल न जाए । (अन्फ़ाल)

❷ और एक वक़्त में मुसलमान मुशरिकीन की नज़र में दुगने नज़र आए ताकि मुशरिकीन मुसलमानों से शिकस्त खा जाएँ । (आले इमरान)

❸ पहले मुसलमानों की मदद के लिये एक हजार फ़िरिशते भेजे गए । फिर फ़िरिशतों की ता'दाद बढ़ा कर तीन हजार कर दी गई । फिर फ़िरिशतों की ता'दद पांच हजार हो गई । (आले इमरान)

❹ मुसलमानों पर ऐन मा'रिके के वक़्त थोड़ी देर के लिये गुनूदगी और नींद तारी कर दी गई जिस के चन्द मिनट बा'द इन की बेदारी ने इन में एक नई ताज़गी और नई रूढ़ पैदा कर दी । (अन्फ़ाल)

❺ आस्मान से पानी बरसा कर मुसलमानों के लिये रैतीली ज़मीन को पुख़्ता ज़मीन की तरह बना दिया और मुशरिकीन के महाज़े जंग की ज़मीन को कीचड़ और फिस्लन वाली दल-दल बना दिया । (अन्फ़ाल)

❻ नतीजए जंग येह हुवा कि ज़रा देर में मुशरिकीन के बड़े बड़े नामी गिरामी पहलवान और जंगजू शहसुवार मारे गए । चुनान्चे, सत्तर मुशरिकीन क़त्ल हुवे और सत्तर गिरिफ़्तार हो कर कैदी बनाए गए और मुशरिकीन का लश्कर अपना सारा सामान छोड़ कर मैदाने जंग से भाग निकला और येह सारा सामान मुसलमानों को माले ग़नीमत में मिल गया ।

मुसलमान अगर्वे खुदावन्दे कुहूस की मज़कूरा बाला इमदाद और उस के फ़ज़ल से फ़त्हयाब हुवे, ताहम इस जंग में चौदह मुजाहिदीने इस्लाम ने भी जामे शहादत नोश किया ।

(ज़रफ़ानि, ज २, व २८०)

येह वाकिआ हमें मुतनब्बेह कर रहा है कि अगर मुसलमान खुदा पर भरोसा कर के हक़ व बातिल की जंग में षाबित क़दमी और पा मर्दी के साथ डटे रहें तो ता'दाद की कमी और बे सरो सामानी के बा वुजूद ज़रूर खुदा की मदद उतर पड़ेगी और मुसलमानों को फ़तह नसीब होगी। येह रब्बुल इज़्ज़त के फ़ज़्लो करम का वोह दस्तूर है कि जिस में **ان شاء الله تعالى** कियामत तक कोई तब्दीली नहीं होगी। बस शर्त येह है कि मुसलमान न बदल जाएं, और इन के इस्लामी ख़साइल व किरदार में कोई तब्दीली न हो। वरना खुदा का दस्तूर तो न बदला है न कभी बदलेगा उस का वा'दा है कि

**فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللَّهِ تَبْدِيلًا** (प २२, الفاطر: २३)

या'नी हरगिज़ हरगिज़ खुदा के दस्तूर में कोई रद्दो बदल नहीं होगा। (والله تعالى اعلم)

## ﴿20﴾ जंगे हुनैन

फ़ते मक्का के बा'द मुशरिकीने अरब की शौकत का करीब करीब ख़ातिमा हो गया और लोग जूक़ दर जूक़ इस्लाम में दाख़िल होने लगे। येह देख कर “हवाजुन” और षकीफ़” के दोनों क़बाइल के सरदारों का इजतिमाअ हुवा, और उन्होंने ने आपस में मश्वरा किया कि मुहम्मद (ﷺ) अपनी क़ौम “कुरैश” को मग़लूब कर के मुतमइन हो गए हैं। लिहाज़ा अब हमारी बारी है तो क्यूं न हम पेश क़दमी कर के हम्ला आवर हो कर इन मुसलमानों का क़त्ल क़त्ल कर के रख दें। चुनान्वे, हवाजुन और षकीफ़ के दोनों क़बाइल ने मालिक बिन औफ़ नज़री को अपना बादशाह बना कर मुसलमानों से जंग की तय्यारी शुरू कर दी। येह ख़बर पा कर 10 शव्वाल सि. 8 हि. मुताबिक़ फ़रवरी सि. 630 ई. को दस हज़ार मुहाजिरीन व अन्सार और दो हज़ार मक्का के नौ मुस्लिम और अस्सी वोह मुशरिकीन जो इस्लाम क़बूल न करने के बा वुजूद अपनी ख़्वाहिश से मुसलमानों के रफ़ीक़ बन गए। कुल तक़रीबन बारह हज़ार आदमियों का लश्कर साथ ले कर नबिय्ये अकरम (ﷺ) “मक़ामे हुनैन” पहुंच गए। जब दुश्मन के मुक़ाबले में सफ़ आराई का वक़्त आया तो आप ने मुहाजिरीन का परचम हज़रते

अली رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को दिया और अन्सार में बनी खज़रज का अलमबरदार हज़रते हब्बाब बिन मुन्ज़र رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को बनाया और औस का झन्डा हज़रते उसैद बिन हुज़ैर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को इनायत फ़रमाया और खुद नबिय्ये अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ब नफ़से नफ़ीस बदन पर हथियार सजा कर डबल जिर्ह पहन कर और सरे अन्वर पर आहिनी टोपी रख कर अपने खच्चर पर सुवार हुवे और इस्लामी फ़ौज की कमान संभाल ली।

मुसलमानों के दिलों में अपने लश्कर की अकषरिय्यत देख कर कुछ घमन्ड पैदा हो गया यहां तक कि बा'ज लोगों की ज़बान से बिगैर إِنْ شَاءَ اللَّهُ कहे येह लफ़ज़ निकल गया कि आज हमारी कुव्वत को कोई शिकस्त नहीं दे सकता। मुसलमानों का अपनी फ़ौज की अददी अकषरिय्यत और असकरी ताक़त पर भरोसा कर के फ़ख़्र करना खुदावन्दे तआला को पसन्द नहीं आया लिहाज़ा मुसलमानों पर खुदा की तरफ़ से येह ताज़ियानए इब्रत लगा कि जब जंग शुरू हुई तो अचानक दुश्मन की इन टोलियों ने जो गोरीला जंग के लिये पहाड़ों की मुख़लिफ़ घाटियों में घात लगाए बैठी थी इस ज़ोरो शोर के साथ तीर अन्दाज़ी शुरू कर दी कि मुसलमान तीरों की बारिश से बद हवास हो गए और इस नागहानी तीर बारानी की बोछाड़ से उन की सफ़ेद दरहम बरहम हो गई और थोड़ी ही देर में मुसलमानों के क़दम उखड गए और हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और चन्द मुहाजिरीन व अन्सार के सिवा तमाम लश्कर मैदाने जंग से फ़रार हो गया।

इस ख़तरनाक सूरते हाल और नाजुक घड़ी में हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपने खच्चर पर सुवार बराबर आगे बढ़ते चले जा रहे थे और रज्ज़ का येह शे'र बुलन्द आवाज़ से पढ़ रहे थे

انا النبي لا كذب انا ابن عبدالمطلب

या'नी मैं नबी हूँ येह कोई झूटी बात नहीं, मैं अब्दुल मुत्तलिब का फ़रज़न्द हूँ।

बिल आख़िर हुज़ूर के हुक्म पर हज़रते अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने ब आवाजे बुलन्द भागे हुवे मुसलमानों को पुकारा और

رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ कह कर ललकारा। हज़रते अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ

की येह ललकार और पुकार सुन कर तमाम जां निषार मुसलमान पलट पड़े और परचमे नबुव्वत के नीचे जम्अ हो कर ऐसी जां निषारी के साथ दादे शुजाअत देने लगे कि दम ज़दन में मैदाने जंग का नक्शा ही पलट गया और येह नतीजा निकला कि शिकस्त के बा'द मुसलमान फ़तहमन्द हो गए और परचमे इस्लाम सर बुलन्द हो गया, हज़ारों कुफ़ार गिरिफ़्तार हो गए और बहुत से तल्वार का लुक़्मा बन गए और बे शुमार माले ग़नीमत मुसलमानों के हाथ आया और कुफ़ारे अरब की ताक़त व शौक़त का जनाज़ा निकल गया ।

जंगे हुनैन में मुसलमानों के अपनी कषरते ता'दाद पर गुरूर के अन्जाम में शिकस्त और फिर फ़तह व नुस्त का हाल खुदावन्दे जुल जलाल ने कुरआने करीम में इन अल्फ़ाज़ से ज़िक्र फ़रमाया है कि

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ فِي مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ ۖ وَيَوْمَ حُنَيْنٍ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ  
كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمْ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ  
ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُدْبِرِينَ ۖ ثُمَّ أَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى  
الْمُؤْمِنِينَ وَأَنْزَلَ جُنُودًا لَمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَذَلِكَ  
جَزَاءُ الْكَافِرِينَ ۖ (پ ۱۰، التوبه: ۲۵)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** बेशक **अल्लाह** ने बहुत जगह तुम्हारी मदद की और हुनैन के दिन जब तुम अपनी कषरत पर इतरा गए थे तो वोह तुम्हारे कुछ काम न आई और ज़मीन इतनी वसीअ हो कर तुम पर तंग हो गई फिर तुम पीठ दे कर फिर गए फिर **अल्लाह** ने अपनी तस्कीन उतारी अपने रसूल पर और मुसलमानों पर और वोह लश्कर उतारे जो तुम ने न देखे और काफ़ि़रों को अज़ाब दिया और मुन्किरों की येही सज़ा है ।

जंगे हुनैन का येह वाकिआ दलील है कि मुसलमानों को मैदाने जंग में फ़तह व कामरानी फ़ौजों की कषरत और सामाने जंग की फ़िरावानी से नहीं मिलती । बल्कि फ़तह व नुस्त का दारो मदार दर हकीक़त परवर दगार के फ़ज़ले अज़ीम पर है । अगर वोह रब्बे करीम अपना फ़ज़ले अज़ीम फ़रमा दे तो छोटे से छोटा लश्कर बड़ी से बड़ी फ़ौज पर ग़ालिब हो कर

मुज़फ़्फ़र व मन्सूर हो सकता है और अगर उस का फ़ज़्लो करम शामिल हाल न हो तो बड़े से बड़ा लश्कर छोटी से छोटी फ़ौज से मग़लूब हो कर शिकस्त खा जाता है । लिहाज़ा मुसलमानों को लाज़िम है कि कभी भी अपने लश्कर की कषरत पर ए'तिमाद न रखें बल्कि हमेशा खुदावन्दे कुद्स के फ़ज़्लो करम पर भरोसा रखें । (والله تعالى اعلم)

### २१) गारे घौर

हिजरत की रात हुज़ूर रहमते अ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अपने दौलत ख़ाने से निकल कर मक़ामे “हज़ूरह” के पास खड़े हो गए और बड़ी हसरत के साथ “का'बए मुकर्रमा” को देखा और फ़रमाया कि ऐ शहरे मक्का ! तू मुझ को तमाम दुनिया से ज़ियादा प्यारा है अगर मेरी क़ौम मुझ को तुझ से न निकालती तो मैं तेरे सिवा और किसी जगह सुकूनत पज़ीर न होता । फिर हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से पहले ही क़रार दाद हो चुकी थी, वोह भी उसी जगह आ गए और इस ख़याल से कि कुम्फ़र हमारे क़दमों के निशान से हमारा रास्ता पहचान कर हमारा पीछा न करें फिर येह भी देखा कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के पाए नाजुक ज़ख़्मी हो गए हैं हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने आप को कन्धों पर सुवार कर लिया और इस तरह ख़ारदार झाड़ियों और नोकदार पथथरों वाली पहाड़ियों को रौंदते हुवे उसी रात गारे घौर पहुंचे । (مدارج النبوة، بحث “غارِ ثور” ج ۲، ص ۵۸)

हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ पहले खुद गार में दाख़िल हुवे और अच्छी तरह गार की सफ़ाई की और अपने कपड़ों को फाड़ फाड़ कर गार के तमाम सूराखों को बन्द किया फिर हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ गार के अन्दर तशरीफ़ ले गए और हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ की गोद में अपना सर मुबारक रख कर सो गए । हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने एक सूराख़ को अपनी ऐड़ी से बन्द कर रखा था । सूराख़ के अन्दर से एक सांप ने बार बार यारे गार के पाउं में काटा । मगर जां निषार ने इस ख़याल से पाउं नहीं हटाया कि रहमते अ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ के ख़्वाबे राहत में ख़लल न पड़ जाए । मगर दर्द की शिद्दत से यारे गार के आंसूओं की धार के चन्द क़तरात

सरवरे काइनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रुख़सार पर निषार हो गए। जिस से रहमते आलम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم बेदार हो गए और अपने यारे गार को रोता देख कर बे करार हो गए। पूछा ! अबू बक्र ! क्या हुवा ? अर्ज किया : या रसूलल्लाह ! मुझे सांप ने काट लिया है येह सुन कर हुजूर صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم ने ज़ख़्म पर अपना लुआबे दहन लगा दिया, जिस से फौरन ही सारा दर्द जाता रहा और ज़ख़्म भी अच्छा हो गया। तीन रात हुजूर रहमते आलम صَلَّى اللّٰهُ तَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰलِهٖ وَسَلَّم और हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इस गार में रोनाक अफ़रोज़ रहे। कुफ़फ़ारे मक्का ने आप की तलाश में मक्का का चप्पा चप्पा छान मारा। यहां तक कि ढूंडते ढूंडते गारे पौर तक पहुंच ही गए मगर गार के मुंह पर हिफ़ाज़ते खुदावन्दी का पहरा लगा हुवा था। या'नी गार के मुंह पर मकड़ी ने जाला तन दिया था और किनारे पर कबूतरी ने अन्डे भी दे रखे थे। येह मन्ज़र देख कर कुफ़फ़ार आपस में कहने लगे कि अगर इस गार में कोई इन्सान मौजूद होता तो न मकड़ी जाला तनती, न कबूतरी यहां अन्डे देती। कुफ़फ़ार की आहट पा कर हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ कुछ घबरा गए और अर्ज किया कि या रसूलल्लाह ! अब हमारे दुश्मन इस क़दर क़रीब आ गए हैं कि अगर वोह अपने क़दमों पर नज़र डालेंगे तो हम को देख लेंगे। हुजूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया :

(प ०, १, तबोः २०) لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا मत घबराओ, खुदा हमारे साथ है।

फिर हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ पर सकीना उतर पड़ा कि वोह बिल्कुल ही मुतमइन और बे ख़ौफ़ हो गए और चौथे दिन यकुम रबीउल अव्वल दो शम्बा के रोज़ हुजूर عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام गार से बाहर तशरीफ़ लाए और मदीना मुनव्वरा को ख़ाना हो गए। इस गारे पौर के वाकिए को कुरआने मजीद में इन लफ़्ज़ों में बयान फ़रमाया :

إِلَّا تَضُرُّهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللَّهُ إِذَا خَرَجَهُ الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِي اثْنَيْنِ إِذْ هَبَا فِي النَّارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللَّهَ مَعَنَا فَأَنزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُودِهِمْ تَرَوْهُمَا جَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلَىٰ وَكَلِمَةُ اللَّهِ هِيَ الْعُلْيَا وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٠﴾  
(प ०, १, तबोः २०)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** अगर तुम महबूब की मदद न करो तो बेशक **अल्लाह** ने उन की मदद फ़रमाई जब काफ़िरों की शरारत से उन्हें बाहर तशरीफ़ ले जाना हुवा सिर्फ़ दो जान से जब वोह दोनों ग़ार में थे जब अपने यार से फ़रमाते थे ग़म न खा बेशक **अल्लाह** हमारे साथ है तो **अल्लाह** ने उस पर अपना सकीना (इत्मीनान) उतारा और उन फ़ौजों से उस की मदद की जो तुम ने न देखी और काफ़िरों की बात नीचे डाली **अल्लाह** ही का बोल बाला है और **अल्लाह** ग़ालिब हिक़मत वाला है।

**दर्से हिदायत :-** येह आयत और ग़ारे घौर का वाकिआ हज़रते अबू बक्र सिद्दीक رضي الله تعالى عنه की फ़ज़ीलत और उन की महबूबत व जां निषारिये रसूल का वोह निशाने आ'ज़म है जो क़ियामत तक आप़ताबे आलमताब की तरह दरख़्शां और रोशन रहेगा। क्यूं न हो कि परवर दगार ने इन्हें अपने रसूल के “यारे ग़ार” होने की सनदे मुस्तनद कुरआन में दे दी है जो कभी हरगिज़ हरगिज़ नहीं मिट सकती है।

سُبْحَنَ اللَّهِ हज़रते सिद्दीक़े अक्बर رضي الله تعالى عنه का येह वोह फ़ज़ल व शरफ़ है जो न किसी को मिला है न किसी को मिलेगा।

**मर्तबा हज़रते सिद्दीक़ का हो किस से बयां  
पर फ़ज़ीलत के वोह जामेअ हैं नबुव्वत के सिवा**

**﴿22﴾ मरिजदे ज़शर जला दी गई**

मुनाफ़िक्कीन को येह तो जुरअत होती न थी कि एलानिय्या इस्लाम की मुख़ालफ़त करते। मगर वोह लोग दरे पर्दा इस्लाम की बेख़कनी में हमेशा मसरूफ़ रहते और इस कोशिश में लगे रहते थे कि मुसलमानों में इख़िलाफ़ और फूट डाल कर इस्लाम को नुक्सान पहुंचाएं। चुनान्चे, इस मक्सद की तक्मील के लिये जहां इन बे ईमानों ने दूसरी बहुत सी फ़ितना सामानियां बरपा कर रखी थीं, इन में से एक वाकिआ रजब 9 हि. में भी रूनुमा हुवा जो दर हक़ीक़त निहायत ही ख़तरनाक साज़िश थी। मगर हुजूरे अकरम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ने मुनाफ़िक्कीन की इस ख़ौफ़नाक मुहिम से ब ज़रिअए वही आगाह फ़रमा दिया और दुश्मनाने इस्लाम की सारी स्कीमों पर पानी फिर गया।



इस का वाकिआ यह है कि रजब 9 हि. में हुजुरे अक्दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को यह इत्तिलाअ मिली कि “तबूक” के मैदान में जो मदीनए मुनव्वरा से चौदह मन्जिल पर दिमश्क के रास्ते पर वाकेअ है। “हरकिल” शाहे रूम मुसलमानों के मुकाबले के लिये लश्कर जम्अ कर रहा है आप ने अरब में सख्त गरमी और कहूत के बा वुजूद जिहाद के लिये ए’लान फ़रमा दिया और मुसलमान जूक दर जूक शौक़े जिहाद में मदीने के अन्दर जम्अ होने लगे।

अभी नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ तय्यारियों ही में मसरूफ़ थे कि मुनाफ़िक्कीन ने इस वक़्त से फ़ाइदा उठाते हुवे सोचा कि मस्जिदे “कुबा” के मुकाबले में इस हीले से एक मस्जिद तय्यार करें कि जो लोग किसी उज़्र की वजह से मस्जिदे नबवी में न जा सकें वोह लोग यहां नमाज़ पढ़ लिया करें और मुनाफ़िक्कों का ख़ास मक़सद येह था कि इस मस्जिद को इस्लाम की तख़रीब कारी के लिये अड्डा बना कर और इस में जम्अ हो कर इस्लाम के ख़िलाफ़ साजिशें करते और स्कीमें बनाते रहें और शाहे रूम की खुफ़्या इमदादों और अस्लेहा वगैरा के ज़ख़ीरों का इस मस्जिद को मर्कज़ बनाएं और यहीं से इस्लाम के ख़िलाफ़ रीशा दवानियों का जाल पूरे आलमे इस्लाम में बिछाते रहें। येह सोच कर मुनाफ़िक्कीन ख़िदमते अक्दस में हाज़िर हुवे और कहने लगे कि हम लोगों ने ज़ईफ़ों और कमजोरों के लिये क़रीब में ही एक मस्जिद बनाई है अब हमारी तमन्ना है कि हुजूर वहां चल कर इस में नमाज़ पढ़ दें तो वोह मस्जिद इन्दल्लाह मक़बूल हो जाएगी। आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया इस वक़्त तो मैं एक बहुत ही अहम जिहाद के लिये मदीने से बाहर जा रहा हूं, वापसी पर देखा जाएगा।

मगर जब आप बख़ैरियत और फ़तह व कामरानी के साथ मदीना वापस तशरीफ़ लाए तो व्ह्ये इलाही के ज़रीए इस मस्जिद की ता’मीर का हकीकी सबब आप को मा’लूम हो चुका था और मुनाफ़िक्कीन की खुफ़्या और ख़तरनाक साजिश बे निकाब हो चुकी थी। चुनान्चे, आप ने मदीनए मुनव्वरा पहुंचते ही सब से पहले येह काम किया कि सहाबए

किराम عَلَيْهِمُ الرِّفْءَان की एक जमाअत को येह हुक्म दे कर वहां भेजा कि वोह वहां जाएं और उस मस्जिद को आग लगा कर खाक सियाह कर दें।

चूँकि इस मस्जिद की बुन्याद हकीकतन तक्वा और लिल्लाहिय्यत की जगह तफ़रीके बैनुल मुस्लिमीन और तख़रीबे इस्लाम पर रखी गई थी इस लिये बिलाशुबा वोह इस की मुस्तहिक़ थी कि इस को जला कर बरबाद कर दिया जाए और दर हकीकत इस तख़रीब कारी के अड्डे को मस्जिद कहना हकीकत के ख़िलाफ़ था इस लिये कुरआने मजीद ने इस हकीकते हाल को ज़ाहिर करते हुवे ए'लान फ़रमा दिया कि येह मस्जिदे तक्वा नहीं बल्कि “मस्जिदे ज़रार” कहलाने की मुस्तहिक़ है

मुलाहज़ा फ़रमाइये इस मस्जिद के बारे में कुरआने मजीद के ग़ज़बनाक तेवर और पुर जलाल अल्फ़ाज़ :

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَكُفْرًا وَتَفْرِيقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِينَ  
وَالْمُرْسَلَاتِ الْمِنَ حَارِبَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ مِنْ قَبْلُ وَلَيَحْلُقَنَّ إِنَّ أَرَادْنَا  
إِلَّا الْخُسْفَىٰ ۖ وَاللَّهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكَاذِبُونَ ﴿١٠٨﴾ لَا تَقُمْ فِيهِ أَبَدًا ۚ  
لَمَسْجِدٌ أُسِّسَ عَلَى التَّقْوَىٰ مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَنْ تَقُومَ فِيهِ ۚ  
فِيهِ رَجُلٌ يَجْعَلُ أَيْدِيَهُمْ وَأَلَّهُ يُحِبُّ الْمُطَهِّرِينَ ﴿١٠٩﴾ (پا ۱۰۸، ۱۰۹ التوبة)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** और वोह जिन्होंने ने मस्जिद बनाई नुक़सान पहुंचाने को और कुफ़्र के सबब और मुसलमानों में तफ़रिका डालने को और इस के इन्तिज़ार में जो पहले से **अल्लाह** और उस के रसूल का मुख़ालिफ़ है और वोह ज़रूर क़समें खाएंगे कि हम ने तो भलाई चाही और **अल्लाह** गवाह है कि वोह बेशक झूटे हैं उस मस्जिद में तुम कभी खड़े न होना बेशक वोह मस्जिद के पहले ही दिन से जिस की बुन्याद परहेज़गारी पर रखी गई है। वोह इस क़ाबिल है कि तुम उस में खड़े हो उस में वोह लोग हैं कि ख़ूब सुथरा होना चाहते हैं और सुथरे **अल्लाह** को प्यारे हैं।

**दर्से हिदायत :-** एक ही अमल, अमल करने वाले की निय्यत के फ़र्क़ से अच्छा भी हो सकता है और बुरा भी, तय्यिब भी बन सकता है और ख़बीष भी।

मस्जिद की ता'मीर एक अमले ख़ैर है मगर जब “लि-वजहिल्लाह” की निय्यत हो तो षवाब ही षवाब है और अगर “शर व फ़साद” की निय्यत हो तो अज़ाब ही अज़ाब है। मस्जिदे कुबा और मस्जिदे नबवी की ता'मीर मक्बूले बारगाहे इलाही और बाइषे षवाब हुई। क्योंकि इन दोनों मस्जिदों के बनाने वालों की निय्यत खुदा की रिज़ा और इन दोनों मस्जिदों की बुन्याद तक्वा पर रखी गई थी और मुनाफ़िकों की बनाई हुई मस्जिद मर्दूदे बारगाहे इलाही हो गई और सरासर बाइषे अज़ाब बन गई क्योंकि इस मस्जिद को ता'मीर करने वालों की निय्यत रिज़ाए इलाही नहीं थी और इस मस्जिद की बुन्याद तक्वा पर नहीं रखी गई थी बल्कि उन लोगों की गरज़ फ़ासिद तख़रीबे इस्लाम और तफ़रीके बैनुल मुस्लिमीन थी, तो येह मस्जिद क़तअन ग़ैर मक्बूल हो गई। यहां तक कि **अल्लाह** तआला ने अपने रसूल **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** को इस मस्जिद में क़दम रखने की भी मुनानअत फ़रमा दी और हुज़ूर **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** ने इस मस्जिद को न सिर्फ़ वीरान फ़रमा दिया बल्कि इस को जला कर नैस्तो नाबूद कर डाला।

इस से षाबित होता है कि इस ज़माने में भी अगर किसी मस्जिद को गुमराह फ़िर्की वाले अहले हक़ के ख़िलाफ़ कमीन गाह और जासूसी का मर्कज़ बना कर अहले हक़ के ख़िलाफ़ फ़ितना पर्दाज़ियां करने लगें तो मुसलमानों पर लाज़िम है कि उस मस्जिद में नमाज़ के लिये न जाएं बल्कि उस का बाइकाट कर के उस को वीरान कर दें। और हरगिज़ हरगिज़ न उस मस्जिद में नमाज़ पढ़ें, न उस की ता'मीर व आबादकारी में कोई इमदाद व तआवुन करें।

या फिर तमाम मुसलमान मिल कर गुमराह फ़िर्की को इस मस्जिद से बे दख़ल कर दें और इस मस्जिद को अपने कब्जे में ले कर गुमराह का तसल्लुत ख़त्म कर दें ताकि इन लोगों के शरो फ़साद और फ़ितना अंगेज़ियों से मस्जिद हमेशा के लिये पाक हो जाए। (والله تعالى اعلم)

## ﴿23﴾ फिरऔन का ईमान मक्बूल नहीं हुवा

फिरऔन जब अपने लश्करो के साथ दरया में गर्क होने लगा तो डूबते वक्त तीन मरतबा उस ने अपने ईमान का ए'लान किया मगर उस का ईमान मक्बूल नहीं हुवा और वोह कुफ़्र ही की हालत में मरा। लिहाजा बा'जु लोगों ने जो येह कहा है कि फिरऔन मोमिन हो कर मरा, उन का कौल काबिले ए'तिबार नहीं है। (تفسير صاوى، ج ۳، ص ۸۹۱، پ ۱، یونس: ۹۰)

डूबते वक्त एक मरतबा फिरऔन ने "اٰمَنْتُ" कहा या'नी मैं ईमान लाया। दूसरी मरतबा اِنَّهٗ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَللّٰہُ اٰمَنْتُ بِہٖ بُنُوۡاۤ اِسْرَآءِیْلَ कहा या'नी उस **अब्लाह** के सिवा जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाए दूसरा कोई खुदा नहीं है और तीसरी बार येह कहा कि وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ① या'नी मैं मुसलमान हूं। (پ ۱، یونس: ۹۰)

रिवायत है कि हज़रते जिब्रईल **عَلَيْهِ السَّلَام** ने फिरऔन के मुंह में खुदावन्दे तआला के हुक्म से कीचड़ भर दी और वोह अच्छी तरह कलिमए ईमान अदा नहीं कर सका। (تفسير جلالین، ص ۴۸، پ ۱، یونس: ۹۰)

येह भी एक हिकायत मन्कूल है कि जब फिरऔन तख्ते सल्तनत पर बैठ कर खुदाई का दा'वा करता था तो हज़रते जिब्रईल **عَلَيْهِ السَّلَام** आदमी की शकल में उस के पास येह फ़तवा त़लब करने के लिये तशरीफ़ ले गए कि क्या फ़रमाते हैं बादशाह उस गुलाम के बारे में जो अपने मौला के दिये हुवे माल और उस की ने'मतों में पला बढ़ा फिर उस ने अपने मौला की नाशुक्री की और उस के हुक्क का इन्कार करते हुवे खुद अपनी सियादत का ए'लान कर दिया बल्कि खुदाई का दा'वा करने लगा तो फिरऔन ने उस का जवाब येह लिखा कि ऐसा गुलाम जो अपने मौला की नाशुक्री कर के अपने मौला का बागी हो गया उस की सज़ा येही है कि वोह दरया में गर्क कर दिया जाए चुनान्चे, जब डूबते वक्त फिरऔन पर मौत का गर-गरा सुवार हो गया तो हज़रते जिब्रईल **عَلَيْهِ السَّلَام** ने फिरऔन का वोह दस्तख़ती फ़तवा उस को दिखाया इस के बा'द फिरऔन मर गया।

(تفسير صاوى، ج ۳، ص ۸۹۱، پ ۱، یونس: ۹۰)

**अल्लाह** तअला ने कुरआने अजीम में इस वाकिए का जिक्र फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया कि

وَجُودُ نَاصِيئِنِ اسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاتَّبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُودُهُ بَغْيًاو  
عَدُوًّا حَتَّى اِذَا اَدْرَاكُهُ الْعُرْقُ قَالَ اَمَنْتُ اَنْتَ لَا اِلَهَ اِلَّا اَنْتَ  
اَمَنْتُ بِهٖ بَنُو اسْرَآءِيْلَ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝ اَلَّذِيْنَ وَقَدْ عَصَيْتَ  
قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝ ۹۱ ۝ فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ  
خَلَقَ اٰيَةً ۚ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنِ الْاِيْتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ۝ ۹۲ ۝ (پا، یونس: ۹۱-۹۲)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** और हम बनी इस्राईल को दरया पार ले गए तो फिरऔन और उस के लश्करों ने इन का पीछा किया सरकशी और जुल्म से यहां तक कि जब उसे डूबने ने आ लिया, बोला : मैं ईमान लाया कि कोई सच्चा मा'बूद नहीं सिवा उस के जिस पर बनी इस्राईल ईमान लाए और मैं मुसलमान हूं क्या अब और पहले से नाफरमान रहा और तू फ़सादी था आज हम तेरी लाश को उतरा देंगे (बाकी रखेंगे) कि तू अपने पिछलों के लिये निशानी हो और बेशक लोग हमारी आयतों से गा़फ़िल हैं ।

फ़िरऔन के गर्क हो जाने के बा'द भी बनी इस्राईल पर उस की हैबत का इस दरजा दब-दबा छाया हुवा था कि लोगों को फिरऔन की मौत में शको शुबा होने लगा तो **अल्लाह** तअला ने फिरऔन की लाश को खुश्की पर पहुंचा दिया और दरया की मौजों ने इस की लाश को साहिल पर डाल दिया ताकि लोग इस को देख कर इस की मौत का यकीन भी कर लें और इस के अन्जाम से इब्रत भी हासिल करें ।

मशहूर है कि इस के बा'द से ही पानी ने लाशों को क़बूल करना छोड़ दिया और हमेशा पानी लाशों को ऊपर तैराता रहता है या किनारे पर फेंक देता है ।

(تفسير صاوی، ج ۳، ص ۸۹۲، پ ۱۱، یونس: ۹۲)

**दर्से हिदायत :-** फिरऔन ने बा वुजूद येह कि तीन मरतबा अपने ईमान का ए'लान किया मगर उस का ईमान फिर भी मक्बूल नहीं हुवा इस की क्या वजह है ? तो इस के बारे में मुफ़स्सिरीन ने तीन वजहें बयान फ़रमाई हैं :

﴿अव्वल﴾ येह कि फिरऔन ने अपने ईमान का इक़्रार उस वक़्त किया जब अज़ाबे इलाही उस के सर पर मुसल्लत हो गया और मौत का ग़र-ग़रा उस पर त़ारी हो गया और **अव्वाह** तआला का इरशाद है कि

﴿فَلَمْ يَكُنْ يَنْفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ نَكَارًا وَلَا أَبْسَارًا﴾ (المومن: २२, १५)

या'नी **अव्वाह** तआला का येह दस्तूर है कि जब किसी कौम पर अज़ाब आ जाता है तो उस वक़्त उन का ईमान लाना उन को कुछ भी नफ़अ नहीं पहुंचाता ।

चूँकि फिरऔन, अज़ाब आ जाने के बा'द, जब मौत का ग़र-ग़रा सुवार हो गया, उस वक़्त ईमान लाया इस लिये **अव्वाह** तआला ने फिरऔन के ईमान को क़बूल नहीं फ़रमाया और हज़रते जिब्राईल **عَلَيْهِ السَّلَام** को हुक्म दिया कि उस के मुंह में कीचड़ भर दें और येह कह दें कि अब तू ईमान लाया है ? हालांकि इस से पहले तू हमेशा ईमान लाने से इन्कार करता रहा और लोगों को गुमराह कर के फ़साद फेलाता रहा ।

﴿दुवुम﴾ दूसरा कौल येह है कि खुदा की तौहीद के साथ रसूल की रिसालत पर भी ईमान लाना ज़रूरी है और फिरऔन ने कहा या'नी सिर्फ़ खुदा की वहदानिय्यत का इक़्रार किया और हज़रते मूसा **عَلَيْهِ السَّلَام** की रिसालत पर ईमान नहीं लाया । इस लिये वोह मोमिन न हो सका ।

﴿सिवुम﴾ तीसरा कौल येह है कि फिरऔन ने ईमान लाने के क़स्द से कलिमए ईमान का तलफ़फ़ूज़ नहीं किया था बल्कि सिर्फ़ गर्क से बचने के लिये येह कलिमा कहा था जैसा कि इस की आदत थी कि हर मुसीबत और अज़ाब नाज़िल होने के वक़्त येह गिड़ गिड़ा कर खुदा की तरफ़ रुजूअ करता था । लेकिन मुसीबत टल जाने के बा'द फिर **أَنكَرْتُمْ إِلَّا عُلَىٰ** (النّور: २३, ३०) कह कर अपनी खुदाई का डंका बजाया करता था ।

मा'लूम हुवा कि सिर्फ़ कलिमए इस्लाम का तलफ़ुज़ जब कि ईमान लाने की निय्यत न हो बल्कि जान बचाने के लिये कहा हो, ईमान के लिये काफ़ी नहीं। लिहाज़ा फ़िरऔन का ईमान मक्बूल नहीं हुवा और सहीह क़ौल येही है कि फ़िरऔन कुफ़्र ही की हालत में ग़र्क़ हो कर मरा। इस पर कुरआने मजीद की आयतें और हदीषें शाहिदे अद्ल हैं। इसी लिये अल्लामा सावी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى ने अपनी तफ़्सीर में तहरीर फ़रमाया कि जिन लोगों ने येह कहा कि फ़िरऔन मोमिन हो कर मरा, उन लोगों का क़ौल क़ाबिले ए'तिबार नहीं। (والله تعالى اعلم)

### ﴿24﴾ नूह عَلَيْهِ السَّلَام की कश्ती

हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام साढ़े नव सो बरस तक अपनी क़ौम को खुदा का पैग़ाम सुनाते रहे मगर इन की बद नसीब क़ौम ईमान नहीं लाई बल्कि तरह तरह से आप की तहक़ीर व तज़लील करती रही और किस्म किस्म की अज़िय्यतों और तकलीफ़ों से आप को सताती रही यहां तक कि कई बार उन ज़ालिमों ने आप को इस क़दर ज़दो कोब किया कि आप को मुर्दा ख़याल कर के कपड़ों में लपेट कर मकान में डाल दिया। मगर आप फिर मकान से निकल कर दीन की तब्लीग़ फ़रमाने लगे। इसी तरह बारहा आप का गला घोटते रहे यहां तक कि आप का दम घुटने लगता और आप बे होश हो जाते मगर इन ईजाओं और मुसीबतों पर भी आप येही दुआ फ़रमाया करते थे कि ऐ मेरे परवर दगार ! तू मेरी क़ौम को बख़्श दे और हिदायत अता फ़रमा क्योंकि येह मुझ को नहीं जानते हैं।

और क़ौम का येह हाल था कि हर बुढ़ा बाप अपने बच्चों को येह वसिय्यत कर के मरता था की नूह (عَلَيْهِ السَّلَام) बहुत पुराने पागल हैं इस लिये कोई इन की बातों को न सुने और न इन की बातों पर ध्यान दे, यहां तक कि एक दिन येह वही नाज़िल हो गई कि ऐ नूह ! अब तक जो लोग मोमिन हो चुके हैं उन के सिवा और दूसरे लोग कभी हरगिज़ हरगिज़ ईमान नहीं लाएंगे। इस के बा'द आप अपनी क़ौम के ईमान लाने से ना उम्मीद हो गए। और आप ने इस क़ौम की हलाकत के लिये दुआ फ़रमा दी। और अब्बाह तआला ने आप को हुक्म दिया कि आप एक कश्ती



तय्यार करें चुनान्चे, एक सो बरस में आप के लगाए हुवे सागवान के दरख्त तय्यार हो गए और आप ने इन दरख्तों की लकड़ियों से एक कश्ती बनाई जो 80 गज लम्बी और 50 गज चौड़ी थी और इस में तीन दरजे थे, निचले तबके में दरिन्दे, परन्दे और हशरातुल अर्ज वगैरा और दरमियानी तबके में चोपाए वगैरा जानवरों के लिये और बालाई तबके में खुद और मोमिनीन के लिये जगह बनाई। इस तरह येह शानदार कश्ती आप ने बनाई और एक सो बरस की मुद्त में येह तारीखी कश्ती बन कर तय्यार हुई जो आप की और मोमिनों की मेहनत और कारीगरी का षमरा थी। जिन्हों ने बे पनाह मेहनत कर के येह कश्ती बनाई थी।

जब आप कश्ती बनाने में मसरूफ़ थे तो आप की कौम आप का मज़ाक़ उड़ाती थी। कोई कहता कि ऐ नूह ! अब तुम बढ़िये बन गए ? हालांकि पहले तुम कहा करते थे कि मैं खुदा का नबी हूं। कोई कहता ऐ नूह ! इस खुश्क ज़मीन में तुम कश्ती क्यों बना रहे हो ? क्या तुम्हारी अक्ल मारी गई है ? गरज तरह तरह का तमस्खुर व इस्तिहज़ा करते और किस्म किस्म की ता'ना बाज़ियां और बद ज़बानियां करते रहते थे और आप उन के जवाब में येही फ़रमाते थे कि आज तुम हम से मज़ाक़ करते हो लेकिन मत घबराओ जब खुदा का अज़ाब ब सूरते तूफ़ान आ जाएगा तो हम तुम्हारा मज़ाक़ उड़ाएंगे।

जब तूफ़ान आ गया तो आप ने कश्ती में दरिन्दों, चरिन्दों और परन्दों और किस्म किस्म के हशरातुल अर्ज का एक एक जोड़ा नर व मादा सुवार करा दिया और खुद आप और आप के तीनों फ़रज़न्द या'नी हाम, साम और याफ़्फ़ और इन तीनों की बीवियां और आप की मोमिना बीवी और 72 मोमिनीन मर्द व औरत कुल 80 इन्सान कश्ती में सुवार हो गए और आप की एक बीवी “वाहिला” जो क़ाफ़िरा थी, और आप का एक लड़का जिस का नाम “किनअन” था, येह दोनों कश्ती में सुवार नहीं हुवे और तूफ़ान में ग़र्क़ हो गए।

रिवायत है कि जब सांप और बिच्छू कश्ती में सुवार होने लगे तो आप ने इन दोनों को रोक दिया। तो इन दोनों ने कहा कि ऐ **अल्लाह** के

नबी ! आप हम दोनों को सुवार कर लीजिये। हम अहद करते हैं कि जो शख्स سَلَّمَ عَلَى نُوْحٍ فِي الْعَالَمِينَ पढ़ लेगा हम दोनों उस को जरूर नहीं पहुंचाएंगे तो आप ने इन दोनों को भी कशती में बिठा लिया।

तूफ़ान में कशती वालों के सिवा सारी कौम और कुल मख़्लूक गर्क हो कर हलाक हो गई और आप की कशती “जूदी पहाड़” पर जा कर ठहर गई और तूफ़ान ख़त्म होने के बा’द आप मअ कशती वालों के ज़मीन पर उतर पड़े और आप की नस्ल में बे पनाह बरकत हुई कि आप की अवलाद तमाम रूप ज़मीन पर फैल कर आबाद हो गई इसी लिये आप का लक़ब “आदमे घानी” है।

(تفسير صاوی، پ ۱۲، هود: ۳۶-۳۹)

कुरआने मजीद में खुदावन्द (عَزَّوَجَلَّ) ने इस वाकिए को इन अल्फ़ाज़ में बयान फ़रमाया है कि

وَأَوْحَىٰ إِلَىٰ نُوحٍ أَنَّهُ لَن يُؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ إِلَّا مَن قَدَّامَنَ فَلَا تَتَّبِعِ  
بِهَاكُنَّوَايَعْلُونَ ﴿٣٦﴾ وَأَصْنَعُ الْفُلَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحِّينَا وَلَا تَخَاطِبُنِي فِي  
الَّذِينَ ظَلَمُوا إِنَّهُمْ مُّغْرَقُونَ ﴿٣٧﴾ وَيَصْنَعُ الْفُلَ ﴿٣٨﴾ وَكَلَّمَا مَرْعِيَهُ  
مَلَأْ مِنْ قَوْمِهِ سَخِرُوا مِنْهُ ۖ قَالَ إِن تَسْخَرُوا مِنِّي فَإِن تَسْخَرُوا مِنِّي كَمَا  
تَسْخَرُونَ ﴿٣٩﴾ فَسَوْفَ نَعْلَبُ ۚ مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ  
عَذَابٌ مُّقِيمٌ ﴿٤٠﴾

(پ ۱۲، هود: ۳۶-۳۹)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और नूह को वही हुई कि तुम्हारी कौम से मुसलमान न होंगे मगर जितने ईमान ला चुके तो ग़म न खा उस पर जो वोह करते हैं और कशती बना हमारे सामने और हमारे हुक्म से और ज़ालिमों के बारे में मुझ से बात न करना वोह जरूर डूबाए जाएंगे और नूह कशती बनाता है जब उस की कौम के सरदार उस पर गुज़रते उस पर हंसते, बोला : अगर तुम हम पर हंसते हो तो एक वक़्त हम तुम पर हंसेंगे जैसा तुम हंसते हो तो अब जान जाओगे किस पर आता है वोह अज़ाब कि उसे रुस्वा करे और उतरता है वोह अज़ाब जो हमेशा रहे।

### ﴿25﴾ तूफ़ान बरपा करने वाला तन्नूर

यू तो अब्बाह तआला ने हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام को दो सो बरस पहले ही बज़रीअए वही मुत्तलअ कर दिया था कि आप की कौम तूफ़ान में ग़र्क कर दी जाएगी। मगर तूफ़ान आने की निशानी येह मुक़रर फ़रमा दी थी कि आप के घर के तन्नूर से पानी उबलना शुरूअ होगा। चुनान्वे, पथ्थर के इस तन्नूर से एक दिन सुब्ह के वक़्त पानी उबलना शुरूअ हो गया और आप ने कश्ती पर जानवरों और इन्सानों को सुवार कराना शुरूअ कर दिया फिर ज़ोर दार बारिश होने लगी जो मुसलसल चालीस दिन और चालीस रात मूसलाधार बरसती रही और ज़मीन भी जा-बजा शक़ हो गई और पानी के चश्मे फूट कर बहने लगे। इस तरह बारिश और ज़मीन से निकलने वाले पानियों से ऐसा तूफ़ान आ गया कि चालीस चालीस गज़ ऊंचे पहाड़ों की चोटियां भी डूब गई।

चुनान्वे, इरशादे खुदावन्दी है कि

حَتَّىٰ إِذَا جَاءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّورُ ۖ قُلْنَا احْمِلْ فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجَيْنِ  
اشْتَيْنِ ۚ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ آمَنَ ۖ وَمَا آمَنَ مَعَهُ  
إِلَّا قَلِيلٌ ﴿٢٠﴾ (پ ۱۲، هود: ۴۰)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** यहां तक कि जब हमारा हुक्म आया और तन्नूर उबला हम ने फ़रमाया कश्ती में सुवार कर ले हर ज़िन्स में से एक जोड़ा नर व मादा और जिन पर बात पड़ चुकी है उन के सिवा अपने घर वालों और बाकी मुसलमानों को और उस के साथ मुसलमान न थे मगर थोड़े।

और आस्मानो ज़मीन के पानी की फ़िरावानी और तुग़यानी का बयान फ़रमाते हुवे इरशादे रब्बानी हुवा कि

فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَاءِ بِمَاءٍ مُّنْهَرٍ ﴿١١﴾ وَفَجَّرْنَا الْأَرْضَ عُيُونًا فَالْتَقَى  
الْمَاءُ عَلَىٰ أَمْرٍ قَدْ قُدِّرَ ﴿١٢﴾ (پ ۲۷، القمر: ۱۱)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** तो हम ने आस्मान के दरवाज़े खोल दिये ज़ोर के बहते पानी से और ज़मीन चश्मे कर के बहा दी तो दोनों पानी मिल गए उस मिक्कदार पर जो मुक़द्दर थी।

या'नी तूफ़ान आ गया और सारी दुनिया ग़र्क हो गई

(तفسير صायी، ج ۳، ص ۹۱۳، پ ۱۲، هود: ۴۲)

तूफ़ान कितना जोरदार था और तूफ़ानी सैलाब की मौजों की क्या कैफ़ियत थी ? इस की मन्ज़र कशी कुरआने मजीद ने इन लफ़्ज़ों में फ़रमाई है :-

وَهُی تَجْرِیْ بِهِمَّ فِیْ مَوْجٍ کَالْجِبَالِ (پ ۱۲، هود: ۴۲)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और वोह उन्हें लिये जा रही है ऐसी मौजों में जैसे पहाड़ ।

हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَام** कश्ती पर सुवार हो गए और कश्ती तूफ़ानी मौजों के थपेड़ों से टकराती हुई बराबर चली जा रही थी यहां तक कि सलामती के साथ कोहे जूदी पर पहुंच कर ठहर गई । कश्ती पर सुवार होते वक़्त हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَام** ने येह दुआ पढ़ी थी कि

بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرَہَا وَمُرْسَہَا اِنَّ رَبِّیْ لَعَفُوٌّ رَّحِیْمٌ (پ ۱۲، هود: ۴۱)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** **अल्लाह** के नाम पर इस का चलना और इस का ठहरना बेशक मेरा रब ज़रूर बख़्शने वाला मेहरबान है ।

### ﴿26﴾ जूदी पहाड़

हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَام** की कश्ती तूफ़ान के थपेड़ों में छे माह तक चक्कर लगाती रही यहां तक कि ख़ानए का'बा के पास से गुज़री और का'बए मुकर्रमा का सात चक्कर तवाफ़ भी किया । फिर **अल्लाह** तआला के हुक्म से येह कश्ती जूदी पहाड़ पर ठहर गई, जो इराक़ के एक शहर "जज़ीरा" में वाक़ेअ है ।

रिवायत है कि **अल्लाह** तआला ने हर पहाड़ की तरफ़ येह वही की, कि हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَام** की कश्ती किसी एक पहाड़ पर ठहरेगी तो तमाम पहाड़ों ने तकब्बुर किया । लेकिन "जूदी" पहाड़ ने तवाजोअ और अज़िज़ी का इज़हार किया तो **अल्लाह** तआला ने इस को येह शरफ़ बख़्शा कि कश्ती जूदी पहाड़ पर ठहरी । और एक रिवायत है कि बहुत दिनों तक इस कश्ती की लकड़ियां और तख़्ते बाकी रहे थे । यहां तक कि

अगली उम्मतों के बा'ज लोगों ने इस कश्ती के तख्तों को जूदी पहाड़ पर देखा था। मुहर्रम की दसवीं तारीख अशूरा के दिन यह कश्ती जूदी पहाड़ पर ठहरी। चुनान्वे, इस तारीख को कश्ती की तमाम मख्लूक या'नी इन्सान और वहूश तयूर वगैरा सभी ने शुक्राने का रोज़ा रखा और हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام ने कश्ती से उतर कर सब से पहले जो बस्ती बसाई उस का नाम “षमानीन” रखा। अरबी ज़बान में षमानीन के मा'ना “अस्सी” होते हैं, चूँकि कश्ती में 80 आदमी थे इस लिये इस गाऊं का नाम “षमानीन” रख दिया गया। (تفسير صاوی، ج ۳، ص ۹۱۵-۹۱۲، پ ۱۲، هود: ۴۲)

وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُودِيِّ وَقِيلَ بُعْدَ النَّفُورِ الظَّالِمِينَ ﴿۴۲﴾ (پ ۱۲، هود: ۴۲)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और कश्ती कोहे जूदी पर ठहरी और फ़रमाया गया कि दूर हों बे इन्साफ़ लोग।

﴿27﴾ **हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام का बेटा गर्क हो गया**

हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام का एक बेटा जिस का नाम “किनआन” था। वोह सिद्धे दिल से आप पर ईमान नहीं लाया था, बल्कि वोह मुनाफ़िक़ था। और अपने कुफ़्र को छुपाए रखता था। लेकिन तूफ़ान के वक़्त उस ने अपने कुफ़्र को ज़ाहिर कर दिया। हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام ने कश्ती पर सुवार होते वक़्त उस को बुलाया और फ़रमाया कि मेरे प्यारे बेटे ! तुम कश्ती पर सुवार हो जाओ और काफ़िरों का साथ छोड़ दो तो उस ने कहा कि मैं तूफ़ान में पहाड़ों पर चढ़ कर पनाह ले लूंगा तो आप ने बड़ी दिल सोजी के साथ फ़रमाया कि बेटा ! आज खुदा के अज़ाब से कोई किसी को नहीं बचा सकता। हां जिस पर खुदावन्दे करीम अपना रहम फ़रमाए बस वोही बच सकता है। बाप बेटे में येह गुफ़्तगू हो रही थी कि एक ज़ोरदार मौज आई और किनआन गर्क हो गया और एक रिवायत में येह भी आया है कि किनआन एक बुलन्द पहाड़ पर चढ़ कर एक ग़ार में छुप गया और ग़ार के तमाम सुराखों को बन्द कर लिया मगर जब तूफ़ान की मौज उस पहाड़ की चोटी से टकराई तो ग़ार में पानी भर गया। इस तरह किनआन अपने बोल व बराज में लत पत हो कर गर्क हो गया।

(تفسير صاوی، ج ۳، ص ۹۱۲، پ ۱۲، هود: ۴۳)

कुरआने मजीद में **اَللّٰهُ** عَزَّوَجَلَّ ने इस वाकिए के बारे में इरशाद फ़रमाया कि

وَنَادَىٰ نُوحٌ ابْنَهُ وَكَانَ فِي مَعْزِلٍ يُبْنَىٰ الرُّكْبُ مَعًا وَلَا تَكُنْ مَعَ  
الْكُفْرَيْنِ ۖ قَالَ سَاوِي إِلَىٰ جَبَلٍ يَّعِصُنِي مِنَ الْمَاءِ ۖ قَالَ لَا عَاصِمَ  
الْيَوْمَ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ إِلَّا مَنْ رَّحِمَهُ ۚ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ  
الْمُغْرَقِينَ ۝ (پ ۱۲، هود: ۴۲ - ۴۳)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** और नूह ने अपने बेटे को पुकारा और वोह उस से किनारे था ऐ मेरे बच्चे हमारे साथ सुवार हो जा और काफ़िरों के साथ न हो, बोला : अब मैं किसी पहाड़ की पनाह लेता हूं वोह मुझे पानी से बचा लेगा, कहा आज **اَللّٰهُ** के अज़ाब से कोई बचाने वाला नहीं मगर जिस पर वोह रहम करे और उन के बीच में मौज आड़े आई तो वोह डूबतों में रह गया ।

बेटे को अपने सामने इस तह ग़र्क़आब होते देख कर हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَام** को बड़ा सदमा व रंज पहुंचा और आप ने जनाबे बारी तआला में अर्ज़ किया कि ऐ मेरे परवर दगार ! मेरा बेटा किनआन तो मेरे घर वालों में से है और तेरा वा'दा सच्चा है और तू अहकमुल हाकिमीन है । तो **اَللّٰهُ** तआला ने फ़रमाया कि ऐ नूह ! येह आप का बेटा किनआन आप के उन घर वालों में से नहीं है जिन को बचाने का हम ने वा'दा किया था लिहाज़ा, ऐ नूह ! तुम्हारा येह सुवाल ठीक नहीं है इस लिये तुम मुझ से ऐसी किसी बात का सुवाल न करो जिस का तुम्हें इल्म नहीं है तो हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَام** ने कहा कि ऐ मेरे परवर दगार ! मैं तेरी पनाह मांगता हूं कि मैं तुझ से किसी ऐसी बात का सुवाल करूं जो मुझे मा'लूम नहीं है और अगर तू मुझे मुआफ़ फ़रमा कर रहम न फ़रमाएगा तो मैं नुक्सान में पड़ जाऊंगा ।

(तفسير صاوی، ج ۳، ص ۹۱۶-۹۱۵ (ملخصاً)، پ ۱۲، هود: ۴۵-۴۲)

कुरआने मजीद में हज़रते हक़ عليه السلام ने इस वाकिए को बयान फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया कि

وَنَادَى نُوحٌ رَبَّهُ فَقَالَ رَبِّ إِنَّ ابْنِي مِنْ أَهْلِي وَإِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَأَنْتَ أَحْكَمُ الْحَكَمِينَ ﴿٢٥﴾ قَالَ يُنُوحُ إِنَّهُ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ إِنَّهُ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ فَلَا تَسْأَلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهِ عِلْمٌ إِنِّي أَعْطُكَ أَنْ تَكُونَ مِنَ الْجَاهِلِينَ ﴿٢٦﴾ قَالَ رَبِّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أَسْأَلَكَ مَا لَيْسَ لِي بِهِ عِلْمٌ وَإِلَّا تَغْفِرْ لِي وَتَرْحَمْنِي أَكُنْ مِنَ الْخَسِرِينَ ﴿٢٧﴾ (پ ۲، ۱، ۲۵-۲۷)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और नूह ने अपने रब को पुकारा, अर्ज की : ऐ मेरे रब ! मेरा बेटा भी तो मेरा घर वाला है और बेशक तेरा वा'दा सच्चा है और तू सब से बढ़ कर हुक्म वाला । फ़रमाया : ऐ नूह ! वोह तेरे घर वालों में नहीं बेशक उस के काम बड़े नालाइक हैं तू मुझ से वोह बात न मांग जिस का तुझे इल्म नहीं मैं तुझे नसीहत फ़रमाता हूं कि नादान न बन । अर्ज की ऐ रब मेरे ! मैं तेरी पनाह चाहता हूं कि तुझ से वोह चीज़ मांगूं जिस का मुझे इल्म नहीं और अगर तू मुझे न बख़्खो और रहम न करे तो मैं ज़ियांकार (नुक्सान उठाने वाला) हो जाऊं ।

### ﴿28﴾ तूफ़ान क्यूं कर ख़त्म हुवा

जब हज़रते नूह عليه السلام की कश्ती जूदी पहाड़ पर पहुंच कर ठहर गई और सब कुफ़ार गर्क हो कर फ़ना हो चुके तो **अल्लाह** तआला ने ज़मीन को हुक्म दिया कि ऐ ज़मीन ! जितना पानी तुझ से चश्मों की सूरत में निकला है तू इन सब पानियों को पी ले । और ऐ आस्मान ! तू अपनी बारिश बन्द कर दे । चुनान्वे, पानी घटना शुरू हो गया और तूफ़ान ख़त्म हो गया । फिर **अल्लाह** तआला ने हज़रते नूह عليه السلام को हुक्म दिया कि ऐ नूह ! आप कश्ती से उतर जाइये । **अल्लाह** की त़रफ़ से सलामती और बरकतें आप पर भी हैं और उन लोगों पर भी हैं जो कश्ती में आप के साथ रहे । (प २, १, ॲहूद: ॲ८)



हृदीष शरीफ में आया है कि हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام ने रूए ज़मीन की ख़बर लाने के लिये किसी को भेजने का इरादा फ़रमाया तो सब से पहले मुर्गी ने कहा कि मैं रूए ज़मीन की ख़बर लाऊंगी तो आप ने उस को पकड़ लिया और उस के बाजूओं पर मोहर लगा कर फ़रमाया कि तुझ पर मेरी मोहर है, तू परन्द होते हुवे भी लम्बी उड़ान न उड़ सकेगी और मेरी उम्मत तुझ से फ़ाइदा उठाएगी। फिर आप ने कव्वे को भेजा तो वोह एक मुर्दार देख कर उस पर गिर पड़ा और वापस नहीं आया। तो आप ने उस पर ला'नत फ़रमा दी और उस के लिये बद दुआ फ़रमा दी कि वोह हमेशा ख़ौफ़ में मुब्तला रहे। चुनान्वे, कव्वे को हरम में कहीं भी पनाह नहीं है। फिर आप ने कबूतर को भेजा तो वोह ज़मीन पर नहीं उतरा बल्कि मुल्के सबा से जैतून की एक पत्ती चोंच में ले कर आ गया तो आप ने फ़रमाया कि तुम ज़मीन पर नहीं उतरे इस लिये फिर जाओ और रूए ज़मीन की ख़बर लाओ। तो कबूतर दोबारा रवाना हुवा और मक्कए मुकर्रमा में हरमे का'बा की ज़मीन पर उतरा और देख लिया कि पानी ज़मीने हरम से ख़त्म हो चुका है और सुर्ख रंग की मिट्टी ज़ाहिर हो गई है। कबूतर के दोनों पाउं सुर्ख मिट्टी से रंगीन हो गए। और वोह इसी हालत में हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام के पास वापस आ गया और अर्ज किया कि ऐ खुदा के पैग़म्बर ! आप मेरे गले में एक ख़ूब सूत तौक अता फ़रमाइये और मेरे पाउं में सुर्ख ख़िज़ाब मरहमत फ़रमाइये और मुझे ज़मीने हरम में सुकूनत का शरफ़ अता फ़रमाइये। चुनान्वे, हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام ने कबूतर के सर पर दस्ते शफ़क़त फेरा और उस के लिये येह दुआ फ़रमा दी कि उस के गले में धारी का एक ख़ूब सूत हार पड़ा रहे और उस के पाउं सुर्ख हो जाएं और उस की नस्ल में ख़ैरो बरकत रहे और उस को ज़मीने हरम में सुकूनत का शरफ़ मिले।

(تفسير صاوی، ج ۳، ص ۹۱۶، پ ۱۲، هود: ۴۸)

**अल्लाह** तआला ने कुरआने करीम में इरशाद फ़रमाया कि

وَقِيلَ يَا أَرْضُ ابْلُغِي مَاءَكَ وَلَيْسَ آءَاقِلْبَعِي وَغِيْضُ الْمَاءِ وَقُضِيَ

الْأَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُودِيِّ وَقِيلَ بُعْدًا لِلْقَوْمِ الظَّالِمِينَ ﴿١٢﴾ (هود: ४२)

पे़शक़श : मर्कज़ी मजलिसे शूरा (दा'वते इस्लामी)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** और हुक्म फ़रमाया गया कि ऐ ज़मीन अपना पानी निगल ले और ऐ आस्मान थम जा और पानी खुश्क कर दिया गया और काम तमाम हुवा और कश्ती कोहे जूदी पर ठहरी और फ़रमाया गया कि दूर हों बे इन्साफ़ लोग ।

और हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام को कश्ती से उतरने का हुक्म दे कर

**अल्लाह** तआला ने इरशाद फ़रमाया कि

﴿يٰٓاَيُّهَا نُوحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكَاتٍ عَلَيْنَا وَعَلٰى اُمَمٍ مِّنْ مَّعَكَ ۝٢٨﴾ (होद: २८)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** फ़रमाया गया ऐ नूह कश्ती से उतर हमारी तरफ़ से सलाम और बरकतों के साथ जो तुझ पर हैं और तेरे साथ के कुछ गुरौहों पर ।

**दर्से हिदायत :-** हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام के इस वाकिए में बड़ी बड़ी इब्रतों के सामान हैं जिन के अन्वार व तजल्लियात से कुलूबे मोअमिनीन पर ऐसी ईमानी रोशनी पड़ती है जिस से मोअमिनीन का सीना नूरे इरफ़ान व जल्वए ईमान से मुनव्वर और रोशन हो जाता है । चन्द तजल्लियों की निशान देही हाज़िर है :

﴿1﴾ हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام साढ़े नव सो बरस तक अपनी क़ौम की ईजा रसानियों और दिलख़राश ता'नों और गालियों के बा वुजूद सब्रो तहम्मूल के साथ अपनी क़ौम को हिदायत का दर्स देते रहे और जब तक इन पर वही नहीं आ गई कि येह लोग ईमान नहीं लाएंगे उस वक़्त तक आप बराबर हिदायत का वा'ज़ सुनाते ही रहे । जब बज़रीअए वही आप इन लोगों के ईमान से मायूस हो गए तो आप ने इन ज़ालिमों के लिये हलाकत की दुआ फ़रमाई । क़ौमे मुस्लिम के वाइजों और हादियों के लिये हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام का उस्वए हसना चरागे हिदायत व मनारए नूर है कि वोह भी सब्र व इस्तिक्लाल के साथ बराबर तब्लीग़ व इरशाद का काम जारी रखें ।

﴿2﴾ हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام और मोअमिनीन तूफ़ान के अज़ीम सैलाब में जब कि तूफ़ान की मौजें पहाड़ों की तरह सर उठा रही थीं, कश्ती पर सुवार थे और तूफ़ानी मौजों के सैलाबे अज़ीम में एक तिन्के की तरह येह कश्ती हिचकोले खाती चली जा रही थी । मगर हज़रते नूह عَلَيْهِ السَّلَام और

मोअमिनीन तवक्कुल की ऐसी मन्ज़िले बुलन्द में थे कि न इन लोगों को कोई घबराहट थी न कोई परेशानी । इस में मोअमिनीन के लिये यह हिदायत है कि बड़ी से बड़ी मुसीबत के वक़्त में भी मोमिन को **अल्लाह** तअ़ाला पर भरोसा रख कर मुतमइन रहना चाहिये ।

﴿3﴾ हज़रते नूह **عَلَيْهِ السَّلَام** का बेटा किनआन काफ़िर था । इस से पता चलता है कि नेकों की अवलाद के लिये येह ज़रूरी नहीं है कि वोह भी नेक ही हों । बुरों की अवलाद अच्छी और अच्छों की अवलाद बुरी भी हो सकती है । येह खुदावन्दे तअ़ाला की मशिय्यत और मरज़ी पर मौकूफ़ है । वोह जिस को चाहे अच्छा बना दे और जिस को चाहे बुरा बना दे । (والله تعالى أعلم)

### ﴿29﴾ एक गुस्ताख़ पर बिजली गिर पड़ी

एक शख़्स जो कुफ़्फ़ारे अरब के सरदारों में से था उस के पास हुज़ूर **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** ने चन्द सहाबए किराम (**عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان**) को तब्लीगे इस्लाम के लिये भेजा । चुनान्वे, इन हज़रात ने उस के पास पहुंच कर **अल्लाह** तअ़ाला और उस के रसूल **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का पैग़ाम सुना कर इस्लाम की दा'वत दी तो उस गुस्ताख़ ने अज़ राहे तमस्वुर कहा कि **अल्लाह** कौन है ? कैसा है और कहां है ? क्या वोह सोने का है या चांदी का है या तांबे का ? उस का येह मुतकब्बिराना और गुस्ताख़ाना जवाब सुन कर सहाबए किराम (**عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان**) के रौंगटे खड़े हो गए और इन हज़रात ने बारगाहे नबुव्वत **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** में वापस हाज़िर हो कर सारा माजरा सुनाया और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह इस शख़्स से बढ़ कर काफ़िर और बारी तअ़ाला की शान में गुस्ताख़ी करने वाला तो हम लोगों ने देखा ही नहीं । हुज़ूर **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** ने इरशाद फ़रमाया कि तुम लोग दोबारा उस के पास जाओ । चुनान्वे,

येह हज़रात दोबारा उस के पास पहुंचे, तो उस ख़बीष ने पहले से भी ज़ियादा गुस्ताख़ाना अल्फ़ाज़ ज़बान से निकाले । सहाबए किराम (**عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان**) उस की गुस्ताख़ियों और बद ज़बानियों से रन्जीदा हो कर दरबारे नबुव्वत में वापस पलट आए तो हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने

तीसरी मरतबा इन सहाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) को उस के पास भेजा जहां येह लोग पहुंच कर उस को दा'वते इस्लाम देने लगे और वोह गुस्ताख़ इन हज़रात से झगड़ा करते हुवे बद ज़बानी और गाली गलोच पर उतर आया। सहाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) इरशादे नबवी के मुताबिक़ सब्र करते रहे।

इसी दौरान में लोगों ने देखा कि नागहां एक बदली आई और उस बदली में अचानक गरज और चमक पैदा हुई। फिर एक दम निहायत ही मुहीब गरज के साथ उस काफ़िर पर बिजली गिरी जिस से उस की खोपड़ी उड़ गई और वोह लम्हा भर में जल कर राख हो गया। येह मन्ज़र देख कर सहाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) बारगाहे अक्दस में वापस आए तो इन हज़रात को देखते ही रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि तुम लोग जिस गुस्ताख़ के यहां गए थे वोह तो जल कर राख हो गया ! सहाबए किराम (عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان) ने इन्तिहाई हैरत व तअज़्जुब से अर्ज किया कि या रसूलुल्लाह ! आप को कैसे और किस तरह इस की ख़बर हो गई तो आप ﷺ ने फ़रमाया कि अभी अभी मुझ पर येह आयत नाज़िल हुई है :

(تفسير صاوی، ج ۳، ص ۹۹۶-۹۹۵، پ ۱۳، الرعد: ۱۳)

وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيبُ بِهَا مَنْ يَشَاءُ وَهُمْ يُجَادِلُونَ فِي اللَّهِ وَ

هُوَ شَدِيدُ الْحَالِ ﴿۱۴﴾ (پ ۱۳، الرعد: ۱۳)

तर्जमए कन्जुल ईमान :- और कड़क भेजता है तो उसे डालता है जिस पर चाहे और वोह **अल्लाह** में झगड़ते होते हैं और उस की पकड़ सख़्त है।  
दर्से हिदायत :- बारी तआला की शान में इस तरह की गुस्ताख़ी करने वालों को बारहा अज़ाबे इलाही ने अपनी गिरिफ़्त में ले कर हलाक कर डाला। लिहाज़ा ख़बरदार ! ख़बरदार ! उस मुक़द्दस जनाब में हरगिज़ हरगिज़ कोई ऐसा लफ़्ज़ ज़बान से न निकालना चाहिये जो शाने उलूहिय्यत में बे अदबी क़रार पाए। आज कल बहुत से लोग बीमारियों और मुसीबतों के वक़्त खुदावन्दे तआला की शान में नाशुक्री के अल्फ़ाज़ बोल कर खुदावन्दे कुद्दूस की बे अदबी कर बैठते हैं। जिस से उन का ईमान भी जाता रहता है और वोह दुन्या व आख़िरत में अज़ाब के हक़दार बन जाते हैं। (तौबा عود بالله منه)

### ﴿30﴾ पांच दुश्मनाने रसूल

कुफ़ारे कुरैश के पांच सरदार (1) आस बिन वाइल सहमी (2) अस्वद बिन मुत्तलिब (3) अस्वद बिन अब्दे यगूष (4) हारिष बिन कैस (5) वलीद बिन मुगीरा ।

येह लोग नबिये अकरम ﷺ को बहुत ज़ियादा ईजाएं देते और आप का बेहद तमस्खुर और मजाक़ उड़ाया करते थे । एक रोज़ हुज़ूरे अकरम ﷺ मस्जिदे हराम में तशरीफ़ लाए तो येह पांचों खुबषा भी पीछे पीछे आए और हस्बे आदत तमस्खुर और ता'न व तशनीअ के अल्फ़ाज़ बकने लगे इसी हालत में हज़रते जिब्राईल ﷺ की ख़िदमत में पहुंचे और उन्होंने ने वलीद बिन मुगीरा की पिन्डली की तरफ़ और आस बिन वाइल सहमी के पाउं के तल्वे की तरफ़ और अस्वद बिन मुत्तलिब की आंखों की तरफ़ और अस्वद बिन अब्दे यगूष के पेट की तरफ़ और हारिष बिन कैस के सर की तरफ़ इशारा फ़रमाया और येह कहा कि मैं इन लोगों के शर को दफ़अ करूंगा ।

चुनान्वे, थोड़े ही अर्से में येह पांचों दुश्मनाने रसूल तरह़ तरह़ की बलाओं में गिरिफ़्तार हो कर हलाक़ हो गए । वलीद बिन मुगीरा एक तीर बेचने वाले की दुकान के पास से गुज़रा । नागहां एक तीर का पीकान इस के तहबन्द में चुभ गया । मगर इस को निकालने के लिये इस ने तकब्बुर से सर नीचा न किया और खड़े खड़े तहबन्द हिला हिला कर पीकान को निकालने लगा जिस से उस की पिन्डली ज़ख़मी हो गई और वोह ज़ख़म अच्छा नहीं हुवा बल्कि उसी ज़ख़म की तकलीफ़ उठा उठा कर वोह मर गया ।

आस बिन वाइल सहमी के पाउं में कांटा चुभ गया जिस से उस के पाउं में ज़हर बाद हो गया और उस का पाउं फूल कर ऊंट की गर्दन की तरह़ मोटा हो गया इसी तकलीफ़ में वोह तड़प तड़प कर और कराहते हुवे हलाक़ हो गया ।

अस्वद बिन मुत्तलिब की आंखों में ऐसा दर्द उठा कि वोह अन्धा हो गया और दर्द की शिद्दत से वोह बे करारी में अपना सर दीवार से बार बार टकराता था और इसी दर्दों क़र्ब की बेचैनी में वोह मर गया और येह कहता हुवा मरा कि मुझ को मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने क़त्ल किया है।

अस्वद बिन अब्दे यगूष को इस्तिस्का हो गया जिस से उस का पेट बहुत ज़ियादा फूल गया और वोह इसी मरज़ में ऐड़ियां रगड़ रगड़ कर हलाक हो गया।

हारिष बिन कैस की नाक से खून और पीप बहने लगा और वोह इसी में मर कर हलाक हो गया। इस तरह येह पांचों गुस्ताख़ाने रसूल बहुत जल्द बड़ी बड़ी तकलीफें उठा कर हलाक हो गए।

(تفسير صاوى، ج ۳، ص ۱۰۵۳-۱۰۵۲، ۱، ۲، الرعد: ۹۵)

इन ही पाचों गुस्ताख़ों के बारे में **अल्लाह** तआला ने कुरआने मजीद की येह आयत नाज़िल फ़रमाई :-

إِنَّا كَفَيْتُكَ الْمُسْتَهْزِئِينَ ﴿٩٦﴾ الَّذِينَ يَجْعَلُونَ مَعَ اللَّهِ إِلَهًا آخَرَ

فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿٩٧﴾ (الحجر ९५-९६)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** बेशक इन हंसने वालों पर हम तुम्हें किफ़ायत करते हैं जो **अल्लाह** के साथ दूसरा मा'बूद ठहराते हैं तो अब जान जाएंगे।

**दर्से हिदायत :-** हज़राते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के साथ ता'न व तमस्खुर, इन की ईज़ा रसानी और तौहीन व बे अदबी वोह जुमें अज़ीम है कि खुदावन्दे क़हहार व जब्बार का क़हर व ग़ज़ब इन मुजरिमों को कभी मुआफ़ नहीं फ़रमाता। ऐसे लोगों को कभी ग़र्क़ कर के हलाक कर दिया, कभी इन की आबादियों पर पथ्थर बरसा कर इन को बरबाद कर दिया, कभी ज़लज़लों के झटकों से इन की बस्तियों को उलट पलट कर के तह्स नह्स कर दिया। कुछ ज़िल्लत के साथ क़त्ल हो गए। कुछ तरह तरह के अमराज़ में मुब्तला हो कर ऐड़ियां रगड़ते रगड़ते और तड़पते तड़पते मर गए।

इस ज़माने में भी जो लोग बारगाहे नबुव्वत में गुस्ताखियां और बे अदबियां करते रहते हैं वोह कान खोल कर सुन लें कि उन की ईमान की दौलत तो गारत हो ही चुकी है, अब **ان شاء الله تعالى** वोह किसी न किसी अज़ाबे इलाही में गिरिफ़्तार हो कर ज़िल्लत की मौत मर जाएंगे और दुनिया उन के मन्हूस वुजूद से पाक हो जाएगी। सुन लो **अल्लाह** तआला का वा'दा कभी हरगिज़ हरगिज़ ग़लत नहीं हो सकता। लिहाज़ा तुम लोग इन्तिज़ार करो और हम भी इन्तिज़ार कर रहे हैं और अगर अज़ाबे इलाही की मार से बचना चाहते हो तो इस की फ़क़्त एक ही सूरत है कि सिद्के दिल से तौबा कर के रसूले अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की महबूबत व अज़मत से अपने दिलों को मा'मूर व आबाद कर लो और अपने कौलो फ़ैल और ए'तिकाद से ता'ज़ीम व तौकीरे नबवी को अपना दीनी शिआर बना लो। फिर तुम देखना कि हर क़दम पर तुम्हारे ऊपर खुदावन्दे कुहूस की रहमतें नाज़िल होंगी और ख़ातिमा बिल ख़ैर की क़रामतों से तुम सरफ़राज़ हो कर दोनों ज़हां की सआदतों से बहरामन्द हो जाओगे। (والله تعالى اعلم)

### ﴿31﴾ तमाम सुवारियों का ज़िक्र कुरआन में

नुज़ूले कुरआन के वक़्त जो चोपाए आम तौर पर बार बरदारी और सुवारी के लिये इस्ति'माल होते थे वोह चार जानवर थे। ऊंट, घोड़े, ख़च्चर, गधे। बार बरदारी और सुवारी के इन चार जानवरों का ज़िक्र कुरआने मजीद में ख़ास तौर से सराहतन मज़कूर है इन के इलावा क़ियामत तक जितनी सुवारियां और बार बरदारी के साधन आलमे वुजूद में आने वाले हैं, **अल्लाह** तआला ने इन सब का तज़क़िरा कुरआने मजीद में इजमालन बयान फ़रमा दिया है। चुनान्चे, सूरए नहूल की मुन्दरिजए ज़ैल आयत को बग़ौर पढ़ लीजिये इरशादे रब्बानी है कि।

وَالْأَنْعَامَ خَلَقْنَا لَكُمْ فِيهَا دِفْءٌ وَمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ۝ وَلَكُمْ فِيهَا جَمَالٌ حِينَ تُرِيحُونَ وَحِينَ تَسْرَحُونَ ۝ وَتَحْمِلُ أَثْقَالَكُمْ إِلَىٰ بَلَدٍ لَّمْ تَكُونُوا بِالْغَيْهِ ۚ أَلَا بِشِقِّ الْأَنْفُسِ ۚ إِنَّ رَبَّكُمْ لَرءُوفٌ رَّحِيمٌ ۝ وَالْحَيْلُ وَالْإِبْعَالُ وَالْحَمِيرُ لَتَرْكَبُنَهَا وَزِينَةٌ ۖ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝ (النحل ८-१५)



**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** और चोपाए पैदा किये इन में तुम्हारे लिये गर्म लिबास और मन्फ़अतें हैं और इन में से खाते हो और तुम्हारा इन में तजम्मुल है जब इन्हें शाम को वापस लाते हो और जब चरने को छोड़ते हो और वोह तुम्हारे बोझ उठा कर ले जाते हैं ऐसे शहर की तरफ़ कि तुम उस तक न पहुंचते मगर अध मरे हो कर बेशक तुम्हारा रब निहायत मेहरबान रहम वाला है और घोड़े और ख़च्चर और गधे कि इन पर सुवार हो और जीनत के लिये और वोह पैदा करेगा जिस की तुम्हें ख़बर नहीं।

इस आयते मुबारका में आख़िरी जुम्ला **وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ** में क़ियामत तक आलमए वुजूद में आने वाले तमाम बार बरदारी के ज़राएअ़ और क़िस्म क़िस्म की उन मुख़लिफ़ सुवारियों के पैदा होने का बयान है जो नुज़ूले कुरआन के वक़्त तक ईजाद नहीं हुई थीं। मषलन साईकिल, मोटर, रेल गाड़ियां, सड़कें, बहरी जहाज़, हवाई जहाज़, हेली कोप्टर, रॉकेट वगैरा वगैरा तमाम नक़ल व हम्ल के सामान और सुवारियों के ज़राएअ़ सब का इजमालन ज़िक्र फ़रमा कर **अल्लाह** तआला ने अपनी कुदरते कामिला का इज़हार और ग़ैब की ख़बर का ए'लाने आ़म फ़रमाया है। ज़राएअ़ नक़ल व हम्ल और सुवारियों के इलावा इस आयत में तो इस क़दर उमूम है कि इस में क़ियामत तक पैदा होने वाली हर हर चीज़ और तमाम काइनाते आ़लम का इजमालन बयान है। (والله تعالى أعلم)

चारों सुवारियां जो नुज़ूले कुरआन के वक़्त अरब में आ़म थीं। इन के बारे में कुछ खुसूसिय्यात हस्बे ज़ैल हैं जो याद रखने के काबिल हैं।  
**ऊंट :-** येह बहुत से नबियों और रसूलों की सुवारी है। खुद हुज़ूर ख़ातिमुन्नबिय्यीन **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने ऊंट की सुवारी फ़रमाई और आप की दो ऊंटनियां बहुत मशहूर हैं। एक “क़स्वा” और दूसरी “अज़बा” जिस के बारे में रिवायत है कि येह कभी दौड़ में किसी ऊंट से मग़लूब नहीं हुई थी मगर एक मरतबा एक आ'राबी के ऊंट से दौड़ में पीछे रह गई तो हज़राते सहाबए किराम को बहुत शाक़ गुज़रा। इस मौक़अ पर आप ने इरशाद फ़रमाया कि **अल्लाह** पर येह हक़ है कि जब वोह किसी

दुनिया की चीज़ को बुलन्द फ़रमा देता है तो उस को पस्त भी कर देता है। मरवी है कि आप की ऊंटनी “अज़्बा” ने आप की वफ़ात के बा’द ग़म में न कुछ खाया और न पिया और वफ़ात पा गई और बा’ज़ रिवायतों में आया है कि क़ियामत के दिन इसी ऊंटनी पर सुवार हो कर हज़रते बीबी फ़ातिमा (तफ़सीर روح البیان، ج ۵، ص ۸۹، پ ۱۳، النحل: ۷) رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا मैदाने महशर में तशरीफ़ लाएंगी।

“हयातुल हैवान” में है कि ऊंट के बालों को जला कर इस की राख अगर बहते हुवे खून पर छिड़क दी जाए तो खून फ़ौरन बन्द हो जाएगा और ऊंट की कुलनी अगर किसी आशिक की आस्तीन में बांध दी जाए तो उस का इश्क़ ज़ाइल हो जाएगा और ऊंट का गोश्त बहुत मक़वी बाह है।

(تفسیر روح البیان، ج ۵، ص ۸۹، پ ۱۳، النحل: ۷)

**घोड़ा :-** सब से पहले घोड़े पर हज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام ने सुवारी फ़रमाई। आप से पहले येह वहशी और जंगली चोपाया था। इसी लिये हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि तुम लोग घोड़े की सुवारी करो क्यूंकि येह तुम्हारे बाप हज़रते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام की मीराष है। हज़रते अनस رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ का बयान है कि हुज़ुरे अक़दस صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को बीवियों के बा’द सब से ज़ियादा घोड़ा महबूब था। हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि घोड़ा मैदाने जंग में येह तस्बीह पढ़ता है “سُبُّوحٌ قُدُّوسٌ رَبُّ الْمَلَكِطَةِ وَالرُّوحِ” खुद हुज़ुरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के चन्द घोड़े थे जिन पर आप सुवारी फ़रमाया करते थे।

मन्कूल है कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने हज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام से दरयाफ़्त फ़रमाया कि कौन कौन सी सुवारियां आप को पसन्द हैं ? तो आप ने फ़रमाया कि घोड़ा और गधा और ऊंट क्यूंकि घोड़ा उलूल अज़्म रसूलों की सुवारी है और ऊंट हज़रते हूद, हज़रते सालेह, हज़रते शो’ऐब व हज़रते मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सुवारी है और गधा हज़रते ईसा व हज़रते उज़ैर عليهما السلام की सुवारी है और मैं क्यूं न इस चोपाए (गधे) से महबूबत रखूं जिस को मरने के बा’द **अब्बाह** तआला ने ज़िन्दा फ़रमाया। (تفسیر روح البیان، ج ۵، ص ۱۰۱ - ۱۰۲ (ملخصاً) پ ۱۳، النحل: ۸)

**ख़च्चर :-** येह भी एक मुबारक सुवारी है । रिवायत है कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मिल्कियत में छे ख़च्चर थे । इन में से एक सफ़ेद रंग का था जो मक़क़स वालिये मिस्र ने बतौर हदिय्या आप की ख़िदमते मुबारका में पेश किया था जिस का नाम “दलदल” था । हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام अन्दरूने शहर मदीना और अपने बाहर के सफ़रों में इस पर सुवारी फ़रमाया करते थे । इस की उम्र बहुत ज़ियादा हुई यहां तक कि इस के सब दांत टूट गए और इस की ख़ूराक के लिये जव कूट कर दलया बनाया जाता था । येह हुज़ूर की वफ़ात के बा’द मुद्दतों ज़िन्दा रहा । चुनान्वे, हज़रते उषमान رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अपनी ख़िलाफ़त के दौरान इस पर सुवार हुवे । और आप के बा’द हज़रते अली رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ भी जंगे ख़वारिज के मौक़अ पर इसी ख़च्चर पर सुवार हो कर जंग के लिये निकले । फिर आप के बा’द आप के साहिबज़ादगान हज़रते इमामे हसन व हज़रते इमामे हुसैन व हज़रते मुहम्मद बिन अल हनफ़िय्या (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمْ) ने भी इस की सुवारी का शरफ़ पाया । (تفسير روح البيان، ج ٥، ص ١١٢، ١١٣، النحل: ٨)

**गधा :-** येह भी अम्बिया और रसूलों की सुवारी है और हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام की मिल्कियत में भी दो गधे थे, एक का नाम “अफ़ीर” और दूसरे का नाम “या’फूर” था । रिवायत है कि “या’फूर” आप को ख़ैबर में मिला था और उस ने हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से कलाम किया था कि या रसूलल्लाह ! मेरा नाम “ज़ियाद बिन शहाब” है और मेरे बाप दादाओं में साठ ऐसे गधे गुजरे हैं जिन पर नबियों ने सुवारी फ़रमाई है और आप भी **अब्बाह** के नबी हैं लिहाज़ा मेरी तमन्ना है कि आप के बा’द दूसरा कोई मेरी पुश्त पर न बैठे । चुनान्वे, इस चोपाए की तमन्ना पूरी हो गई कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की वफ़ाते अक्दस के बा’द “या’फूर” शिद्दते ग़म से निढाल हो कर एक कुंवे में गिर पड़ा और फ़ौरन ही मौत से हमकिनार हो गया । येह भी रिवायत है कि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام “या’फूर” को भेजा करते थे कि फुलां सहाबी को बुला कर लाओ तो येह जाता था और

सहाबी के दरवाजे को अपने सर से खटखटाता था तो वोह सहाबी या'फूर को देख कर समझ जाते कि हुजूर ने मुझे बुलाया है चुनान्चे, वोह फौरन ही या'फूर के साथ दरबारे नबी में हाजिर हो जाया करते थे। हदीष में आया है कि जो शख्स अदना कपड़ा पहनेगा और बकरी का दूध दोहेगा और गधे की सुवारी करेगा। उस में बिल्कुल ही तकब्बुर नहीं होगा।

(تفسير روح البيان، ج ١، ص ١١، ١٢، النحل: ٨)

**दर्से हिदायत :-** इन चारों सुवारियों को हकीर नहीं समझना चाहिये क्यूंकि **अल्लाह** तआला ने बतौरै इन्आम व एहसान के इन जानवरों की तख्तीक का जिक्र फरमाया है और फिर इन चारों सुवारियों पर हज़रते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام सुवार भी हुवे हैं लिहाज़ा इन सुवारियों की तौहीन व तहकीर बहुत बड़ी गुस्ताखी व बे अदबी है जो कुफ़्र तक पहुंचा देने वाली मन्हूसियत है बल्कि हर मुसलमान पर लाज़िम है कि इन चोपायों को **अल्लाह** तआला की ने'मत जान कर शुक्र बजा लाए और हज़रते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की निस्बत से इन सुवारियों की दिल से कद्र करे और हरगिज़ हरगिज़ इन की तौहीन व तहकीर न करे कि इस में ईमान की सलामती बल्कि ईमान की नूरानियत का राज़ मुजमिर है और इन चारों सुवारियों के बा'द जो दूसरी सुवारियां ईजाद हुई हैं इन पर भी सुवार होना जाइज़ है और इन सुवारियों के बारे में येह ईमान रखना लाज़िम है कि येह सब खुदा ही की पैदा की हुई हैं और येह सब सुवारियां वोही हैं जिन के बारे में **अल्लाह** तआला ने وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُونَ ॥ फ़रमा कर इन के पैदा करने का वा'दा फ़रमाया है। (والله تعالى أعلم)

### ﴿32﴾ शहद की मख्खी

अरबी में शहद की मख्खी को “नह्ल” कहते हैं। कुरआने मजीद में **अल्लाह** तआला ने एक सूरह नाज़िल फ़रमाई जिस का नाम सूरए नह्ल है। इस सूरह में शहद और शहद की मख्खी के फ़ज़ाइल और इस के फ़वाइद व मनाफ़ेअ का तज़क़िरा फ़रमाया है, जो काबिले ज़िक्र है और दर हकीकत येह मख्खियां अजाइबाते आलम की फ़ेहरिस्त में एक बहुत ही

नुमायां मक़ाम रखती हैं। इस मख़बी की चन्द खुसूसियत हस्बे ज़ैल हैं :

﴿1﴾ इस मख़बी के घरों या'नी छत्तों का डिसिप्लिन और निज़ामे अमल इतना मुनज़्ज़म और बा काइदा है गोया एक तरक्की याफ़्ता मुल्क का "निज़ामे सल्तनत" है। जो पूरे निज़ाम व इन्तिज़ाम के साथ नज़्मे ममलुकत चला रहा है जिस में कोई ख़लल और फ़साद रू नुमा नहीं होता।

﴿2﴾ हज़ारों बल्कि लाखों की ता'दाद में येह मख़बियां इस तरह रहती हैं कि इन का एक बादशाह होता है जो जिस्म और क़द में तमाम मख़बियों से बड़ा होता है। तमाम मख़बियां उसी की क़ियादत में सफ़र और क़ियाम करती हैं इस बादशाह को "या'सूब" कहते हैं।

﴿3﴾ इन का "या'सूब" इन मख़बियों के लिये तक्सीम कार करता है और सब को अपनी अपनी ड्यूटी पर लगा कर काम कराता है। चुनान्चे, कुछ मख़बियां मकान बनाती हैं जो सूरखों की शक़ल में होता है येह मख़बियां इन सूरखों को इतनी ख़ूबसूरती और यक्सानियत के साथ मुसद्दस (छे गोशों वाला) शक़ल का बनाती हैं कि गोया किसी माहिर इन्जिनियर ने परकार की मदद से इन सूरखों को बनाया है। सब की शक़ल बिल्कुल यक्सां और एक जैसी सब की लम्बाई चोड़ाई और गहराई बिल्कुल बराबर होती है।

﴿4﴾ कुछ मख़बियां "या'सूब" के हुक्म से अन्डे बच्चे पैदा करने का काम अन्जाम देती हैं, कुछ शहद तय्यार करती हैं, कुछ मोम बनाती हैं, कुछ पानी लाती हैं, कुछ पहरा देती रहती हैं, मजाल नहीं कि कोई दूसरी मख़बी इन के घर में दाख़िल हो सके।

﴿5﴾ येह मख़बियां फलों फूलों वगैरा का रस चूस चूस कर लाती हैं और शहद के ख़ज़ाने में जम्अ करती रहती हैं और फलों फूलों की तलाश में जंगलों और मैदानों में सेंकड़ों मील अलग अलग दूर दूर तक चली जाती हैं मगर येह अपने छत्तों को नहीं भूलती हैं और बिला तकल्लुफ़ किसी तलाश के सीधे सेंकड़ों मील की दूरी से अपने छत्तों में पहुंच जाती हैं।

﴿6﴾ येह मख़बियां मुख़लिफ़ रंगों और मुख़लिफ़ ज़ाइकों का शहद तय्यार करती हैं, कभी सुर्ख़, कभी सफ़ेद, कभी सियाह, कभी ज़र्द, कभी पतला, कभी गाढ़ा, मुख़लिफ़ मौसिमों में और मुख़लिफ़ फलों फूलों की

बदौलत शहद के मुख़ालिफ़ रंग और ज़ाइके बदलते रहते हैं।

﴿7﴾ येह अपने छत्ते कभी दरख़्तों पर, कभी पहाड़ों पर, कभी घरों में, कभी दीवारों के सूरखों में, कभी ज़मीन के अन्दर बनाया करती हैं और हर जगह यक्सां डिसिप्लिन और निज़ाम के साथ इन का कारख़ाना चलता रहता है।

﴿8﴾ नाफ़रमान और बागी मख़िख़यों को इन का “या’सूब” मुनासिब सज़ाएं भी देता है यहां तक कि बा’ज़ को क़त्ल भी करवा देता है और सब को अपने कन्ट्रोल में रखता है। कभी कोई शहद की मख़्खी किसी नजासत पर नहीं बैठ सकती और अगर कोई कभी बैठ जाए तो इन का बादशाह “या’सूब” उस को सख़्त सज़ा दे कर छत्ते से निकाल देता है।

कुरआने मजीद में इस शहद की मख़िख़यों के मसाइल का खुतुबा पढ़ते हुवे इरशाद फ़रमाया कि

وَأَوْحَىٰ رَبُّكَ إِلَى النَّحْلِ أَنِ اتَّخِذِي مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا وَمِنَ الشَّجَرِ  
وَمَا يَعْرِشُونَ ﴿٧٨﴾ ثُمَّ كُنَّ مِنْ كُلِّ الشَّجَرِ فَاسْلُكِي سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا  
يَخْرُجُ مِنْ بُطُونِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلَفٌ أَلْوَانُهُ فِيهِ شِفَاءٌ لِلنَّاسِ ۚ إِنَّ فِي  
ذَلِكَ لَآيَةً لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ﴿٧٩﴾ (النحل ٦٨-٦٩)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और तुम्हारे रब ने शहद की मख़्खी को इल्हाम किया कि पहाड़ों में घर बना और दरख़्तों में और छत्तों में फिर हर किस्म के फल में से खा और अपने रब की राहें चल कि तेरे लिये नर्म व आसान हैं, इस के पेट से एक पीने की चीज़ रंग बि रंग निकलती है जिस में लोगों की तन्दुरुस्ती है बेशक इस में निशानी है ध्यान करने वालों को।

**दर्से हिदायत :-** **अल्लाह** तअ़ाला ने शहद को तमाम बीमारियों के लिये शिफ़ा फ़रमाया है चुनान्वे, बा’ज़ अमराज़ में तन्हा शहद से शिफ़ा हासिल होती है और बा’ज़ अमराज़ में शहद के साथ दूसरी दवाओं को मिला कर बीमारियों का इलाज़ करते हैं जैसा कि मा’जूनों और जावारिशों और तरह तरह के शरबतों के ज़रीए तमाम बीमारियों का इलाज़ किया जाता है और इन सब दवाओं में शहद शामिल किया जाता है इसी तरह

सिकन्जबीन में भी शहद डाली जाती है जो पेट के अमराज़ के लिये बेहद मुफीद है। बहर हाल हर मुसलमान को येह ईमान रखना चाहिये के शहद में शिफा है इस लिये कि कुरआने मजीद में **अल्लाह** तआला ने शहद के बारे में इरशाद फ़रमाया कि **فِيهِ شِفَاءٌ لِّلنَّاسِ** <sup>(پ ۱۳، النحل ۶۹)</sup> (فَكَتُ وَاللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰم) या'नी इस में लोगों के लिये शिफा है

### ﴿33﴾ खूशट उम्र वाला

इन्सान की वोह तवील उम्र जिस में इन्सान के तमाम कवा मुज़महिल और बेकार हो जाते हैं और आदमी बिल्कुल ही नाकिसुल कुव्वत, कम अक्ल और कलीलुल फ़हम हो कर बचपन की हैअत के मिष्ल अक्ल व दानाई और होश व ख़ुर्द से आरी और निस्यान के ग़लबे से सारा इल्म भूल जाता है और उठने बैठने, चलने फिरने से मजबूर हो जाता है। **अल्लाह** तआला ने इस उम्रे इन्सानी का ज़िक्र फ़रमाते हुवे कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया कि

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَوَفِّقُكُمْ ۖ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدِّ اِلٰی اَرْدَلِ الْعُمْرِ لٰكِي لَا يَعْلَمُ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْئًا ۚ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿۷۰﴾ <sup>(پ ۱۳، النحل ۷۰)</sup>

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और **अल्लाह** ने तुम्हें पैदा किया फिर तुम्हारी जान कब्ज़ करेगा और तुम में कोई सब से नाकिस उम्र की तरफ़ फेरा जाता है कि जानने के बा'द कुछ न जाने बेशक **अल्लाह** सब कुछ जानता सब कुछ कर सकता है।

इस “अर्ज़लुल उम्र” की कोई मिक्दार मुअय्यन नहीं है, तारीख़ी तजरिबा है कि बा'ज़ लोग साठ ही बरस की उम्र में ऐसे हो जाते हैं कि बा'ज़ लोग एक सो बरस की उम्र पा कर भी खूशट उम्र की मन्ज़िल में नहीं पहुंचते। हां इमाम क़तादा **رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَيْهِ** का कौल है कि नव्वे बरस की उम्र वाले के तमाम कवा और ह्वास अमल व तसरुफ़ से नाकारा हो जाते हैं और वोह हर किस्म की कमाई और हज़ व जिहाद वगैरा के काबिल नहीं रह जाते और येह उम्र और इस की कैफ़िय्यात वाक़ेई इस काबिल हैं



कि इन्सान इस से खुदा की पनाह मांगे । चुनान्वे, हदीष शरीफ में है कि हुजूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ सात चीजों से पनाह मांगा करते थे और यूँ दुआ मांगा करते थे ।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْبُخْلِ وَالْكَسَلِ وَأَرْذَلِ الْعُمْرِ وَعَذَابِ الْقَبْرِ وَفِتْنَةِ الدَّجَالِ وَفِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ (صحيح البخارى، ج ۳، ص ۲۵۷، حديث ۴/۷۰ بتغير قليل)

ऐ **अल्लाह** मैं तेरी पनाह मांगता हूँ कन्जूसी से और काहिली से और खूसट उम्र से और कब्र के अज़ाब से और फितनए दज्जाल से और जिन्दगी के फितने से और मौत के फितने से ।

इसी लिये मन्कूल है कि मशहूर बुजुर्ग और मुस्तनद अल्लिमे दीन हज़रते मुहम्मद बिन अली वासती رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهِ अपनी जात के लिये खास तौर पर येह दुआ मांगा करते थे ।

يَا رَبِّ لَا تُخَيِّئِي إِلَى زَمَنٍ  
أَكُونُ فِيهِ كَلًّا عَلَى أَحَدٍ  
خُذْ بِيَدِي قَبْلَ أَنْ أَقُولَ لِمَنْ  
الْقَاءُ عِنْدَ الْقِيَامِ خُذْ بِيَدِي

या'नी ऐ **अल्लाह** ! मुझे इतने ज़माने तक जिन्दा मत रख कि मैं किसी पर बोझ बन जाऊँ तू इस से कब्ल मेरी दस्तगीरी फ़रमा ले कि मैं हर मिलने वाले से उठते वक्त येह कहूँ कि तुम मेरा हाथ पकड़ लो ।

हदीष शरीफ में है और बा'ज लोगों ने इस को हज़रते इकरमा का कौल बताया है कि जो शख्स कुरआन को पढ़ता रहे वोह अर्ज़लिल उम्र (खूसट) को न पहुंचेगा और ऐसे ही जो कुरआन में ग़ौरो फ़िक्र करता रहेगा और कुरआन पर अमल भी करता रहेगा वोह भी इस खूसट उम्र से महफूज रहेगा ।

(تفسير روح البيان، ج ۵، ص ۵۴-۵۵ (ملخصاً)، پ ۱۴، النحل: ۷)

**दर्से हिदायत :-** जिन्दगी और मौत और कम या ज़ियादा उम्र येह **अल्लाह** तआला ही के कब्ज़े व इख्तियार में है वोह जिस को चाहे कम उम्र अता फ़रमाए और जिस को चाहे तवील उम्र बख़्से । किसी इन्सान को हरगिज़ हरगिज़ इस में कोई दख़्ल नहीं है इन्सान को चाहिये कि बहर हाल खुदावन्दे कुद्दूस की मरज़ी पर साबिरो शाकिर रहे । हां अलबत्ता येह

दुआ मांगता रहे कि **अल्लाह** तआला मेरी ज़िन्दगी को नेकियों में गुज़ारे और हर किस्म के गुनाहों से महफूज़ रखे क्योंकि थोड़ी सी उम्र मिले और नेकियों में गुज़रे तो इस से बड़ा कोई इन्आम नहीं और उम्र तवील पाए मगर हसनात और नेकियों में न गुज़रे तो वोह लम्बी उम्र बहुत बड़ा ख़सारा और वबाल है और इस का हर वक़्त ध्यान रखे कि किसी बुढ़े शख़्स की बे अदबी न होने पाए बल्कि हमेशा बुढ़े का ए'ज़ाज़ व एहतिराम पेशे नज़र रहे, क्योंकि

एक हदीष में है कि एक शख़्स ने दरबारे रिसालत में फ़क्रो फ़ाका की शिकायत की, तो हुज़ूरे अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया **لَعَلَّكَ مَشَيْتَ أَمَامَ شَيْخٍ** या'नी ग़ालिबन तुम किसी बुढ़े आदमी के आगे आगे चले होंगे। येह उसी की नुहसत हैं।

(تفسير روح البيان، ج ٥، ص ٥٦، پ ١٢، النحل: ٤٠)

### तौबा की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना इब्ने मसऊद **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** से रिवायत है, **अल्लाह** **عَزَّوَجَلَّ** के महबूब, दानाए गुयूब मुनज़्ज़हुन अनिल उयूब **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का फ़रमाने रहमत निशान है :

**اَلْاَتَابُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَّا ذَنْبَ لَهُ**

या'नी “गुनाहों से तौबा करने वाला ऐसा है जैसा कि उस ने गुनाह किया ही नहीं।”

(सनन ابن ماجه، حديث ٢٢٥، ص ٢٤٣)(1284 स. 1 जि. सुन्त, फैज़ाने)

### ﴿34﴾ बे वुकूफ़ बुढ़िया

मक्कए मुकर्रमा में एक बुढ़िया रैता बिनते सा'द बिन तमीम कुरशिया थी। जिस के मिजाज में वहम और अक्ल में फुतूर था वोह रोज़ाना दोपहर तक मेहनत कर के सूत काता करती थी और दोपहर के बा'द वोह काते हुवे सूत को तोड़ कर रैजा रैजा कर डालती थी और अपनी बांदियों से भी तुड़वाती थी, येही रोज़ाना का उस का मा'मूल था।

(तفسير صاوى، ج ३، ص १०८९، १०८९، النحل: ९२)

जो लोग **अल्लाह** तअ़ाला के नाम की क़समें खा कर या उस के नाम पर लोगों से कोई अ़हद कर के अपनी क़समों और अ़हदों को तोड़ दिया करते हैं। उन लोगों को **अल्लाह** तअ़ाला ने उस औरत से तशबीह देते हुवे क़समों और अ़हदों के तोड़ने से मन्अ़ फ़रमाया है। चुनान्चे, इरशाद फ़रमाया कि

وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدْتُمْ وَلَا تَنْقُضُوا أَلْيَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا  
قَدْ جَعَلْنَا اللَّهُ عَلَيْكُمْ كَفِيلًا ۖ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٩٢﴾ وَلَا تَكُونُوا  
كَالَّذِينَ نَقَضَتْ غُرْلَهُمْ مِنْ بَعْدِ قُوَّةٍ أَنْكَارًا ۖ

(النحل: ९१-९२)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और **अल्लाह** का अ़हद पूरा करो जब कौल बांधो और क़समें मज़बूत कर के न तोड़ो और तुम **अल्लाह** को अपने ऊपर ज़ामिन कर चुके हो बेशक **अल्लाह** तुम्हारे काम जानता है और उस औरत की तरह न हो जिस ने अपना सूत मज़बूती के बा'द रैजा रैजा कर के तोड़ दिया।

**दर्से हिदायत :-** हर क़सम की बद अ़हदी और अ़हद शिकनी ममनूअ़ और शरीअत में गुनाह है इसी तरह **अल्लाह** तअ़ाला की क़सम खा कर बिला ज़रूरत इस को तोड़ना भी जाइज़ नहीं। **अल्लाह** तअ़ाला ने इरशाद फ़रमाया है कि **وَأَوْفُوا بِالْعُقُودِ** या'नी अपने अ़हदों और मुआहदों को पूरा करो और फ़रमाया कि **وَاحْذَرُوا أَلْيَانَكُم** या'नी अपनी क़समों की हिफ़ाज़त करो। हां, अलबत्ता अगर किसी ख़िलाफ़े शरअ़ बात की क़सम खा ली हो तो हरगिज़ हरगिज़ इस क़सम पर अड़े नहीं रहना चाहिये बल्कि लाज़िम है कि इस क़सम को तोड़ कर इस का कफ़ारा अदा करे। (والله تعالى اعلم)

### ﴿35﴾ हसूर गाऊं की बरबादी

“हसूर” यमन का एक गाऊं था इस गाऊं वालों की हिदायत के लिये हज़रते मूसा बिन इमरान से बहुत पहले **अब्लाह** तअ़ाला ने एक नबी को भेजा जिन का नाम मूसा बिन मीशा **عَلَيْهِ السَّلَام** था जो हज़रते या'कूब **عَلَيْهِ السَّلَام** के परपोते थे। गाऊं वालों ने आप को झुटलाया और फिर आप को क़त्ल कर दिया इस नाजाइज़ हरकत पर खुदा का कहरो ग़ज़ब और उस का अज़ाब गाऊं वालों पर उतर पड़ा। गाऊं वाले तरह तरह की बलाओं में गिरिफ़्तार हो गए यहां तक कि “**बख़्त नस्**” काफ़िर व ज़ालिम बादशाह इस गाऊं पर मुसल्लत हो गया। और उस ने निहायत ही बेदर्दी के साथ पूरे गाऊं के तमाम मर्दों को क़त्ल कर दिया और सब औरतों को गिरिफ़्तार कर के लौंडी बना लिया और शहर को ताख़्तो ताराज कर के उस की ईंट से ईंट बजा दी। जब शहर में क़त्ले आम शुरू हुआ तो गाऊं वाले भागने लगे उस वक़्त फ़िरिश्तों ने बतौर मज़ाक़ के कहा कि “ऐ गाऊं वालो ! मत भागो और अपने घरों में अपने माल व दौलत को ले कर आराम व हसीन ज़िन्दगी बसर करो। कहां भाग रहे हो ? ठहरो ! यह अम्बिया **عَلَيْهِمُ السَّلَام** के ख़ूने नाहक़ का बदला है जो तुम्हें मिल रहा है।” आस्मान से मलाइका की येह आवाज़ पूरे गाऊं वालों में आती रहीं और “बख़्त नस्” के लश्करों की तल्वारे इन के सर उड़ाती रहीं। जब गाऊं वालों ने येह मन्ज़र देखा तो अपने गुनाहों और जुर्मों का इक़रार करने लगे मगर उन की आहोज़ारी और गिर्या व बेक़रारी ने उन को कोई नफ़अ नहीं दिया। गाऊं में हर तरफ़ खून की नहियां बह गईं और सारा गाऊं तह्स नह्स हो गया। कुरआने मजीद ने इन लोगों की हलाकत व बरबादी की दास्तान को इन लफ़्ज़ों में बयान फ़रमाया है :

وَكَمْ قَصَبًا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَأَنْشَأْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا آخَرِينَ ①  
فَلَمَّا أَحْسَوْا بِبَأْسِنَا إِذَاهُمْ مِنْهَا يَرُكُّونَ ② لَا تَرْكُضُوا وَارْجِعُوا  
إِلَى مَا أَتَرَفْتُمْ فِيهِ وَمَسْكِنَتَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْأَلُونَ ③ قَالُوا يَوَيْلَنَا إِنَّا  
كُنَّا ظَالِمِينَ ④ فَمَا زِلْزَلَتْ تِلْكَ دَعْوُهُمْ حَتَّى جَعَلْنَاهُمْ حَصِيدًا  
خَبِيدِينَ ⑤ (پے ۱، الانبیاء: ۱-۱۵)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** और कितनी ही बस्तियां हम ने तबाह कर दीं कि वोह सितमगार थीं और उन के बा'द और कौम पैदा की तो जब इन्हों ने हमारा अज़ाब पाया जभी वोह उस से भागने लगे, न भागो और लौट के जाओ उन आसाइशों की तरफ जो तुम को दी गई थीं और अपने मकानों की तरफ शायद तुम से पूछना हो, बोले हाए ख़राबी हमारी बेशक हम ज़ालिम थे तो वोह येही पुकारते रहे यहां तक कि हम ने उन्हें कर दिया काटे हुवे बुझे हुवे ।

और बा'ज मुफ़स्सरीने किराम ने फ़रमाया है कि इस आयत में गाऊं से मुराद गुज़श्ता हलाक शुदा उम्मतों के गाऊं हैं । या'नी हज़रते नूह व हज़रते लूत व हज़रते सालेह व हज़रते शोऐब عَلَيْهِمُ السَّلَام की कौमों की बस्तियां जो तरह तरह के अज़ाबों से हलाक व बरबाद कर दी गई । (تفسير صاوى، ج ۴، ص ۱۲۹۲، ۱، ۲، الانبياء: ۱) (والله تعالى اعلم)

**दर्से हिदायत :-** हज़रते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام की तकज़ीब व तौहीन और इन की ईजा रसानी व क़त्ल येह सब बड़े बड़े वोह जुमें अज़ीम हैं कि खुदावन्दे कुहूस का अज़ाब इन लोगों पर ज़रूर आता ही है । चुनान्वे, कुरआने मजीद गवाह है कि बहुत सी बस्तियां इन्हीं जुर्मों में तबाह व बरबाद कर दी गई ।

### ﴿36﴾ हज़रते जुल किफ़ल عَلَيْهِ السَّلَام

कुरआने मजीद में हज़रते जुल किफ़ल عَلَيْهِ السَّلَام का ज़िक्र सिर्फ़ दो सूरतों या'नी “सूरए अम्बिया” और “सूरए ص” में किया गया है और इन दोनों सूरतों में सिर्फ़ आप का नाम मज़कूर है । नाम के इलावा आप के हालात का मुजमल या मुफ़स्सल कोई तज़क़िरा नहीं है । सूरए अम्बिया में येह है :

وَإِسْلَیْلٌ وَادْرِیْسٌ وَذَا الْكِفْلِ ط كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِیْنَ ﴿۳۶﴾ (پ ۱، الانبياء: ۸۵)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** और इस्माईल और इदरीस और जुल किफ़ल को (याद करो) वोह सब सब्र वाले थे ।

और सूरए “ص” में इस तरह इरशाद हुवा कि

وَاذْكُرْ إِسْمَاعِيلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ۖ وَكُلٌّ مِنَ الْأَخْيَارِ ﴿٢٣٧﴾ (प २३, स २४)

**तर्जमए कज्जुल ईमान :** और याद करो इस्माईल और यसअ और जुल किफ़ल को और सब अच्छे हैं ।

हज़रते जुल किफ़ल عَلَيْهِ السَّلَام के मुतअल्लिक कुरआने मजीद ने नाम के सिवा कुछ नहीं बयान किया है इसी तरह हदीषों में भी आप का कोई तज़क़िरा मन्कूल नहीं हैं । लिहाज़ा कुरआन व हदीष की रोशनी में इस से ज़ियादा नहीं कहा जा सकता कि जुल किफ़ल عَلَيْهِ السَّلَام खुदा के बरगुज़ीदा नबी और पैग़म्बर थे जो किसी क़ौम की हिदायत के लिये मबरूष हुवे थे ।

अलबत्ता हज़रते शाह अब्दुल कादिर साहिब देहलवी इरशाद फ़रमाते हैं कि हज़रते जुल किफ़ल عَلَيْهِ السَّلَام हज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام के फ़रजन्द हैं और इन्हों ने ख़ालिसन लि-वजहिल्लाह किसी की ज़मानत कर ली थी । जिस की वजह से इन को कई बरस कैद की तक्लीफ़ बरदाश्त करनी पड़ी । (मوضح القرآن)

और बा'ज़ मुफ़स्सरीन ने तहरीर फ़रमाया कि हज़रते जुल किफ़ल عَلَيْهِ السَّلَام दर हकीकत हज़रते हज़क़ील عَلَيْهِ السَّلَام का लक़ब है ।

और ज़मानए हाल के कुछ लोगों का ख़याल है कि जुल किफ़ल “गौतम बुध” का लक़ब है इस लिये कि इस के दारुल सल्तनत का नाम “कपल वस्तू” था जिस का मा'रुब “किफ़ल” है और अरबी में “जू”, “साहिब” और “मालिक” के मा'ना में बोला जाता है इस लिये यहां भी “कपल वस्तू” के मालिक और बादशाह को “जुल किफ़ल” कहा गया और इन लोगों का दा'वा है कि “गौतम बुध” की अस्ल ता'लीम तौहीद और हकीकी इस्लाम ही की थी मगर बा'द में येह दीन दूसरे अदयान व मलल की तरह मसख़ व महरुफ़ हो गया । मगर वाजेह रहे कि ज़मानए हाल के चन्द लोगों की येह राए कि “जुल किफ़ल” गौतम बुध का लक़ब है मेरे नज़दीक येह महज़ एक ख़याली तुक बन्दी है । तारीख़ी

और तहकीकी हैषियत से इस राए की कोई वुक्अत नहीं है । (والله تعالى اعلم)

ब ज़ाहिर ऐसा मा'लूम होता है कि हज़रते जुल किफ़ल عَلَيْهِ السَّلَام अम्बियाए बनी इस्राईल में से हैं और बनी इस्राईल के इन हालात व वाकिआत के सिवा जिन की तफ़्सीलात कुरआने मजीद में मुख़लिफ़ अम्बियाए बनी इस्राईल के ज़िक्र में आती रही हैं, हज़रते जुल किफ़ल عَلَيْهِ السَّلَام के ज़माने में कोई ख़ास वाकिआ ऐसा दरपेश नहीं हुवा जो आ़म तब्लीग़ व हिदायत से ज़ियादा अपने अन्दर इब्रत व मौइज़त का पहलू रखता हो। इस लिये कुरआने मजीद ने फ़क़त इन के नाम ही के ज़िक्र पर इक्तिफ़ा किया और हालात व वाकिआत का ज़िक्र नहीं फ़रमाया फ़क़त। (والله تعالى اعلم)

### ﴿37﴾ नहरें उठा ली जाएंगी

हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि **अल्लाह** तआला ने पांच नहरों को जन्नत से जारी फ़रमाया है।

﴿1﴾ जैहून ﴿2﴾ यहून् ﴿3﴾ दिजला ﴿4﴾ फुरात ﴿5﴾ नील।

येह पांचों नदियां एक ही चश्मे से जारी हुई हैं। **अल्लाह** तआला ने हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام के ज़रीए जन्नत के इस चश्मे को पहाड़ों के अन्दर अमानत रख दिया है और पहाड़ों से इन नहरों को ज़मीन पर जारी फ़रमा दिया है। जिस से लोग तरह तरह के फ़वाइद हासिल कर रहे हैं। जब याजूज माजूज के निकलने का वक़्त होगा तो **अल्लाह** तआला हज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام को ज़मीन पर भेजेगा और वोह छे चीज़ों को ज़मीन से उठा ले जाएंगे।

﴿1﴾ कुरआने मजीद ﴿2﴾ तमाम उलूम ﴿3﴾ हज़रे अस्वद ﴿4﴾ मक़ामे इब्राहीम ﴿5﴾ मूसा عَلَيْهِ السَّلَام का ताबूत ﴿6﴾ मज़कूरए बाला पांचों नहरें और जब येह छे चीज़ें ज़मीन से उठा ली जाएंगी तो दीनो दुन्या की बरकतें रूए ज़मीन से उठ जाएंगी और लोग इन बरकतों से बिल्कुल मह़रूम हो जाएंगे।

(تفسير صاوی، ج ۴، ص ۱۳۶، ۱۸، المومنون: ۱۸)



**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया कि

وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً بِقَدَرٍ فَأَسْكَنَتْهُ فِي الْأَرْضِ ۚ وَإِنَّا عَلَىٰ ذَهَابٍ

بِهِ لَقَدِيرُونَ ﴿١٨﴾ (پ ۱۸، المؤمنون ۱۸)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और हम ने आस्मान से पानी उतारा एक अन्दाज़े पर फिर उसे ज़मीन में ठहराया और बेशक हम उस के ले जाने पर कादिर हैं।

इस आयत में وَإِنَّا عَلَىٰ ذَهَابٍ بِهِ لَقَدِيرُونَ का येही मतलब है कि इन पानियों और नहरों को एक वक़्त हम उठा कर जहां से हम ने उतारा है वहां पहुंचा देंगे और ज़मीन से येह सब नापैद हो जाएंगे।

**दर्से हिदायत :-** तो बन्दों पर लाज़िम है कि खुदावन्दे कुदूस की इन ने'मतों की शुक्र गुज़ारी के साथ हिफ़ाज़त करें और हरगिज़ हरगिज़ पानी को बेकार जाएअ न करें और हर वक़्त खुदा से डरते रहें कि कहीं येह ने'मत हम से सल्ब न कर ली जाए। (والله تعالى أعلم)

### ﴿38﴾ तख़लीके इन्सानी के मराहिल

**अल्लाह** तआला बड़ा कादिरो कय्यूम है। अगर वोह चाहे तो एक लम्हे में हज़ारों इन्सानों को पैदा फ़रमा दे मगर वोह कादिर मुतलक अपनी कुदरते कामिला के बा वुजूद अपनी हिक्मते कामिला से इन्सानों को ब तदरीज शरफ़े वुजूद बख़्शता है। चुनान्वे, नुत्फ़ा मां की बच्चा दानी में पहुंच कर तरह तरह की कैफ़िय्यात और किस्म किस्म के तग़य्युरात से एक खास किस्म का मिजाज हासिल कर के जमा हुवा खून बन जाता है। फिर वोह जमा हुवा खून गोश्त की एक बोटी बन जाता है। फिर गोश्त की बोटी हड्डियां बन जाती हैं। फिर इन हड्डियों पर गोश्त चढ़ जाता है और पूरा जिस्म तय्यार हो जाता है फिर इस में रूह डाली जाती है और येह बे जान बदन जानदार हो जाता है और इस में नुतक और सम्अ व बसर वगैरा की मुख़लिफ़ ताक़तें व दैअत रखी जाती हैं। फिर मां इस बच्चे को जनती है इस तरह मुख़लिफ़ मनाज़िल व मराहिल को तै कर के एक इन्सान बतदरीज आलमे वुजूद में आता है। चुनान्वे,

कुरआने मजीद ने तख़लीके इन्सानी के इन मराहिल का नक्शा  
इन अल्फ़ाज़ में पेश फ़रमाया है कि

ثُمَّ جَعَلْنَاهُ نُطْفَةً فِي قَرَارٍ مَّكِينٍ ۝ ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا  
الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظًا فَكَسَوْنَا الْعِظَ لَحْمًا ثُمَّ أَنشَأْنَاهُ  
خَلْقًا آخَرَ ۖ فَتَبَارَكَ اللَّهُ أَحْسَنُ الْخَالِقِينَ ۝ (پ ۱۸، المومنون: ۱۳-۱۲)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** फिर उसे पानी की बूंद किया एक मज़बूत  
ठहराव में फिर हम ने उस पानी की बूंद को खून की फटक किया फिर खून  
की फटक को गोشت की बोटी फिर गोشت की बोटी को हड्डियां फिर उन  
हड्डियों पर गोشت पहनाया फिर उसे सूरत में उठान दी तो बड़ी बरकत  
वाला है **ALLAH** सब से बेहतर बनाने वाला है ।

**दर्से हिदायत :-** तख़लीके इन्सानी के इन मुख़्तलिफ़ मराहिल से गुज़रने  
में खुदावन्दे कुदूस की कौन कौन सी हिक्मतें और क्या क्या मस्तेहतें  
पोशीदा हैं ? इन को भला हम आ़म इन्सान क्या और क्यूंकर समझ सकते  
हैं ? लेकिन कम से कम हर इन्सान के लिये इस में इब्रतों और नसीहतों के  
बहुत से सामान हैं ताकि इन्सान येह सोचता रहे और कभी इस से गा़फ़िल  
न रहे कि मैं अस्ल में क्या था ? और खुदावन्दे कुदूस ने मुझे क्या से क्या  
बना दिया ? येह ग़ौर कर के खुदावन्दे तआ़ला की कुदरते कामिला पर  
ईमान लाए और कभी फ़ख़्र व तकब्बुर और खुद नुमाई को अपने क़रीब  
तक न आने दे और येह सोच कर कि मैं नुतुफ़े की एक बूंद से पैदा हुवा हूं  
हमेशा आज़िज़ी व फ़रूतनी के साथ मुनकसिरुल मिजाज़ बन कर ज़िन्दगी  
बसर करे और येह सोच कर क़ियामत पर भी ईमान लाए कि जिस खुदा  
ने मुझे एक बूंद नुतुफ़ए पानी से इन्सान बना दिया वोह बिला शुबा इस पर  
भी कादिर है कि मरने के बा'द दोबारा मुझे ज़िन्दा कर के मेरे आ'माले  
नेक व बद का हिसाब लेगा । (والله تعالى اعلم)

## ﴿39﴾ मुबारक दरख्त

कुरआने मजीद में मुबारक दरख्त से मुराद “जैतून” का दरख्त है। तूफ़ाने नूह عَلَيْهِ السَّلَام के बा’द येह सब से पहला दरख्त है जो ज़मीन पर उगा और सब से पहले जहां उगा वोह कोहे तूर है। जहां हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام खुदा से हम कलाम हुवे। जैतून के दरख्त की उम्र बहुत ज़ियादा होती है। यहां तक कि बा’जू अल्लिमीं ने फ़रमाया है कि तीन हजार बरस तक येह दरख्त बाक़ी रहता है। (तफ़सीर सावय, ज २, व ३२०, प १८, المومنون: २०)

हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि जैतून में बहुत से फ़वाईद और मन्फ़अतें हैं। इस के तेल से चराग़ जलाया जाता है और येह बतौरे सालन के भी इस्ति’माल किया जाता है और इस की सर और बदन पर मालिश भी करते हैं और येह चमड़े की दबागत में भी काम आता है। और इस से आग भी जलाते हैं और इस का कोई जुज्व भी बेकार नहीं। यहां तक कि इस की राख से रेशम धो कर साफ़ किया जाता है और येह हज़रते अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام के मकानों और मुक़द्दस ज़मीनों में उगता है और इस के लिये सत्तर अम्बियाए किराम ने बरकत की दुआ मांगी है। यहां तक कि हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام और हुज़ूर ख़ातिमुनबिय्यीन صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मुक़द्दस दुआओं से भी येह दरख्त सरफ़राज़ हुवा है। (तफ़सीर सावय, ज २, व ३०५, प १८, नूर: ३५)

**अब्लाह** तआला ने इस मुबारक दरख्त के बारे में इरशाद फ़रमाया :  
 وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُورِ سَيْنَاءَ تَنْبُتُ بِالذَّهْنِ وَصِبْغٌ لِلْأَكْلِينَ ① (پ १८, المومنون: २०)  
**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान** :- और वोह पेड़ पैदा किया कि तूरे सीना से निकलता है ले कर उगता है तेल और खाने वालों के लिये सालन।

दूसरी जगह इरशाद फ़रमाया :

يُوقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُبَارَكَةٍ زَيْتُونَةٍ لَا شَرْقِيَّةٍ وَلَا غَرْبِيَّةٍ ② (پ १८, النूर: ३५)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** रोशन होता है बरकत वाले पेड़ जैतून से जो न पूरब (मशरिफ़) का न पश्चिम (मगरिब) का ।

**दर्से हिदायत :-** जैतून एक बड़ी बरकतों वाला दरख़्त है यूं तो हर जगह येह दरख़्त बिगैर किसी मेहनत और परवरिश के होता है लेकिन ख़ास तौर पर मुल्के शाम और आम तौर पर मुल्के अरब में ब कषरत पाया जाता है और इन मक़ामात पर इस का तेल भी लोग कषरत से इस्ति'माल करते हैं । यहां तक कि मक्कए मुकर्रमा में गोश्त और मछली भी इसी तेल में तल कर लोग खाते हैं । इस के तेल को अरबी में “जैत” कहते हैं और येह तेल बेचने वाला “ज़ियात” कहलाता है । अगर मिल सके तो मुसलमानों को चाहिये कि तबर्कन इस का इस्ति'माल करे । क्यूंकि कुरआन में इस को मुबारक दरख़्त फ़रमाया गया है और सत्तर अम्बियाए किराम ने इस में बरकत के लिये दुआएं फ़रमाई हैं । लिहाज़ा इस के बा बरकत होने में कोई शको शुबा नहीं और जब बा बरकत चीज़ है तो इस में यकीनन फ़वाइद व मनाफ़ेअ भी बहुत ज़ियादा होंगे । (والله تعالى اعلم)

### ﴿40﴾ अस्हाबुर्स कौन हैं ?

“र्स” लुग़त में पुराने कुंवें के मा'ना में आता है । इस लिये “अस्हाबुर्स” के मा'ना हुवे “कुंवें वाले” **अल्लाह** तआला ने कुरआने मजीद में “अस्हाबुर्स” के नाम से एक क़ौम की सरकशी और नाफ़रमानी की वजह से उस की हलाकत का ज़िक्र फ़रमाया है । चुनान्चे, सूरए फ़ुरक़ान में इरशाद फ़रमाया कि :

وَعَادًا وَثَوْدًا وَأَصْحَابَ الرَّسِّ وَقُرُونًا بَيْنَ ذَلِكَ كَثِيرًا ۖ وَكَلَّا

صَرَبْنَا لَهُ الْإِمْثَالَ مِثَالًا ۖ وَكَلَّا تَبَرُّنَا تَبَرُّرًا ۖ (پ ۹، الفرقان: ۳۸-۳۹)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** और आद और षमूद और कुंवें वालों को और इन के बीच में बहुत सी संगतें और हम ने सब से मिषालें बयान फ़रमाई और सब को तबाह कर के मिटा दिया ।

और सूरए ८ में हलाक शुदा कौमों की फ़ेहरिस्त बयान करते हुवे

**अव्वल** तअ़ाला ने इस तरह फ़रमाया कि

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَأَصْحَابُ الرَّسِّ وَشُودُ ۝ وَعَادٌ وَفِرْعَوْنُ  
إِخْوَانُ لُوطٍ ۝ وَأَصْحَابُ الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۝ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ  
فَحَقَّ وَعِيدِ ۝ (१२-१३)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** इन से पहले झुटलाया नूह की कौम और रस वालों और षमूद और आद और फ़िरऔन और लूत के हम कौमों और बन वालों और तुब्बअ की कौम ने इन में हर एक ने रसूलों को झुटलाया तो मेरे अज़ाब का वा'दा षाबित हो गया ।

“अस्हाबुरस” कौन थे ? और कहां रहते थे ? इस बारे में मुफ़स्सरीन के अक्वाल इस क़दर मुख़लिफ़ हैं कि हकीकते हाल बजाए मुन्कशिफ़ होने के और ज़ियादा मस्तूर हो गई है । बहर हाल हम मुख़सरन चन्द अक्वाल यहां ज़िक्र कर के एक अपनी भी पसन्दीदा बात तहरीर करते हैं ।  
**कौले अव्वल :-** अल्लामा इब्ने ज़रीर की राए येह है कि “रस” के मा'ना ग़ार के भी आते हैं । इस लिये “अस्हाबुल अख़दूद” (गढ़ेवालों) ही को “अस्हाबुरस” भी कहते हैं ।

**कौले दुवुम :-** इब्ने असाकिर ने अपनी तारीख़ में इस कौल को हक़ बताया है कि “अस्हाबुरस” कौमे आद से भी सदियों पहले एक कौम का नाम है । येह लोग जिस जगह आबाद थे वहां **अव्वल** तअ़ाला ने एक पैग़म्बर हज़रते हन्ज़ला बिन सफ़वान को मबरूष फ़रमाया था उस सरकश कौम ने अपने नबी की बात नहीं मानी और किसी तरह भी हक़ को क़बूल नहीं किया बल्कि अपने पैग़म्बर को क़त्ल कर दिया । जिस सज़ा में पूरी कौम अज़ाबे इलाही से हलाक व बरबाद हो गई । (तफ़सीर سورة الفرقان و تاريخ ابن كثير، ج १)

**कौले सिवुम :-** इब्ने अबी हातिम का कौल है कि आजर बाईजान के करीब एक कुंवां था उस कुंवें के करीब जो कौम आबाद थी उस ने अपने नबी को कुंवें में डाल कर ज़िन्दा दफ़न कर दिया था । इस लिये इन लोगों को “अस्हाबुरस” कहा गया । (तफ़सीर ابن كثير، ج ६، ص १०१، الفرقان: ३८)

**कौले चहारुम :-** क़तादा कहते हैं कि “यमामा” के अलाके में “फ़लज” नामी एक बस्ती थी ‘अस्हाबुर्रस” वहीं आबाद थे और येह वोही क़ौम है जिस को कुरआने मज़ीद में “अस्हाबुल क़रियह” भी कहा गया है और येह मुख़लिफ़ निस्बतों से पुकारे जाते हैं ।

**कौले पन्जुम :-** अबू बक्र उमर नक्काश और सुहैली कहते हैं कि “अस्हाबुर्रस” की आबादी में एक बहुत बड़ा कुंवां था जिस का पानी वोह लोग पीते थे और इस से अपने खेतों की आबपाशी भी करते थे और इन लोगों ने गुमराह हो कर अपने पैग़म्बर को क़त्ल कर दिया था, इस जुर्म में अज़ाबे इलाही उतर पड़ा और येह पूरी क़ौम हलाक व बरबाद हो गई ।

**कौले शशुम :-** मुहम्मद बिन का’ब कुर्ज़ी फ़रमाते हैं कि हुज़ूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने फ़रमाया कि

إِنَّ أَوَّلَ النَّاسِ يَدْخُلُ الْجَنَّةَ يَوْمَ الْقِيَمَةِ الْعَبْدُ الْأَسْوَدُ

या’नी जन्नत में सब से पहले जो शख्स दाख़िल होगा वोह एक काला गुलाम होगा ।

और येह इस लिये कि एक बस्ती में **अल्लाह** तआला ने अपना एक नबी भेजा मगर एक काले गुलाम के सिवा कोई उन पर ईमान नहीं लाया फिर अहले शहर ने उस नबी को एक कुंवे में डाल कर कुंवे के मुंह को एक भारी पथ्थर से बन्द कर दिया, ताकि कोई खोल न सके । मगर येह सियाह फ़ाम गुलाम रोज़ाना जंगल से लकड़ियां काट कर लाता और इन को फ़रोख़्त कर के खाना ख़रीदता और कुंवे पर पहुंच कर पथ्थर उठाता और नबी की ख़िदमत में खाना पेश करता था । कुछ दिनों के बा’द **अल्लाह** तआला ने इस गुलाम पर जंगल में नींद तारी कर दी और येह चौदह साल तक सोता ही रह गया । इस दरमियान में क़ौम का दिल बदल गया और इन लोगों ने नबी को कुंवे में से निकाल कर तौबा कर ली और ईमान क़बूल कर लिया फिर चन्द दिनों के बा’द नबी की वफ़ात हो गई । चौदह साल के बा’द जब काले गुलाम की आंख खुली तो उस ने समझा कि मैं चन्द घन्टे सोया हूं जल्दी जल्दी लकड़ियां काट कर वोह शहर में पहुंचा तो येह देख कर कि शहर के हालात बदले हुवे हैं दरयाफ़्त किया तो

सारा किस्सा मा'लूम हुवा और इसी गुलाम के मुतअल्लिक नबिये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरशाद फरमाया कि जन्नत में सब से पहले एक काला गुलाम जाएगा। (तفسير ابن كثير، ج १، ص १०१، १९، الفرقان: ३८)

**कौल हप्तुम :-** मशहूर मुअरिख अल्लामा मसऊदी बयान करते हैं कि “अस्हाबुरस” हजरते इस्माईल عَلَيْهِ السَّلَام की अवलाद में से हैं और ये दो कबीले थे “कैदमा” (कैदमाह) और दूसरा “यामीन” या “रा'वील” और ये दोनों कबीले यमन में आबाद थे।

**कौले हशुतुम :-** मिस्र के एक अलिम फरजुल्लाह जक्की कुरदी कहते हैं कि लफ्ज “रस”, “अरस” का मुखफफ है और ये शहर कफकाज के अलाके में वाकेअ है इस वादी में **अल्लाह** तआला ने एक नबी को मबरूफ़ फरमाया जिन का नाम इब्राहीम ज़रदशत था। इन्होंने अपनी कौम को दीने हक की दा'वत दी मगर इन की कौम ने सरकशी और बगावत इख्तियार की चुनान्वे, ये कौम अज़ाबे इलाही से हलाक कर दी गई।

“अस्हाबुरस” के बारे में ये आठ अक्वाल हैं जिन में से सभी अक्वाल मा'रुजे बहष में हैं और लोगों ने इन अक्वाल व रिवायात पर काफी रद्दो कदह किया है जिन की तफ़सीलात को ज़िक्र कर के हम अपनी मुख्तसर किताब को तूल देना पसन्द नहीं करते।

खुलासए कलाम येह है कि “अस्हाबुरस” के बारे में कुरआने मजीद से इतना तो पता चलता है कि इन लोगों का वुजूद यकीनन हजरते ईसा عَلَيْهِ السَّلَام के दरमियान के ज़माने की किसी कौम का तज़क़िरा है या किसी क़दीमुल अहद कौम का ज़िक्र है तो कुरआने मजीद ने इस के बारे में कुछ भी बयान नहीं फरमाया है और मज़कूर बाला तफ़सीरी रिवायतों से इस का क़तई फैसला होना बहुत ही मुश्किल है। (والله تعالى اعلم)

### ﴿41﴾ अस्हाबे ईका की हलाकत

“ईका” झाड़ी को कहते हैं इन लोगों का शहर सर सब्ज जंगलों और हरे भरे दरख्तों के दरमियान था। **अल्लाह** तआला ने इन लोगों की हिदायत के लिये हजरते शोऐब عَلَيْهِ السَّلَام को भेजा। आप ने “अस्हाबे ईका” के सामने जो वा'ज़ फरमाया वोह कुरआने मजीद में इस तरह बयान किया गया है, आप ने फरमाया कि



الَاتَّقُونَ ۚ إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۖ فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُوا ۚ وَ  
 مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۚ إِنِ أَجْرِي إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۚ أَوْفُوا  
 الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ۚ وَزِنُوا بِالْقِسَاسِ الَّتِي سَقِمْتُمْ  
 وَلَا تَبْخُسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْتُوا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۚ وَ  
 اتَّقُوا اللَّهَ الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْحِمْلَةَ الْأُولَىٰ ۚ قَالُوا إِنَّا إِنَّمَا نَتَّقِي  
 الْمَسْعَرِينَ ۚ وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَإِنْ نَظُنُّكَ لَمِنَ الْكَاذِبِينَ ۚ  
 فَاسْقُطْ عَلَيْنَا كِسْفًا مِّنَ السَّمَاءِ إِن كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۚ قَالَ رَبِّیْ  
 أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ۚ فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُم عَذَابٌ يَوْمَ الظُّلَّةِ ۚ إِنَّهُ كَانَ  
 عَذَابٌ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۚ (پ ۹، الشعراء ۱۷۷-۱۸۹)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** क्या डरते नहीं बेशक मैं तुम्हारे लिये **अल्लाह** का अमानत दार रसूल हूँ तो **अल्लाह** से डरो और मेरा हुक्म मानों और मैं इस पर कुछ तुम से उजरत नहीं मांगता मेरा अज़्र तो उसी पर है जो सारे जहान का रब है, नाप पूरा करो और घटाने वालों में न हो और सीधी तराजू से तोलो और लोगों की चीजें कम कर के न दो और ज़मीन में फ़साद फैलाते न फ़िरो और उस से डरो जिस ने तुम को पैदा किया और अगली मख़्लूक को बोले तुम पर जादू हुवा है तुम तो नहीं मगर हम जैसे आदमी और बेशक हम तुम्हें झूटा समझते हैं तो हम पर आस्मान का कोई टुकड़ा गिरा दो अगर तुम सच्चे हो। फ़रमाया : मेरा रब ख़ूब जानता है जो तुम्हारे कौतक (करतूत) हैं तो उन्होंने ने उसे झुटलाया तो उन्हें शामियाने वाले दिन के अज़ाब ने आ लिया। बेशक वोह बड़े दिन का अज़ाब था।

खुलासा येह कि “अस्हाबे ईका” ने हज़रते शोऐब **عليه السلام** की मुस्लेहाना त़क़ीर को सुन कर बद ज़बानी की और अपनी सरकशी और गुरूर व तकब्बुर का मुज़ाहरा करते हुवे अपने पैग़म्बर को झुटला दिया और यहां तक अपनी सरकशी का इज़हार किया कि पैग़म्बर से येह कह दिया कि अगर तुम सच्चे हो तो हम पर आस्मान का कोई टुकड़ा गिरा कर हम को हलाक कर दो।

इस के बा'द इस क़ौम पर खुदावन्दे क़हहार व ज़ब्बार का क़ाहिराना अज़ाब आ गया और अज़ाब क्या था ? सुनिये और इब्रत हासिल कीजिये ।

हदीष शरीफ़ में आया है कि **अल्लाह** तआला ने इन लोगों पर जहन्नम का एक दरवाज़ा खोल दिया जिस से पूरी आबादी में शदीद गर्मी और लू की ह़ारत व तपिश फेल गई और बस्ती वालों का दम घुटने लगा तो वोह लोग अपने घरों में घुसने लगे और अपने ऊपर पानी का छिड़काव करने लगे मगर पानी और साये से इन्हें कोई चैन और सुकून नहीं मिलता था । और गर्मी की तपिश से इन के बदन झुलसे जा रहे थे । फिर **अल्लाह** तआला ने एक बदली भेजी जो शामयाने की तरह पूरी बस्ती पर छा गई और इस के अन्दर ठन्डक और फ़रहत बख़्श हवा थी । यह देख कर सब घरों से निकल कर उस बदली के शामयाने में आ गए जब तमाम आदमी बदली के नीचे आ गए तो ज़लज़ला आया और आस्मान से आग बरसी । जिस में सब के सब टिड्डियों की तरह तड़प तड़प कर जल गए । इन लोगों ने अपनी सरकशी से यह कहा था कि ऐ शोऐब ! हम पर आस्मान का कोई टुकड़ा गिरा कर हम को हलाक कर दो । चुनान्चे, वोही अज़ाब इस सूरत में इस सरकश क़ौम पर आ गया और सब के सब जल कर राख का ढेर बन गए । (तفسير صاوى، ج २، ص १८८، १८९، १९०، الشعراء १८९)

**एक ज़रूरी तौज़ीह :-** वाज़ेह रहे कि हज़रते शोऐब **عَلَيْهِ السَّلَام** दो क़ौमों की तरफ़ रसूल बना कर भेजे गए थे । एक क़ौम “मदयन” दूसरे “अस्हाबे ईका” इन दोनों क़ौमों ने आप को झुटला दिया, और अपने तुग़यान व इस्थान का मुज़ाहरा और अपनी सरकशी का इज़हार करते हुवे इन दोनों क़ौमों ने आप के साथ बे अदबी और बद ज़बानी की और दोनों क़ौमों अज़ाबे इलाही से हलाक कर दी गई । “अस्हाबे मदयन” पर तो यह अज़ाब आया कि **فَاَخَذْتُهُمُ الصَّبْحَةَ** या’नी हज़रते जिब्रईल **عَلَيْهِ السَّلَام** की चीख़ और चिंघाड़ की हौलनाक आवाज़ से ज़मीन दहल गई और लोगों के दिल ख़ौफ़े दहशत से फट गए और सब दम ज़दन में मौत के घाट उतर गए । और “अस्हाबे ईका”, **عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ** से हलाक कर दिये गए जिस का तफ़्सीली बयान अभी अभी आप पढ़ चुके हैं । (तفسير صاوى، ج २، ص १८८، १८९، १९०، الشعراء १८९)

## ﴿42﴾ हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام की हिज़रत

हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام बचपन ही से फ़िरऔन के महल में पले बड़े मगर जब जवान हो गए तो फ़िरऔन और उस की क़ौम क़िब्तीयों के मज़ालिम देख कर बेज़ार हो गए और फ़िरऔनियों के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलन्द करने लगे। इस पर फ़िरऔन और उस की क़ौम जो “क़िब्ती” कहलाते थे, आप के दुश्मन बन गए और आप फ़िरऔन का महल बल्कि उस का शहर छोड़ कर अत्राफ़ में छुप कर रहने लगे। एक दिन जब शहर वाले दोपरह में कैलूला कर रहे थे तो आप चुपके से शहर में दाख़िल हो गए और उस शहर का नाम “मनफ़” था जो मिस्र के हुदूद में वाक़ेअ है और “मनफ़” दर अस्ल “माफ़” था जो अरबी में “मनफ़” हो गया और बा'ज का क़ौल यह है कि यह शहर “ऐनुश्शम्स” था और बा'ज मुफ़स्सिरीन ने कहा कि यह शहर “ह़ाबैन” था जो मिस्र से दो कोस दूर है। (तفسير خازن، ج ३، ص १२५، प २०، القصص: १२)

या “उम्मे ख़नान” या मिस्र था। (तفسير صاوی، ج २، ص १५२، प २०، القصص: १२)

जब आप शहर में पहुंचे तो यह देखा कि एक शख्स आप की क़ौम का इस्राईली और एक शख्स फ़िरऔन की क़ौम का क़िब्ती दोनों लड़ झगड़ रहे हैं। इस्राईली ने हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام से फ़रयाद कर के मदद मांगी। इस पर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने क़िब्ती को एक घूसा मार दिया जिस से उस का दम निकल गया। इस पर आप को बहुत अफ़सोस हुवा और आप खुदा से इस्तिग़फ़ार करने लगे। फ़िरऔन की क़ौम के लोगों ने फ़िरऔन को इत्तिलाअ दी कि किसी इस्राईली ने हमारे एक क़िब्ती को मार डाला है इस पर फ़िरऔन ने कातिल और गवाहों की तलाश का हुक्म दिया।

फ़िरऔनी चारों तरफ़ ग़श्त करते फिरते थे मगर कोई सुराग़ नहीं मिलता था। रात भर सुब्ह तक हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام फ़िक्र मन्द रहे कि खुदा जाने इस क़िब्ती के मारे जाने का क्या नतीजा निकलेगा और इस की क़ौम के लोग क्या करेंगे ? दूसरे रोज़ जब मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को फिर ऐसा इत्तिफ़ाक़ पेश आया कि वोही इस्राईली जिस ने एक दिन पहले आप से मदद तलब की थी आज फिर एक फ़िरऔनी से लड़ रहा था तो आप ने

इस्राईली को डांटा कि तू रोज़ रोज़ लोगों से लड़ता है अपने को भी परेशानी में डालता है और अपने मददगारों को भी फ़िक्र में मुब्तला करता है लेकिन फिर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को इस्राईली पर रहम आ गया और आप ने चाहा कि उस को फ़िरऔनी के जुल्म से बचाएं तो फ़िरऔनी बोला कि ऐ मूसा ! क्या तुम मुझे भी ऐसे ही क़त्ल करना चाहते हो जैसा कि कल तुम ने एक आदमी को क़त्ल कर दिया । क्या तुम येही चाहते हो कि ज़मीन में सख़्त गीर बनो और इस्लाह चाहते ही नहीं ? इतने में शहर के किनारे से एक आदमी दौड़ता हुआ आया और यह ख़बर दी की दरबारे फ़िरऔन के किब्ती आपस में आप के क़त्ल का मश्वरा कर रहे हैं । लिहाज़ा आप शहर से निकल जाइये मैं आप का ख़ैर ख़्वाह हूँ । तो आप शहर से बाहर निकल गए और इस इन्तिज़ार में रहे कि देखिये अब क्या होता है ? फिर आप ने यह दुआ मांगी कि ऐ मेरे रब ! मुझे ज़ालिमों से बचा ले । यह दुआ मांग कर आप हिजरत कर के मदनन हज़रते शोऐब عَلَيْهِ السَّلَام के पास पहुंच गए । उन्होंने ने आप को पनाह दी और फिर अपनी एक साहिबज़ादी बीबी सफ़ूरा से आप का निकाह भी कर दिया । (प २०, القصص: १५-२३ ملخصاً)

जिस शख्स ने शहर के किनारे से दौड़ते हुवे आ कर हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام को आप के क़त्ल का मन्सूबा तय्यार होने की ख़बर दी और हिजरत का मश्वरा दिया वोह फ़िरऔन के चचा का लड़का था, जिस का नाम हज़क़ील या शमऊन या समअन था । येह ख़ानदाने फ़िरऔन में से हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام पर ईमान ला चुका था ।

(تفسير صاوی، ج २، ص १५२२، پ २०، القصص: २०)

**दर्से हिदायत :-** इस वाकिए से उ-लमाए हक़ को इब्रत व नसीहत हासिल करनी चाहिये कि हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام और दूसरे अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام राहे तब्लीग़ में कैसे कैसे हादिषात से दो चार हुवे मगर सब्रो इस्तिक़ामत का दामन इन हज़रात के हाथों से नहीं छूटा । यहां तक कि नुस्ते खुदावन्दी ने इन हज़रात की ऐसी दस्तगीरी फ़रमाई कि येह हज़रात कामयाब हो कर रहे और इन के दुश्मनों को हज़ीमत और हलाकत नसीब हुई । (والله تعالى اعلم)

## ﴿43﴾ मकड़ी का घर

कुफ़र ने बुतों को मा'बूद बना कर उन की इमदाद व इआनत और नुस्त व नफ़र रसानी पर जो ए'तिमाद और भरोसा रखा है, **अल्लाह** तआला ने कुफ़र की इस हमाक़त मआबी के इज़हार और इन की खुद फ़रैबियों का पर्दा चाक करने के लिये एक अजीब मिषाल बयान फ़रमाई है जो बहुत ज़ियादा इब्रत ख़ैज़ और आ'ला दरजे की नसीहत आमोज़ है। चुनान्वे, कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया कि

مَثَلُ الَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللَّهِ أَوْلِيَاءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوتِ ۚ اتَّخَذَتْ  
بَيْتًا وَإِنَّ أَوْهَنَ الْبُيُوتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوتِ لَوْ كَانُوا يَعْلَمُونَ ﴿٣١﴾ (پ ۲۰، العنكبوت: ۴)

**तर्जमए कज़्ज़ुल ईमान :-** उन की मिषाल जिन्होंने ने **अल्लाह** के सिवा और मालिक बना लिये हैं मकड़ी की तरह है उस ने जाले का घर बनाया और बेशक सब घरों में कमज़ोर घर मकड़ी का घर क्या अच्छा होता अगर जानते।

मतलब येह है कि मकड़ी जाले का घर बना कर अपने ख़याल में मगन रहती है कि मैं मकान में बैठी हुई हूं मगर इस के मकान का येह हाल है कि वोह न धूप से बचा सकता है न बारिश से, न गरमी से महफूज़ रख सकता है न सर्दी से हिफ़ाज़त कर सकता है और हवा के एक मा'मूली झोंके से तहस नहस हो कर बरबाद हो जाया करता है। येही हाल कुफ़र का है कि इन लोगों ने बुतों को अपने नफ़र व नुक़सान का मालिक बना लिया है और इन बुतों की इमदाद व नुस्त पर ए'तिमाद और भरोसा कर रखा है। हालांकि बुतों से हरगिज़ हरगिज़ कोई नफ़र व नुक़सान नहीं पहुंच सकता और काफ़िरों का बुतों पर ए'तिमाद इतना ही कमज़ोर सहारा है जितना कि मकड़ी का जाला कमज़ोर होता है। काश कुफ़र इस बात को समझ लेते तो येह उन के हक़ में बहुत ही अच्छा होता।

**मकड़ी :-** मकड़ी एक अजीबुल ख़लक़त जानवर है इस के आठ पाउं और छे आंखें होती हैं येह बहुत ही क़नाअत पसन्द जानवर है। मगर खुदा

की शान कि सब से हरीस जानवर या'नी मखवी और मच्छर इस की गिज़ा हैं। मकड़ी कई कई दिनों तक भूकी प्यासी बैठी रहती है मगर अपने जाले से निकल कर गिज़ा तलाश नहीं करती। जब जाले के अन्दर कोई मखवी या मच्छर फंस जाता है तो येह उस को खा लेती है वरना सब्र व क़नाअत कर के पड़ी रहती है।

मकड़ी के फ़ज़ाइल में येह बात ख़ास तौर पर क़बिले ज़ि़क़ है कि हिज़रत के वक़्त जब रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ गारे पौर में तशरीफ़ फ़रमा थे तो मकड़ी ने गार के मुंह पर जाला तन दिया था और कबूतरी ने अन्डे दे दिये थे। जिस को देख कर कुफ़्फ़ार वापस चले गए कि अगर गार में कोई शख्स गया होता तो मकड़ी का जाला और अन्डा टूट गया होता।

(तफ़सीर صاوی، ج ۴، ص ۱۵۶۲، پ ۲۰، العنکبوت: ۴۱)

हज़रते अली رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है आप ने फ़रमाया कि अपने घरों से मकड़ियों के जालों को दूर करते रहो कि येह मुफ़िलसी और नादारी का बाइष होते हैं।

(तफ़सीर خزائن العرفان، ص ۷۲۲، پ ۲۰، العنکبوت: ۴۱)

### ﴿44﴾ हज़रते लुक्मान हकीम

हज़रते लुक्मान की मदहो षना और इन की बा'ज नसीहतों का तज़क़िरा कुरआन में बड़ी अज़मत व शान के साथ बयान किया गया है और इन्ही के नाम पर कुरआने मजीद की एक सूरह का नाम “सूरए लुक्मान” रखा गया।

मुहम्मद बिन इस्हाक़ (साहिबे मग़ज़ी) ने इन का नसब नामा इस तरह बयान किया है। लुक्मान बिन बाऊर बिन बाहूर बिन तारुख़। येह तारुख़ वोही हैं जो हज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام के वालिद हैं और मोअरिख़ीन ने फ़रमाया कि आप हज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام के भांजे थे और बा'ज का कौल है कि आप हज़रते अय्यूब عَلَيْهِ السَّلَام के ख़ालाज़ाद भाई थे।

हज़रते लुक्मान ने एक हज़ार बरस की उम्र पाई। यहां तक कि हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की सोहबत में रह कर उन से इल्म सीखा और हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की बिअूषत से पहले आप बनी इस्राईल के मुफ़्ती थे। मगर जब हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام मन्सबे नबुव्वत पर फ़ाइज़ हो गए तो आप ने फ़तवा देना तर्क कर दिया और बा'ज़ किताबों में लिखा है कि हज़रते लुक्मान ने फ़रमाया है कि मैं ने चार हज़ार नबियों की ख़िदमत में हाज़िरी दी है। और इन पैग़म्बरों के मुक़द्दस कलामों में से आठ बातों को मैं ने चुन कर याद कर लिया है, जो येह हैं :

- «1» जब तुम नमाज़ पढ़ो तो दिल की हिफ़ाज़त करो।
- «2» जब तुम खाना खाओ तो अपने हल्क़ की हिफ़ाज़त करो।
- «3» जब तुम किसी ग़ैर के मकान में रहो तो अपनी आंखों की हिफ़ाज़त करो।
- «4» जब तुम लोगों की मजलिस में रहो तो अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त रखो।
- «5» **अल्लाह** तआला को हमेशा याद रखो।
- «6» अपनी मौत को हमेशा याद करते रहा करो।
- «7» अपने एहसानों को भुला दो।
- «8» दूसरों के जुल्म को फ़रामोश कर दो।

हज़रते इकरमा और इमाम शा'बी के सिवा जमहूर उ-लमा का येही क़ौल है कि आप नबी नहीं थे बल्कि आप हकीम थे और बनी इस्राईल के निहायत ही बुलन्द मर्तबा साहिबे ईमान और बहुत ही नामवर मर्दे सालेह थे और **अल्लाह** तआला ने आप के सीने को हिक्मतों का खज़ीना बना दिया था। कुरआने मजीद में है :

وَلَقَدْ آتَيْنَا لُقْمَانَ الْحِكْمَةَ أَنِ اشْكُرْ لِلَّهِ ۖ وَمَن يَشْكُرْ فَإِنَّا نُثَرِّقُ  
لِنَفْسِهِ ۖ وَمَن كَفَرَ فَإِنَّ اللَّهَ غَنِيٌّ حَبِيدٌ ﴿١٢﴾ (پ ۲۱، لقمان ۲۲)



**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** और बेशक हम ने लुक्मान को हिक्मत अता फरमाई कि **अल्लाह** का शुक्र कर और जो शुक्र करे वोह अपने भले को शुक्र करता है और जो नाशुकी करे तो बेशक **अल्लाह** बे परवाह है सब खूबियों सराहा ।

हज़रते लुक्मान उम्र भर लोगों को नसीहतें फरमाते रहे । तफ्सीरी फतहुर्रहमान में है कि आप की कब्र मक़ामे “सरफ़न्द” में है जो “रमला” के करीब है और हज़रते क़तादा का कौल है कि आप की कब्र “रमला” में मस्जिद और बाज़ार के दरमियान में है और उस जगह सत्तर अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام भी मदफून हैं । जिन को आप के बा’द यहूदियों ने बैतुल मुक़द्दस से निकाल दिया था और येह लोग भूक प्यास से तड़प तड़प कर वफ़ात पा गए थे । आप की कब्र पर एक बुलन्द निशान है और लोग इस कब्र की ज़ियारत के लिये दूर दूर से आया करते हैं ।

(تفسير روح البيان، ج ٤، ص ٤٤، پ ٢١، لقمان: ١٢)

**हिक्मत क्या है ? :-** “हिक्मत” अक्ल व फ़हम को कहते हैं और बा’ज ने कहा कि “हिक्मत” मा’रिफ़त और असाबत फ़िल उमूर का नाम है । और बा’ज के नज़दीक हिक्मत एक ऐसी शै है कि **अल्लाह** तआला जिस के दिल में रख देता है उस का दिल रोशन हो जाता है वगैरा वगैरा मुख़्तलिफ़ अक्वाल है । **अल्लाह** तआला ने हज़रते लुक्मान को नींद की हालत में अचानक हिक्मत अता फरमा दी थी । बहर हाल नबुव्वत की तरह हिक्मत भी एक वहबी चीज़ है, कोई शख्स अपनी जिद्दो जहद और कसब से हिक्मत हासिल नहीं कर सकता । जिस तरह कि बिगैर खुदा के अता किये कोई शख्स अपनी कोशिशों से नबुव्वत नहीं पा सकता । येह और बात है कि नबुव्वत का दरजा हिक्मत के मरतबे से बहुत आ’ला और बुलन्द तर है ।

(تفسير روح البيان، ج ٤، ص ٤٤-٤٥، ملخصاً پ ٢١، لقمان: ١١)

हज़रते लुक्मान ने अपने फ़रज़न्द को जिन का नाम “अन्अम” था। चन्द नसीहतें फ़रमाई हैं जिन का ज़िक्र कुरआने मजीद की सूरए लुक्मान में है। इन के इलावा और भी बहुत सी दूसरी नसीहतें आप ने फ़रमाई हैं जो तफ़ासीर की किताबों में मज़कूर हैं।

मशहूर है कि आप दरज़ी का पेशा करते थे और बा’ज ने कहा कि आप बकरियां चराते थे। चुनान्चे, एक मरतबा आप हिक्मत की बातें बयान कर रहे थे तो किसी ने कहा कि क्या तुम फुलां चरवाहे नहीं हो? तो आप ने फ़रमाया कि क्यूं नहीं, मैं यकीनन वोही चरवाहा हूं तो उस ने कहा कि आप हिक्मत के इस मर्तबे पर किस तरह फ़ाइज़ हो गए? तो आप ने फ़रमाया कि बातों में सच्चाई और अमानतों की अदाएंगी और बेकार बातों से परहेज़ करने की वजह से। (तفسير صاوی، ج ۵، ص ۵۹۸، پ ۲۱، لقمان: ۱۲)

### मिस्वाक की फ़ज़ीलत

हज़रते सय्यिदुना अबू उमामा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है, नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम, रसूले अकरम, शहनशाहे बनी आदम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फ़रमाने बरकत निशान है :

السَّوَاكُ مَطْهَرَةٌ لِلْفَمِ مَرْضَاةٌ لِلرَّبِّ

या’नी “मिस्वाक मुंह की पाकीज़गी और **अल्लाह** की खुशनूदी का सबब है।”

(سنن ابن ماجه، ص ۲۴۹، حدیث ۲۸۹) (फैज़ाने सुन्नत, जि. 1, स. 1284)

## ﴿45﴾ अमानत क्या है ?

**अल्लाह** तआला ने कुरआने मजीद में अमानत का ज़िक्र फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया कि

إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنْ  
يَحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ ۖ إِنَّهُ كَانَ ظَلُومًا جَهُولًا ﴿٤٥﴾  
لِيُعَذِّبَ اللَّهُ الْمُنَافِقِينَ وَالْمُنَافِقَاتِ وَالْمُشْرِكِينَ وَالْمُشْرِكَاتِ وَيَتُوبَ  
اللَّهُ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ۖ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا ﴿٤٦﴾ (پ ۲۲، الاحزاب: ۴۳-۴۴)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** बेशक हम ने अमानत पेश फ़रमाई आस्मानों और ज़मीन और पहाड़ों पर तो उन्होंने ने इस के उठाने से इन्कार किया और इस से डर गए और आदमी ने उठा ली बेशक वोह अपनी जान को मशक्कत में डालने वाला बड़ा नादान है । ताकि **अल्लाह** अज़ाब दे मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों और मुशरिक मर्दों और मुशरिक औरतों को और **अल्लाह** तौबा क़बूल फ़रमाए मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों की और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेहरबान है ।

वोह अमानत जिस को **अल्लाह** तआला ने आस्मानों और ज़मीनों और पहाड़ों पर पेश फ़रमाया तो इन सभों ने ख़ौफ़े इलाही से डर कर इस अमानत को क़बूल करने से इन्कार कर दिया लेकिन इन्सान ने अमानत के इस बोझ को उठा लिया । सुवाल येह है कि वोह अमानत दर हकीक़त क्या चीज़ थी ? तो इस बारे में मुफ़स्सरीन के चन्द अक्वाल हैं मगर हज़रते अल्लामा अहमद सावी عَلَيْهِ الرّحمة ने फ़रमाया कि इस अमानत की सब से बेहतरीन तफ़सीर येह है कि वोह अमानत शरई पाबन्दियों की ज़िम्मेदारी है ।

रिवायत है कि जब **अल्लाह** तआला ने शरीअत की पाबन्दियों को आस्मानों और ज़मीनों और पहाड़ों के रू बरू पेश फ़रमाया तो इन तीनों ने अर्ज किया कि ऐ बारी तआला ! हमें इस बारे गिरां के उठाने में क्या हासिल होगा ? **अल्लाह** तआला ने फ़रमाया कि अगर तुम इन (अहकामे शरीअत) की पाबन्दी करोगे तो तुम्हें बेहतरीन सिला व इन्आम

दिया जाएगा तो तीनों ने जवाब में अर्ज किया कि ऐ बारी तअ़ाला ! हम तो बहर हाल तेरे हुक्म के फ़रमां बरदार हैं, बाकी षवाब व अज़ाब से हमें कोई मतलब नहीं है लेकिन ख़ौफ़े इलाही से डर कर कांपते हुवे इन तीनों ने इस अमानत को क़बूल करने से अपनी मा'जूरी ज़ाहिर करते हुवे इन्कार कर दिया । फिर **अल्लाह** तअ़ाला ने इस अमानत को हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** के सामने पेश फ़रमाया तो आप ने भी दरयाफ़्त किया कि अमानत की ज़िम्मेदारी क़बूल कर लेने से हमें क्या मिलेगा ? तो बारी तअ़ाला ने फ़रमाया कि अगर तुम अच्छी तरह इस की पाबन्दी करोगे तो तुम्हें बड़े बड़े इन्आम व इकराम से नवाज़ा जाएगा और अगर तुम ने नाफ़रमानी की तो तरह तरह के अज़ाबों में तुम्हें गिरिफ़्तार किया जाएगा तो हज़रते आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** ने इस बारे अमानत को उठा लिया तो उस वक़्त **अल्लाह** तअ़ाला ने फ़रमाया कि ऐ आदम ! मैं इस सिलसिले में तेरी मदद करूंगा ।

(تفسير صاوی، ج ۵، ص ۲۰-۲۱، ۲۲، الاحزاب: ۷۲)

**दर्से हिदायत :-** इब्लीस ने सजदए आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** के बारे में खुदा का हुक्म मानने से इन्कार किया तो वोह रांदए दरगाहे इलाही हो कर दोनों जहां में मर्दूद हो गया । मगर आस्मानों और ज़मीनों और पहाड़ों ने अमानत को उठाने के बारे में हुक्मे इलाही मानने से इन्कार किया तो वोह बिल्कुल मा'तूब नहीं हुवे इस की क्या वजह है ? और इस का राज़ क्या है ? तो इस सुवाल का जवाब येह है कि इब्लीस का इन्कार बतौरै इस्तिकबार (तकब्बुर) था और आस्मानों वगैरा का इन्कार बतौरै इस्तिसगार (तवाजेअ) था । या'नी इब्लीस ने अपने को बड़ा समझ कर सजदए आदम **عَلَيْهِ السَّلَام** से इन्कार किया था और ज़ाहिर है कि तकब्बुर वोह गुनाहे अज़ीम है जो **अल्लाह** तअ़ाला को बहुत नापसन्द है और तवाजेअ वोह प्यारी अदा है जो खुदावन्दे कुद्दूस को बेहद महबूब है । येही वजह है कि इब्लीस इन्कार कर के अज़ाबे दारैन का हक़दार बन गया और आस्मान व ज़मीन वगैरा इन्कार कर के मौरिदे इताब भी नहीं हुवे बल्कि खुदा के रहमो करम के मुस्तहक़ हो गए ।

**अल्लाह अकबर !** कहां इस्तिकबार ? और कहां इस्तिसगार ?  
कहां तकब्बुर ? और कहा तवाजोअ ? कहां अपने को बड़ा समझना ?  
और कहां अपने को छोटा समझना । दोनों में बहुत अजीम फर्क है ।  
**अल्लाह** तअला हम सब को तकब्बुर से बचाए और तवाजोअ का  
खूगर बनाए । आमीन । (والله تعالى اعلم)

#### ﴿46﴾ जिन्न और जानवर फरमां बरदार

हज़रते सुलैमान عليه السلام का एक खास मो'जिज़ा और इन की  
सल्तनत का एक खुसूसी इम्तियाज़ यह है कि इन के ज़ेरे नगीन सिर्फ़  
इन्सान ही नहीं थे बल्कि जिन्न और हैवानात भी ताबेए फ़रमान थे और  
सब आप के हाकिमाना इक्तिदार के ज़ेरे हुक्म थे और यह सब कुछ इस  
लिये हुवा कि हज़रते सुलैमान عليه السلام ने एक मरतबा दरबारे खुदावन्दी  
(عَزَّوَجَلَّ) में यह दुआ की थी कि

رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُلْكًا لَا يَنْبَغِي لِأَحَدٍ مِّنْ بَعْدِي ۖ إِنَّكَ أَنْتَ  
الْوَهَّابُ ﴿٢٥﴾ (प २३, स: ३५)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** ऐ मेरे रब मुझे बख़्श दे और मुझे ऐसी  
सल्तनत अता कर कि मेरे बा'द किसी को लाइक़ न हो, बेशक तू ही है  
बड़ी दैन वाला ।

चुनान्वे, **अल्लाह** तअला ने आप की दुआ मक़बूल फ़रमा ली  
और आप को ऐसी अजीबो ग़रीब हुकूमत और बादशाही अता फ़रमाई कि न  
आप से पहले किसी को मिली, न आप के बा'द किसी को मयस्सर हुई ।

हज़रते अबू हुरैरा رضي الله تعالى عنه रिवायत करते हैं कि नबिय्ये अकरम  
صلّى الله تعالى عليه وآله وسلّم ने एक दिन इरशाद फ़रमाया कि गुज़श्ता रात एक  
सरकश जिन्न ने येह कोशिश की, कि मेरी नमाज़ में ख़लल डाले तो  
खुदावन्दे तअला ने मुझ को उस पर काबू दे दिया और मैं ने उस को  
पकड़ लिया, इस के बा'द मैं ने इरादा किया कि उस को मस्जिद के सुतून  
से बान्ध दूँ ताकि तुम सब दिन में उस को देख सको । मगर उस वक़्त  
मुझ को अपने भाई सुलैमान (عليه السلام) की येह दुआ याद आ गई कि

رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُكَلَّالًا يَبْعَثْنِي وَلَا حَدِيدٍ مِّنْ بَعْدِي إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ۝

येह याद आते ही मैं ने उस को छोड़ दिया ।

(بخاری شریف، کتاب الانبیاء، باب قول الله عزوجل ووهبنا لداؤد سلیمان الخ، ج ۱، ص ۳۸۴، ۳۸۵۔)

(فتح الباری، کتاب الانبیاء، باب قول الله عزوجل ووهبنا الخ، رقم الحديث ۳۲۲، ج ۶، ص ۵۶۶)

हुज़ूर ﷺ के इस इरशाद का मतलब येह है कि अगर्चे खुदावन्दे तआला ने तमाम अम्बिया व रुसुल के ख़साइस व मो'जिज़ात व खुसूसी इम्तियाज़ात व कमालात मुझ में जम्अ फ़रमा दिये हैं इस लिये कौमे जिन्न की तस्खीर पर भी मुझ को कुदरत हासिल है लेकिन चूँकि हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने इस इख़्तिसास को अपना खुसूसी तुग़रए इम्तियाज़ करार दिया है इस लिये मैं ने इस सिलसिले का मुज़ाहिरा करना मुनासिब नहीं समझा । कुरआने करीम की हस्बे ज़ैल आयतों में भी हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के इस मो'जिज़ाना इक्तिदारे हुक्मत का तज़क़िरा है ।

﴿۱﴾ وَمِنَ الشَّيْطَانِ مَنْ يَّعْوِصُونَ لَهُ وَيَعْمَلُونَ عَمَلًا دُونَ ذَلِكَ ۚ وَكَتَّابُهُمْ حُفُوظِينَ ﴿۸۷﴾ (پ ۱، الانبیاء: ۸۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और शैतानों में से वोह जो उस के लिये गौता लगाते और इस के सिवा और काम करते और हम उन्हें रोके हुवे थे ।

इसी तरह सूरे “सबा” में इरशाद फ़रमाया :

﴿۲﴾ وَمِنَ الْجِنَّ مَنْ يَّعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِإِذْنِ رَبِّهِ ۖ وَمَنْ يَّزِغْهُمْ عَنْ أَمْرِنَا نَذِقْهُمْ مِنْ عَذَابِ السَّعِيرِ ﴿۱۲﴾ يَعْمَلُونَ لَهُ مَا يَشَاءُونَ مِنْ مَّحَارِبٍ وَتَنَائِيلٍ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَقُدُورٍ رَّاسِيَتٍ ۖ ﴿۲۲﴾ (سبأ: ۱۳-۱۲)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और जिन्नों में से वोह जो उस के आगे काम करते उस के रब के हुक्म से और जो इन में हमारे हुक्म से फिरे हम उसे भड़कती आग का अज़ाब चखाएंगे उस के लिये बनाते जो वोह चाहता ऊंचे ऊंचे महल और तस्वीरें और बड़े हौज़ों के बराबर लगान और लंगरदार देंगे ।

और सूरए नम्ल में येह फ़रमाया कि

﴿وَحِشًا لِّسُلَيْمٍ جُنُودًا مِّنَ الْجِنَّ وَالْإِنسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوزَعُونَ﴾ (١٤) (प १९, नम्ल: १५)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** और जम्अ किये गए सुलैमान के लिये उस के लश्कर जिनोँ और आदमियों और परन्दों से तो वोह रोके जाते थे ।

और सूरए म में इस तरह इरशाद फ़रमाया कि

﴿وَالشَّيْطَانُ كُلُّ بَنَاءٍ عِوَاصٍ﴾ (١٥) **وَالْآخَرِينَ مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ** ﴿١٦﴾  
هَذَا عَطَاؤُنَا فَامْنُنْ أَوْ أَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿١٧﴾ (प २३, स ३९-४०)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** और देव बस में कर दिये हर मे'मार और गौता खोर और दूसरे और बेड़ियों में जकड़े हुवे येह हमारी अता है अब तू चाहे तो एहसान कर या रोक रख तुझ पर कुछ हिसाब नहीं ।

**दर्से हिदायत :-** बा'जु मुलहिदीन जिन को मो'जिजात के इन्कार और इन्कारे जिन का मरज हो गया है वोह लोग इन आयतों के बारे में अजीब अजीब मुजहिक्का खैज बातें बकते रहते हैं और कहते हैं कि 'जिन्न' से मुराद इन्सानों की एक ऐसी कौम है जो उस ज़माने में बहुत क़वी हैकल और देव पैकर थी और वोह हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के इलावा किसी के काबू में नहीं आती थी और हैवानात की तस्खीर के बारे में बकते हैं कि कुरआन में इस सिलसिले का ज़िक्र सिर्फ़ "हुद हुद" से मुतअल्लिक है और यहां "हुद हुद" से परन्दे मुराद नहीं है बल्कि हुद हुद एक आदमी का नाम था जो पानी की तफ़्तीश पर मुक़र्रर था । इस किस्म की लगविय्यात और रकीक बातें करने वाले या तो जज़्बुलहाद में क़स्दन कुरआने मजीद की तहरीफ़ करते हैं या कुरआन की ता'लीमात से जाहिल होने के बावजूद अपने दा'वा बिला दलील पर इस्सार करते रहते हैं ।

ख़ूब समझ लो कि कुरआने मजीद ने "जिन्न" के मुतअल्लिक जा बजा बसराहत येह ए'लान किया कि वोह इन्सानों से जुदा खुदा की एक मख़्लूक है सिर्फ़ एक आयत पढ़ लो जो इस बारे में कौले फैसल है ।



وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴿٥٦﴾ (پ ۲، الذاریات: ۵۶)

या'नी हम ने जिन्न और इन्सानों को सिर्फ इसी लिये पैदा किया है कि वोह खुदा के इबादत गुज़ार बनें ।

देख लो इस आयत में जिन्न को एक इन्सान से जुदा और एक मख़्लूक ज़ाहिर कर के दोनों की तख़लीक़ की हिक़मत बयान की गई है लिहाज़ा इस आयत को सामने रखते हुवे येह कहना कि जिन्न इन्सानों ही में से एक क़वी हैकल कौम का नाम है, ग़ौर कीजिये कि येह कितनी बड़ी जहालत की बात है ।

इसी तरह जब “हुद हुद” को **अल्लाह** तआला ने कुरआने मजीद में साफ़ साफ़ परन्द फ़रमाया है और इरशाद फ़रमाया है कि

وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ ﴿١٩﴾ (النمل: १९)

या'नी हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** ने परन्दों का जाइज़ा लिया तो इस तसरीह के बा'द किसी को क्या हक़ है कि इस के ख़िलाफ़ कोई रकीक और लचर तावील करे । और येह कहे कि हुद हुद परन्दा नहीं था बल्कि एक आदमी का नाम था । सोचिये कि येह मग़रिब ज़दा मुल्हिदों का इल्म है या उन की जहालत का कुतुब मीनार है ।

وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللَّهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ ۝

﴿47﴾ **हवा पर हुक्मत**

हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** का येह भी एक ख़ास मो'जिज़ा और आप की नबुव्वत का खुसूसी इम्तियाज़ था कि **अल्लाह** तआला ने “हवा” को इन के हक़ में मुसख़्ख़र कर दिया था और वोह इन के ज़ेरे फ़रमान कर दी गई थी । चुनान्वे, हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** जब चाहते तो सुब्ह को एक महीने की मसाफ़त और शाम को एक महीने की मसाफ़त की मिक्दार हवा के दोश पर सफ़र कर लेते थे ।

कुरआने करीम ने आप के इस मो'जिज़े के मुतअल्लिक़ तीन बातें बयान की हैं । एक येह कि हवा को हज़रते सुलैमान **عَلَيْهِ السَّلَام** के हक़ में मुसख़्ख़र कर दिया । दूसरे येह कि हवा इन के हुक्म के इस तरह ताबेअ थी कि शदीद तेज़ व तुन्द होने के बा वुजूद इन के हुक्म से नर्म और आहिस्ता रवी के बाइष राहत हो जाती थी, तीसरी बात येह कि हवा की

नर्म रफ्तारी के बा वुजूद उस की तेज़ रफ्तारी का येह आलम था कि हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के सुब्ह व शाम का जुदा जुदा सफ़र एक शह सुवार के मुसलसल एक माह की रफ्तार के बराबर था गोया हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام का तख़्त इन्जिन और मशीन जैसे ज़ाहिरी अस्बाब से बाला तर सिर्फ़ इन के हुक्म से एक बहुत तेज़ रफ्तार हवाई जहाज़ से भी ज़ियादा तेज़ मगर सबक रवी के साथ हवा के कांधे पर उड़ा चला जाता था ।

इस मक़ाम पर तख़्ते सुलैमान और आप के सफ़र के मुतअल्लिक़ जो तफ़्सीलात सीरत की किताबों और तफ़्सीरों में मन्कूल हैं इन में बहुत से वाक़िआत इस्सईलिय्यात का ज़ख़ीरा हैं जिन को बा'ज वाइज़ीन बयान करते हैं मगर वोह काबिले ए'तिबार नहीं और इन पर बहुत से ए'तिराज़ात भी वारिद होते हैं । कुरआने मजीद ने इस वाक़िए के मुतअल्लिक़ सिर्फ़ इस क़दर बयान किया है कि :

وَلُسَيِّمِنَ الرِّيحَ عَاصِفَةً تَجْرِي بِأَمْرِ إِلَى الْأَرْضِ الَّتِي بَرَكْنَا فِيهَا  
وَكُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمِينَ ﴿٨١﴾ (پ ۱، الانبیاء: ۸۱)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और सुलैमान के लिये तेज़ हवा मुख़ब़र कर दी कि इस के हुक्म से चलती उस ज़मीन की तरफ़ जिस में हम ने बरकत रखी और हम को हर चीज़ मा'लूम है ।

और सूरए सबा में येह इरशाद फ़रमाया कि

وَلُسَيِّمِنَ الرِّيحَ عُدُوَّهَا شَهْرًا وَرَاحَهَا شَهْرًا ﴿٢٢﴾ (سبا: ۲۲)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और सुलैमान के बस में हवा कर दी उस की सुब्ह की मन्ज़िल एक महीने की राह और शाम की मन्ज़िल एक महीने की राह ।

और सूरए म में फ़रमाया कि

فَسَحَرْنَا لَهُ الرِّيحَ تَجْرِي بِأَمْرِ رُحًا حَيْثُ أَصَابَ ﴿٣٦﴾ (ص: ۳۶)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** तो हम ने हवा उस के बस में कर दी कि उस के हुक्म से नर्म नर्म चलती जहां वोह चाहता ।

## ﴿48﴾ तांबे के चश्मे

हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام चूँकि अज़ीमुशशान इमारतों और पुर शौकत क़लों की ता'मीर के बहुत शाइक़ थे इस लिये ज़रूरत थी कि गारे और चूने के बजाए पिघली हुई धात गारे की जगह इस्ति'माल की जाए लेकिन इस क़दर क़पीर मिक्दार में येह कैसे मयस्सर आए येह सुवाल था जिस का हल हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام चाहते थे। चुनान्वे, **अल्लाह** तआला ने हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की इस मुश्किल को इस तरह हल कर दिया कि इन को पिघले हुवे तांबे के चश्मे अता फ़रमाए।

बा'ज़ मुफ़स्सरीन कहते हैं कि **अल्लाह** तआला हस्बे ज़रूरत हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के लिये तांबे को पिघला देता था और येह हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام के लिये एक ख़ास निशान और इन का मो'जिज़ा था आप से पहले कोई शख़्स धात पिघलाना नहीं जानता था।

(تذكرة الانبياء، ص ۳۷، باب ۲۲، سبأ: ۱۴)

और नज्जार कहते हैं कि **अल्लाह** तआला ने हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام पर येह इन्आम फ़रमाया कि ज़मीन के जिन हिस्सों में आतशी मादों की वजह से तांबा पानी की तरह पिघल कर बह रहा था उन चश्मों को हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام पर आश्कार फ़रमाया। आप से पहले कोई शख़्स भी ज़मीन के अन्दर धात के चश्मों से आगाह न था। चुनान्वे, इब्ने क़पीर ब रिवायते क़तादा नाक़िल हैं कि पिघले हुवे तांबे के चश्मे यमन में थे जिन को **अल्लाह** तआला ने हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام पर ज़ाहिर फ़रमा दिया।

(البدایه والنهایه، ج ۲، ص ۲۸)

कुरआने मजीद ने इस क़िस्म की कोई तफ़्सील नहीं बयान फ़रमाई है कि तांबे के चश्मे किस शक़ल में हज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام को मिले मगर कुरआन की जिस आयत में इस मो'जिज़े का ज़िक़्र है मज़क़ूर बाला दोनों तौजीहात इस आयत का मिस्दाक़ बन सकती हैं और वोह आयत येह है :

وَأَسْلَمْنَا لَهُ عَيْنَ الْقَظْرِ ۖ

(سبأ: ۲۲، سبأ: ۱۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और हम ने उस के लिये पिघले हुवे तांबे का चश्मा बहाया।

**दर्से हिदायत :-** हवा पर हुकूमत और पिघले हुवे तांबे के चश्मों का मिल जाना येह हज़रते सुलैमान عليه السلام का मो'जिज़ा है जो कुरआने मजीद से षाबित है इस पर ईमान लाना ज़रूरियाते दीन में से है। बा'ज मुल्हिदीन जिन को मो'जिज़ात के इन्कार की बीमारी हो गई है वोह इन मो'जिज़ात के बारे में अजीब अजीब मुज़हिका खैज़ बातें बकते और रकीक तावीलात करते रहते हैं। मुसलमानों पर लाज़िम है कि इन मुल्हिदों की बातों पर कोई तवज्जोह न करें और मो'जिज़ात पर यकीन रखते हुवे ईमान लाएं। (والله تعالى اعلم)

### ﴿49﴾ हज़रते सुलैमान عليه السلام के घोड़े

एक मरतबा जिहाद की एक मुहिम के मौक़अ पर शाम के वक़्त हज़रते सुलैमान عليه السلام ने घोड़ों को अस्तबल से लाने का हुक्म दिया। जब वोह पेश किये गए तो चूँकि आप को घोड़ों की नस्लों और इन के ज़ाती अवसाफ़ के इल्म का कमाल हासिल था इस लिये जब आप ने इन घोड़ों को असील सबक रू और खुश रू पाया और येह मुलाहज़ा फ़रमाया कि इन की ता'दाद बहुत ज़ियादा है तो आप पर मसरत व अम्बिसात की कैफ़ियत त़ारी हो गई और आप फ़रमाने लगे कि इन घोड़ों से मेरी महब्बत ऐसी माली महब्बत में शामिल है जो परवर दगार के ज़िक्र ही का एक शो'बा है। हज़रते सुलैमान عليه السلام के इस ग़ौरो फ़िक्र के दरमियान घोड़े अस्तबल को रवाना हो गए। चुनान्वे, जब आप ने नज़र उठाई तो वोह घोड़े निगाह से ओझल हो गए थे। तो आप ने हुक्म दिया कि उन घोड़ों को वापस लाओ।

जब वोह घोड़े वापस लाए गए तो हज़रते सुलैमान عليه السلام ने जोशे महब्बत में उन घोड़ों की पिन्डलियों और गर्दनों पर हाथ फेरना और थप थपाना शुरू कर दिया। क्यूँकि येह घोड़े जिहाद का सामान थे इस लिये आप इन की इज़्ज़त व तौकीर करते हुवे एक माहिर फ़न की तरह से इन घोड़ों को मानूस करने लगे और इज़हारे महब्बत फ़रमाने लगे। कुरआने मजीद ने इस वाक़िए को हस्बे ज़ैल इब़ारत में बयान फ़रमाया है :

وَوَهَبْنَا لِدَاوُدَ دَسِيكِينَ ۖ نِعْمَ الْعَبْدُ إِنَّهُ أَوَّابٌ ۝ اذْعُرْصَ عَلَيْهِ بِإِلْعَاشِي  
الْصِفْنُ الْجِيَادُ ۝ فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّي ۖ حَتَّى  
تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ۝ رَأَوُهَا عَلَىٰ ظُفُوفٍ مَّسْحَالٍ ۖ سَوْقٍ وَلَا عِثَاقٍ ۝ (پ ۲۳: ص ۳۳)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** और हम ने दावूद को सुलैमान अता फरमाया क्या अच्छा बन्दा बेशक वोह बहुत रुजूअ लाने वाला जब कि उस पर पेश किये गए तीसरे पहर को कि रू किये तो तीन पाउं पर खड़े हो चौथे सुम का कनारा ज़मीन पर लगाए हुवे और चलाइये तो हवा हो जाएं तो सुलैमान ने कहा मुझे इन घोड़ों की महबूबत पसन्द आई है अपने रब की याद के लिये फिर उन्हें चलाने का हुक्म दिया यहां तक कि निगाह से पर्दे में छुप गए फिर हुक्म दिया कि उन्हें मेरे पास वापस लाओ तो इन की पिन्डलियों और गर्दनों पर हाथ फेरने लगा ।

**दर्से हिदायत :-** इन आयात की जो तफ़सीर हम ने तहरीर की है इस को इब्ने जरीर तबरी और इमाम राजी ने तरजीह दी है और हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने भी येही तफ़सीर फ़रमाई है । जिस के नाक़िल अली बिन अबी तल्हा है इन आयात की तफ़सीर में बा'ज मुफ़स्सरीन ने घोड़ों की पिन्डलियां और घोड़ों की गर्दनों को तल्वार से काट डालना तहरीर किया है और इसी किस्म के बा'ज दूसरे कमज़ोर अक्वाल भी तहरीर किये हैं जिन की सिहहत पर कोई दलील नहीं है और वोह महज़ हिकायात और दास्तानें हैं जो दलाइले क़विय्या के सामने किसी तरह क़ाबिले क़बूल नहीं और येह तफ़सीर जो हम ने तहरीर की है इस पर न कोई अश्काल व ए'तिराज़ पड़ता है न किसी तावील की ज़रूरत पेश आती है ।

(तفسير خزائن العرفان، ص ۸۱۹، प ۲۳، ص ۳۳)

### ﴿50﴾ पहाड़ों और पर्वतों की तस्बीह

हज़रते दावूद **عَلَيْهِ السَّلَام** खुदावन्दे कुहूस की तस्बीह व तक्दीस में बहुत ज़ियादा मशगूल व मस्रूफ़ रहते थे और आप इस क़दर खुश इल्हान थे कि जब आप ज़बूर शरीफ़ पढ़ते थे तो आप के वज्द आफ़रीं नग़मों से

न सिर्फ़ इन्सान बल्कि वहूश व तयूर भी वज्द में आ जाते और आप के गिर्द जम्अ हो कर खुदा की हम्द के तराने गाते और अपनी अपनी सुरीली और पुर कैफ़ आवाजों में तस्बीह व तक्दीस में हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام की हमनवाई करते और चरिन्दो परन्द ही नहीं बल्कि पहाड़ भी खुदावन्दे तआला की हम्दो षना में गूँज उठते थे। चुनान्वे, हज़रते दावूद عَلَيْهِ السَّلَام के इन मो'जिज़ात का ज़िक्रे जमील **अल्लाह** तआला ने सूरए अम्बिया सूरए सबा व सूरए س में सराहत के साथ बयान फ़रमाया कि

وَسَخَّرْنَا مَعَ دَاوُدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرُ وَكُنَّا فَاعِلِينَ ﴿٥٠﴾ (پ ۱، الانبیاء: ۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और दावूद के साथ पहाड़ मुसख़्ख़र फ़रमा दिये कि तस्बीह करते और परन्दे और येह हमारे काम थे।

सूरए सबा में इस तरह इरशाद फ़रमाया कि

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوُدَ مِمَّا فُضِّلَ بِهِ أَجْالًا أَوْ بِمَعَهُ وَالطَّيْرُ ﴿٢٢﴾ (پ ۲, سबा: ۱۰)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और बेशक हम ने दावूद को अपना बड़ा फ़ज़ल दिया ऐ पहाड़ो उस के साथ **अल्लाह** की तरफ़ रुजूअ करो और ऐ परन्दो।

और सूरए س में इरशादे रब्बानी इस तरह हुवा कि

إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ ﴿١٨﴾ وَالطَّيْرُ مَحْشُورَةً ﴿١٩﴾ كُلُّ لَّهُ أَوَّابٌ ﴿٢٠﴾ (پ ۲, ص: ۱۸-۱۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- बेशक हम ने उस के साथ पहाड़ मुसख़्ख़र फ़रमा दिये तस्बीह करते शाम को और सूरज चमकते और परन्दे जम्अ किये हुवे सब उस के फ़रमां बरदार थे।

दर्से हिदायत :- बेअक्ल परन्दे और बे जान पहाड़ जब खुदावन्दे कुहूस की तस्बीह व तक्दीस का नग़मा गाया करते हैं। जैसा कि कुरआने मजीद की मज़कूरए बाला आयतों में आप पढ़ चुके तो इस से हम इन्सानों को

येह सबकु मिलता है कि हम इन्सान जो अक्ल वाले, होशमन्द और साहिबे ज़बान हैं हम पर भी लाज़िम है कि हम खुदावन्दे कुद्दूस की तस्बीह और उस की हम्दो षना के अफ़्कार को विदे ज़बान बनाएं और उस की तस्बीह व तक्दीस में बराबर मशगूल व मस्रूफ़ रहें।

हज़रते शैख़ सा'दी عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ ने इस सिलसिले में एक बहुत ही लतीफ़ व लज़ीज़ और निहायत ही मुअ्षिर हिकायत बयान फ़रमाई है। इस को पढ़िये और इब्रत व नसीहत हासिल कीजिये वोह फ़रमाते हैं :

دوش مرغے بصبح می نالید عقل و صبرم ربود و طافت و هوش

एक परन्द सुब्ह को चह चहा रहा था तो इस की आवाज़ से मेरी अक्ल व सब्र और ताक़त व होश सब ग़ारत हो गए।

یکے از دوستان مخلص را مگر آواز من رسید بگوش

मेरे एक मुख़्लिस दोस्त के कान में शायद मेरी आवाज़ पहुंच गई।

گفت باور نداشتم که ترا بانگ مرغے چنین کند مدهوش

तो उस ने कहा कि मुझे यकीन नहीं आता कि एक परन्द की आवाज़ तुम को इस तरह मदहोश कर देगी।

گفتم این شرط آدمیت نیست مرغ تسبیح خوان و من خاموش

तो मैं ने कहा कि येह आदमिय्यत की शान नहीं है? कि परन्द तो तस्बीह पढ़े और मैं ख़ामोश रहूं !

### ﴿51﴾ फिरिश्तों के बाल व पर

**अल्लाह** तआला ने फिरिश्तों के बाजू और पर बना दिये हैं जिन से वोह फ़ज़ाए आस्मानी में उड़ कर काइनाते आलम में फ़रामीने रब्बानी की ता'मील करते रहते हैं। किसी फिरिश्ते के दो पर किसी के तीन और किसी के चार पर हैं।



और हदीष शरीफ़ में है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने बयान फ़रमाया कि मैं ने “सिद्रतुल मुन्तहा” के पास हज़रते जिब्रईल عليه السلام को देखा कि इन के छे सो बाजू थे और येह भी एक रिवायत में है कि हुज़ूर عليه الصلوة والسلام ने हज़रते जिब्रईल عليه السلام से फ़रमाया कि आप अपनी अस्ल सूरत मुझे दिखा दीजिये तो इन्हों ने जवाब दिया कि आप इस की ताब न ला सकेंगे तो आप ﷺ ने फ़रमाया कि मुझे इस की ख़्वाहिश बल्कि तमन्ना है तो हज़रते जिब्रईल عليه السلام एक मरतबा अपनी अस्ल सूरत में वही ले कर आप के पास हाज़िर हुवे तो इन को देखते ही आप पर ग़शी त़ारी हो गई तो हज़रते जिब्रईल عليه السلام ने अपने बदन से टेक लगा कर आप को संभाले रखा और अपना एक हाथ हुज़ूर ﷺ के सीने पर और एक हाथ दोनों शानों के दरमियान रख दिया । जब आप को इफ़ाका हुवा तो हज़रते जिब्रईल عليه السلام ने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह ﷺ अगर आप हज़रते इस्फ़ील को देख लेते तो आप का क्या हाल होता ? उन को तो **अल्लाह** तआला ने बारह हज़ार बाजू अता फ़रमाए हैं और उन का एक बाजू मशरिक़ में है और दूसरा बाजू मग़रिब में है और वोह अर्शें इलाही को अपने कन्धों पर उठाए हुवे हैं । (तफ़सीर सायी, ५, १, १२८१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००, १०१, १०२, १०३, १०४, १०५, १०६, १०७, १०८, १०९, ११०, १११, ११२, ११३, ११४, ११५, ११६, ११७, ११८, ११९, १२०, १२१, १२२, १२३, १२४, १२५, १२६, १२७, १२८, १२९, १३०, १३१, १३२, १३३, १३४, १३५, १३६, १३७, १३८, १३९, १४०, १४१, १४२, १४३, १४४, १४५, १४६, १४७, १४८, १४९, १५०, १५१, १५२, १५३, १५४, १५५, १५६, १५७, १५८, १५९, १६०, १६१, १६२, १६३, १६४, १६५, १६६, १६७, १६८, १६९, १७०, १७१, १७२, १७३, १७४, १७५, १७६, १७७, १७८, १७९, १८०, १८१, १८२, १८३, १८४, १८५, १८६, १८७, १८८, १८९, १९०, १९१, १९२, १९३, १९४, १९५, १९६, १९७, १९८, १९९, २००, २०१, २०२, २०३, २०४, २०५, २०६, २०७, २०८, २०९, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, २२३, २२४, २२५, २२६, २२७, २२८, २२९, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, २३५, २३६, २३७, २३८, २३९, २४०, २४१, २४२, २४३, २४४, २४५, २४६, २४७, २४८, २४९, २५०, २५१, २५२, २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६५, २६६, २६७, २६८, २६९, २७०, २७१, २७२, २७३, २७४, २७५, २७६, २७७, २७८, २७९, २८०, २८१, २८२, २८३, २८४, २८५, २८६, २८७, २८८, २८९, २९०, २९१, २९२, २९३, २९४, २९५, २९६, २९७, २९८, २९९, ३००, ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ३०५, ३०६, ३०७, ३०८, ३०९, ३१०, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ३१५, ३१६, ३१७, ३१८, ३१९, ३२०, ३२१, ३२२, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३२७, ३२८, ३२९, ३३०, ३३१, ३३२, ३३३, ३३४, ३३५, ३३६, ३३७, ३३८, ३३९, ३४०, ३४१, ३४२, ३४३, ३४४, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, ३५८, ३५९, ३६०, ३६१, ३६२, ३६३, ३६४, ३६५, ३६६, ३६७, ३६८, ३६९, ३७०, ३७१, ३७२, ३७३, ३७४, ३७५, ३७६, ३७७, ३७८, ३७९, ३८०, ३८१, ३८२, ३८३, ३८४, ३८५, ३८६, ३८७, ३८८, ३८९, ३९०, ३९१, ३९२, ३९३, ३९४, ३९५, ३९६, ३९७, ३९८, ३९९, ४००, ४०१, ४०२, ४०३, ४०४, ४०५, ४०६, ४०७, ४०८, ४०९, ४१०, ४११, ४१२, ४१३, ४१४, ४१५, ४१६, ४१७, ४१८, ४१९, ४२०, ४२१, ४२२, ४२३, ४२४, ४२५, ४२६, ४२७, ४२८, ४२९, ४३०, ४३१, ४३२, ४३३, ४३४, ४३५, ४३६, ४३७, ४३८, ४३९, ४४०, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४, ४४५, ४४६, ४४७, ४४८, ४४९, ४५०, ४५१, ४५२, ४५३, ४५४, ४५५, ४५६, ४५७, ४५८, ४५९, ४६०, ४६१, ४६२, ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६७, ४६८, ४६९, ४७०, ४७१, ४७२, ४७३, ४७४, ४७५, ४७६, ४७७, ४७८, ४७९, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४८५, ४८६, ४८७, ४

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ فَاطِرِ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ جَاعِلِ الْمَلَكِئَةِ رُسُلًا أُولَى  
أَجْنَحَةٍ مَوْسَى وَثُلُثٍ وَرَبِّهِ ۖ يُزِيدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَاءُ ۖ إِنَّ اللَّهَ عَلَى كُلِّ  
شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝ (پ ۲۲، فاطر: ۱)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** सब खूबियां **अल्लाह** को जो आस्मानों और ज़मीन का बनाने वाला फ़िरिश्तों को रसूल करने वाला जिन के दो दो तीन तीन चार चार पर हैं। बढ़ाता है आफ़रीनिश (पैदाइश) में जो चाहे बेशक **अल्लाह** हर चीज़ पर कादिर है।

**दर्से हिदायत :-** फ़िरिश्तों के वुजूद पर ईमान लाना ज़रूरियाते दीन में से है और इस पर ईमान लाना भी ज़रूरी है कि फ़िरिश्तों के बाजू और पर भी हैं किसी के दो दो किसी के तीन तीन किसी के चार चार। और किसी के इस से भी ज़ियादा हैं। अब रहा येह सुवाल कि फ़िरिश्तों के इतने ज़ियादा पर क्यूं कर और किस तरह हैं ? तो कुरआन ने इस का शाफ़ी और मुसकित जवाब दे दिया है कि **अल्लाह** तआला की कुदरत की कोई हद नहीं है वोह हर चीज़ पर कादिर है। लिहाज़ा वोह सब कुछ कर सकता है वोह फ़िरिश्तों को बाल व पर भी अता फ़रमा सकता है और बिला शुबा अता फ़रमाए भी हैं लिहाज़ा इस सिलसिले में बहष व मुबाहषा और सुवाल व जवाब येह सब गुमराही के दरवाज़े हैं। ईमान की ख़ैरियत इसी में है कि बिगैर चूं व चरा के इस पर ईमान लाएं और **क्यूं** और **कैसे** के इल्म को **اللّٰهُ تَعَالٰى اَعْلَم** कह कर खुदा के सिपुर्द कर दें।

### ﴿52﴾ अबू जहल की गर्दन का तौक

एक मरतबा अबू जहल और उस के क़बीले के दो आदमियों ने हलफ़ उठाया कि अगर हम लोगों ने (मुहम्मद **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم**) को देख लिया तो हम पथ्थर से उन का सर कुचल देंगे। जब हुज़ूर **اَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَاَلَسَّلَام** नमाज़ के लिये हरमे का'बा में तशरीफ़ ले गए और अबू जहल ने आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** को देखा तो वोह एक बहुत बड़ा पथ्थर अपने दोनों हाथों से उठा कर चला और आप **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** पर उस पथ्थर को फेंकने के लिये अपने सर के ऊपर दोनों हाथों से उठाया तो उस के दोनों हाथ उस की गर्दन में आ गए और पथ्थर उस के हाथों में चिपक कर रह गया और दोनों हाथ तौक बन कर थोड़ी के पास बन्ध गए और वोह इस तरह नाकाम हो कर लौट आया। इस के दूसरे दिन वलीद बिन मुग़ीरा ने झुन्झला कर कहा कि तुम पथ्थर मुझे दे दो। मैं इस को उन के सर पर दे मारूंगा।

चुनान्चे, उस बद नसीब ने जब कि आप ﷺ नमाज़ में थे, आप ﷺ पर पथ्थर चलाने का इरादा किया तो एक दम अन्धा हो गया। हुजूर ﷺ की क़िराअत की आवाज़ तो सुनता रहा मगर आप ﷺ की सूरत नहीं देख सकता था, मजबूरन पलट गया तो अपने साथियों को भी न देख सका। जब आवाज़ दी तो साथियों ने पूछा कि क्या हुआ ? तो उस ने अपनी मजबूरी का हाल बयान किया फिर उस के तीसरे साथी ने गुस्से में भर कर पथ्थर को अपने हाथ में लिया मगर येह हुजूर ﷺ के क़रीब पहुंचते ही उलटे पाउं बद ह्वास हो कर भागा और हांपते कांपते हुवे अपने साथियों से कहने लगा कि मैं जब उन के क़रीब पहुंचा तो मैं ने देखा कि एक ऐसा सान्ड उन के क़रीब अपनी दुम हिला रहा है कि मैं ने आज तक ऐसा खौफ़नाक सान्ड देखा ही नहीं था। लात व उज़्ज़ा की क़सम ! अगर मैं इन के क़रीब जाता तो वोह मुझे हलाक कर देता। (तفسير صاوى، ج ५، ص १८०، یس: ८-९)

इस वाक़िए का ज़िक्र सूरे यासीन में इन लफ्ज़ों के साथ मज़कूर है।

إِنَّا جَعَلْنَا فِيْ أَعْنَاقِهِمْ أَغْلًا فَبِهِىْ إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُونَ ①  
وَجَعَلْنَا مِنْ بَيْنِ أَيْدِيهِمْ سَدًّا وَمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنَاهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُونَ ② (پ २२، یس: ८-९)

तर्जमए कन्ज़ुल इमान :- हम ने उन की गर्दनो में तौक कर दिये हैं कि वोह ठोड़ियों तक हैं तो येह अब ऊपर को मुंह उठाए रह गए और हम ने उन के आगे दीवार बना दी और इन के पीछे एक दीवार और उन्हें ऊपर से ढांक दिया तो उन्हें कुछ नहीं सूझता।

दर्से हिदायत :- येह हुजुरे अक्दस ﷺ के मो'जिज़ात में से है। बारहा काफ़िरो ने आप ﷺ को क़त्ल करने की साजिश की और अपनी खुफ़्या चालबाज़ियों और दसीसा कारियों में कोई दकीका बाकी नहीं छोड़ा, मगर रहमते आलम ﷺ पर कभी भी कोई आंच न आ सकी और खुदावन्दे कुहूस का वा'दा पूरा हुवा कि (پ १६، المائدة: १६) **وَاللّٰهُ يَعْصِيْكَ مِنَ النَّاسِ** या'नी ऐ महबूब ! **اَللّٰهُ** तआला लोगों की चालों से आप को अपनी हिफ़ाज़त में रखेगा। (والله تعالى اعلم)

### ﴿53﴾ हामिलाने अर्श की दुआ

अर्शे इलाही के उठाने वाले मलाइका फिरिश्तों के सब से आ'ला तबकात में हैं। इन में से हर फिरिश्ते के बाजूओं पर चार पर हैं और दो पर इन के चेहरों के ऊपर हैं। जिन से येह अपनी आंखों को छुपाए रखते हैं और खौफ़े खुदावन्दी के बाइष येह फिरिश्ते सातवें आस्मान के फिरिश्तों से ज़ियादा खुदा का खौफ़ रखते हैं और सातवें आस्मान वाले फिरिश्ते छट्टे आस्मान वाले फिरिश्तों से खौफ़े इलाही में बड़े हुवे हैं। इसी तरह छट्टे आस्मान वाले पांचवें आस्मान वालों से और पांचवें आस्मान वाले चौथे आस्मान वालों से और चौथे आस्मान वाले तीसरे आस्मान वालों से और तीसरे आस्मान वाले दूसरे आस्मान वालों से और दूसरे आस्मान वाले पहले आस्मान वालों से खौफ़ व ख़शिय्यते रब्बानी में आ'ला दरजा रखते हैं। फिर अर्शे इलाही के गिर्द रहने वाले फिरिश्ते जिन को “कुरुबिय्यीन” कहते हैं येह बाकी फिरिश्तों के सरदार हैं और बहुत ही वजाहत वाले हैं।

मन्कूल है कि अर्श के गिर्द मलाइका की सत्तर हज़ार सफ़ें हैं। इस तरह कि एक सफ़ एक सफ़ के पीछे है। येह सब अर्श का तवाफ़ करते रहते हैं। फिर इन सभों के बा'द सत्तर हज़ार मलाइका की सफ़ है और वोह अपने हाथ अपने कांधों पर रखते हुवे खुदा की तस्बीह व तक्बीर पढ़ते रहते हैं। फिर इन के बा'द और एक सो सफ़ें फिरिश्तों की हैं जो अपना दाहिना हाथ बाएं हाथ पर रखे हुवे तस्बीह व तक्बीर और दुआ में मशगूल हैं। (تفسير صاوی، ج ۵، ص ۱۸۱، پ ۲۲، المومن ۷)

और सब फिरिश्तों की दुआ क्या है। इस को कुरआने मजीद के अल्फ़ाज़ में मुलाहज़ा कीजिये। इरशादे रब्बानी है कि

الَّذِينَ يَحْمِلُونَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهُ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُونَ بِهِ وَيَسْتَغْفِرُونَ لِلَّذِينَ آمَنُوا رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِينَ تَابُوا وَاتَّبَعُوا سَبِيلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيمِ ۝ رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنَّاتِ عَدْنٍ الَّتِي وَعَدْتَهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ آبَائِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيَّاتِهِمْ ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝ (پ ۲۲، المؤمن ۴-۸)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** वोह जो अर्श उठाते हैं और जो उस के गिर्द हैं अपने रब की ता'रीफ़ के साथ उस की पाकी बोलते और उस पर ईमान लाते और मुसलमानों की मग़फ़िरत मांगते हैं ऐ रब हमारे तेरे रहमत व इल्म में हर चीज़ की समाई है तू उन्हें बख़्श दे जिन्हों ने तौबा की और तेरी राह पर चले और उन्हें दोख़ के अज़ाब से बचा ले ऐ हमारे रब और उन्हें बसने के बाग़ों में दाख़िल कर जिन का तू ने उन से वा'दा फ़रमाया है और उन को जो नेक हों उन के बाप दादा और बीबियों और अवलाद में बेशक तू ही इज़्ज़त व हिक्मत वाला है ।

**दर्से हिदायत :-** आप ने अर्श इलाही के उठाने वाले और अर्श का तवाफ़ करने वाले फ़िरिश्तों की दुआ मुलाहज़ा कर ली कि वोह सब मुक़द्दस फ़िरिश्ते हम मुसलमानों और हमारे वालिदैन् और बीबियों और हमारी अवलाद के लिये जहन्नम से नजात पाने और जन्नते अदन में दाख़िल होने की दुआ मांगते रहते हैं । **अल्लाहु अक्बर !** कितना बड़ा एहसाने अज़ीम है हम मुसलमानों पर हुज़ूरे अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का कि आप ही के तुफ़ैल में हम मुसलमानों को येह रुत्वए बुलन्द और दरजए आलिय्या हासिल हुवा है कि बेशुमार तबकए आ'ला के फ़िरिश्ते हम गुनाहगार मुसलमानों के लिये दुआएं मांगते रहते हैं वोह भी कौन से फ़िरिश्ते ? अर्श इलाही के उठाने वाले फ़िरिश्ते और अर्श इलाही का तवाफ़ करने वाले फ़िरिश्ते । **سُبْحَانَ اللهِ** कहां हम और कहां मलाए आ'ला के मलाइका, मगर हुज़ूर सय्यदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की निस्बत का

तुफैल है कि उस ने हम क़त़रों को समन्दरे नापैदा किनार और हम ज़रों को आफ़ताबे अलमताब बना दिया । **سُبْحَنَ اللّٰه ! سُبْحَنَ اللّٰه** एक बार बसद इख़लास नबिय्ये मुक़र्रम रहमते अलम **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** पर दुरुद शरीफ़ पढ़िये ।

**اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَىٰ اٰلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ**

### ﴿54﴾ साहिबे अवलाद और बांझ

**अवलाद** तअलाला का दस्तूर यह है कि वोह किसी को सिर्फ़ बेटी अता फ़रमाता है और किसी को सिर्फ़ बेटा देता है और कुछ लोगों को बेटा और बेटी दोनों ही अता फ़रमा दिया करता है । और कुछ ऐसे लोग भी हैं जिन को बांझ बना देता है न उन्हें बेटी देता है न बेटा और यह दस्तूरे खुदावन्दी सिर्फ़ अम इन्सानों ही तक महदूद नहीं बल्कि उस ने अपने खास व मख़सूस बन्दों या'नी हज़रते अम्बिया **عَلَيْهِمُ السَّلَام** को भी इस खुसूस में चारों तरह का बनाया है । चुनान्चे, हज़रते लूत और हज़रते शोऐब **عليهما السلام** के सिर्फ़ बेटियां ही थीं कोई बेटा नहीं था और हज़रते इब्राहीम **عَلَيْهِ السَّلَام** को सिर्फ़ बेटे ही बेटे थे कोई बेटी हुई ही नहीं । और हुजूर ख़ातिमुन्नबिय्यीन **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** को **अवलाद** तअलाला ने चार बेटे और चार बेटियां अता फ़रमाई और हज़रते ईसा व हज़रते यहया **عليهما السلام** के कोई अवलाद ही नहीं हुई ।

(تفسير روح البيان، ج ٨، ص ٣٢٣-٣٢٤، ٢٥٥، الشورى: ٢٩-٥٠)

कुरआने मजीद में रब्बुल इज़ज़त **جَلَّ جَلَالُهُ** ने इस मज़मून को इन अल्फ़ाज़ में बयान फ़रमाया है कि :

**يَهَبُ لِمَن يَشَاءُ اِنَاثًا وَيَهَبُ لِمَن يَشَاءُ الذَّكَوْرَ ۗ اَوْ يَزْوِجُهُمْ**

**ذَكَرًا اَوْ اِنَاثًا وَيَجْعَلُ مَن يَشَاءُ عَقِيْمًا ۗ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ﴿٥٠﴾** (الشورى: ٢٥)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** जिसे चाहे बेटियां अता फ़रमाए और जिसे चाहे बेटे दे या दोनों मिला दे बेटे और बेटियां और जिसे चाहे बांझ कर दे बेशक वोह इल्म व कुदरत वाला है ।

दर्से हिदायत :- **अल्लाह** तआला बेटी दे या बेटा दे या दोनों अता फ़रमाए या बांझ बना दे बहर हाल येह सभी खुदा की ने'मते हैं। मज़कूरए बाला आयत के आखिरी हिस्से या'नी **إِنَّهُ عَلِيمٌ قَدِيرٌ** में इसी तर्फ़ इशारा है कि कौन इस के लाइक़ है कि उस को बेटी मिले और कौन इस काबिल है कि उस को बेटा मिले और कौन इस की अहलिय्यत रखता है कि उस को बेटा और बेटी दोनों मिलें और कौन ऐसा है कि उस के हक़ में येही बेहतर है कि उस के कोई अवलाद ही न हो। इन बातों को **अल्लाह** तआला ही ख़ूब जानता है क्यूंकि वोह बहुत इल्म वाला और बड़ी कुदरत वाला है। इन्सान अपने हजार इल्म व आगही के बा वुजूद इस मुआमले को नहीं जानता कि इन्सान के हक़ में क्या बेहतर है और क्या बेहतर नहीं है। कुरआने मजीद में **अल्लाह** तआला ने इरशाद फ़रमाया है कि

وَعَسَى أَنْ تَكْرَهُوا شَيْئًا وَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَعَسَى أَنْ تُحِبُّوا شَيْئًا وَهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ وَاللَّهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ﴿٢١٦﴾  
(البقره: २१६)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और करीब है कि कोई बात तुम्हें बुरी लगे और वोह तुम्हारे हक़ में बेहतर हो और करीब है कि कोई बात तुम्हें पसन्द आए और वोह तुम्हारे हक़ में बुरी हो और **अल्लाह** जानता है और तुम नहीं जानते।

इस लिये बन्दों को चाहिये कि अगर अपनी ख़्वाहिश के मुताबिक़ कोई चीज़ न मिल सके तो हरगिज़ नाराज़ न हों बल्कि येह सोच कर सब्र करें कि हम इस चीज़ के लाइक़ ही नहीं थे इस लिये हमें खुदा ने नहीं दिया वोह अलीम व क़दीर है वोह ख़ूब जानता है कि कौन किस चीज़ का अहल है और कौन अहल नहीं है।

इस के अल्ताफ़ तो हैं आम शहीदी सब पर

तुझ से क्या ज़िद थी ? अगर तू किसी काबिल होता

बेटियां :- इस ज़माने में देखा गया है कि बा'ज़ लोग बेटियों की पैदाइश से चिड़ते हैं और मुंह बिगाड़ लेते हैं बल्कि बा'ज़ बद नसीब तो



ऊल फूल बक कर कुफराने ने'मत के गुनाह में मुब्तला हो जाते हैं। वाजेह रहे कि बेटियों की पैदाइश पर मुंह बिगाड़ कर नाराज़ हो जाना येह ज़माने जाहिलिय्यत के कुफ़ार का मन्हूस तरीका है। चुनान्चे,

**अल्लाह** तआला का इरशाद है कि

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُم بِالْأُنْثَىٰ ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ ﴿٥٨﴾  
يَتَوَارَىٰ مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوءِ مَا بُشِّرَبِهِ ۚ أَيَسْكَبُ عَلَىٰ هُونٍ أَمْ  
يَدُسُّهُ فِي التُّرَابِ ۚ أَلَا سَاءَ مَا يَحْكُمُونَ ﴿٥٩﴾ (النحل: ५८-५९)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** और जब इन में किसी को बेटी होने की खुश ख़बरी दी जाती है तो दिन भर उस का मुंह काला रहता है और वोह गुस्सा खाता है लोगों से छुपता फिरता है इस बिशारत की बुराई के सबब क्या इसे ज़िल्लत के साथ रखेगा ? या इसे मिट्टी में दबा देगा अरे बहुत ही बुरा हुक्म लगाते हैं।

ख़ूब समझ लो कि मुसलमानों का इस्लामी तरीका येह है कि बेटियों की पैदाइश पर भी खुश हो कर **अल्लाह** तआला की इस ने'मत का शुक्र अदा करे और मुन्दरिजए जैल हदीषों की बिशारत पर ईमान रख कर सआदते दारैन की करामतों से सरफ़राज़ हो।

हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने मुन्दरिजए जैल हदीषें इरशाद फ़रमाई हैं :

❶ औरत के लिये येह बहुत ही मुबारक है कि उस की पहली अवलाद लड़की हो।

❷ जिस शख्स को कुछ बेटियां मिलीं और वोह उन के साथ नेक सुलूक करे यहां तक कि कुफ़ूं में उन की शादी कर दे तो वोह बेटियां उस के लिये जहन्नम से आड़ बन जाएंगी।

❸ हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया कि तुम लोग बेटियों को बुरा मत समझो, इस लिये कि मैं भी चन्द बेटियों का बाप हूं।

❹ जब कोई लड़की पैदा होती है तो **अल्लाह** तआला फ़रमाता है कि ऐ लड़की ! तू ज़मीन पर उतर। मैं तेरे बाप की मदद करूंगा।

(تفسير روح البيان، ج ٨، ص ٣٢٢، ٢٥٥، الشورى: ٥٠-٥٩)

### ﴿55﴾ फ़ारिक् की ख़बर पर 'उ' तिमाद मत करो

सि. 5 हि. के ग़ज़व बनी मुस्तलक़ में जब मुसलमान फ़तह्याब हो गए और हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इस क़बीले के सरदार की बेटी हज़रते जुवैरिय्या رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا से निकाह फ़रमा लिया तो सहाबए किराम ने तमाम असीराने जंग को येह कह कर रिहा कर दिया कि जिस ख़ानदान में रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने शादी कर ली, उस ख़ानदान का कोई आदमी लौंडी गुलाम नहीं रह सकता। मुसलमानों के इस हुस्ने सुलूक और अख़्लाके करीमाना से मुतअष्विर हो कर तमाम क़बीला मुशरफ़ ब इस्लाम हो गया। इस के बा'द हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने “वलीद बिन उक्बा” को इस क़बीले वालों के पास भेजा ताकि वोह क़बीले के दौलत मन्दों से ज़कात वुसूल कर के इन के फ़ुकरा पर तक्सीम कर दें।

क़बीलए बनी अल मुस्तलक़ के लोगों को जब “वलीद” की इस आमद का इल्म हुवा तो वोह अमिले इस्लाम के इस्तिक़बाल के लिये खुशी खुशी हथियार ले कर बस्ती से बाहर मैदान में निकले। ज़मानए जाहिलिय्यत में इस क़बीले और वलीद में कुछ नाचाक़ी रह चुकी थी इस लिये पुरानी अदावत की बिना पर इस्तिक़बाल के लिये इस एहतिमाम को वलीद ने दूसरी नज़र से देखा और समझा और क़बीले वालों से अस्ल मुआमला दरयाफ़्त किये बिग़ैर ही मदीना वापस चला आया, और दरबारे नबुव्वत में हाज़िर हो कर अर्ज़ किया कि क़बीलए बनी मुस्तलक़ के लोग तो मुर्तद हो गए और उन्होंने ने ज़कात देने से इन्कार कर दिया इस ख़बर से हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ रन्जीदा हुवे और मुसलमान बेहद बुरा फ़रोख़्ता हो गए बल्कि मुक़ाबले के लिये जिहाद की तय्यारियां होने लगीं। इधर बनी मुस्तलक़ को वलीद के इस अजीब तर्ज़े अमल से बड़ी हैरत हुई और जब इन लोगों को मा'लूम हुवा कि वलीद ने दरबारे नबुव्वत में ग़लत बयानी और तोहमत तराज़ी कर दी है तो इन लोगों ने एक मुअज़्ज़ज और बा वफ़ा वफ़द दरबारे नबुव्वत में भेजा जिस ने बनी अल मुस्तलक़ की तरफ़ से सफ़ाई पेश की। एक जानिब अपने अमिल वलीद का बयान और दूसरी जानिब बनी अल मुस्तलक़ के वफ़द का येह

बयान दोनों बातें सुन कर हुजूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने खामोशी इख्तियार फ़रमा ली। और वहिये इलाही का इन्तिज़ार फ़रमाने लगे, आखिर वही उतर पड़ी और सूरए “हुजुरात” की आयात ने नाज़िल हो कर न सिर्फ़ मुआमले की हकीकत ही वाजेह कर दी बल्कि इस खुसूस में एक मुस्तक़िल कानून और मे'यारे तहकीक भी अता फ़रमा दिया। वोह आयात येह हैं।

(تفسير خرائن العرفان، ص १२८، प २१، الحجرات: २)

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِن جَاءَكُمْ فَاسِقٌ بِنِيفَاتِيئُوا أَن تُصِيبُوا  
قَوْمًا بِجَهَالَةٍ فَتُصْحَرُوا عَلَىٰ مَا فَعَلْتُمْ لِدَمِينٍ ۖ وَاعْلَمُوا أَن فِيكُمْ  
رَسُولُ اللَّهِ ۖ لَوْ يَطِيعُكُمْ فِي كَثِيرٍ مِّنَ الْأَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ حَبَّبَ  
إِلَيْكُمْ الْإِيمَانَ وَزَيَّنَهُ فِي قُلُوبِكُمْ وَكَرَّهَ إِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوقَ  
وَالْعِصْيَانَ ۚ أُولَٰئِكَ هُمُ الرُّشْدُونَ ۚ فَضَلَّاهُمُ اللَّهُ وَرَعَاهُ ۚ وَاللَّهُ

عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٨﴾ (प २१، الحجرات: २-८)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** ऐ ईमान वालों अगर कोई फ़ासिक तुम्हारे पास कोई ख़बर लाए तो तहकीक कर लो कि कहीं किसी कौम को बे जाने ईजा न दे बैठो फिर अपने किये पर पछताते रह जाओ और जान लो कि तुम में **अल्लाह** के रसूल हैं बहुत मुआमलों में अगर येह तुम्हारी खुशी करें तो तुम ज़रूर मशक्कत में पड़ो लेकिन **अल्लाह** ने तुम्हें ईमान प्यारा कर दिया है और उसे तुम्हारे दिलों में आरास्ता कर दिया और कुफ़्र और हुकम अदूली और नाफ़रमानी तुम्हें नागवार कर दी ऐसे ही लोग राह पर हैं **अल्लाह** का फ़ज़ल और एहसान और **अल्लाह** इल्म व हिक्मत वाला है।

**दर्से हिदायत :-** ﴿१﴾ ख़बरों के बयान करने में आ़म तौर पर लोगों का येही मिज़ाज और तरीका बन चुका है कि जो ख़बर भी उन के कानों तक पहुंचे उस को बिला तकल्लुफ़ बयान कर दिया करते हैं और हकीकते हाल की तफ़तीश और जुस्तजू बिल्कुल नहीं करते। ख़वाह इस ख़बर से किसी बे गुनाह पर इफ़्तिरा किया जाता हो या किसी को नुक़सान पहुंचता हो।

इस्लाम ने इस तरीके को बिल्कुल ग़लत़ करार दिया है बल्कि कुरआन ने इस्लामी आदाब का येह क़ानून बताया है कि हर ख़बर को सुन कर पहले उस की तह़कीक़ कर लेनी चाहिये जब वोह ख़बर पायए पुबूत को पहुंच जाए तो फिर उस ख़बर को लोगों से बयान करना चाहिये इसी बात की तरफ़ मुतवज्जेह करने के लिये नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने येह तम्बीह फ़रमाई है कि

كَفَى بِالْمَرْءِ كَذَابًا أَنْ يُحَدِّثَ بِكُلِّ مَا سَمِعَ

(صحيح مسلم، باب النهي عن الحديث بكل ما سمع، رقم الحديث ٥، ص ٨)

या'नी आदमी के झूटा होने के लिये येही काफ़ी है कि वोह जो बात भी सुने लोगों से (बिला तह़कीक़) बयान करने लगे। (والله تعالى أعلم)

﴿2﴾ इस आयत से षाबित हुवा कि एक शख्स अगर अ़दिल और पाबन्दे शरीअ़त हो तो उस की ख़बर मो'तबर है।

﴿3﴾ बा'ज़ मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया कि येह आयत वलीद बिन उ़क्बा ही के साथ ख़ास नहीं बल्कि येह आयत अ़म है और हर फ़ासिक़ की ख़बर के बारे में नाज़िल हुई है।

﴿4﴾ वलीद बिन उ़क्बा को सहाबी होते हुवे कुरआने मजीद ने फ़ासिक़ कहा तो इस में कोई इस्काल नहीं है क्यूंकि इस वाक़िए के बा'द जब वलीद बिन उ़क्बा ने सिद्क़ दिल से सच्ची तौबा कर ली तो उन का फ़िस्क़ ज़ाइल हो गया। लिहाज़ा किसी सहाबी को फ़ासिक़ कहना हरगिज़ हरगिज़ जाइज़ नहीं है क्यूंकि इस पर इजमाअ़ है कि हर सहाबी सादिक़्, अ़दिल और पाबन्दे शरअ़ है। (والله تعالى أعلم)

### ﴿56﴾ मलाइक्क़ मेहमान बन कर आए

हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام बहुत मेहमान नवाज़ थे। मन्कूल है कि जब तक आप के दस्तरख़्वान पर मेहमान नहीं आ जाते थे आप खाना नहीं तनावुल फ़रमाते थे। एक दिन मेहमानों का एक ऐसा क़ाफ़िला आप के घर उतर पड़ा कि उन मेहमानों से आप ख़ौफ़ज़दा हो गए। येह हज़रते

जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام थे जो दस या बारह फ़िरिश्तों को हमराह ले कर तशरीफ़ लाए थे और सलाम कर के मकान के अन्दर दाख़िल हो गए। येह सब फ़िरिश्ते निहायत ही ख़ूब सूरत इन्सानों की शक़ल में थे। अव्वलन तो येह हज़रात ऐसे वक़्त तशरीफ़ लाए जो मेहमानों के आने का वक़्त नहीं था। फिर येह हज़रात बिग़ैर इजाज़त त़लब किये दन्दनाते हुवे मकान के अन्दर दाख़िल हो गए फिर जब हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام हस्बे आदत इन हज़रात की मेहमान नवाज़ी के लिये एक फ़र्बा भुना हुवा बछड़ा लाए तो इन हज़रात ने खाने से इन्कार कर दिया। इन मेहमानों की मज़कूरा बाला तीन अदाओं की वजह से हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام को कुछ ख़दशा गुज़रा कि शायद येह लोग दुश्मन हैं क्यूंकि उस ज़माने का येही रवाज था कि दुश्मन जिस घर में दुश्मनी के लिये जाता था उस घर में कुछ खाता पीता नहीं था। चुनान्वे, आप इन मेहमानों से कुछ ख़ौफ़ महसूस फ़रमाने लगे। येह देख कर हज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा कि ऐ **اللّٰهُ** के नबी عَلَيْهِ السَّلَام आप हम से बिल्कुल कोई ख़ौफ़ न करें हम **اللّٰهُ** तआला के भेजे हुवे फ़िरिश्ते हैं और हम दो कामों के लिये आए हैं पहला मक़सद तो येह है कि हम आप को येह बिशारत सुनाने आए हैं कि आप को **اللّٰهُ** तआला एक इल्म वाला फ़रज़न्द अता फ़रमाएगा और हमारा दूसरा काम येह है कि हम हज़रते लूत عَلَيْهِ السَّلَام की क़ौम पर अज़ाब ले कर आए हैं।

फ़रज़न्द की बिशारत सुन कर हज़रते इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام की मुकद्दस बीवी हज़रते “सारा” चौंक पड़ी क्यूंकि इन की उम्र निनानवे बरस की हो चुकी थी और वोह कभी हामिला भी नहीं हुई थीं। तअज़्जुब से वोह चिल्लाती हुई आई और हाथ से माथा ठोंक कर कहने लगीं कि क्या मुझ बुढ़ियां बांझ के भी फ़रज़न्द होगा तो हज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा कि हां आप के रब का येही फ़रमान है और वोह परवर दगार बड़ी हिक़मतों वाला बहुत इल्म वाला है। चुनान्वे, हज़रते इस्हाक़ عَلَيْهِ السَّلَام पैदा हुवे।

(तفسير خزائن العرفان، ص ۹۳۸ (ملخصاً) پ ۲۶، الذاریات: ۲۴ - ۲۹)

कुरआने मजीद ने इस वाकिए को इन लफ्जों में बयान फ़रमाया है कि

هَلْ أَتَاكَ حَدِيثُ ضَيْفِ إِبْرَاهِيمَ النَّكْرَوِيِّ ۖ إِذْ دَخَلُوا عَلَيْهِ  
فَقَالُوا سَلَامًا ۖ قَالَ سَلَامٌ قَوْمٌ مُّكْرُونَ ۖ فَرَاغَ إِلَىٰ أَهْلِهِ فَجَاءَ  
بِعَجَلٍ سَابِقِينَ ۖ فَقَرَّبَهُ إِلَيْهِمْ قَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ ۖ فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ  
خِيفَةً ۖ قَالُوا لَا تَخَفْ ۖ وَبَشَّرُوهُ بِغُلَامٍ عَلِيمٍ ۖ فَأَقْبَكَتْ امْرَأَتُهُ فِي  
صَرَاطَةٍ فَصَكَتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوزٌ عَقِيمٌ ۖ قَالُوا كَذَلِكِ ۖ قَالَ  
رَبُّكَ ۖ إِنَّهُ هُوَ الْحَكِيمُ الْعَلِيمُ (پ ۲۶، الذاریات: ۲۳-۳۰)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** ऐ महबूब क्या तुम्हारे पास इब्राहीम के मुअज्जज मेहमानों की ख़बर आई ? जब वोह उस के पास आ कर बोले सलाम कहा सलाम ना शनासा लोग हैं फिर अपने घर गया तो एक फ़र्बा बछड़ा ले आया फिर उसे उन के पास रखा कहा क्या तुम खाते नहीं तो अपने जी में उन से डरने लगा। वोह बोले डरिये नहीं और उसे एक इल्म वाले लड़के की बिशारत दी इस पर इस की बीवी चिल्लाती आई फिर अपना माथा ठोंका और बोली क्या बुढ़िया बांझ ? उन्होंने ने कहा तुम्हारे रब ने यूंही फ़रमा दिया है और वोही हकीम दाना है।

**दर्से हिदायत :-** इस वाकिए से येह हिदायत की रोशनी मिलती है कि मलाइका कभी कभी आदमी की सूरत में लोगों के पास आया करते हैं। चुनान्वे, बा'ज़ रिवायतों में आया है कि हज़ के मौक़अ पर हरमे का'बा और मिना व अरफ़ात व मुज्दलिफ़ा वगैरा में कुछ फ़िरिश्तों की जमाअत इन्सानों की शक़ल व सूरत में मुख़लिफ़ भेस बना कर आती है जो हाजियों के इम्तिहान के लिये खुदा की तरफ़ से भेजी जाती है। इस लिये हुज्जाजे किराम को लाज़िम है कि मक्कए मुकर्रमा और मिना व अरफ़ात व मुज्दलिफ़ा और तवाफ़े का'बा व ज़ियारते मदीनए मुनव्वरा के हुजूम में होशियार रहें कि हरगिज़ हरगिज़ किसी इन्सान की भी बे अदबी व दिल आज़ारी न होने पाए और ताजिरों या हमालों या फ़कीरों से झगड़ा तकरार न होने पाए। तुम्हें क्या ख़बर है कि येह आदमी है या आदमी की सूरत में

कोई फिरिश्ता है जो तुम्हें धक्का दे कर या डांट कर तुम्हारे हिल्म व सब्र का इम्तिहान ले रहा है। येह वोह नुक्ता है जिस से आम तौर पर लोग नावाकिफ हैं इस लिये सफ़रे हज़ में क़दम क़दम पर लोगों से उलझते और झगड़ते रहते हैं और बा'ज अवकात दुन्या व आख़िरत का शदीद नुक्सान व ख़सारा उठाते हैं। लिहाज़ा इस नुक्साने अज़ीम से बचने की बेहतरीन तदबीर येही है कि हर शख़्स के बारे में येही ख़तरा महसूस करते रहें कि शायद येह कोई फिरिश्ता हो जो ताजिर या साइल या मज़दूर के भेस में है और फिर उस से संभल कर बात चीत करें और हत्तल इम्कान उस को राज़ी रखने की कोशिश करें और हरगिज़ हरगिज़ किसी तल्ख़ कलामी या सख़्त गोई की नौबत न आने दें कि इसी में सलामती है। (والله تعالى اعلم)

### ﴿57﴾ चांद दो टुकड़े हो गया

कुफ़ारे मक्का ने हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से मो'जिज़ा त़लब किया तो आप ने चांद को दो टुकड़े कर के दिखा दिया। एक टुकड़ा "जबले अबू कुबैस" पर नज़र आया और दूसरा टुकड़ा "जबले क़ईक़आन" पर देखा गया। इस तरह चांद को दो पारा कर के हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने कुफ़ारे मक्का को दिखा दिया और फ़रमाया कि तुम लोग गवाह हो जाओ।

(तفسير جلالين، ص २४०، प २६، القمر: १)

येह देख कर कुफ़ारे मक्का ने कहा कि मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने जादू कर के हमारी नज़र बन्दी कर दी है इस पर उन्हीं की जमाअत के लोगों ने कहा कि अगर येह नज़र बन्दी है तो मक्का से बाहर के किसी आदमी को चांद के हिस्से नज़र न आए होंगे। लिहाज़ा अब बाहर से जो क़ाफ़िले आने वाले हैं उन की जुस्तजू रखो और मुसाफ़िरों से दरयाफ़्त करो अगर दूसरे मक़मात से भी चांद का शक़ होना देखा गया है तो बेशक येह मो'जिज़ा है। चुनान्वे, सफ़र से आने वालों से दरयाफ़्त किया गया तो उन्हीं ने बयान किया कि हम ने देखा कि उस रोज़ चांद के दो टुकड़े हो गए थे। इस के बा'द मुशरिकीन को इन्कार की गुन्जाइश न रही। लेकिन वोह लोग अपने इनाद से इस को जादू ही कहते रहे। येह मो'जिज़ा अज़ीमा सिहाह की अहादीषे कषीरा में मज़कूर है और येह हदीष इस क़दर दरजाए शोहरत को



पहुंच गई है कि इस का इन्कार करना अक्ल व इन्साफ़ से दुश्मनी और बे दीनी है।

(तفسير خزائن العرفان، ص १५३-१५४، २، القمر: १)

**अल्लाह** तआला ने इस मो'जिज़े का बयान कुरआन की सूरए क़मर में इन अल्फ़ाज़ के साथ बिल ए'लान फ़रमाया कि

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ ۖ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ۚ ۝۱۰ وَانْ يَّرْوَآيَةً يُعْرَضُونَ وَيُفْتَنُونَ  
سِحْرٌ مُّسْتَبِيرٌ ۝۱۱ وَكَذَّبُوا وَاتَّبَعُوا ۚ اَهُوَ آءَهُمْ وَكُلٌّ اَمْرٌ مُّسْتَقَرٌّ ۝۱۲ (२، القمر: १-३)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** पास आई क़ियामत और शक़ हो गया चांद और अगर देखें कोई निशानी तो मुंह फेरते और कहते हैं येह तो जादू है चला आता और उन्होंने ने झुटलाया और अपनी ख्वाहिश के पीछे हुवे और हर काम करार पा चुका है।

**दर्से हिदायत :-** मो'जिज़ा "शक्कुल क़मर" हुज़ूर ख़ातिमुन्नबिय्यीन **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** का एक बे मिषाल मो'जिज़ा है जो इस आयते करीमा और बहुत सी मशहूर हदीषों से षाबित है हम ने अपनी किताब "सीरतुल मुस्तफ़ा **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم**" में इस मस्अले पर सीरे हासिल बहष की है इस के मुतालए से इतमीनाने क़ल्ब और जिलाए ईमान हासिल कीजिये।

### दिल बाग़ बाग़ हो जाता है

हज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ** फ़रमाते हैं मैं ने अर्ज़ की, या रसूलल्लाह **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم** जब मैं आप को देखता हूं तो मेरा दिल बाग़ बाग़ हो जाता है और आंखें ठन्डी होती हैं। (आका) मुझे हर चीज़ की मा'लूमात अता फ़रमा दीजिये ! इरशाद हुवा, "हर शै पानी से बनी है।" मैं ने अर्ज़ की, उस चीज़ पर मुत्तलअ फ़रमा दीजिये, जिसे अपना कर मैं जन्नत को पा सकूं। फ़रमाया "खाना खिलाओ और सलाम को फैलाओ और सिलए रेह्मी करो और रात में (नफ़ली) नमाज़ पढ़ो जब लोग सोए हों, तुम सलामती से दाखिले जन्नत हो जाओगे।"

(مسند امام احمد، ج ३، ص ८८، १، حديث ९११) (1332 स. 1 जि, फैज़ने सुन्नत, जि)

## ﴿58﴾ किसी कौम का मजाक न उड़ाओ

हज़रते षाबित बिन कैस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ कुछ ऊंचा सुनते थे इस लिये जब वोह मजलिस शरीफ में हाज़िर होते तो सहाबा उन्हें आगे जगह दे दिया करते थे। एक दिन जब वोह दरबारे रिसालत में आए तो मजलिस पुर हो चुकी थी, लेकिन वोह लोगों को हटाते हुवे हुजूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के करीब पहुंच गए। मगर फिर भी एक आदमी इन के और हुजूर के दरमियान रह गया। हज़रते षाबित बिन कैस उस को भी हटाने लगे लेकिन वोह शख्स अपनी जगह से बिल्कुल नहीं हटा तो हज़रते षाबित बिन कैस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने गुस्से में भर कर पूछा कि तुम कौन हो ? तो उस शख्स ने कहा कि फुलां आदमी हूं। येह सुन कर हज़रते षाबित बिन कैस ने हकारत के लहजे में कहा कि अच्छा तू फुलांनी औरत का लड़का है। येह सुन कर उस शख्स ने शर्मिन्दा हो कर सर झुका लिया और उस को बड़ी तकलीफ हुई इस मौक़अ पर मुन्दरिजए ज़ैल आयत नाज़िल हुई।

और हज़रते ज़हहाक़ से मन्कूल है कि कबीलए बनी तमीम के कुछ लोग बेहतरीन पोशाक पहन कर बसूरते वफ़द बारगाहे नबवी صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ में आए और जब इन लोगों ने “असहाबे सुफ़्फ़ा” के ग़रीब व मुफ़्लिस मुसलमानों को फ़रसूदा हाल देखा तो उन का मजाक उड़ाने लगे इस मौक़अ पर येह आयत नाज़िल हुई।

(तفسير خزائن العرفان، ص १२९، प २६، الحجرات: १।)

और हज़रते अनस رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि हज़रते अइशा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا ने हज़रते उम्मुल मोअमिनीन बीबी सफ़िय्या को एक दिन “यहूदिय्या” कह दिया था। जिस से उन को बहुत रंज व सदमा हुवा। जब हुजूर عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को मा’लूम हुवा तो हज़रते बीबी अइशा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا पर बहुत ज़ियादा ख़फ़गी का इज़हार फ़रमाया और हज़रते बीबी सफ़िय्या رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا की दिल जोई के लिये फ़रमाया कि तुम एक नबी (हज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام) की अवलाद में हो और तुम्हारे चचाओं में भी एक नबी (हज़रते हासून عَلَيْهِ السَّلَام) हैं और तुम एक नबी की बीवी भी हो या’नी मेरी बीवी हो। इस मौक़अ पर इन आयात का नुज़ूल हुवा।

(तفسير صावय، ج ५، ص १२९१، प २६، الحجرات: १।)

बहर हाल इन मजकूरा बाला तीनों शाने नुज़ूल में से किसी के बारे में येह आयत नाज़िल हुई जिस में **عَزَّوَجَلَّ** ने किसी कौम का मज़ाक उड़ाने की सख़्त मुमानअत फ़रमाई ।

आयते करीमा येह है कि

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا يَسْخَرُ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسَىٰ أَن يَكُونُوا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَاءٌ مِّنْ نِّسَاءٍ عَسَىٰ أَن يَكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ وَلَا تَكْمُرُوا  
أَنفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوا بِالْأَلْقَابِ بِئْسَ الْأَسْمُ الْقُسُوفُ بَعْدَ الْإِيْيَانِ  
وَمَن لَّمْ يَتُبْ فَأُولَئِكَ هُمُ الظَّالِمُونَ ⑪ (پ ۲۶، الحجرات: ۱۱)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** ऐ ईमान वालो न मर्द मर्दों से हंसें, अजब नहीं कि वोह उन हंसने वालों से बेहतर हों और न औरतें औरतों से, दूर नहीं कि वोह उन हंसने वालियों से बेहतर हों और आपस में ता'ना न करो और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो क्या ही बुरा नाम है मुसलमान हो कर फ़ासिक कहलाना और जो तौबा न करें तो वोही ज़ालिम हैं ।

**दर्से हिदायत :-** कुरआने करीम की इन चमकती हुई आयतों को बग़ौर पढ़िये और इब्रत हासिल कीजिये कि इस ज़माने में जो एक फ़ासिकाना और सरासर मुजरिमाना रवाज निकल पड़ा है कि “सय्यिद” व “शैख” और “पठान” कहलाने वालों का येह दस्तूर बन गया है कि वोह धुन्या, जोलाहा, कुन्जड़ा, क़साई, नाई कह कर मुख़्तस व मुत्तकी मुसलमानों का मज़ाक बनाया करते हैं बल्कि इन कौमों के आलिमों को महज़ इन की कौमियत की बिना पर ज़लील व हकीर समझते हैं बल्कि अपनी मजलिसों में इन का मज़ाक बना कर हंसते हंसाते हैं । जहाल तो जहाल बड़े बड़े आलिमों और पीराने तरीक़त का भी येही तरीक़ा है कि वोह भी येही हरकतें करते रहते हैं । हद हो गई कि जो लोग बरसों इन कौमों के आलिमों के सामने जानूँए तलम्मुज़ तै कर के खुद आलिम और शैखे तरीक़त बने हैं मगर फिर भी महज़ कौमियत की बिना पर अपने उस्तादों को हकीर व ज़लील समझ कर उन का तमस्ख़ुर करते रहते हैं । और अपने नसब व

जात पर फ़ख़र कर के दूसरों की ज़िल्लत व हक़ारत का चर्चा करते रहते हैं। लिल्लाह बताइये कि कुरआने मजीद की रोशनी में ऐसे लोग कितने बड़े मुजरिम हैं ?

मुलाहज़ा फ़रमाइये कि कुरआने मजीद ने मुन्दरिजए ज़ैल अहक़ाम और वईदें बयान फ़रमाई हैं :

- «1» कोई कौम किसी कौम का मज़ाक़ न उड़ाए। हो सकता है कि जिन का मज़ाक़ उड़ा रहे हैं वोह मज़ाक़ उड़ाने वालों से दुन्या व आख़िरत में बेहतर हों।
- «2» मुसलमानों के लिये जाइज़ नहीं कि एक दूसरे पर ता'ना ज़नी करें।
- «3» मुसलमानों पर हराम है कि एक दूसरे के लिये बुरे बुरे नाम रखें।
- «4» जो ऐसा करे वोह मुसलमान हो कर “फ़ासिक” है।
- «5» और जो अपनी इन हरकतों से तौबा न करे वोह “ज़ालिम” है।

हज़रते इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि अगर कोई गुनाहगार मुसलमान अपने गुनाह से तौबा कर ले तो तौबा के बा'द उस को उस गुनाह से आर दिलाता भी इसी मुमानअत में दाख़िल है। इसी तरह किसी मुसलमान को कुत्ता, गधा, सुवर कह देना भी ममनूअ है या किसी मुसलमान को ऐसे नाम या लक़ब से याद करना जिस में उस की बुराई ज़ाहिर होती हो या उस को नागवार होता हो येह सारी सूरतें भी इसी मुमानअत में दाख़िल हैं। (تفسير خزائن العرفان، ص १३، प २६، الحجرات: १)

और हज़रते अब्दुल्लाह बिन मसऊद सहाबी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि अगर मैं किसी को हक़ीर समझ कर उस का मज़ाक़ बनाऊं तो मुझे डर लगता है कि कहीं **अल्लाह** तआला मुझे कुत्ता न बना दे।

(تفسير صاوى، ج ५، ص १११، प २६، الحجرات: १)

### «59» लोहा आश्मान से उतरा है

**अल्लाह** तआला ने “लोहे” का ज़िक्र फ़रमाते हुवे कुरआने मजीद में इरशाद फ़रमाया है कि

وَأَنْزَلْنَا الْحَدِيدَ فِيهِ بَأْسٌ شَدِيدٌ وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ (الحديد: २५)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** और हम ने लोहा उतारा इस में सख्त आंच और लोगों के फ़ाइदे ।

हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि जब हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام बहिश्ते बरीं से रूए ज़मीन पर तशरीफ़ लाए तो लोहे के पांच अवज़ार अपने साथ लाए । हथोड़ा, निहाई, सन्सी, रीती, सुई । और दूसरी रिवायत इन्ही हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से मरवी है कि हज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام के साथ तीन चीज़ें ज़मीन पर नाज़िल हुई । हज़रे अस्वद, असाए मूसवी और लोहा ।

(तफ़सीर صاوی، ج ۶، ص ۲۱۱، ۲، ۲، الحدید: ۲۵)

और हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि इन्हीं ने कहा कि रसूलुल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया कि चार बरकत वाली चीज़ें **अब्बास** तअ़ाला ने आस्मान से नाज़िल फ़रमाई हैं । लोहा, आग, पानी, नमक । (तफ़सीर صاوی، ج ۶، ص ۲۱۱، ۲، ۲، الحدید: ۲۵)

**दर्से हिदायत :-** हज़रते अब्दुल्लाह बिन अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا की रिवायत में है कि “लोहा” जन्नत से ज़मीन पर आया है और हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا की रिवायत में येह है कि “लोहा” आस्मान से नाज़िल हुवा है । इन दोनों रिवायतों में कोई ख़ास तअ़रुज़ नहीं । इस लिये कि “जन्नत” आस्मानों के ऊपर ही है तो लोहा जब जन्नत से उतरा तो आस्मान ही से ज़मीन पर उतरा ।

“लोहा” एक ऐसी धात है कि हर सन्त व हरफ़्त के आलात इस से बनते हैं और हर किस्म के आलाते जंग भी इसी से तय्यार होते हैं और इन्सानों की ज़रूरियात के हज़ारों सामान ऐसे हैं कि बिगैर लोहे के तय्यार ही नहीं हो सकते । इस लिये कुरआने मजीद में फ़रमाया गया है कि **وَمَنَافِعُ لِلنَّاسِ** कि इस “लोहे” में लोगों के लिये बेशुमार फ़वाइद व मनाफ़ेअ हैं । बहर हाल लोहा खुदावन्दे तअ़ाला की ने’मतों में से एक बहुत बड़ी ने’मत है । लिहाज़ा लोहे का हर सामान देख कर खुदावन्दे कुद्दूस की इस ने’मत का शुक्र अदा करना चाहिये । (والله تعالى اعلم)

### ﴿60﴾ सहाबए किराम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمْ की सखावत

हज़रते अब्दुल्लाह बिन उमर رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है कि एक सहाबी ने बतौर हदिया एक सहाबी के घर बकरी का एक सर भेज दिया तो इन्होंने ने यह कह कर कि मुझ से ज़ियादा तो मेरा फुलां भाई इस सर का ज़रूरत मन्द है। वोह सर उस के घर भेज दिया तो उस ने कहा कि मेरा फुला भाई मुझ से भी ज़ियादा मोहताज है। यह कहा और वोह सर उस सहाबी के घर भेज दिया। इसी तरह एक ने दूसरे के घर और दूसरे ने तीसरे के घर उस सर को भेज दिया यहां तक कि जब यह सर छठे सहाबी के पास पहुंचा तो उन्होंने ने सब से पहले वाले के घर यह कह कर भेज दिया कि वोह हम से ज़ियादा मुफ़्तिस और हाज़त मन्द हैं इस तरह वोह सर जिस घर से सब से पहले भेजा गया था फिर उसी घर में वापस आ गया। इस मौक़अ पर सूरए ह़शर की मुन्दरिजए ज़ैल आयत नाज़िल हुई जिस में **اَللّٰهُ** جَبَّارٌ ने सहाबए किराम की सखावत का खुतबा इरशाद फ़रमाया है :

وَيُؤْتُونَ عَلَىٰ أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ وَمَنْ يُوقِ شَمْلَ نَفْسِهِ  
فَأُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿٩٨﴾ (البقرة: ٩)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और अपनी जानों पर उन को तरजीह देते हैं अगर्चे इन्हें शदीद मोहताजी हो और जो अपने नफ़्स के लालच से बचाया गया तो वोही कामयाब हैं।

येह तो ज़मानए रिसालत का एक हैरत अंगेज़ वाकिआ था। अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के अहदे ख़िलाफ़त में तक़रीबन इसी किस्म का एक वाकिआ पेश आया जो इब्रत ख़ैज़ और नसीहत आमोज़ होने में पहले वाकिए से कम नहीं। चुनान्वे, मन्कूल है कि अमीरुल मोअमिनीन हज़रते उमर फ़ारूके आ'ज़म رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने चार सो दीनार एक थेली में बन्द कर के अपने गुलाम को हुक्म दिया कि येह थेली हज़रते अबू उबैदा बिन अल ज़र्राह की ख़िदमत में पेश कर दो और फिर तुम घर में उस वक़्त तक ठहरे रहो कि तुम देख लो कि वोह इस थेली का क्या करते हैं ? चुनान्वे, गुलाम थेली ले कर हज़रते अबू उबैदा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के पास पहुंचा और अर्ज़ किया कि हज़रते अमीरुल

मोअमिनीन ने येह दीनारों की थेली आप के पास भेजी है और फ़रमाया है कि आप इस को अपनी हाज़तों में खर्च करें। अमीरुल मोअमिनीन का पैग़ाम सुन कर आप ने येह दुआ दी कि **अल्लाह** तआला अमीरुल मोअमिनीन का भला करे। फिर अपनी लौंडी से फ़रमाया कि ऐ खादिमा ! येह सात दीनार फुलां को दे आओ और येह पांच दीनार फुलां को। इसी तरह इन्होंने ने एक ही निशस्त में तमाम दीनारों को हाज़त मन्दों में तक्सीम करा दिया। सिर्फ़ दो दीनार इन के सामने रह गए थे तो इन्होंने ने फ़रमाया कि ऐ लौंडी ! येह दो दीनार भी फुलां ज़रूरत मन्द को दे दो।

येह माजरा देख कर गुलाम अमीरुल मोअमिनीन के पास वापस आ गया तो अमीरुल मोअमिनीन ने चार सो दीनार की दूसरी थेली हज़रते मुआज़ बिन जबल **रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** के पास भेजी और गुलाम से फ़रमाया कि तुम उस वक़्त तक उन के घर में बैठे रहना और देखते रहना कि वोह इस थेली के साथ क्या मुआमला करते हैं। चुनान्चे, गुलाम हज़रते मुआज़ बिन जबल **रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** के पास थेली ले कर पहुंचा तो हज़रते मुआज़ बिन जबल **रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** ने अमीरुल मोअमिनीन का तोहफ़ा और पैग़ाम पाने के बा'द येह कहा कि **अल्लाह** तआला अमीरुल मोअमिनीन पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमाए और उन को नेक बदला दे फिर फ़ौरन ही अपनी लौंडी को हुक्म दिया कि फुलां फुलां सहाबा के घरों में इतनी इतनी रक़म पहुंचा दो। सिर्फ़ दो दीनार बाकी रह गए थे कि हज़रते मुआज़ बिन जबल **रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ** की बीवी आ गई और कहा कि खुदा की क़सम ! हम लोग भी तो मुफ़्लिस और मिस्कीन ही हैं। येह सुन कर वोह दीनार जो बाकी रह गए थे बीवी की तरफ़ फेंक दिये। येह मन्ज़र देख कर गुलाम अमीरुल मोअमिनीन की ख़िदमत में हाज़िर हो गया और सारा चश्मदीद माजरा सुनाने लगा। अमीरुल मोअमिनीन हज़रते अबू उबैदा और हज़रते मुआज़ बिन जबल **رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا** की इस सखावत व ऊलुल अज़्मी की दास्तान को सुन कर फ़र्ते तअज्जुब से इन्तिहाई मसरूर हुवे और फ़रमाया कि इस में कोई शुबा नहीं कि सहाबाए किराम यकीनन आपस में भाई भाई हैं और एक दूसरे पर इन्तिहाई रहम दिल और आपस में बेहद हमदर्द हैं।



हज़रते बीबी आइशा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهَا और दूसरे सहाबए किराम से भी येह रिवायत मन्कूल है। (तفسير صاوی، ج ۵، ص ۱۲۹۴، پ ۲۶، الحجرات: ۱۱)।

एक हदीष में है कि आयते मजकूरए बाला का नुजूल इस वाकिए के बा'द हुवा कि बारगाहे नबुव्वत में एक भूका शख्स हाज़िर हुवा। हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अजवाजे मुतहहरात के हुजरो में मा'लूम कराया कि क्या खाने की कोई चीज़ है? मा'लूम हुवा कि किसी बीबी साहिबा के यहां कुछ भी नहीं है तब हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अस्हाबे किराम से फ़रमाया कि जो इस शख्स को मेहमान बनाए **अल्लाह** तअाला उस पर रहमत फ़रमाए। हज़रते अबू तलहा अन्सारी खड़े हो गए और हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ से इजाज़त ले कर मेहमान को अपने घर ले गए।

घर जा कर बीबी से दरयाफ़्त किया कि घर में कुछ खाना है? उन्होंने ने कहा कि सिर्फ़ बच्चों के लिये थोड़ा सा खाना है। हज़रते अबू तलहा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने फ़रमाया कि बच्चों को बहला फुसला कर सुला दो। और जब मेहमान खाने बैठे तो चराग़ दुरुस्त करने के लिये उठो और चराग़ को बुझा दो ताकि मेहमान अच्छी तरह खा ले। येह तजवीज़ इस लिये की, कि मेहमान येह न जान सके कि अहले खाना उस के साथ नहीं खा रहे हैं। क्यूंकि उस को येह मा'लूम हो जाएगा तो वोह इस्सरा करेगा और खाना थोड़ा है। इस लिये मेहमान भूका रह जाएगा। इस तरह हज़रते अबू तलहा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने मेहमान को खाना खिला दिया और खुद अहले खाना भूके सो रहे। जब सुब्ह हुई और हुज़ूर सय्यिदे आलम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खिदमत में हाज़िर हुवे तो हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعालَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हज़रते अबू तलहा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को देख कर फ़रमाया कि रात फुलां फुलां के घर में अजीब मुआमला पेश आया। **अल्लाह** तअाला इन लोगों से बहुत राज़ी है और सूरए ह़श्र की येह आयत नाज़िल हुई। (तفسير خزائن العرفان، ص ९८४, प २८, الحشر: ९)।

**दर्से हिदायत :-** येह आयते मुबारका और इस की शाने नुजूल के हैरत नाक वाकिआत हम मुसलमानों के लिये किस कदर इब्रत खैज़ व नसीहत आमोज़ हैं। इस को लिखने की कोई ज़रूरत नहीं। हर शख्स खुद ही इन्साफ़ की ऐनक लगा कर इस को देख सकता है। बशर्त येह कि उस के दिल में बसीरत की रोशनी और आंखों में बसारत का नूर मौजूद हो। (والله تعالى اعلم)

### ﴿61﴾ यहूदियों की जिलावतनी

हिजरत के बा'द जब हुजुरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ मदीना तशरीफ़ लाए तो आप ने मदीना और अतराफ़े मदीना के यहूदियों से “सुल्ह व अहद” का मुआहदा फ़रमा लिया। मगर यहूदी अपने अहदो पैमान पर क़ाइम नहीं रहें बल्कि उन्होंने ने हुजुरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ और मुसलमानों के ख़िलाफ़ अन्दरूनी और बैरूनी साजिशों का जाल बिछाना शुरू कर दिया। इसी दौरान यहूदियों में से क़बीलए “बनू नज़ीर” के ज़िम्मेदार अफ़राद ने एक रोज़ यह साजिश की, कि नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ से जा कर यह अर्ज़ करें कि हम को आप से एक ज़रूरी मश्वरा करना है और जब वोह तशरीफ़ ले आएँ तो दीवार के क़रीब उन को बिठाया जाए और वोह जब गुफ़्तगू में मसरूफ़ हो जाएँ तो छत के ऊपर से एक भारी पथ्थर उन के ऊपर गिरा कर उन की ज़िन्दगी का ख़ातिमा कर दिया जाए। (مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّ وَجَلَّ)

चुनान्वे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ यहूदियों की बस्ती में तशरीफ़ ले गए। मगर अभी आप दीवार के क़रीब बैठे ही थे कि **अब्ल्लाह** तआला ने ब ज़रीअए वही यहूदियों की साजिश से आप को मुत्तलअ कर दिया। इस लिये आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ख़ामोशी के साथ फ़ौरन वापस तशरीफ़ ले गए। इस तरह यहूदियों की साजिश नाकाम हो गई। आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने मदीना पहुंच कर मुहम्मद बिन मुस्लिमा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ को भेजा कि वोह बनू नज़ीर के यहूदियों तक येह पैग़ाम पहुंचा दें कि चूँकि तुम लोगों ने ग़दारी कर के मुआहदा तोड़ डाला है इस लिये तुम लोगों को हुक्म दिया जाता है कि हिजाजे मुक़द्दस की सर ज़मीन से जिलावतन हो कर बाहर निकल जाओ। मुनाफ़िक़ीन ने येह सुना तो जम्अ हो कर बनू नज़ीर के पास पहुंचे और कहने लगे कि तुम लोग मुहम्मद (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) के इस हुक्म को हरगिज़ तस्लीम न करो और यहां से हरगिज़ जिलावतन न हो। हम हर तरह तुम्हारे शरीके कार हैं। बनू नज़ीर ने मुनाफ़िक़ीन की पुश्त पनाही देखी तो हुजूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ का हुक्म मानने से इन्कार कर दिया। तो नबिय्ये अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने जिहाद की तय्यारी शुरू कर दी, और हज़रते अब्दुल्लाह बिन उम्मे मकतूम को मदीने का

अमीर बना कर सहाबए किराम की एक फ़ौज ले कर बनू नज़ीर के क़ल्ए पर हम्ला आवर हो गए। यहूदी इस क़ल्ए में बन्द हो गए और उन्होंने ने यकीन कर लिया कि अब मुसलमान हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। लेकिन हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन के क़ल्ए का मुहासरा कर लिया और फिर हुक्म दिया कि इन के दरख्तों को काट डालो क्यूंकि मुमकिन था कि दरख्तों के झुन्ड में छुप कर यहूदी इस्लामी लश्कर पर छपा मारते। इन हालात को देख कर बनू नज़ीर के यहूदियों पर ऐसा रो'ब बैठ गया और इस क़दर ख़ौफ़ तारी हो गया कि वोह लरज़ उठे, और उन को मुनाफ़िकीन की तरफ़ से भी ब जुज़ मायूसी और रुस्वाई के कुछ हाथ न आया, आखिरे कार मजबूर हो कर यहूदियों ने दरख्वास्त की, कि हम लोगों को जिलावतन होने का मौक़अ दिया जाए। चुनान्चे, उन लोगों को इजाज़त दी गई कि सामाने जंग के इलावा जिस क़दर सामान भी वोह ऊंटों पर लाद कर ले जाना चाहते हैं, ले जाएं। चुनान्चे, बनू नज़ीर के यहूदी छे सो ऊंटों पर अपना माल व सामान लाद कर एक जुलूस की शक़ल में गाते बजाते मदीने से निकले और कुछ तो “खैबर” चले गए और ज़ियादा ता'दाद में मुल्के शाम जा कर “अज़रआत” और “अरीहा” में आबाद हो गए और चलते वक़्त यहूदियों ने अपने मकानों को गिरा कर बरबाद कर दिया ताकि मुसलमान इन मकानों से फ़ाइदा न उठा सकें।

(مدارج النبوت، بحث غزوة بنى نضير، ج ۲، ص ۴۸-۴۷، )

**अल्लाह** तअ़ाला ने बनू नज़ीर के यहूदियों की इस जिलावतनी का ज़िक्र कुरआने मजीद की सूरए ह़शर में इस तरह फ़रमाया है कि

هُوَ الَّذِي أَخْرَجَ الَّذِينَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِأَوَّلِ  
لَحْشٍ مَا ظَنَنْتُمْ أَنْ يَخْرُجُوا وَظَنُّوا أَنَّهُمْ مَانِعَتُهُمْ حُصُونُهُمْ مِنَ اللَّهِ  
فَأَنشَأَهُمُ اللَّهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوا وَقَذَفَ فِي قُلُوبِهِمُ الرُّعْبَ  
يُخْرِبُونَ بُيُوتَهُمْ بِأَيْدِيهِمْ وَأَيْدِي الْمُؤْمِنِينَ فَاعْتَبِرُوا يَا أُولِي

الْأَبْصَارِ ﴿٢﴾ (الحشر: २४)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** वोही है जिस ने उन काफ़िर किताबियों को उन के घरों से निकाला उन के पहले हज़र के लिये तुम्हें गुमान न था कि वोह निकलेंगे और वोह समझते थे कि उन के क़लए उन्हें **अल्लाह** से बचा लेंगे तो **अल्लाह** का हुक्म उन के पास आया जहां से उन का गुमान भी न था और उस ने उन के दिलों में रो'ब डाला कि अपने घर वीरान करते हैं अपने हाथों और मुसलमानों के हाथों तो इब्रत लो ऐ निगाह वालो ।

**दर्से हिदायत :-** यहूदियों की क़ौम अपने रिवायती ह़सद व बुग़ज़ और तारीख़ी मुनाफ़क़त में हमेशा से मशहूर है । ख़ास कर ग़द्वारी और बद अहदी तो इन का क़ौमी ख़ास्सा है इस के इलावा इन बद बख़्तों का जुल्म भी ज़रबुल मषल है । यहां तक कि इन लोगों ने बहुत से अम्बियाए किराम को क़त्ल कर दिया । दरअं हाल येह कि इन बद बख़्तों को येह ए'तिराफ़ था कि हम इन को नाहक़ क़त्ल कर रहे हैं । खुदावन्दे कुहूस ने इन की बद अहदियों और वा'दा शिकनियों का कुरआने मजीद में बार बार ज़िक्र फ़रमा कर मुसलमानों को मुतनब्बेह फ़रमाया है कि यहूदियों के अहद व मुआहदे पर हरगिज़ हरगिज़ मुसलमानों को भरोसा नहीं करना चाहिये और हमेशा इन बद बख़्तों की मक्कारियों और दसीसा कारियों से होशियार रहना चाहिये ।

और बद अहदी और अहद शिकनी के येह ख़बीष ख़साइल और बद तरीन शरारतों के घिनावने रज़ाइल ज़मानए दराज़ से आज तक ब दस्तूर यहूदियों में मौजूद हैं जैसा कि इस दौर में भी देखा जा सकता है कि येह लोग आज कल इज़राइल की ग़ासिबाना हुकूमत बना कर फ़िलिस्तीनी अरबों के साथ क्या कर रहे हैं ? और अमरीका के यहूदी किस तरह इन की बद अहदियों पर इन की पीठ ठोंक कर खुद इतरा रहे हैं, और इज़राइल हुकूमत का हौसला बढ़ा रहे हैं, हालांकि पूरी दुन्या इज़राइल और अमरीका पर ला'नत व मलामत कर रही है मगर इन बे ईमान बे हयाओं की शर्मों हया इस तरह ग़ारत हो चुकी है कि इन ज़ालिमों को इस का कोई एहसास ही नहीं है । फ़िलिस्तीनी अरब तो ज़ाहिर है कि अमरीका जैसी ताक़त का मुकाबला नहीं कर सकते, मगर हम नाउम्मीद नहीं हैं और कुरआनी वा'दों से पुर उम्मीद हैं कि **ان شاء الله تعالى** ब दस्तूरे साबिक़ इन लोगों को कोई न कोई अज़ाबे इलाही तो ज़रूर हलाक व बरबाद फ़रमा देगा ।

## ﴿62﴾ एक अजीब वजीफ़

मुफ़स्सरीन ने फ़रमाया कि औफ़ बिन मालिक अशजई رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ के एक फ़रज़न्द को जिन का नाम “सालिम” था, मुशरिकों ने गिरफ़्तार कर लिया तो औफ़ बिन मालिक رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ बारगाहे रिसालत में हाज़िर हुवे और अपनी मुफ़िलसी व फ़ाका मस्ती की शिकायत करते हुवे येह अर्ज़ किया कि मुशरिकों ने मेरे बच्चे को गिरफ़्तार कर लिया है, जिस के सदमे से उस की मां बेहद परेशान है तो इस सिलसिले में अब मुझे क्या करना चाहिये ? तो हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया कि तुम सब्र करो और परहेज़गारी की जिन्दगी बसर करो और तुम भी ब कषरत بِاللَّهِ الْعَظِيمِ पढ़ा करो और बच्चे की मां को भी ताकीद कर दो कि वोह भी कषरत से इस वजीफ़े का ज़िक्र करती रहें। येह सुन कर औफ़ बिन मालिक अशजई अपने घर चले गए और अपनी बीवी को येह वजीफ़ा बता दिया। फिर दोनों मियां बीवी इस वजीफ़े को ब कषरत पढ़ने लगे।

इसी दरमियान में वजीफ़े का येह अषर हुवा कि एक दिन मुशरिकीन “सालिम” की तरफ़ से गाफ़िल हो गए चुनान्चे, मौक़अ पा कर हज़रते सालिम मुशरिकों की कैद से निकल भागे और चलते वक़्त मुशरिकों की चार हज़ार बकरियां और पचास ऊंटों को भी हांक कर साथ लाए और अपने घर पहुंच कर दरवाज़ा खट-खटाया। मां बाप ने दरवाज़ा खोला तो हज़रते सालिम मौजूद थे, मां बाप बेटे की नागहां मुलाकात से बेहद खुश हुवे और औफ़ बिन मालिक अशजई رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ने हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को अपने बेटे की सलामती के साथ कैद से रिहाई की ख़बर सुनाई और येह फ़तवा दरयाफ़्त किया कि मुशरिकीन की येह बकरियां और ऊंट हमारे लिये हलाल हैं या नहीं ? तो हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उन को इजाज़त दे दी कि वोह ऊंटों और बकरियों को जिस तरह चाहें इस्ति'माल करें। (तفسير خزائن العرفان، ص १००، १، २८، الطلاق: २)

और इस के बा'द मुन्दरिजए ज़ैल आयत नाज़िल हुई कि :

وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَلْ لَهُ مَخْرَجًا ۖ وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۚ وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ۗ إِنَّ اللَّهَ بَالِغُ أَمْرِهِ ۗ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ۝ (प २८, الطلاق: २-३)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और जो **अल्लाह** से डरे **अल्लाह** उस के लिये नजात की राह निकाल देगा और उसे वहां से रोज़ी देगा जहां उस का गुमान न हो और जो **अल्लाह** पर भरोसा करे तो वोह उसे काफ़ी है बेशक **अल्लाह** अपना काम पूरा करने वाला है बेशक **अल्लाह** ने हर चीज़ का एक अन्दाज़ा रखा है ।

हदीष शरीफ़ में आया है कि रसूलुल्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया है कि एक ऐसी आयत जानता हूं कि अगर लोग इस आयत को ले लें तो येह आयत लोगों को काफ़ी हो जाएगी । और वोह आयत येह है **وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ** से आख़िर आयत तक । (तफ़सीर सावी, ज १, व २१८, प २८, الطلاق: ३)

**हिकायते अजीबा :-** अल्लामा अजहूरी ने अपनी किताब “फ़ज़ाइले रमज़ान” में तहरीर फ़रमाया है कि एक मरतबा कुछ लोग समन्दर में कश्ती पर सुवार हो कर सफ़र कर रहे थे तो समन्दर में से एक आवाज़ देने वाले की आवाज़ आई मगर उस की सूरत नहीं दिखाई पड़ी । उस ने कहा कि अगर कोई शख्स मुझे दस हज़ार दीनार दे दे तो मैं उस को एक ऐसा वज़ीफ़ा बता दूंगा कि अगर वोह हलाकत के क़रीब पहुंच गया हो और इस वज़ीफ़े को पढ़ ले तो तमाम बलाएं और हलाकतें टल जाएंगी । तो कश्ती वालों में से एक ने बुलन्द आवाज़ से कहा कि आओ मैं तुझ को दस हज़ार दीनार देता हूं तू मुझे वोह वज़ीफ़ा बता दे तो आवाज़ आई कि तू दीनारों को समन्दर में डाल दे । मुझे मिल जाएंगे ।

चुनान्वे, कश्ती वाले ने दस हज़ार दीनारों को समन्दर में डाल दिया तो उस ग़ैबी आवाज़ वाले ने कहा कि वोह वज़ीफ़ा **وَمَنْ يَتَّقِ اللَّهَ** आख़िर तक है तुझ पर जब कोई मुसीबत पड़े तो इस को पढ़ लिया करो ।

येह सुन कर कश्ती के सब सुवारों ने उस का मज़ाक़ उड़ाया और कहा कि तूने दस हज़ार दीनारों की कषीर दौलत जाएअ़ कर दी तो उस ने जवाब दिया कि हरगिज़ हरगिज़ मैं ने अपनी दौलत को जाएअ़ नहीं किया है और मुझे इस में कोई शुबा नहीं है कि येह कुरआन शरीफ़ की आयत ज़रूर नफ़अ़ बख़्श होगी । इस के बा'द चन्द दिन कश्ती चलती रही । फिर अचानक तूफ़ान की मौजों से कश्ती टूट कर बिखर गई और सिवाए इस आदमी के कश्ती का कोई आदमी भी ज़िन्दा नहीं बचा । येह कश्ती के एक तख़्ते पर बैठा हुवा समन्दर में बहता चला जा रहा था यहां तक कि एक जज़ीरे में उतर पड़ा । और चन्द क़दम चल कर येह देखा कि शान्दार महल बना हुवा है और हर क़िस्म के मोती और जवाहिरात वहां पड़े हुवे हैं । और इस महल में एक बहुत ही हसीन औरत अकेली बैठी हुई हैं और हर क़िस्म के मेवे और खाने के सामान वहां रखे हुवे हैं । उस औरत ने उस से पूछा :

“कि तुम कौन हो और कैसे यहां पहुंच गए ?”

तो उस ने औरत से पूछा कि :

“तुम कौन हो और यहां क्या कर रही हो ?”

तो उस औरत ने अपना क़िस्सा सुनाया कि मैं बसरा के एक अज़ीम ताजिर की बेटी हूं मैं अपने बाप के साथ समन्दरी सफ़र में जा रही थी कि हमारी कश्ती टूट गई और मुझे कोई अचानक कश्ती में से उचक कर ले भागा । और मैं इस जज़ीरे में इस महल के अन्दर उस वक़्त से पड़ी हूं । एक शैतान है जो मुझे इस महल में ले आया है वोह हर सातवें दिन यहां आता है और मेरे साथ सोहबत तो नहीं करता मगर बोसो कनार करता है । और आज उस के यहां आने का दिन है । लिहाज़ा तुम अपनी जान बचा कर यहां से भाग जाओ वरना वोह आ कर तुम पर हम्ला कर देगा । अभी उस औरत की गुफ़्तगू ख़त्म भी नहीं हुई थी कि एक दम अन्धेरा छ गया तो औरत ने कहा कि जल्दी भाग जाओ वोह आ रहा है वरना वोह तुम को ज़रूर हलाक कर देगा । चुनान्चे, वोह आ गया और



येह शख्स खड़ा रहा मगर जूं ही शैतान इस को दबोचने के लिये आगे बढ़ा तो इस ने **وَمِنْ يَتَّقِ اللَّهَ** का वजीफ़ा पढ़ना शुरू कर दिया तो शैतान ज़मीन पर गिर पड़ा। और इस ज़ोर की आवाज़ आई कि गोया पहाड़ का कोई टुकड़ा टूट कर गिर पड़ा है और फिर वोह शैतान जल कर राख का ढेर हो गया। येह देख कर औरत ने कहा कि **اَللّٰهُ** तअल्ला ने तुम को फ़िरिश्तए रहमत बना कर मेरे पास भेज दिया है। तुम्हारी बदौलत मुझे इस शैतान से नजात मिली। फिर उस औरत ने इस मर्द से कहा कि इन मोती जवाहिरात को उठा लो और इस महल से निकल कर मेरे साथ समन्दर के कनारे चलो और कोई कशती तलाश कर के यहां से निकल चलो। चुनान्चे, बहुत से मोती व जवाहिरात और फल वगैरा खाने का सामान ले कर दोनों महल से निकले और समन्दर के कनारे पहुंचे तो एक कशती “बसरा” जा रही थी। दोनों उस पर सुवार हो कर बसरा पहुंचे। लड़की के वालिदैन् अपनी गुमशुदा लड़की को पा कर बेहद खुश हुवे और इस मर्द के ममनून हो कर इस को बहुत इज़्ज़त व एहतिराम के साथ अपने घर मेहमान रखा। फिर लड़की के वालिदैन् ने पूरी सरगुज़श्त सुन कर दोनों का निकाह कर दिया और दोनों मियां बीवी बन कर रहने लगे। और तमाम मोती व जवाहिरात जो दोनों जज़ीरे से लाए थे, वोह दोनों की मुश्तरका दौलत बन गई और उस औरत से खुदावन्दे तअल्ला ने इस मर्द को चन्द अवलाद भी दी और वोह दोनों बहुत ही महब्बत व उल्फ़त के साथ खुशहाल जिन्दगी बसर करने लगे।

(تفسير صاوى، ج ٦، ص ٢١٨٣، ٢٨، الطلاق: ٢)

**दर्से हिदायत :-** इस वाकिए से मा'लूम हुवा कि आ'माल व वज़ाइफ़े कुरआनी में बड़ी बड़ी ताषीरात हैं। मगर शर्त येह है कि अक़ीदा दुरुस्त हो और आ'माल को सहीह तरीके से पढ़ा जाए और ज़बान गुनाहों की आलूदगी और लुक्मए हराम से महफूज़ और पाक व साफ़ हो और अमल में इख़्लासे निय्यत और शराइत की पूरी पूरी पाबन्दी भी हो। तो **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ تَعَالٰی** कुरआनी आ'माल से बड़ी बड़ी और अजीब अजीब ताषीरात का जुहर होगा। जिस की एक मिषाल आप ने पढ़ ली। (**والله تعالى اعلم**)

### ﴿63﴾ पांच मशहूर और पुराने बुत

हज़रते नूह عليه السلام की क़ौम बुत परस्त हो गई थी। और इन लोगों के पांच बुत बहुत मशहूर थे जिन की पूजा करने पर पूरी क़ौम निहायत ही इस्सर के साथ कमरबस्ता थी और इन पांचों बुतों के नाम येह थे :

﴿1﴾ वद ﴿2﴾ सुवाअ ﴿3﴾ यगूष ﴿4﴾ यऊक़ ﴿5﴾ नस्स

हज़रते नूह عليه السلام जो बुत परस्ती के ख़िलाफ़ वा'ज़ फ़रमाया करते थे तो इन की क़ौम इन के ख़िलाफ़ हर कूचा व बाज़ार में चरचा करती फिरती थी और हज़रते नूह عليه السلام को तरह तरह की ईजाएं दिया करती थी। चुनान्वे, कुरआने मजीद का बयान है कि :

وَقَالُوا لَا تَذَرُنَّ آلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَلَا سُوَاعًا وَلَا يَغُوثَ  
وَيَعُوقَ وَتَسْرَاجًا ۚ وَقَدْ أَضَلُّوا كَثِيرًا ۚ (پ ۲۹، نوح: ۲۳، ۲۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- और बोले हरगिज़ न छोड़ना अपने खुदाओं को और हरगिज़ न छोड़ना वद और न सुवाअ और यगूष और यऊक़ और नस्स को और बेशक उन्होंने ने बहुतों को बहकाया।

येह पांचों बुत कौन थे ? इन के बारे में हज़रते उर्वा बिन जुबैर رضي الله تعالى عنه का बयान है कि हज़रते आदम عليه السلام के येह पांचों फ़रज़न्द थे जो निहायत ही दीनदार व इबादत गुज़ार थे और लोग इन पांचों के बहुत ही मुहिब्ब व मो'तकिद थे। जब इन पांचों की वफ़ात हो गई तो लोगों को बड़ा रंज व सदमा हुवा तो शैतान ने इन लोगों की ता'ज़ियत करते हुवे यूँ तसल्ली दी कि तुम लोग इन पांचों सालिहीन का मुजस्समा बना कर रख लो और इन को देख देख कर अपने दिलों को तस्कीन देते रहो। चुनान्वे, पीतल और सीसे के मुजस्समे बना बना कर इन लोगों ने अपनी अपनी मस्जिदों में रख लिये। कुछ दिनों तक तो लोग इन मुजस्समों की ज़ियारत करते रहे फिर लोग इन बुतों की इबादत करने लगे और खुदापरस्ती छोड़ कर बुत परस्ती करने लगे।

(تفسير صاوی، ج ۹، ص ۲۲۵، پ ۲۹، نوح: ۲۳)

हज़रते नूह عليه السلام साढ़े नव सो बरस तक इन लोगों को बा'ज सुना सुना कर इस बुत परस्ती से मन्ज़ फ़रमाते रहे। बिल आख़िर तूफ़ान में गर्क हो कर सब हलाक हो गए मगर शैतान अपनी इस चाल से बाज़ नहीं आया और हर दौर में अपने वस्वसों के जादू से लोगों को इस तौर पर बुत परस्ती सिखाता रहा कि लोग अपने सालिहीन की तस्वीरों और मुजस्समे बना कर पहले तो कुछ दिनों तक इन की ज़ियारत करते रहे और इन के दीदार से अपना दिल बहलाते रहे। फिर रफ़ता रफ़ता इन तस्वीरों और मुजस्समों की इबादत करने लगे। इस तरह शिर्क व बुत परस्ती की ला'नत में दुन्या गिरिफ़्तार हो गई और खुदा परस्ती और तौहीदे ख़ालिस का चराग़ बुझने लगा जिस को रोशन करने के लिये अम्बियाए साबिकीन यके बा'द दीगरे बराबर मबरूष होते रहे। यहां तक कि हमारे हुज़ूर ख़ातिमुन्नबिय्यीन صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने हमेशा के लिये बुत परस्ती की जड़ इस तरह काट दी कि आप ने तस्वीरों और मुजस्समों का बनाना ही हुराम फ़रमा दिया और हुक्म सादिर फ़रमा दिया कि तसावीर और मुजस्समे हरगिज़ हरगिज़ कोई शख़्स किसी आदमी तो आदमी किसी जानदार के भी न बनाए और जो पहले से बन चुके हैं उन को जहां भी देखो फ़ौरन मिटा कर और तोड़ फोड़ कर तबाहो बरबाद कर दो ताकि न रहेगा बांस न बजेगी बांसरी।

**दर्से हिदायत :-** आज कल मैं ने देखा है कि बहुत से पीरों के मुरीदीन ने अपने पीरों की तस्वीरों को चोखटों में बन्द कर के अपने घरों में रख छोड़ा है और ख़ास ख़ास मौक़ाओं पर इस की ज़ियारत करते कराते रहते हैं बल्कि बा'ज तो इन तस्वीरों पर फूल मालाएं चढ़ा कर अगरबत्ती भी सुलगाया करते हैं और इस के धूवें को अपने बदन पर मला करते हैं। अगर येह लोग अपनी इन खुराफ़ात से बाज़ न रहे और उ-लमाए अहले सुन्नत ने इस के ख़िलाफ़ अलमे मुख़ालफ़त न बुलन्द किया तो अन्देशा है कि शैतान का पुराना हर्बा और उस की शैतानी चाल का जादू मुसलमानों पर चल जाएगा और आने वाली नस्लें इन तस्वीरों की इबादत करने लगेंगी। ख़ूब कान खोल कर सुन लो कि

हुजूर खातिमुन्नबिय्यीन ﷺ ने बुत परस्ती के जिस दरख्त की जड़ों को काट दिया था। आज कल के येह जाहिल बिदअती पीर और इन के तवह्हम परस्त मुरीदीन बुत परस्ती की इन जड़ों को सींच सींच कर फिर शिर्क व बुत परस्ती के दरख्त को हरा भरा और तनावर बना रहे हैं। आज कल के जाहिल और दुन्यादार पीरों से तो क्या उम्मीद की जा सकती है कि वोह इस के ख़िलाफ़ ज़बान खोलेंगे। मगर हां हक़ परस्त और हक़ गो उ-लमाए अहले सुन्नत से बहुत कुछ उम्मीदें वाबस्ता हैं कि वोह इन के ख़िलाफ़े शरअ आ'माल व अफ़आल के ख़िलाफ़ ان شاء الله تعالى जरूर अलमे जिहाद बुलन्द करेंगे क्यूंकि तारीख़ गवाह है कि हर उस मौक़अ पर जब कि इस्लाम की कशती गुमराहियों के भंवर में डगमगाने लगी है तो उ-लमाए अहले सुन्नत ही ने अपनी जान पर खेल कर कश्तिये इस्लाम की नाखुदाई की है। और आख़िर तूफ़ानों का रुख़ मोड़ कर इस्लाम की कशती को गर्कआब होने से बचा लिया है।

मगर इस ज़माने में इस का क्या इलाज है ? कि इन बे शरअ पीरों और मक्कार बाबाओं ने चन्द रूपियों के बदले कुछ मौलवियों को ख़रीद लिया है और येह मौलवी साहिबान इन बे शरअ पीरों और मक्कार बाबाओं को “मजज़ूब” या “फ़िर्कए मलामतिय्या” का ख़ूब सूरत लुबादा ओढ़ा कर ख़ूब ख़ूब इन के कश्फ़ व करामत का डंका बजा रहे हैं। और इन बाबाओं के नजराने से अपनी मुठ्ठी गर्म कर रहे हैं और अगर कोई हक़ गो अल्लिम इन लोगों के ख़िलाफ़ कोई कलिमा कह दे तो बाबा लोग अपने दादाओं को बुला कर उस अल्लिम की मरम्मत करा दें और इन के ज़रख़रीद मौलवी अपनी मुख़ालफ़ाना तक़रीरों की बोछाड़ से बे चारे हक़ गो अल्लिम की ज़िन्दगी दूभर कर दें। मैं ने बारहा उ-लमाए अहले सुन्नत को पुकारा और ललकारा कि लिल्लाह उठो और हक़ के लिये कमरबस्ता हो कर कम अज़ कम इतना तो कर दो कि मुत्तफ़िका फ़तवे के ज़रीए येह ए'लान कर दो कि येह दाढ़ी मुन्डे, ऊल फूल बकने वाले, गंजेड़ी, तारिके सौमो सलात, बे शरअ बाबा लोग फ़सिके मुअल्लिन हैं। जो खुद गुमराह और मुसलमानों के लिये गुमराह कुन हैं और इन लोगों को विलायत व

करामत से दूर का भी कोई वासिता नहीं। मगर अफ़सोस कि एक मौलवी भी मुझ अज़िज़ की आवाज़ पर लब्बैक कहने वाला नहीं मिला। बल्कि पता येह चला कि हर बाबा की झोली में कोई न कोई मौलवी छुपा हुआ है। जिस के खिलाफ़ कुछ कहना ख़तरे से ख़ाली नहीं। क्योंकि जो भी इन बाबाओं के खिलाफ़ ज़बान खोलेगा उन नज़राना ख़ोर मौलवियों की काऊं काऊं और चाऊं चाऊं में उस की मिट्टी पलीद हो जाएगी।

فيا اسفاه ويا حسرتاه إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُونَ

### ﴿64﴾ अबू जहल और खुदा के सिपाही

अबू जहल ने हुज़ूर नबिय्ये करीम ﷺ को का'बे में नमाज़ पढ़ने से मन्अ किया था और वोह अलानिय्या कहा करता था कि अगर मैं ने मुहम्मद (ﷺ) को नमाज़ पढ़ते देखा तो अपने पाउं से उन की गर्दन कुचल दूंगा और उन का चेहरा खाक में मिला दूंगा। चुनान्चे, वोह अपने इस फ़सिद इरादे से एक बार हुज़ूर ﷺ को नमाज़ पढ़ते देख कर आप के करीब आया, अचानक उल्टे पाउं भागा। हाथ आगे बढ़ाए हुवे जैसे कोई किसी मुसीबत को रोकने के लिये हाथ आगे बढ़ाता है चेहरे का रंग उड़ गया, और बदन की बोटी बोटी कांपने लगी। इस के साथियों ने पूछ कि तुम्हारा क्या हाल है? तो कहने लगा कि मेरे और मुहम्मद (ﷺ) के दरमियान एक ख़न्दक है जिस में आग भरी हुई है और कुछ दहशत नाक परन्द बाजू फैलाए हुवे हैं। उस से मैं इस क़दर ख़ौफ़ज़दा हो गया कि आगे नहीं बढ़ सका और हांपते कांपते किसी तरह जान बचा कर भागा।

नमाज़ के बा'द हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया कि अगर अबू जहल मेरे करीब आता तो फ़िरिश्ते उस का एक एक उज़्व जुदा कर देते।

मगर इस के बा'द भी अबू जहल अपनी ख़बाषत से बाज़ नहीं आया और हुज़ूर ﷺ को नमाज़ पढ़ने से मन्अ करने लगा। इस पर हुज़ूर ﷺ ने उसे सख़्ती से झिड़क दिया तो अबू जहल ने गुस्से में भर कर कहा कि आप मुझे झिड़कते हैं? हालांकि आप को मा'लूम है कि मक्का में मुझ से ज़ियादा जथ्थे वाला और मुझ से बड़ी मजलिस वाला कोई नहीं है। खुदा की क़सम ! मैं आप के मुक़ाबले

(تفسیر خزائن العرفان، ص ۱۰۷، پ ۳۰، علق، رکوع: ۱)

فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ ۖ <sup>(١٤)</sup> سَدْعُ الزَّبَانِيَةِ <sup>(١٥)</sup> (پ ۳۰، العلق ۱۵-۱۸)

(تفسیر خزائن العرفان، ص ۱۰۷، پ ۳۰، علق: ۱۸)

(हदाइके बख्शिश, हिस्सा अव्वल, स.27)

## ﴿65﴾ शबे क़द्र

शबे क़द्र बड़ी बरकत व रहमत वाली रात है। इस रात के मरातिब व दरजात का क्या कहना कि खुदावन्दे कुद्दूस ने इस मुक़द्दस रात के बारे में कुरआने मजीद की एक सूरह नाज़िल फ़रमाई है जिस में इरशाद फ़रमाया कि

إِنَّا أَنْزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ ۚ وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۚ لَيْلَةُ الْقَدْرِ ۚ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ۚ تَنَزَّلُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ مِنْ كُلِّ أَمْرٍ ۚ سَلَامٌ هِيَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۝ (پ ۳۰، القدر: ۱-۵)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** बेशक हम ने इसे शबे क़द्र में उतारा और तुम ने क्या जाना क्या शबे क़द्र ? शबे क़द्र हज़ार महीनों से बेहतर इस में फ़िरिश्ते और जिब्रील उतरते हैं अपने रब के हुक्म से हर काम के लिये वोह सलामती है सुब्ह चमकने तक।

या'नी शबे क़द्र वोह क़द्रो मन्ज़िलत वाली रात है कि इस रात में पूरा कुरआने मजीद लौहे महफूज़ से आस्माने दुन्या पर नाज़िल किया गया और इस एक रात की इबादत एक हज़ार महीनों की इबादत से बढ़ कर अफ़ज़ल है। इस रात में हज़रते जिब्रईल عَلَيْهِ السَّلَام मलाइका के एक लश्कर के साथ आस्मान से ज़मीन पर उतरते हैं। येह रात ज़मीनो आस्मान और सारे जहान के लिये सलामती का निशान है। गुरूबे आफ़ताब से तुलूए फ़ज़्र तक इस के अन्वार व बरकात की तजलिय्यां बराबर जल्वा अफ़रोज़ रहती हैं।

रिवायत है कि एक दिन हुज़ूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने बनी इस्राईल के एक आबिद का किस्सा बयान फ़रमाया कि उस ने एक हज़ार महीने तक लगातार इबादत और जिहाद किया। सहाबा ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ आप के उम्मतियों की उम्रें तो बहुत कम हैं। फिर भला हम लोग इतनी इबादत क्यूंकर कर सकेंगे ? सहाबा के इस अफ़सोस



पर आप कुछ फ़िक्र मन्द हो गए तो **अब्बाह** तआला ने येह सूरह नाज़िल फ़रमाई कि ऐ महबूब ! हम ने आप की उम्मत को एक रात ऐसी अता की है कि वोह एक हज़ार महीनों से बेहतर है । (तफ़सीर सावय, ज, १, व २३९९, प ३०, القدر: ३)

**मोमिनों को मलाइका की सलामी :-** रिवायत है कि शबे क़द्र में सिद्रतुल मुन्तहा के फ़िरिश्तों की फ़ौज हज़रते जिब्रईल **عَلَيْهِ السَّلَام** की सरदारी में ज़मीन पर उतरती है और इन के साथ चार झन्डे होते हैं । एक झन्डा बैतुल मुक़दस की छत पर । और एक झन्डा का'बए मुअज़्ज़मा की छत पर । और एक झन्डा तूरे सीना पर लहराते हैं और फिर येह फ़िरिश्ते मुसलमानों के घरों में तशरीफ़ ले जा कर हर उस मोमिन मर्द व औरत को सलाम करते हैं जो इबादत में मशगूल हों । मगर जिन घरों में बुत या तस्वीर या कुत्ता हो या जिन मकानों में शराबी या खिन्ज़ीर खाने वाला या गुस्ले जनाबत न करने वाला, या बिला वजहे शरई अपनी रिश्तेदारी को काट देने वाला रहता हो, उन घरों में येह फ़िरिश्ते दाख़िल नहीं होते ।

(तफ़सीर सावय, ज, १, व २२०१, प ३०, القدر: ३)

एक रिवायत में येह भी है कि इन फ़िरिश्तों की ता'दाद रूए ज़मीन की कंकरियों से भी ज़ियादा होती है और येह सब सलाम व रहमत ले कर नाज़िल होते हैं ।

(तफ़सीर सावय, ज, १, व २२०१, प ३०, القدر: ३)

**शबे क़द्र कौन सी रात है ? :-** हुज़ूरे अक़दस **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया कि शबे क़द्र को रमज़ान के आख़िरी अशरे की ताक़ रातों में या'नी इक्कीसवीं, तेईसवीं, पच्चीसवीं, सत्ताईसवीं, और उन्तीसवीं, रातों में तलाश करो ।

(بخاری شریف, کتاب الصوم, باب تحری لیلۃ القدر, ج, ۱, ص ۲۷۰, مسلم شریف,

کتاب الصیام, باب فضل لیلۃ القدر, ص ۳۶۹)

इस लिये बा'ज़ उ-लमाए किराम ने फ़रमाया कि शबे क़द्र की कोई रात मुअय्यन नहीं है लिहाज़ा इन पाचों रातों में शबे क़द्र को तलाश करना चाहिये ।

मगर हज़रते उबय्य बिन का'ब व हज़रते इब्ने अब्बास رضي الله تعالى عنهم और दूसरे उ-लमाए किराम का कौल येह है कि शबे क़द्र रमज़ान की सत्ताईसवीं रात है।  
(तफ़सीर صاوی، ج ۶، ص ۲۴۰۰، پ ۳۰، القدر)

और बा'ज़ उ-लमाए किराम ने बतौरै इशारा इस की दलील येह भी पेश की है कि "ليلة القدر" में नव हुरूफ़ हैं और "ليلة القدر" का लफ़्ज़ इस सूरह में तीन जगह आया है और नव को तीन से ज़र्ब देने से सत्ताईस होते हैं लिहाज़ा मा'लूम हुवा कि शबे क़द्र रमज़ान की सत्ताईसवीं रात है। (والله تعالى علم)  
(تفسير صاوی، ج ۶، ص ۲۴۰۰، پ ۳۰، القدر)

**शबे क़द्र की नमाज़ और दुआएं :-** रिवायत है कि जो शबे क़द्र में इख़्लासे निय्यत से नवाफ़िल पढ़ेगा उस के अगले पिछले सब गुनाह मुआफ़ हो जाएंगे।  
(تفسير روح البيان، ج ۱، ص ۸۱-۸۰، پ ۳۰، القدر: ۳)

❶ शबे क़द्र में चार रकअत नफ़ल इस तरकीब से पढ़े कि हर रकअत में पचास मरतबा **قل هو الله** और तीन मरतबा **انا انزلناه** सूरए **الاحمد** के बा'द सूरए **الفatiha** पढ़े फिर सलाम के बा'द सजदे में जा कर एक मरतबा **سُبْحَانَ اللَّهِ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ وَلَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَاللَّهُ أَكْبَرُ** पढ़े। फिर सजदे से सर उठा कर जो दुआ **فضائل الشهور والايام** में **ان شاء الله تعالى** मांगे मक़बूल होगी।

❷ हज़रते आइशा رضي الله تعالى عنها ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह **صلی الله تعالى علیه و آله وسلم** अगर मुझे शबे क़द्र मिल जाए तो मैं कौन सी दुआ पढ़ूं? तो इरशाद फ़रमाया कि तुम येह दुआ पढ़ो।

**اللَّهُمَّ إِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّي**

(سنن ابن ماجه، كتاب الدعاء بالعفو والعافية، ج ۴، ص ۲۷۳، رقم ۳۸۵۰)

❸ एक रिवायत में है कि जो शख्स रात में येह दुआ तीन मरतबा पढ़ लेगा तो उस ने गोया शबे क़द्र को पा लिया। लिहाज़ा हर रात इस दुआ को पढ़ लेना चाहिये। दुआ येह है :

**لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ الْحَلِيمُ الْكَرِيمُ سُبْحَانَ اللَّهِ رَبِّ السَّمَوَاتِ السَّبْعِ وَرَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ**

❹ येह दुआ भी जिस क़दर ज़ियादा पढ़ सकें पढ़ें। येह भी हदीष में आया है, दुआ येह है : **اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ وَالْمُعَافَاةَ الدَّائِمَةَ فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ**

## ﴿66﴾ ज़मीन बात चीत करेगी

क़ियामत के दिन बन्दों की नेकी बदी के हिसाब के वक़्त जहां बहुत से गवाह होंगे। वहां ज़मीन भी गवाह बन कर शहादत देगी। चुनान्वे, हदीष शरीफ़ में है कि हर मर्द व औरत ने ज़मीन पर जो कुछ अच्छा या बुरा अमल किया है ज़मीन उस की गवाही देगी, कहेगी कि फुलां रोज़ येह काम किया और फुलां रोज़ येह काम किया।

(تفسير خزائن العرفان، ص १०८، १०९، ११०، الزلزال: ३)

ज़मीन पर जो कुछ अच्छे या बुरे काम लोगों ने किये हैं। उन सब को ज़मीन ने याद रखा है और क़ियामत के दिन वोह सारी ख़बरों को अलल ए'लान बयान करेगी जिस को सब लोग सुनेंगे। इस मज़मून को खुदावन्द (عَزَّوَجَلَّ) ने कुरआने मजीद में इन लफ़्ज़ों के साथ इरशाद फ़रमाया है :

إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا ۖ وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا ۖ وَقَالَ  
الْإِنْسَانُ مَالَهَا ۖ يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ۚ بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْمِي لَهَا ۚ (پ ३०، الزلزال: ५-۱)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** जब ज़मीन थर थरा दी जाए जैसा उस का थर थराना ठहरा है और ज़मीन अपने बोझ बाहर फैंक दे और आदमी कहे इसे क्या हुवा उस दिन वोह अपनी ख़बरें बताएगी इस लिये कि तुम्हारे रब ने उसे हुक्म भेजा।

**दर्से हिदायत :-** क़ियामत के दिन बन्दों के अच्छे बुरे आ'माल के बहुत से गवाह होंगे। हर इन्सान के कन्धों पर जो फ़िरिश्ते नामए आ'माल लिख रहे हैं वोह मुस्तक़िल गवाह हैं। फिर इन के इलावा इन्सान के आ'जा गवाही देंगे या'नी इन्सान के हाथ पाउं, आंख, कान वगैरा वगैरा जिन जिन आ'जा से जो जो आ'माल किये गए हर हर उज़्व गवाही देगा। फिर ज़मीन पर जो जो नेकी या बदी इन्सान ने की है इन आ'माल के बारे में ज़मीन हर हर अमल की ख़बर देगी। और खुदावन्दे कुदूस के हुज़ूर गवाही देगी। खुलासा येह है कि इन्सान चाहे जितना भी छुप कर और

छुपा कर कोई अच्छा या बुरा अमल करे, मगर वोह अमल क़ियामत के दिन हरगिज़ हरगिज़ छुप न सकेगा। बल्कि हर आदमी का हर अमल उस के सामने पेश कर दिया जाएगा और वोह अपने तमाम करतूतों को अपनी आंखों से देख लेगा। और हर अमल का बदला भी पाएगा। चुनान्वे, खुदावन्दे कुहूस का इरशाद है कि

يَوْمَئِذٍ يَصْدُرُ النَّاسُ أَشْتَاتًا لِّيُرَوْا أَعْمَالَهُمْ ۖ فَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَرَهُ ۚ وَمَنْ يَعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَرَهُ ۚ (پ. ۳۰، الزلزال: ۷-۸)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** उस दिन लोग अपने रब की तरफ़ फिरंगे कई राह हो कर ताकि अपना किया दिखाए जाएं तो जो एक ज़रा भर भलाई करे उसे देखेगा और जो एक ज़रा भर बुराई करे उसे देखेगा।

बहर हाल क़ियामत का दिन बड़ा सख़्त होगा और हर आदमी को अपने हर छोटे बड़े और अच्छे बुरे आ'माल का हिसाब देना पड़ेगा। हर मुसलमान का फ़र्ज़ है कि वोह ज़िन्दगी के हर लम्हे में ये ध्यान रखे कि जो कुछ कर रहा हूँ मुझे एक दिन अपने इन कामों का हिसाब देना पड़ेगा और जिन आ'माल को मैं छुपा कर कर रहा हूँ क़ियामत के दिन भरे मजमअ में अहकमुल हाकिमीन के हुज़ूर ज़ाहिर हो कर रहेंगे उस वक़्त कैसी और कितनी बड़ी रुस्वाई और शर्मिन्दगी होगी ?

### ﴿67﴾ मुजाहिदीन के घोड़ों की अज़मत

खुदावन्दे कुहूस की राह में जिहाद करने वाले मुजाहिदीन और गाज़ियों का मर्तबा कितना बुलन्दो बाला, और किस क़दर अज़मत वाला है इस के बारे में तो सेंकड़ों आयतों में खुदावन्दे कुहूस ने इन मर्दाने हक़ की मदहो षना का ख़ुतबा इरशाद फ़रमाया है मगर सूरए “الطّٰه” में रब्बुल इज़ज़त جَلَّ جَلَالُهُ ने मुजाहिदीन और गाज़ियों के घोड़ों, बल्कि इन घोड़ों की रफ़्तार और इन की अदाओं की क़सम याद फ़रमा कर इन की इज़ज़त व अज़मत का इज़हार फ़रमाया है। चुनान्वे, इरशादे रब्बानी है कि

وَالْعِدِيَّتِ صَبْحًا ۝ فَالْمُورِيَّتِ قَدْ حَا ۝ فَالْبُعْثِيَّتِ صَبْحًا ۝  
 فَاتْرَنَ بِهِ نَقْعًا ۝ فَوَسَّطَنَ بِهِ جَمْعًا ۝ إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهِ لَكَنُودٌ ۝ (پ ۳۰، العنکبوت: ۱-۲)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** कसम उन की जो दौड़ते हैं सीने से आवाज़ निकलती हुई फिर पथ्थरों से आग निकालते हैं सुम मार कर फिर सुब्ह होते ताराज करते हैं फिर उस वक्त गुबार उड़ाते हैं फिर दुश्मन के बीच लश्कर में जाते हैं बेशक आदमी अपने रब का बड़ा ना शुक्रा है ।

इन घोड़ों से मुराद, मुफ़स्सरीन का इजमाअ है कि मुजाहिदीन और गाजियों के घोड़े मुराद हैं जो खुदावन्दे कुद्स के दरबार में इस क़दर महबूब व मोहतरम हैं कि कुरआने मजीद में हक़ **جل مجده** ने इन घोड़ों बल्कि इन की अदाओं की क़सम याद फ़रमाई है । चुनान्वे, इरशाद फ़रमाया कि मुझे उन घोड़ों की क़सम है जो जिहाद में दौड़ते हुवे हांपते हैं और मुझे क़सम है उन घोड़ों की जो पथ्थरों पर अपने ना'ल वाले खुर मार कर रात की तारीकी में चिंगारी निकाल देते हैं और मुझे उन घोड़ों की क़सम है जो सुब्ह सवेरे कुफ़्फ़ार पर ह्म्ला कर देते हैं और मुझे क़सम है उन घोड़ों की जो मैदाने जंग में दौड़ कर गुबार उड़ाते हैं और मुझे क़सम है उन घोड़ों की जो कुफ़्फ़ार के बीच में घुस जाते हैं । इतनी क़स्मों के बा'द रब तआला ने इरशाद फ़रमाया कि “**इन्सान अपने रब का बड़ा ना शुक्रा है ।**”

**अल्लाहु अक्बर !** खुदावन्दे कुद्स जिन चीजों की क़सम याद फ़रमाए, उन चीजों की अज़मते शान का क्या कहना ? कुरआने मजीद में जिन जिन चीजों के बारे में **अल्लाहु** तआला ने येह फ़रमा दिया कि मुझे उन की क़सम है, उन तमाम चीजों का मर्तबा इतना बुलन्दो बाला और इस क़दर अज़मत वाला हो गया कि वोह तमाम चीजें हम मुसलमानों के लिये बल्कि सारी काइनात के लिये मुअज़्ज़ज़ व मोहतरम हो गई । तो फिर मुजाहिदीन के घोड़ों की इज़्ज़त व अज़मत और उन के तक्हुस व एहतिराम का क्या आलम होगा ? **अल्लाहु अक्बर, अल्लाहु अक्बर**  
**दर्से हिदायत :-** इस से हिदायत का येह सबक़ मिलता है कि **अल्लाहु** तआला अपने महबूबों की हर हर चीज़ से महब्वत फ़रमाता है और खुदा

के महबूबों की हर हर चीज़ काबिले इज़्ज़त व लाइके एहतिराम है। मुजाहिदीने इस्लाम और गाज़ियाने किराम चूँकि खुदावन्दे कुद्स के महबूब और प्यारे बन्दे हैं इस लिये **अल्लाह** तआला इन मुजाहिदीन के घोड़ों से भी इस क़दर प्यार व महबूबत फ़रमाता है कि इन घोड़ों बल्कि इन घोड़ों की रफ़्तार और मैदाने जंग में इन घोड़ों के हम्लों की क़सम याद फ़रमा कर इन घोड़ों की इज़्ज़त व अज़मत का ए'लान फ़रमा रहा है। **سُبْحَنَ اللّٰهُ، سُبْحَنَ اللّٰهُ**

जब मुजाहिदीने किराम के घोड़ों के बुलन्द दरजात का खुतबा कुरआने अज़ीम ने पढ़ा तो इस से मा'लूम हुवा कि मुजाहिदीन के आलाते जंग और इन के हथियारों और इन की कमानों, इन की तल्वारों का भी मर्तबा बहुत बुलन्द है इसी लिये बा'ज ख़ानकाहों में बा'ज गाज़ियों की तल्वारों को लोगों ने बड़े एहतिमाम के साथ तबरक बना कर बरसहा बरस से महफूज़ रखा है जो बिला शुबा बाइषे बरकत व लाइके इज़्ज़त व एहतिराम हैं। (والله تعالى علم)

### ﴿68﴾ कुरैश के दो सफ़र

मक्कए मुक़र्रमा में न काश्तकारी होती थी न वहां कोई सन्अत व हरफ़त थी। फिर भी कबीलए कुरैश के लोग काफ़ी खुशहाल और साहिबे माल थे और ख़ूब दिल खोल कर हाज़ियों की ज़ियाफ़त और मेहमान नवाज़ी करते थे। कुरैश की खुशहाली और फ़ारिगुल बाली का राज़ येह था कि येह लोग हर साल दो मरतबा तिजारती सफ़र किया करते थे। जाड़े के मौसिम में यमन और गर्मी के मौसिम में शाम का सफ़र किया करते थे और हर जगह के लोग इन्हें अहले हरम और बैतुल्लाह शरीफ़ का पड़ोसी कह कर इन लोगों का इकराम व एहतिराम करते थे और इन लोगों के साथ तिजारतें करते थे और कुरैश इन तिजारतों में ख़ूब नफ़ उठाते थे। और इन लोगों के हरमे का'बा का बाशिन्दा होने की बिना पर रास्ते में इन के काफ़िलों पर किसी किस्म की रहज़नी और डकेती नहीं हुवा करती थी। बा वुजूद येह कि अत़राफ़ व जवानिब में हर तरफ़ क़त्लो ग़ारत और लूट

मार का बाज़ार गर्म रहा करता था। कुरैश के सिवा दूसरे कबीलों के लोग जब सफ़र करते, तो रास्तों में उन के काफ़िलों पर हम्ले होते थे और मुसाफ़िर लूटे मारे जाते थे इस लिये कुरैश जिस तरह अम्नो अमान के साथ येह दोनों तिजारती सफ़र कर लिया करते थे दूसरे लोगों को येह अम्नो अमान नसीब नहीं था। (تفسير خزائن العرفان، ص १०८-१०९، १، ३، ५، ७، ८، ९، १०، ११، १२)

**अल्लाह** तआला ने कुरैश को जो बे शुमार ने'मतें अता फ़रमाई थीं इन में से खास तौर पर इन दो तिजारती सफ़रों की ने'मत को याद दिला कर इन को खुदावन्दे कुदूस की इबादत का हुक्म देते हुवे इरशाद फ़रमाया कि

لَا يُلْفِ قُرَيْشٌ ۝ الْفَهْمُ رَحْلَةَ الشِّتَاءِ وَالصَّيْفِ ۝ فَلْيَعْبُدُوا رَبَّ ۝ هَذَا الْبَيْتِ ۝ الَّذِينَ أَطْعَمَهُمْ مِنْ جُوعٍ ۝ وَأَمَّنَّهُمْ مِنْ خَوْفٍ ۝ (प ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००, १०१, १०२, १०३, १०४, १०५, १०६, १०७, १०८, १०९, ११०, १११, ११२, ११३, ११४, ११५, ११६, ११७, ११८, ११९, १२०, १२१, १२२, १२३, १२४, १२५, १२६, १२७, १२८, १२९, १३०, १३१, १३२, १३३, १३४, १३५, १३६, १३७, १३८, १३९, १४०, १४१, १४२, १४३, १४४, १४५, १४६, १४७, १४८, १४९, १५०, १५१, १५२, १५३, १५४, १५५, १५६, १५७, १५८, १५९, १६०, १६१, १६२, १६३, १६४, १६५, १६६, १६७, १६८, १६९, १७०, १७१, १७२, १७३, १७४, १७५, १७६, १७७, १७८, १७९, १८०, १८१, १८२, १८३, १८४, १८५, १८६, १८७, १८८, १८९, १९०, १९१, १९२, १९३, १९४, १९५, १९६, १९७, १९८, १९९, २००, २०१, २०२, २०३, २०४, २०५, २०६, २०७, २०८, २०९, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, २२३, २२४, २२५, २२६, २२७, २२८, २२९, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, २३५, २३६, २३७, २३८, २३९, २४०, २४१, २४२, २४३, २४४, २४५, २४६, २४७, २४८, २४९, २५०, २५१, २५२, २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६५, २६६, २६७, २६८, २६९, २७०, २७१, २७२, २७३, २७४, २७५, २७६, २७७, २७८, २७९, २८०, २८१, २८२, २८३, २८४, २८५, २८६, २८७, २८८, २८९, २९०, २९१, २९२, २९३, २९४, २९५, २९६, २९७, २९८, २९९, ३००, ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ३०५, ३०६, ३०७, ३०८, ३०९, ३१०, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ३१५, ३१६, ३१७, ३१८, ३१९, ३२०, ३२१, ३२२, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३२७, ३२८, ३२९, ३३०, ३३१, ३३२, ३३३, ३३४, ३३५, ३३६, ३३७, ३३८, ३३९, ३४०, ३४१, ३४२, ३४३, ३४४, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, ३५८, ३५९, ३६०, ३६१, ३६२, ३६३, ३६४, ३६५, ३६६, ३६७, ३६८, ३६९, ३७०, ३७१, ३७२, ३७३, ३७४, ३७५, ३७६, ३७७, ३७८, ३७९, ३८०, ३८१, ३८२, ३८३, ३८४, ३८५, ३८६, ३८७, ३८८, ३८९, ३९०, ३९१, ३९२, ३९३, ३९४, ३९५, ३९६, ३९७, ३९८, ३९९, ४००, ४०१, ४०२, ४०३, ४०४, ४०५, ४०६, ४०७, ४०८, ४०९, ४१०, ४११, ४१२, ४१३, ४१४, ४१५, ४१६, ४१७, ४१८, ४१९, ४२०, ४२१, ४२२, ४२३, ४२४, ४२५, ४२६, ४२७, ४२८, ४२९, ४३०, ४३१, ४३२, ४३३, ४३४, ४३५, ४३६, ४३७, ४३८, ४३९, ४४०, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४, ४४५, ४४६, ४४७, ४४८, ४४९, ४५०, ४५१, ४५२, ४५३, ४५४, ४५५, ४५६, ४५७, ४५८, ४५९, ४६०, ४६१, ४६२, ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६७, ४६८, ४६९, ४७०, ४७१, ४७२, ४७३, ४७४, ४७५, ४७६, ४७७, ४७८, ४७९, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४८५, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ४९०, ४९१, ४९२, ४९३, ४९४, ४९५, ४९६, ४९७, ४९८, ४९९, ५००, ५०१, ५०२, ५०३, ५०४, ५०५, ५०६, ५०७, ५०८, ५०९, ५१०, ५११, ५१२, ५१३, ५१४, ५१५, ५१६, ५१७, ५१८, ५१९, ५२०, ५२१, ५२२, ५२३, ५२४, ५२५, ५२६, ५२७, ५२८, ५२९, ५३०, ५३१, ५३२, ५३३, ५३४, ५३५, ५३६, ५३७, ५३८, ५३९, ५४०, ५४१, ५४२, ५४३, ५४४, ५४५, ५४६, ५४७, ५४८, ५४९, ५५०, ५५१, ५५२, ५५३, ५५४, ५५५, ५५६, ५५७, ५५८, ५५९, ५६०, ५६१, ५६२, ५६३, ५६४, ५६५, ५६६, ५६७, ५६८, ५६९, ५७०, ५७१, ५७२, ५७३, ५७४, ५७५, ५७६, ५७७, ५७८, ५७९, ५८०, ५८१, ५८२, ५८३, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ५९०, ५९१, ५९२, ५९३, ५९४, ५९५, ५९६, ५९७, ५९८, ५९९, ६००, ६०१, ६०२, ६०३, ६०४, ६०५, ६०६, ६०७, ६०८, ६०९, ६१०, ६११, ६१२, ६१३, ६१४, ६१५, ६१६, ६१७, ६१८, ६१९, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५, ६२६, ६२७, ६२८, ६२९, ६३०, ६३१, ६३२, ६३३, ६३४, ६३५, ६३६, ६३७, ६३८, ६३९, ६४०, ६४१, ६४२, ६४३, ६४४, ६४५, ६४६, ६४७, ६४८, ६४९, ६५०, ६५१, ६५२, ६५३, ६५४, ६५५, ६५६, ६५७, ६५८, ६५९, ६६०, ६६१, ६६२, ६६३, ६६४, ६६५, ६६६, ६६७, ६६८, ६६९, ६७०, ६७१, ६७२, ६७३, ६७४, ६७५, ६७६, ६७७, ६७८, ६७९, ६८०, ६८१, ६८२, ६८३, ६८४, ६८५, ६८६, ६८७, ६८८, ६८९, ६९०, ६९१, ६९२, ६९३, ६९४, ६९५, ६९६, ६९७, ६९८, ६९९, ७००, ७०१, ७०२, ७०३, ७०४, ७०५, ७०६, ७०७, ७०८, ७०९, ७१०, ७११, ७१२, ७१३, ७१४, ७१५, ७१६, ७१७, ७१८, ७१९, ७२०, ७२१, ७२२, ७२३, ७२४, ७२५, ७२६, ७२७, ७२८, ७२९, ७३०, ७३१, ७३२, ७३३, ७३४, ७३५, ७३६, ७३७, ७३८, ७३९, ७४०, ७४१, ७४२, ७४३, ७४४, ७४५, ७४६, ७४७, ७४८, ७४९, ७५०, ७५१, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६, ७५७, ७५८, ७५९, ७६०, ७६१, ७६२, ७६३, ७६४, ७६५, ७६६, ७६७, ७६८, ७६९, ७७०, ७७१, ७७२, ७७३, ७७४, ७७५, ७७६, ७७७, ७७८, ७७९, ७८०, ७८१, ७८२, ७८३, ७८४, ७८५, ७८६, ७८७, ७८८, ७८९, ७९०, ७९१, ७९२, ७९३, ७९४, ७९५, ७९६, ७९७, ७९८, ७९९, ८००, ८०१, ८०२, ८०३, ८०४, ८०५, ८०६, ८०७, ८०८, ८०९, ८१०, ८११, ८१२, ८१३, ८१४, ८१५, ८१६, ८१७, ८१८, ८१९, ८२०, ८२१, ८२२, ८२३, ८२४, ८२५, ८२६, ८२७, ८२८, ८२९, ८३०, ८३१, ८३२, ८३३, ८३४, ८३५, ८३६, ८३७, ८३८, ८३९, ८४०, ८४१, ८४२, ८४३, ८४४, ८४५, ८४६, ८४७, ८४८, ८४९, ८५०, ८५१, ८५२, ८५३, ८५४, ८५५, ८५६, ८५७, ८५८, ८५९, ८६०, ८६१, ८६२, ८६३, ८६४, ८६५, ८६६, ८६७, ८६८, ८६९, ८७०, ८७१, ८७२, ८७३, ८७४, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८, ८७९, ८८०, ८८१, ८८२, ८८३, ८८४, ८८५, ८८६, ८८७, ८८८, ८८९, ८९०, ८९१, ८९२, ८९३, ८९४, ८९५, ८९६, ८९७, ८९८, ८९९, ९००, ९०१, ९०२, ९०३, ९०४, ९०५, ९०६, ९०७, ९०८, ९०९, ९१०, ९११, ९१२, ९१३, ९१४, ९१५, ९१६, ९१७, ९१८, ९१९, ९२०, ९२१, ९२२, ९२३, ९२४, ९२५, ९२६, ९२७, ९२८, ९२९, ९३०, ९३१, ९३२, ९३३, ९३४, ९३५, ९३६, ९३७, ९३८, ९३९, ९४०, ९४१, ९४२, ९४३, ९४४, ९४५, ९४६, ९४७, ९४८, ९४९, ९५०, ९५१, ९५२, ९५३, ९५४, ९५५, ९५६, ९५७, ९५८, ९५९, ९६०, ९६१, ९६२, ९६३, ९६४, ९६५, ९६६, ९६७, ९६८, ९६९, ९७०, ९७१, ९७२, ९७३, ९७४, ९७५, ९७६, ९७७, ९७८, ९७९, ९८०, ९८१, ९८२, ९८३, ९८४, ९८५, ९८६, ९८७, ९८८, ९८९, ९९०, ९९१, ९९२, ९९३, ९९४, ९९५, ९९६, ९९७, ९९८, ९९९, १०००)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** इस लिये कि कुरैश को मैल दिलाया उन की जाड़े और गर्मी दोनों के कूच में मेल दिलाया (रग़बत दिलाई) तो उन्हें चाहिये कि इस घर के रब की बन्दगी करें जिस ने उन्हें भूक में खाना दिया और उन्हें एक बड़े खौफ़ से अमान बख़्शा।

इन लोगों को भूक में खाना दिया या'नी इन दोनों तिजारती सफ़रों की बदौलत इन लोगों के मुआश और रोज़ी का सामान पैदा कर दिया और इन के काफ़िलों को लूट मार से अम्नो अमान अता फ़रमाया। लिहाज़ा इन लोगों को लाज़िम है कि येह लोग रब्बे का'बा की इबादत करें जिस ने इन लोगों को अपनी ने'मतों से नवाज़ा है न कि येह लोग बुतों की इबादत करें जिन्होंने इन लोगों को कुछ भी नहीं दिया।

**दर्से हिदायत :-** **अल्लाह** तआला ने इस सूरह में अपनी दो ने'मतों को याद दिला कर बुत परस्ती छोड़ने और अपनी इबादत का हुक्म दिया है। इस सूरह में अगर्चे खास तौर पर कुरैश का ज़िक्र है मगर येह हुक्म तमाम दुन्या के इन्सानों के लिये है कि लोग खुदा की ने'मतों को याद करें और ने'मत देने वाले खुदाए वाहिद की इबादत करें और बुत परस्ती से बाज़ रहें। (والله تعالى اعلم)



### ﴿69﴾ कुफ़र व इस्लाम में मुफ़हमत गैर मुमकिन

कुफ़ारे कुरैश में से एक जमाअत दरबारे रिसालत में आई और यह कहा कि आप हमारे दीन की पैरवी करें तो हम भी आप के दीन का इत्तिबाअ करेंगे। एक साल आप हमारे मा'बूदों (बुतों) की इबादत करें एक साल हम आप के मा'बूदो **अल्लाह** तआला की इबादत करेंगे। हुजुरे अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने फ़रमाया कि **अल्लाह** की पनाह कि मैं गैरल्लाह को उस का शरीक ठहराऊं। यह सुन कर कुफ़ारे कुरैश ने कहा कि अगर आप बुतों की इबादत नहीं कर सकते तो कम से कम आप हमारे किसी बुत को हाथ ही लगा दीजिये तो हम आप की तस्दीक कर लेंगे और आप के मा'बूद की इबादत करने लगेंगे इस मौक़अ पर सूरए काफ़िरून नाज़िल हुई और हुजूर सय्यिदे आलम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** हरमे का'बा में तशरीफ़ ले गए और कुफ़ारे कुरैश को यह सूरह पढ़ कर सुनाई तो कुफ़ारे कुरैश मायूस हो गए और फिर गुस्से में जल भुन कर हुजूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ** को तरह तरह की ईज़ाएं देने पर तुल गए।

(तفسير خزائن العرفان، ص १०८، १०९، ३००، الکفرון: १)

قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ۝ لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ۝ وَلَا أَنْتُمْ عِبُدُونَ  
مَا أَعْبُدُونَ ۝ وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُمْ ۝ وَلَا أَنْتُمْ عِبُدُونَ مَا  
أَعْبُدُ ۝ لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ۝ (پ ३००، الکافرون: १-२)

**तर्जमए कन्जुल ईमान :-** तुम फ़रमाओ ऐ काफ़िरो ! नन मैं पूजता हूं जो तुम पूजते हो और न तुम पूजते हो जो मैं पूजता हूं और न मैं पूजंगा जो तुम ने पूजा और न तुम पूजोगे जो मैं पूजता हूं तुम्हें तुम्हारा दीन और मुझे मेरा दीन।

**दर्से हिदायत :-** इस सूरए पाक के मज़मून और हुजूर साहिबे लौलाक **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के तर्जे अमल से हमें यह सबक मिलता है कि कुफ़र व इस्लाम में कभी मुफ़ाहमत और मुवाफ़िकत नहीं हो सकती जो मुसलमान कुफ़ार की खुशनूदी और उन की खुशामद के लिये उन की मज़हबी

तक़रीबात में हिस्सा लेते हैं और बुत परस्ती की मुशरिकाना रस्मों में चन्दा दे कर शिर्कत करते हैं उन को इस सूरह से हिदायत का नूरानी सबक़ हासिल करना चाहिये और ईमान रखना चाहिये कि तौहीद और शिर्क कभी एक साथ जम्अ नहीं हो सकते। जो मुवहिद्द होगा वोह कभी मुशरिक नहीं हो सकता और जो मुशरिक होगा वोह कभी मुवहिद्द नहीं होगा। (والله تعالى أعلم)

### ﴿70﴾ अल्लाह तआला की चन्द सिफ़तें

कुप्फ़ारे अरब ने हुजुरे अकरम ﷺ से **अल्लाह** तआला के बारे में तरह तरह के सुवाल किये कोई कहता था कि **अल्लाह** तआला का नसब और ख़ानदान क्या है ? उस ने रबूबिय्यत किस से मीराष में पाई है ? और उस का वारिष कौन होगा ? किसी ने येह सुवाल किया कि **अल्लाह** तआला सोने का है या चांदी का ? लोहे का है या लकड़ी का ? किसी ने येह पूछा कि **अल्लाह** तआला क्या खाता पीता है ?

इन सुवालों के जवाब में **अल्लाह** तआला ने अपने हबीब **ﷺ** पर सूरए इख़्लास नाज़िल फ़रमाई और अपनी ज़ात व सिफ़ात का वाज़ेह बयान फ़रमा कर अपनी मा'रिफ़त की राह रोशन कर दी और कुप्फ़ार के जाहिलाना ख़यालात व अवहाम की तारीकियों को जिन में वोह लोग गिरिफ़्तार थे अपनी ज़ात व सिफ़ात के नूरानी बयान से दूर फ़रमा दिया।

(تفسير خرائن العرفان، ص १०८، ३०، ३१، خلاص: १)

इरशाद फ़रमाया कि

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ۝ وَلَمْ يَكُنْ

لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۝ (پ ३०، ३१، ३२، خلاص: १- ३)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :- तुम फ़रमाओ वोह **अल्लाह** है वोह एक है **अल्लाह** बे नियाज़ है न उस की कोई अवलाद और न वोह किसी से पैदा हुवा और न उस के जोड़ का कोई।

दर्से हिदायत :- **अल्लाह** तआला ने सूरए इख़्लास की चन्द आयतों में “इल्मे इलाहिय्यात” के वोह नफ़ीस और आ'ला मतालिब बयान फ़रमा दिये हैं कि जिन की तफ़्सीलात अगर बयान की जाएं तो कुतुब ख़ाने के कुतुब ख़ाने पुर हो जाएं जिन का खुलासा येह है कि **अल्लाह** तआला

अपनी रबूबियत और उलूहियत में सिफ़ते अज़मत व कमाल के साथ मौसूफ़ है। मिष्ल व नज़ीर व शबीह से पाक है उस का कोई शरीक नहीं। वोह कुछ खाता है न पीता है, न किसी का मोहताज है बल्कि सब उस के मोहताज है वोह हमेशा से है और हमेशा रहेगा।

वोह क़दीम है और पैदा होना हादिष की शान है इस लिये न वोह किसी का बेटा है न किसी का बाप है और न उस का कोई मुजानिस है और न उस का अदील व मधील है।

इस सूरए मुबारका की फ़ज़ीलतों के मुतअल्लिक़ बहुत सी अहादीष वारिद हुई हैं इस को तिहाई कुरआन के बराबर बताया गया है या'नी अगर तीन मरतबा इस सूरह को पढ़ा जाए तो पूरे कुरआन की तिलावत का षवाब मिलेगा।

एक शख्स ने हुज़ूर सय्यिदे अ़लाम عَلَيْهِ السَّلَام से अज़ किया कि मुझे इस सूरह से महब्बत है तो आप ने फ़रमाया कि इस की महब्बत तुझे जन्नत में दाख़िल कर देगी। (तفسير خزائن العرفان، ص १०८، प ३०३، اخلاص: १)

### ﴿71﴾ उलूम व मअरिफ़ का न ख़त्म होने वाला ख़ज़ाना

कुरआने मजीद **अल्लाह** तअ़ला की वोह जलीलुल क़द्र और अज़ीमुश्शान किताब है, जिस में एक तरफ़ ह़लाल व ह़राम के अहक़ाम, इब्रतों और नसीहतों के अक्वाल, अम्बियाए किराम और गुज़श्ता उम्मतों के वाकिआत व अहवाल, जन्नत व दोज़ख़ के हालात मज़कूर हैं और दूसरी तरफ़ इस के बातिन की गहराइयों में उलूम व मअरिफ़ के ख़ज़ानों के बे शुमार ऐसे समन्दर मौजें मार रहे हैं जो क़ियामत तक कभी ख़त्म नहीं हो सकते। चुनान्चे, रसूले अकरम عَلَيْهِ السَّلَام ने कुरआन की इस अज़ीमुश्शान जामेइय्यत का बयान फ़रमाते हुवे इरशाद फ़रमाया कि

لَا يَشْبَعُ مِنْهُ الْعُلَمَاءُ وَلَا يَخْلُقُ عَنْ كَثْرَةِ الرَّدِّ وَلَا يَنْقُضِي عَجَائِبُهُ

कुरआनी मज़ामीन का इहाता कर के कभी उ-लमा आसूदा नहीं होंगे और बार बार पढ़ने से कुरआन पुराना नहीं होगा और कुरआन के अज़ीबो ग़रीब मज़ामीन कभी ख़त्म नहीं होंगे।

(مشکوٰۃ شریف، کتاب فضائل القرآن، الفصل الثانی، ص ۱۸۶)

चुनान्चे, हज़रते सय्यिदुना अली ख़व्वास رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ फ़रमाते हैं कि

إِنَّ اللَّهَ تَعَالَى إِطْلَعَنِي عَلَى مَعَانِي سُورَةِ الْفَاتِحَةِ فَظَهَرَ لِي مِنْهَا  
مِائَةٌ أَلْفَ عِلْمٍ وَأَرْبَعُونَ أَلْفَ عِلْمٍ وَتِسْعُمِائَةٍ وَتِسْعُونَ عِلْمًا ط

बेशक **अब्बाह** तअ़ाला ने मुझे सूरे फ़ातिहा के मअ़ानी पर आगाह फ़रमाया तो इन में से एक लाख चालीस हज़ार नव सो निनानवे उलूम मुझ पर मुन्कशिफ़ हुवे ।

(الدولة المكية، النظر الخامس في دلائل المدعى من الاحاديث والاقوال والايات، ص ٤٩)

इसी तरह इमाम शा'रानी عَلَيْهِ الرُّحْمَةُ अपनी किताब मीज़ान में तहरीर फ़रमाते हैं कि

قَدْ اسْتَخْرَجَ أَخِي أَفْضَلُ الدِّينِ مِنْ سُورَةِ الْفَاتِحَةِ مِائَتِي أَلْفَ عِلْمٍ  
وَّ سَبْعَةً وَأَرْبَعِينَ أَلْفَ عِلْمٍ وَتِسْعَ مِائَةٍ وَتِسْعَةَ وَتِسْعُونَ عِلْمًا

मेरे भाई अफ़ज़लुद्दीन ने सूरे फ़ातिहा से दो लाख सैंतालीस हज़ार नव सो निनानवे उलूम निकाले हैं ।

(الدولة المكية، النظر الخامس في دلائل المدعى من الاحاديث والاقوال والايات، ص ٤٩)

इन रिवायतों से अच्छी तरह वाज़ेह होता है कि कुरआने मजीद अगर्चे ज़ाहिर में तीस पारों का मजमूअ है लेकिन इस का बातिन करोड़ों बल्कि अरबों उलूम व मअ़ारिफ़ का ऐसा खज़ाना है जो कभी ख़त्म नहीं हो सकता किसी आरिफ़ बिल्लाह का मशहूर शे'र है कि

جَمِيعُ الْعِلْمِ فِي الْقُرْآنِ لَكِنْ تَقَاصَرَ عَنْهُ أَفْهَامُ الرِّجَالِ

या'नी तमाम उलूम कुरआन में मौजूद हैं लेकिन लोगों की अक्लें इन के समझने से क़ासिर व कोताह हैं ।

अल हासिल, कुरआने मजीद में सिर्फ़ उलूम व मअ़ारिफ़ ही का बयान नहीं बल्कि हकीकत येह है कि कुरआने मजीद में पूरी काइनात और सारे अलम की हर हर चीज़ का वाज़ेह और रोशन तफ़सीली बयान है या'नी आस्मान के एक एक तारे, समन्दर के एक एक क़तरे, सब्ज़ाहाए ज़मीन के एक एक तिन्के, रेगिस्तान के एक एक ज़र्रे, दरख़्तों के एक एक पत्ते, अर्श व कुरसी के एक एक गोशे, अलमे काइनात के एक एक कोने,

माजी का हर हर वाकिआ, हाल का हर हर मुआमला, मुस्तक़बिल का हर हर हादिषा कुरआने मजीद में निहायत वज़ाहत के साथ तफ़्सीली बयान किया गया है चुनान्चे, **अल्लाह** तआला का इरशाद है कि

مَا فَرَّ طَائِفٌ فِي الْكِتَابِ مِنْ شَيْءٍ (پ ۷, الانعام: ۳۸)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** हम ने इस किताब में कुछ उठा न रखा ।

लेकिन वाजेह रहे कि कुरआन की येह ए'जाज़ी शान हमारे तुम्हारे और आम लोगों के लिये नहीं है बल्कि कुरआन की इस ए'जाज़ी शान का कामिल जुहूर तो सिर्फ़ हुज़ूरे अकरम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के साथ मख़सूस है और सिर्फ़ आप ही का येह मो'जिज़ा है कि आप ने कुरआने मजीद के तमाम मज़ामीन व मअानी को तफ़्सीली तौर पर जान लिया और पूरा कुरआन नाज़िल हो जाने के बा'द काइनाते आलम की कोई शै, माजी व हाल और मुस्तक़बिल का कोई वाकिआ हुज़ूर **عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** से पोशीदा नहीं रहा और आप ने हर ग़ैब व शहादत को तफ़्सीली तौर पर जान लिया क्यूंकि खुदावन्दे कुहूस का इरशाद है कि

وَرَزَّائِنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تَبَيَّنَّا لَكُلِّ شَيْءٍ (پ ۱३, النحل: ८९)

**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :-** और हम ने तुम पर येह कुरआन उतारा कि हर चीज़ का रोशन बयान है ।

फिर हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के सदके में बा'ज औलियाए किराम और उ-लमाए उज़्ज़ाम को भी बक़दरे ज़फ़ इन के बातिनी उलूम व मअारिफ़ से हिस्सा मिला है जिन में से कुछ किताबों के लाखों सफ़हात पर सितारों की तरह चमक रहे हैं और कुछ सीनों के सन्दूक और दिलों की तिजोरियों में अब तक मुक़फ़्फ़ल ही रह गए हैं जो आइन्दा **إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى** कियामत तक सफ़हाते किरतास पर जलवा रेज़ होते रहेंगे और हुज़ूर **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की इस ग़ैबी ख़बर **وَلَا تَنْفَضِي عَجَائِبُهُ** का वक़्तन फ़ वक़्तन जुहूर होता रहेगा और उम्मत मुस्लिमा इन के फुयूज़ो बरकात से मुस्तफ़ीज़ व माला माल होती रहेगी । बहर हाल येह यकीन व ईमान रखना चाहिये कि हम ने “अजाइबुल कुरआन” और “ग़राइबुल कुरआन” में जो कुरआन के चन्द अजीबो ग़रीब मज़ामीन का एक मुख़्तसर मजमूआ

तहरीर किया है और हम से पहले बहुत से उ-लमाए किराम ने मजामीन कुरआन पर हजारों किताबें और लाखों सफ़हात तहरीर फ़रमाए हैं, कुरआने मजीद के उलूम व मअरिफ़ के सामने इन सब तहरीरों को वोह निस्बत भी हासिल नहीं जो एक क़तरे को दुन्या भर के समन्दरों से और एक ज़र्रे को तमाम रूए ज़मीन से हासिल हो, क्योंकि कुरआने मजीद तो उलूम व मअरिफ़ का वोह खज़ाना है जो कभी ख़त्म ही नहीं हो सकता बल्कि कियामत तक उ-लमाए किराम इस बहरे नापैदा किनार से हमेशा अजीबो ग़रीब मजामीन के मोती निकालते ही रहेंगे और हजारों लाखों किताबों के दफ़्तर तय्यार होते ही रहेंगे।

मैं अगर्चे इस पर बहुत खुश हूँ कि कुरआने करीम के चन्द मजामीन पर दो मुख़्तसर मज़मूए लिख कर मैं उन उ-लमाए किराम की ज़ूतियों की सफ़ में जगह पा गया जिन्होंने ने अपने नोके क़लम से कुरआनी आयात के ऐसे ऐसे दर शहवार और गोहरे आबदार सफ़हाते क़िरतास पर बिखैर दिये जिन की चमक दमक से मोअमिनीन के ईमान व इरफ़ान में ऐसी ताबानी व ताबन्दगी पैदा होगी जो कियामत तक रोशन रहेगी मगर मैं इन्तिहाई मुतअस्सिफ़ और शर्मिन्दा हूँ कि अपनी इल्मी कोताही और कम फ़हमी की वजह से और फिर अपनी अलालत के बाइष कुछ ज़ियादा न लिख सका और न कोई ऐसी नादिर बात लिख सका जो अहले इल्म के लिये बाइषे कशिश व क़ाबिले मसरत हो।

बहर हाल दुआ गो हूँ कि खुदावन्दे करीम ब तुफ़ैले नबिये करीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالسَّلَامِ मेरी इस हक़ीर ख़िदमत को क़बूल फ़रमा कर इस को मक्बूलिय्यते दारैन की करामतों से सरफ़राज़ फ़रमाए। (आमीन)

مَشَقَّة

وَصَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى خَيْرِ خَلْقِهِ مُحَمَّدٍ وَآلِهِ وَصَحْبِهِ أَجْمَعِينَ بِرَحْمَتِهِ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ

इब्तिदाए तस्नीफ़ : यकुम जमादिल उख़रा सि. 1403 हि.

ख़तमे तस्नीफ़ : 23 रमज़ान सि. 1404 हि.

अब्दुल मुस्तफ़ा आ 'जमी عَفَى عَنْهُ

## अजाइबुल कुरआन के माखजो मराजेअ

کتاب کا نام	مصنف کا نام	مطبوعہ
قرآن مجید	کلام باری تعالیٰ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
کنز الایمان فی ترجمۃ القرآن	اعلیٰ حضرت احمد رضا خان	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
تفسیر صاوی	علامہ احمد بن محمد الصاوی	مطبوعہ دار الفکر بیروت
تفسیر مدارک	امام عبداللہ بن احمد المنفی	صدیقہ کتب خانہ اکوڑہ خشک
تفسیر روح البیان	اشیخ اسماعیل حقی البروسوی	کتبہ عثمانیہ کوئٹہ
تفسیر جمل	اشیخ سلیمان الجمل	قدیمی کتب خانہ کراچی
تفسیر خازن	علامہ علاء الدین علی بن محمد	صدیقہ کتب خانہ اکوڑہ خشک
تفسیر خزائن العرفان	محمد نعیم الدین	مطبوعہ پاک کمپنی اردو بازار لاہور
بخاری شریف	ابو عبداللہ محمد بن اسماعیل بخاری	دار الکتب العلمیۃ بیروت
مکتوبۃ المصنوع	ابو عبداللہ محمد بن عبداللہ الخطیب	دار الفکر بیروت
کنز العمال	علامہ علاء الدین علی المنفی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
شرح الزرقانی	علامہ قسطلانی	دار الکتب العلمیۃ بیروت
کشف الخفاء	اشیخ اسماعیل بن محمد	دار الکتب العلمیۃ بیروت
مرقاۃ المفاتیح	نور الدین علی بن سلطان (علا علی قاری)	دار الفکر بیروت
بہار شریعت	مولانا احمد علی اعظمی	مکتبہ رضویہ کراچی
لسیرۃ النبویہ لابن ہشام	ابو محمد عبدالملک بن ہشام	دار المعرفہ بیروت
مدارج النبوة	مولانا عبدالحق محدث دہلوی	نوریہ رضویہ پبلشنگ کمپنی لاہور
خیرات الحسان	شیخ شہاب الدین حجر	مدینہ پبلشنگ کمپنی لاہور
حدائق بخشش	اعلیٰ حضرت احمد رضا خان	مکتبہ المدینہ کراچی
کلیات اقبال	ڈاکٹر اقبال	مطبوعہ شمع بک ایجنسی لاہور
المستدرک علی التحسین	ابو عبداللہ محمد بن عبداللہ الحاکم	مطبوعہ دار المعرفہ بیروت
سنن ابن ماجہ	ابو عبداللہ محمد بن یزید	دار المعرفہ بیروت



## ग़राइबुल कुरआन के माख़ज़ो मराजेअ

مطبوعه	مصنف کے نام	کتاب کا نام
دارالکتب العلمیہ بیروت	علامہ ابو محمد حسین بن مسعود	تفسیر معالم التنزیل للبغوی
دارالکتب العلمیہ بیروت	علامہ ابوالفداء اسماعیل بن کثیر الدمشقی	تفسیر ابن کثیر
قدیمی کتب خانہ کراچی	علامہ جلال الدین السیوطی و جلال الدین الحنفی	تفسیر جلالین
تاج کمپنی لمیٹیڈ لاہور کراچی	شاہ عبدالقادر صاحب	موضح القرآن
دار ابن حزم بیروت	ابوالحسن امام مسلم بن الحجاج بن مسلم	صحیح مسلم
قدیمی کتب خانہ کراچی	امام احمد بن علی العسقلانی	فتح الباری
مکتبہ ضیاء اولیٰ پٹنہ	قاضی عبدالرزاق چشتی بھٹوالوی	تذکرۃ الانبیاء
لدار احیاء التراث العربی بیروت۔	ابوالفداء اسماعیل بن کثیر الدمشقی	البدایہ والنہایہ
موسسۃ رضا لاہور	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان	الدولۃ المکیۃ
		فضائل الشہور والایام

(إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ) ..... फैजाने कुरआन जारी रहेगा

### बद निगाही की सज़ा

हज़रते सय्यिदुना इब्ने अब्बास رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं कि “एक शख्स नबिय्ये मुकर्रम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की खिदमत में हाज़िर हुवा । उस का खून बह रहा था तो आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उस से इस्तिफ़सार फ़रमाया : “तुझे क्या हुवा ?” उस ने अर्ज़ की : “मेरे पास से एक औरत गुज़री तो मैं ने उस की तरफ़ देखा और मेरी निगाहें मुसलसल उस का पीछा करती रहीं कि अचानक मेरे सामने एक दीवार आ गई जिस ने मुझे ज़ख्मी कर दिया और मेरा येह हाल कर दिया जिसे आप मुलाहज़ा फ़रमा रहे हैं ।” तो नबिय्ये करीम, रऊफ़रहीम رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया : “**اَبْلَاٰهُ** عَزَّوَجَلَّ जब किसी बन्दे से भलाई का इरादा फ़रमाता है तो उसे दुन्या ही में उस की सज़ा दे देता है ।”

(مجمع الزوائد، كتاب التوبة، باب فيمن عوقب بذنبه في الدنيا، رقم ١٧٤٧١، ج ١٠، ص ٣١٣)

**“मन्लिसे अल मदीनतुल इल्मिख्या”**  
**क़ी तरफ़ से पेशक़र्दा क़बिले मुतालअ़ा कुतुब**  
**﴿शौ' बउ कुतुबे आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ﴾**

- (1) कस्सी नोट के शर्इ अहकामात :
- (अल किफ़लुल फ़कीहिल फ़हिम फ़ी क़िरासिदराहिम) (कुल सफ़हात : 199)
- (2) विलायत का आसान रास्ता (तसव्वुरे शैख़)
- (अल याकूतितुल वासितह) (कुल सफ़हात : 60)
- (3) ईमान की पहचान (हाशिया तम्हीदे ईमान) (कुल सफ़हात : 74)
- (4) मआशी तरक्की का राज़
- (हाशिया व तशरीह तदबीरे फ़लाहो नजात व इस्लाह) (कुल सफ़हात : 41)
- (5) शरीअत व तरीक़त
- (मक़ालुल उ-रफ़ाअ बि इ'ज़ाज़ि शर-इ व उ-लमाअ) (कुल सफ़हात : 57)
- (6) षुबूते हिलाल के तरीके (तुरुक़ि इस्बाति हिलाल) (कुल सफ़हात : 63)
- (7) आ'ला हज़रत से सुवाल जवाब
- (इज़हारिल हक्किल जली) (कुल सफ़हात : 100)
- (8) ईदैन में गले मिलना कैसा ?
- (विशाहुल जीद फ़ी तहलीलि मुआनि-क़तिल ईद) (कुल सफ़हात : 55)
- (9) ग़हे खुदा में खर्च करने के फ़ज़ाइल
- (रहिल कहति वल वबाअ बि दा'वतिल ज़ीरानि व मुवासातिल फु-क़राअ) (कुल सफ़हात : 40)
- (10) वालिदैन्, ज़ौजैन् और असातिज़ा के हुकूक
- (अल हुकूक लि तहिल उकूक) (कुल सफ़हात : 125)
- (11) फ़ज़ाइले दुआ (अह्सनुल विआअ लि आदाबिहुआअ मअ शर्ह ज़ैलुल मुद्आ लि अह्सनिल विआअ) (कुल सफ़हात : 326)

### ﴿शाउअ होने वाली अरबी कुतुब﴾

अज : इमामे अहले सुन्नत मुजहिदे दीनो मिल्लत

मौलाना अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَنِ

- (12) किफ़लुल फ़कीहिल फ़ाहिम (कुल सफ़हात : 74)  
 (13) तम्हीदुल ईमान (कुल सफ़हात : 77)  
 (14) अल इजाज़ातुल मतीनह (कुल सफ़हात : 62)  
 (15) इका-मतुल कियामह (कुल सफ़हात : 60)  
 (16) अल फ़ज़लुल मौहबी (कुल सफ़हात : 46)  
 (17) अज़लल ए'लाम (कुल सफ़हात : 70)  
 (18) अज़ज़म-ज़-मतुल क-मरिय्यह (कुल सफ़हात : 93)  
 (19,20,21) जहिल मुम्तार अला रदिल मुह्तार  
 (अल मुजल्लद अल अव्वल वष्षानी)(कुल सफ़हात : 713,677,570)

### ﴿शो'बए इस्लाही कुतुब﴾

- (22) खौफ़े खुदा عَزَّوَجَلَّ (कुल सफ़हात : 160)  
 (23) इनफ़िरादी कोशिश (कुल सफ़हात : 200)  
 (24) तंग दस्ती के अस्बाब (कुल सफ़हात : 33)  
 (25) फ़िक्रे मदीना (कुल सफ़हात : 164)  
 (26) इमतिहान की तय्यारी कैसे करें ? (कुल सफ़हात : 32)  
 (27) नमाज़ में लुक्मा के मसाइल (कुल सफ़हात : 39)  
 (28) जन्नत की दो चाबियां (कुल सफ़हात : 152)  
 (29) काम्याब उस्ताज़ कौन ? (कुल सफ़हात : 43)  
 (30) निसाबे मदनी काफ़िला (कुल सफ़हात : 196)  
 (31) काम्याब तालिबे इल्म कौन ? (कुल सफ़हात : तक़रीबन 63)  
 (32) फैज़ाने एहूयाउल उलूम (कुल सफ़हात : 325)

- (33) मुफ़्तये दा'वते इस्लामी (कुल सफ़हात : 96)
- (34) हक़ व बातिल का फ़र्क़ (कुल सफ़हात : 50)
- (35) तहकीकात (कुल सफ़हात : 142)
- (36) अर-बईने ह-नफ़िय्यह (कुल सफ़हात : 112)
- (37) अत्तारी ज़िन्न का गुस्ते मय्यित (कुल सफ़हात : 24)
- (38) तलाक़ के आसान मसाइल (कुल सफ़हात : 30)
- (39) तौबा की रिवायात व हिकायात (कुल सफ़हात : 132)
- (40) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़हात : 48)
- (41) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से) (कुल सफ़हात : 275)
- (42) टी वी और मूवी (कुल सफ़हात : 32)
- (43 ता 49) फ़तावा अहले सुन्नत (सात हिस्से)
- (50) क़ब्रिस्तान की चुड़ैल (कुल सफ़हात : 24)
- (51) ग़ौषे पाक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ के हालात (कुल सफ़हात : 106)
- (52) तआरुफ़े अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 100)
- (53) रहनुमाए जदवल बराए मदनी क़ाफ़िला (कुल सफ़हात : 255)
- (54) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़हात : 24)
- (55) मदनी कामों की तक्सीम (कुल सफ़हात : 68)
- (56) दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़हात : 220)
- (57) तर्बिय्यते अवलाद (कुल सफ़हात : 187)
- (58) आयाते कुरआनी के अन्वार (कुल सफ़हात : 62)
- (59) अह्दादीषे मुबारका के अन्वार (कुल सफ़हात : 66)
- (60) फैज़ाने चहल अह्दादीष (कुल सफ़हात : 120)
- (61) बद गुमानी (कुल सफ़हात : 57)

### «शो'बए तराजिमे कुतुब»

- (62) जन्नत में ले जाने वाले आ'माल  
(अल मुत्जरुराबेह फ़ी षवाबिल अ-मलिस्सालेह) (कुल सफ़हात : 743)  
(63) शाहराहे औलिया (मिन्हाजुल आरिफ़ीन) (कुल सफ़हात : 36)  
(64) हुस्ने अख़्लाक़ (मकारिमुल अख़्लाक़) (कुल सफ़हात : 74)  
(65) राहे इल्म (ता'लीमुल मु-तअल्लिम तरीकुतअल्लुम) (कुल सफ़हात : 102)  
(66) बेटे को नसीहत (अय्युहल वलद) (कुल सफ़हात : 64)  
(67) अद्वा'वति इलल फ़िक्र (कुल सफ़हात : 148)  
(68) आंसूओं का दरिया (बहूरुहुमूअ) (कुल सफ़हात : 300)  
(69) नेकियों की जज़ाएं और गुनाहों की सज़ाएं (कुरतुल उयून) (कुल सफ़हात : 136)  
(70) उयूनुल हिक्मायात (मुतर्जम) (कुल सफ़हात : 412)

### «शो'बए दर्सी कुतुब»

- (71) ता'रीफ़ाते नहूविय्यह (कुल सफ़हात : 45)  
(72) किताबुल अक़ाइद (कुल सफ़हात : 64)  
(73) नुज़हतुनज़र शर्हे नख़बतुल फ़िक्र (कुल सफ़हात : 175)  
(74) अर-बईनिन न-वविय्यह (कुल सफ़हात : 121)  
(75) निसाबुत्तज्वीद (कुल सफ़हात : 79)  
(76) गुलदस्तए अक़ाइदो आ'माल (कुल सफ़हात : 180)  
(77) वक़ा-यतिन्नहूव फ़ी शर्हे हिदा-यतुन्नहूव  
(78) सर्फ़ बहाई मुतर्जम मअ़ हाशिया सर्फ़ बनाई

### «शो'बए तख़रीज»

- (79) अज़ाइबुल कुरआन मअ़ ग़ाइबुल कुरआन (कुल सफ़हात : 422)  
(80) जन्नती ज़ेवर (कुल सफ़हात : 679)  
(81) बहारे शरीअत, जिल्द अव्वल (हिस्सा : 1 से 6)  
(82) बहारे शरीअत, जिल्द दुवुम (हिस्सा : 7 से 13)  
(83) बहारे शरीअत, जिल्द सिवुम (हिस्सा : 14 से 20)  
(84) इस्लामी ज़िन्दगी (कुल सफ़हात : 170)  
(85) आईनए क़ियामत (कुल सफ़हात : 108)  
(86) उम्महातुल मुअमिनीन (कुल सफ़हात : 59)  
(87) सहाबए किराम का इश्क़े रसूल (कुल सफ़हात : 274)

## «शो'बउ अमीरे अहले सुन्नत»

- (88) सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पैगाम अतार के नाम (कुल सफ़्हात : 49)
- (89) मुकद्दस तहरीरात के अदब के बारे में सुवाल जवाब (कुल सफ़्हात : 48)
- (90) इस्लाह का राज़ (मदनी चैनल की बहारें हिस्सा दुवुम) (कुल सफ़्हात : 32)
- (91) 25 क्रिस्चैन कैदियों और पादरी का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़्हात : 33)
- (92) दा'वते इस्लामी की जेलख़ाना जात में ख़िदमात (कुल सफ़्हात : 24)
- (93) वुजू के बारे में वस्वसे और इन का इलाज (कुल सफ़्हात : 48)
- (94) तज़क़िए अमीरे अहले सुन्नत किस्त सिवुम (सुन्नते निक़ह) (कुल सफ़्हात : 86)
- (95) आदाबे मुर्शिदे कामिल (मुकम्मल पांच हिस्से) (कुल सफ़्हात : 275)
- (96) बुलन्द आवाज़ से ज़िक़्र करने में हिकमत (कुल सफ़्हात : 48)
- (97) क़ब्र खुल गई (कुल सफ़्हात : 48)
- (98) पानी के बारे में अहम मा'लूमात (कुल सफ़्हात : 48)
- (99) गूंगा मुबल्लिग़ (कुल सफ़्हात : 55)
- (100) दा'वते इस्लामी की मदनी बहारें (कुल सफ़्हात : 220)
- (101) गुम शुदा दुल्हा (कुल सफ़्हात : 33)
- (102) मैं ने मदनी बुर्क़अ क्यूं पहना ? (कुल सफ़्हात : 33)
- (103) जिन्नों की दुन्या (कुल सफ़्हात : 32)
- (104) तज़क़िए अमीरे अहले सुन्नत किस्त दुवुम (कुल सफ़्हात : 48)
- (105) गाफ़िल दर्जी (कुल सफ़्हात : 36)
- (106) मुख़ालिफ़्त महबबत में कैसे बदली ? (कुल सफ़्हात : 33)
- (107) मुर्दा बोल उठा (कुल सफ़्हात : 32)
- (108) तज़क़िए अमीरे अहले सुन्नत किस्त अब्वल (कुल सफ़्हात : 49)
- (109) कफ़न की सलामती (कुल सफ़्हात : 33)
- (110) तज़क़िए अमीरे अहले सुन्नत किस्त चहारूम (कुल सफ़्हात : 49)
- (111) चल मदीना की सआदत मिल गई (कुल सफ़्हात : 32)
- (112) बद नसीब दुल्हा (कुल सफ़्हात : 32)
- (113) मा'ज़ूर बच्ची मुबल्लिग़ा कैसे बनी ? (कुल सफ़्हात : 32)
- (114) बे कुसूर की मदद (कुल सफ़्हात : 32)

- (115) अत्तारी जिन्न का गुस्ले मय्यित (कुल सफ़हात : 24)
- (116) नूरानी चेहरे वाले बुजुर्ग (कुल सफ़हात : 32)
- (117) आंखों का तारा (कुल सफ़हात : 32)
- (118) वली से निस्बत की बरकत (कुल सफ़हात : 32)
- (119) बा बरकत रोटी (कुल सफ़हात : 32)
- (120) इग़वा शुदा बच्चों की वापसी (कुल सफ़हात : 32)
- (121) मैं नेक कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)
- (122) शराबी, मुअज़्ज़िन कैसे बना ? (कुल सफ़हात : 32)
- (123) बद किरदार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
- (124) खुश नसीबी की किरनें (कुल सफ़हात : 32)
- (125) नाकाम आशिक (कुल सफ़हात : 32)
- (126) नादान आशिक (कुल सफ़हात : 32)
- (127) हैरोइन्ची की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
- (128) नौ मुस्लिम की दर्दभरी दास्तान (कुल सफ़हात : 32)
- (129) मदीने का मुसाफ़िर (कुल सफ़हात : 32)
- (130) ख़ौफ़नाक दांतों वाला बच्चा (कुल सफ़हात : 32)
- (131) फ़िल्मी अदा कार की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
- (132) सास बहू में सुल्ह का राज़ (कुल सफ़हात : 32)
- (133) क़ब्रिस्तान की चुड़ेल (कुल सफ़हात : 24)
- (134) फैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत (कुल सफ़हात : 101)
- (135) हैरत अंगेज़ हादिषा (कुल सफ़हात : 32)
- (136) मोडर्न नौ जवान की तौबा (कुल सफ़हात : 32)
- (137) क्रिस्चैन का क़बूले इस्लाम (कुल सफ़हात : 32)
- (138) सलातो सलाम की आशिका (कुल सफ़हात : 33)
- (139) क्रिस्चैन मुसलमान हो गया (कुल सफ़हात : 32)
- (140) चमकती आंखों वाले बुर्जुग (कुल सफ़हात : 32)
- (141) म्यूज़िकल शो का मतवाला (कुल सफ़हात : 32)



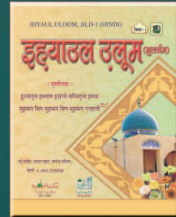
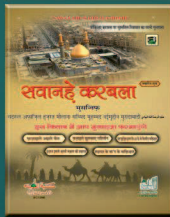
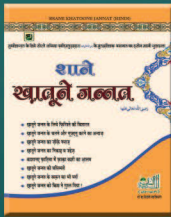


الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

## सुन्नत की बहारें

تَبَلَّیْغِے کُرآنو سُننَت کی آلالمگری گُیر سییاسی تھریک دا 'بِتے' इस्लामी के महके महके मदनी माहोल में ब कषरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुमा 'रात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'बते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की मदनी इल्तिजा है, अशिक़ाने रसूल के मदनी काफ़िलों में ब निय्यते षवाब सुन्नतों की तर्बिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आमात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह के इबतिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और ईमान की हिफ़ाज़त के लिये कुदूने का ज़ेह्न बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेह्न बनाए कि "मुझे अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश करनी है।" اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ अपनी इस्लाह की कोशिश के लिये "मदनी इन्आमात" पर अमल और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह की कोशिश के लिये "मदनी काफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ



ISBN 978-969-579-892-8



0101104



**MAKTABATUL MADINA**

**421, URDU MARKET, MATYA MAHAL, JAMA MASJID**

**DELHI - 110006, PH : 011-23284560**

**email : maktabadelhi@gmail.com**

**web : www.dawateislami.net**